* सूचना *

हमारे पास सर्व प्रकार और सर्व जगह के छपे जैनग्रन्थ हर समय तैयार रहते हैं आवश्यक्ता पूर्वक मंगाईये

पता :—

लाला मोतीलाल जैन.

मुक़ाम. कुटेसरा, पोष्ट चरथावल

ज़िला मुज़फ़्फ़रनगर

श्री आराधनासार कथाकोषकी विषय सूची।

श्री वीतरागाय नमः ॥

श्री आराधनासार कथाकोष प्रारम्भः

⊛ मंगलाचरण ॥ सवैया तेईसा ⊛

श्री अरिहंत जिनेश्वर जी, इस ग्रंथ की आदि सु मंगल दाई।
लोक अलोक प्रकाशक देव, समोशृत आदिक ऋधि लहाई ॥
ज्ञान सुभान उद्योत कियो, भवि बारिज वृंद दिए बिकसाई।
ऐसे प्रभु जग तारणहार, नमूं कर जोरके हूजे सहाई ॥ १ ॥

श्री सारदा स्तुति। छप्पय छंद ॥

प्रभु आननते खिरी प्रथम गणधर ने धारी। कीने तत्व प्रकाश भविक जन आनंद कारी ॥ ज्ञान उदधि के पार भए जेतेजग मांही। ते तुमरे परसाद और कोऊ हूजो नाहीं ॥ ऐसी माता सरस्वती, दुरनय सकस बिनाशनी। मैं नमन करू कर जोड़ कर, जिन हिरदे की वासनी ॥ २ ॥

श्री गुरु स्तुति। सवैया इकतीसा ॥

तपके करैया मुनि नाथजे नगन काय, ज्ञान के समुद्र बुध आकर अपार हैं। सम्यक दरश ज्ञान चारित उद्योतवान, ताकर पवित्र भए जग मांहीं सार हैं ॥ बाइस परीषह जोर तासके सहनहार, ध्यान में सुमेरुसम करम निवार हैं। ऐसे गुरु पाय नमुं बार बार सीस नाय, हुजिये सहाय आप दयाके भंडार हैं ॥ ३ ॥

दोहा ॥

आप्त शास्त्र गुरु तीन यह, सुख कारण दुख हरन।
तातें इनही को करूं प्रथम मंगलाचरन ॥ ४ ॥
ग्रंथ सार आराधना, कथाकोष सुख दाय।

ताको भाषा करतहूं, तुच्छ बुद्धि को पाय ॥ ५ ॥
देव धर्म गुरु तीन यह, दें मन वांच्छित दान ।
ग्रंथ कथा शोभित करू, मंदिर कलश समान ॥ ६ ॥

चौपाई ।

मल संघ में भए महान । गच्छ सरस्वती तिन को जान ॥
गण बलातकारे रमणीस । कुंद कुंद आचारज ईस ॥ ७ ॥
तिनके बंश विषय वे भए । प्रभाचंद्र आचारज कहे ॥
इन्द्र चन्द्र रबि नितप्रति आय । तिनके चरण कमल नितधाय ॥ ८ ॥
ऐसे प्रभाचंद्र गुण लीन । तिन भाषी यह कथा प्रवीन ॥
तिसहीके अनुसार पुराण । श्रीमलभूषण के शिष जान ॥ ९ ॥
ब्रह्म नेमदत्त नाम मुनिंद । श्लोकन में कियो प्रबंद ॥
जैसे सूरज करत प्रकाश । तब सब बिचरत सहित हुलास ॥ १० ॥
श्री जिन सूत्र तने अनुसार । आराधन को कथन अपार ॥
भाषो भविजन के हितहेत । अथवा मोक्ष महाफल देत ॥ ११ ॥
पूरब आचारजबड़ भाग । कहते आए धर अनुराग ॥
सो आराधना इह बरणई । ताकी महिमा सुनिये सही ॥ १२ ॥
सम्यक दर्शन ज्ञानचरित्र । तप मिल चारों महा पवित्र ॥
एही आराधन गुण रास । जगत भ्रमण को करतबिनाश ॥ १३ ॥
इनको कीजे नित्य उद्योग । उद्यम निरबाहन जग पोत ॥
साधन और समापत कर्न । इनके हेतु सुनो दुख हर्न ॥ १४ ॥

दोहा ॥

दर्शन ज्ञान चरित्र तप, इनको करत उद्योत ।
सोई उज्जवणं कहो, निश्चय कर यह होय ॥ १५ ॥
निश्चय कर आराधना, कर सो अंगीकार ॥
आलश बर्जित होयके, सो मुझ बर्णन धार ॥ १६ ॥

इन आराधन के विषय, कारन विघन मिलाय।
बाधा सहकर थिर रहै, निव्वहणं सुकहाय ॥ १७ ॥

पद्धड़ी छन्द

तत्वारथ शास्त्र पढ़ै महान। बर्जन सुराग सम्यक्त वान।
तामें चित की थिरता गहंत। सोई साधन भाषो महत॥ १८ ॥
जब लग जीवै जग के मझार। चारों आराधन रतन सार॥
निर्विघन सुपालै शुद्ध योग। परम्मण नाम यह है मनोग॥१९॥
ऐसे यह पंच प्रकार भेद। जिन पालो तिन जग को उछेद॥
भाषत आए श्रीगुरु दयाल। ताही क्रमकर बरणो रशाल॥ २०॥

अथ सम्यक उद्योतमें श्रीपात्रकेशरीकी

कथा प्रारम्भः नं० १

दोहा

पात्र केशरी जी भए, विप्र महा बुधिधार।
दर्शन को उद्योत जिन, कीनो जगत मझार॥ २१ ॥
तिनकी कथा सुहावनी, सम्यक दर्शन हेत।
पहिले ही वरणन करू, भवदधि तारन सेत॥ २२ ॥

॥ चौपाई ॥

यहही भरत क्षेत्र शुभ जान। तामधि देश अनेक महान॥
तिन मधि सम्पति को भंडार। मागध नामा देश निहार॥ २३॥
श्रीजिनवर के पंच कल्याण। अतिशय कर शोभित तिहथान॥
भव जीवनके सुख को योग। अहच्छत नामा नगर मनोग।२४॥
तिस नगरी को है भूपाल। अवनिपाल नामा अरशाल॥
राज कला में निपुण उदार। देत दान सो विविध प्रकार॥२५॥
विप्र पांचसै नित प्रति आय। तिन से गोष्टि करै नर राय॥

कैसे हैं वह विप्र सुजान । बेद तनो बहु कर बखान ॥ २६ ॥
अरु कुल गर्भ धरैं अधिकाय । पंडित ताको मद बहु भाय ॥
प्रात समय अरु संध्या काल । हरष धारकर विप्र रसाल ॥ २७ ॥
जगत पूज्य श्रीजिनवर धाम । ता नगरी में है अभिराम ॥
श्री पारश प्रमेश्वर तनी । प्रतिमा तहँ राजत छवि घनी ॥२८॥
तहां विप्र यह नितप्रति जाय । ताहि देख फिर निजग्रहआय ॥
अपने अपने कर्म मंझार । सबही तिष्टत आनन्द धार ॥ २९ ॥
इक दिन बिप्रन को समुदाय । सन्ध्यां बन्दन को हरषाय ॥
आये श्रीपारश के धाम । मन में कौतुक धरें ललाम ॥ ३० ॥
तहां प्रभु केदर्शन हेत । आए हूते मुनी जग सेत ॥
चारित भूषण नाम सुजान । जिनवर आगे स्तुति ठान ॥ ३१ ॥
देवागम स्तोत्र मनोग । पढ़ो सुमुनिवर ने धर जोग ॥
तिन को पढ़ते लख तियवार । सब विप्रन में है सिरदार ॥ ३२ ॥
ऐसो पात्रकेशरी सोय । पूछत चित में हरषित होय ॥
हो स्वामिन इह पाठ अपार । तुम जानत हो अर्थ विचार ॥ ३३ ॥
तब मुनिवर बोले गुण खान । मैं नहिं जानूं अर्थ बखान ॥
फिर वह विप्र महा बड़ भाग कहत भयो सो धर अनुराग ॥ ३४ ॥
हो मुनि नायक किरपा धार । फेर पढ़ो याको इकबार ॥
तब वे श्रीगुरु दीन दयाल । सत पुरुषन को करत निहाल ॥३५॥
शुद्ध पाठ को करो उचार । पात्र केशरी हिरदे धार ॥
इक संधी इक विप्र महंत । चितमें अर्थ विचार करंत ॥ ३६ ॥
करत करत ताही छिन सोय । दर्शन मोह क्षयोपशम होय ॥
तातें यह विचार मन ठोय । श्रीजिनवर ने जो बरनयौ ॥३७॥
जीवाजीव आदि जे तत्व । तेही निश्चय हैं जग सत्व ॥
र प्रकार कदापि न होय । ऐसी सरधा आई सोय ॥ ३८ ॥

दोहा

ऐसे करत विचार बहु, पात्रकेशरी नाम ।
बुद्धिवान बहु चातुर सो, आयो अपने धाम ॥ ३९ ॥
रात्री विषय चिंता भई, अर्थविषय चित ठान ।
जिनवर शासन में कही, तत्वादिक परमान ॥ ४० ॥
जो लक्षण अनुमान को, सो ऐसी विधि होय ॥
ऐसी संशय मनभयो, तिष्टत तामें सोय ॥ ४१ ॥

कुसुमलता छन्द

तबही निज आसन कंपनते, पद्मावत देवी तहँ आय ।
आनंद सहित बचन इम भाषै, सुनो विप्र तुम चित्त लगाय ॥
तू बुधि आकर है निश्चय कर, प्रातकाल जिन मंदिर धाय ।
प्रभु की मूरत के देखनते, तेरो संशय सब मिटजाय ॥ ४२ ॥

दोहा

ऐसा कह देवी तबै, जिन मंदिर में आय ॥
पारस प्रभु के फण विषै, लिखत भई यह भाय ॥ ४३ ॥

श्लोक

अन्यथानुप पन्नत्वं यत्र यत्र त्रयेणकिं ।
नान्यथानुप पन्नत्वं यत्र यत्र त्रयेणकिं ॥ ४४ ॥

दोहा

यह लक्षण अनुमान को संशय मेटन हार ॥
श्लोक एक में लिख गई, अपने धाम मंझार ॥ ४४ ॥

पद्धडी छन्द

देवी दर्शन करके महान । बहु भयो विप्र के हर्ष आन ॥
प्रभु के मतमे तब चित लगाय । सरधान करो अति हर्ष पाय ४३
एही मत जगते करत पार । यही सुख दाता जग मझार ॥

ऐसे इन रैन ब्यतीत कीन। फिर प्रातकाल उठयो प्रवीन ॥४७॥
श्रीपारस धाम गयो तुरंत। फन्न मंडप देखो हरषवंत ॥
ताते अनुमान तनो विचार। देखतही संशय सबप्रहार ॥४६॥
जैसे जब भानु उद्योत होय। तमको तब लेस रहै न कोय।
ऐसे इस हिरदे बीच आन। उपजो मम्यक्त महा निधान॥५०॥
तब यह दुज उत्तम धर्म लीन। रोमांचित तन अतिही प्रवीण।
मन माहिं एम कीनो विचार। निर्दोष देव आरहंत सार॥५०॥
संसार जलध ते तार देत। इनही को नमिये मोक्ष हेत ॥
इन कथित धर्म सोई पवित्र। दोउ लोक विषै सुखदे विचित्र५१॥

दोहा।

वारहिंबार बिचार इम, तत्त्वन में चित लाय।
हरष सहित परसन्स मुख, तिष्टो बहु सुख थाय ॥ ५२ ॥

चौपाई।

और बिप्र आए इस पाश। कहत भए इम बचन प्रकाश ॥
हो दुज उत्तम तुम बुधिवान। तज मीमांसक मत किम जान॥
जैनधर्म में दीखन लीन। को कारण तुम कहो प्रवीण ॥
इम बच वेद गरभयुत सुने। पात्र केशरी उत्तर भने ॥ ५४ ॥
हे बिप्रो तुम सुनो पुरान। सो सबही मिथ्या कर जान ॥
जैनधर्म उत्तम यह सार। मिथ्या डूबे जगत मझार ॥ ५५ ॥
इसही कारण ते तुम बीर। गहो धर्म जिनवरको धीर ॥
और कुमारग तजो तुरन्त। जो देवै है कष्ट अनन्त ॥५६॥
फेर गये राजाके पास। पात्र केशरी धर हुल्लास ॥
जितने विप्र सुमदयुत वहां। जितने बाद कियो तिन तहां ॥५७॥
अनेकान्त मतके अनुसार। सबही जीते छनक मझार ॥
भगवत धर्म जो सुखकी रास। तास अरथको कियो प्रकाश ५८

सम्यक रत्न जगतमें सार । ताके गुण हैं बहु विस्तार ॥
अरु जो मिथ्यामत बहुभाय । तिसको नाश कियो हरषाय ॥५६॥

दोहा ।

अवनिपाल नरनाथ जो, पंडित आदि महान ।
पात्रकेशरी के निकट, करत भए सरधान ॥ ६० ॥
मिथ्यामत सबही, जिनमत में चित लाय ॥
शुध सम्यक हिरदे धरो, सुरग मुकति सुखदाय ॥ ६२ ॥

सोरठा ॥

जिनवर धर्म महान, बहु जीवन हिरदे गहो ।
ऐसे स्तुति ठान, पात्रकेशरी विप्र की ॥ ६३ ॥

चौपाई ।

भो दुज उत्तम तुम जगसार । जैन धर्म में निपुण उदार ॥
तुमही सब तत्वन को भेद । जानत हो सब कर्म उछेद ॥६३॥
तुमही जिनपद कंज महान । तिनको सेवत भ्रमर समान ॥
इस प्रकार स्तुति वच ठए । फेर भक्ततें पूछत भए ॥ ६४ ॥
ऐसे पात्र केशरी सोय । राजादिक कर पूजित होय ॥
दर्शन को उद्योत कराय । ताकर महिमा जग में पाय ॥ ६५ ॥
सो कैसो सम्यक परधान । अति पवित्र सुर शिव सुख दान ॥
और भव्य जेहैं जगमांहि । ते सम्यक उद्योत करांहि ॥ ६६ ॥
तिनके निर्मल जसबहु भाय । जगत मांहि फैले अधिकाय ॥
सुरग मुकत की प्रापति होय । यामें संशय नाही कोय ॥ ६७ ॥

सवैया इकतीसा ।

ग्रंथ के करन हार श्रावक कवि मांहि सार, ब्रह्मनेमिदत्त नाम जान सुख दाई है । इंद कुन्द क्षीरसम कीरत उजास जाकी कुन्द कुन्द वंश मांहि कीरति बढ़ाई है ॥ नाम मल्लभूषण आचा-

रज गुरुमहान, ताके श्रुतसागर जो भए गुरु भाई है। तिनके आदेशते पवित्र सिंह नंदनाथ,मुनिके निकट कथा जोड़केबनाई है॥

सोरठा।

तिसही के अनुसार, अर्थ लेय ताको अवै।
कीने छन्द उचार, बखतावर अरु रतन ने॥ ६६॥

इति श्रीआराधनासार कथा कोष विषै सम्यक्त उद्योत में पात्रकेशरी की कथा समाप्तः।

श्री अकलंक देवकी कथा।

नं० २ मंगला चरण काव्य

नमूं देव अरिहंत सर्व जीवन सुखदायक। भव दधि तारन पोत प्रगट तिनके हैं नायक॥ ज्ञान उद्योत जिन कियो कथा तिनकी रस मंडन। बरनूं श्री अकलंक भए जग परमत खंडन॥ १॥

चौपाई।

एही भरत क्षेत्र सुखदाय। तामें नगर बसै बहु भाय॥
तिन नगरन में सेठ बखान। मान्य खेट इक नगर महान॥२॥
ताको नरपति है शुभ तुंग। जाकी कीरति प्रगट उतंग॥
तिस मंत्री पुरुषोत्तम नाम। पद्मावति नारी तिस धाम॥ ३॥
तिनके जुत सुत प्रगटे आय। सब जन प्यारे गुण अधिकाय॥
श्री अकलंक प्रथम बरनयो। दूजो निःकलंक सुत थयो॥४॥
एक दिना नन्दीश्वर पर्व। उत्सव जिन ग्रह कीनो सर्व॥
तहँ मुनिवर रवि गुप्त उदार। आप विराजे भव हितकार॥५॥
हर्ष सहित मन्त्री तहँ आय। भक्ति धार बहु नमन कराय॥
अष्ट दिनन को धारो वृत्त। ब्रह्मचर्य नामा सुपवित्त॥ ६॥
फिर कौतुहल चित में धार। मुनिवर निकट सुएम उचार॥
भी पुत्र शील व्रत गहो। तब उन आय कर सुख लहो॥७॥

कितने दिन बीते सुख लीन। फिरमंत्री उद्यम यह कीन ॥
सुत विवाह करनो चितधार। आरम्भ कीनो विविध प्रकार ।८॥
इम लखकर दोनों सुत एह। बोले इम बच सुन्दर देह ॥
अहो तात इह आरम्भ सबै। किस कारन तुम कीनो अबै ॥९॥
ऐसे बच सुन बोले तात। तुम विवाह करनो अब दात ॥
फिर दोनो भाषे गुणवान। इस विवाह कर क्या बुधवान ॥ १०॥
तुमने तो श्रीगुरु ढिग कही। ब्रह्मचर्य धारो सुत सही ॥
तब हम धारो शील महान। तुम संदेह न चित में आन ॥११॥

दोहा।

ऐसे बच सुन सुतन के, बोले तब इन तात।
क्रीड़ा करके शील की, भाषीथी में बात ॥ १२ ॥
फिर दोनो यह चतुर अति, बोले मधुरी बान।
धर्म काजमें तातजी, क्रीड़ा कैसी जान ॥ १३ ॥

चौपाई।

तब मंत्री बोलो इम बान। अहो पुत्र तुमहो बुधिवान ॥
मैं जो वृत दिलवायो सार। अष्ट दिनन के नेम बिचार ॥ १४॥
फिर दोनो बोले इम चई। हमसे तुममरजाद न कही ॥
तुमने अरु श्रीगुरुने जोय। वृत दीनो हम पाले सोय ॥ १५ ॥
इस भवमें विवाहको नेम। शील वृत्त पालें धरप्रेम ॥
ऐसो कह ग्रह कारज त्याग। बौद्ध शास्त्र पढ़ियो बड़भाग ॥ १६॥
मान्याखेट नगर में सोय। बौद्ध तनो पण्डित नहि कोय ॥
तब विद्या जाननको संत। मूरख सिखवे चले तुरन्त ॥१७॥
चलत चलत यह पहुंचे तहां। बौद्ध मतन के मठ हैं जहां।
बंधक गुरु तहं है परधान। धर्माचारज नाम कहान ॥ १८ ॥
तादिग तिष्टे यह जुग जाय। बौद्ध मार्ग जानन चित चाय ॥

धर्माचारज मन इमठान। इनको तबै त्रिजाती जान ॥ १९ ॥
उतरन हेत दियो सुख खान। ऊंची भूम विषै अस्थान ॥
इन दोनो को नित प्रतिसार। शास्त्र पढ़ावै बारम्बार ॥ २० ॥
यहतो जैनधर्म चितआन। मूरख बनकर पढ़ैं अजान ॥
गुरु इनको जाने बुधहीन। अंतरंग यह महा प्रवीन ॥ २१ ॥

दोहा।

इक संधी अकलंकजी, पढ़कर भए प्रवीन।
द्वै संधी निःकलंकजी, भए सु विद्या लीन ॥ २२ ॥

अड़िल्ल।

धर्माचारज एकदिना पढ़तो सही। सप्तभंग बानी जैसी जिनवर कही। ताको अर्थ विचारत मन संशय भयो ॥ गूढ़ शब्दको अर्थ न चित में तिन लियो॥ २३ ॥ हित थानक प्रस्ताव राख तबही गयो। रात्र समय अकलंक अर्थ सब लिख दियो ॥ बौद्ध गुरू तब आय सु पुस्तक देखियो। अर्थ शुद्ध तिस मांहि लिखो सो पेखियो ॥ २४ ॥

दोहा।

बौध गुरू चित चिंतवै, निश्चयकर यां होय।
जैन उदधिको चंद्र सम, इन शिष्यन में कोय ॥ २५ ॥
हम मत विध्वंसी जु नर, बौध भेष इस ठाम।
माया करके पढ़त है, हतनो ताहि ललाम ॥ २६ ॥

चौपाई।

धर्माचारज मन इम ठाम। सोधे सब शिष्यन के थान।
तिनमें जैन शिष्य नहि पाय। फिर मनमें इम कियो उपाय ॥२७॥
श्री जिनेंद्रके बिम्ब मंगाय। निश्चय हेत धरो तिहठाय ॥
सब शिष्यन को आज्ञादई। याहि उलंघो तुम अबसही ॥२८॥

तब अकलंक देव गुण राश। अपनी चतुराई परकाश॥
भले सूत्रको जानन हार। ऐसे मनमें करत विचार॥ २९॥
डोरे एक सूतको लियो। प्रतिमाके मस्तक धर दियो॥
तास उलङ्घन कीनो जहां। इनको भेद न जानो तहां॥ ३०॥
धर्माचारज चिंता लही। फिर उपाय इम कीनो सही।
कांशी के भाजन मंगवाय। गूनन मध्य धरे अधिकाय॥ ३१॥
अर इक इक चाकर बुधिवान। एक एक शिष्यन के थान॥
राखे जैनी जानन हेत। रैन समय वह रहे सुचेत॥ ३२॥
धर्माचारज गून मंगाय। अर्ध रात्रि पटकी दुखदाय॥
ज्यों नभमें विद्युतकोसोर। त्योंही शब्द भयो अतिजोर॥ ३३॥
तब सब शिष्य भए भयवान। बौद्ध गुरू को कीनो ध्यान॥
अर यह दोनो वीर उदार। नमोकार मुखते उच्चार॥ ३४॥
जे चाकरथे इन ढिगरात। तिनने पकड़ लिए दोउ भ्रात॥
धर्माचारजके ढिग लाय। ऐसे बैन कहे उमगाय॥ ३५॥
अहो देव यह जैनी दोय। दगाबाज अति लंपट सोय॥
जो अब आज्ञा हम को होय। सोई करैं ढील नहि कोय॥३६॥

दोहा।

ऐसेसुनकर दुष्ट गुरु, कहत भयो समझाय।
महल तने खन सातवें, इनको दो बैठाय॥ ३७॥
बीते आधी रात जब; तब इनको दो मार।
ऐसी सुन चर लेगयो, तिसही थान मझार॥ ३८॥

चाल छन्द।

तिस थानक तिष्टे जाई। मन संशय बहुत कराई॥
निकलंक देव लघु भाई। तब ऐसे वचन कहाई॥ ३९॥
सो भ्राता तुम सुनलीजो। मो वचन विषैं चित दीजे॥

हम दोनो गुण उरजोयो । सो कोई काम न आयो ४०॥
दर्शन उद्योत प्रवा॰ । हम अवनी पै नहिं कीना ।
अब अधा मरण सो होई । यामें संशय नहिं कोई ॥४१॥
ऐसे बच सुन तिह बारा । बोले अकलंक उदारा ।
भो बुद्धिमान सुन भ्राता । मत सोच करो दुखदाता ।४२
अब कोई जतन बिचारैं । तातें यह दुख निरवारैं ॥
यह छत्र धरो इस ठाई । तामें तिष्ठें दोउ भाई ॥ ४३ ॥
पृथ्वी थलपै गिरजावें । फिर और थान उठ धावें ॥
ऐसे विचार चित ठानो। वाही विधि कियो पयानो ॥४४॥

दोहा ।

छत्र बैठ दोउ भ्रात तब, गिरे जु अवनि मझार ।
तिस थानक को छोड़ कर, चलत भए तिह बार॥ ४५ ॥
तबही मारन हेत नर, अति पापिष्ट सुआय ।
ते थानक देखे नहीं, तब ढूंडे बहु भाय ॥ ४६ ॥
नगर कूप बन बापिका, हेरा सकल बजार ।
कहीं न पाये भ्रात जुग, तब यह करो बिचार ॥ ४७ ॥
वे पापिष्ट अयान अति, ह्वै बाजी असवार ।
दशों दिशा हेरत चले, इन पीछे ततकार ॥ ४८ ॥

सोरठा ।

जैसे दया सुबेल, दाहन को जिमि क्रोधनल ॥
तैंसे करले सेल, ते पापी पीछे लगे ॥ ४९ ॥

पद्धड़ी छन्द ।

तब निःकलंक उर धार एम । बच भाषे भ्राता ते सो जेम ।
पीछेते चर आवत सुधाय । तिन घोटककी रज हम लखाय ।५०॥
यह पापी हमरे हतन हेत । आवत हैं जलदी जिम परेत ॥

तातें तुम पण्डित चतुर सार। इक संघी बुद्ध घगे अपार।५१।
अरु सम्यक दर्शन का उद्योत। तुमही ते इस जगमें सुहोत॥
तातें यह कमलन जुत तड़ाग। तामें छिपजावो आप भाग ५२॥
अरु मैं जावत हूं मग मझार। मो मारेंगे निश्चय अवार॥
ऐसे वच सुन अकलंकदेव। हिरदे दुख धारो बहुत भेव॥५३॥
पीछे सरवर में आप जाय। शिर कमल-पत्र नीचे छिपाय॥
मानो जिनवरकी शरन लीन। चित सम्यकदर्श धरो प्रवीन ५४॥
तब निःकलंक भागो सुवीर। इक धोबी कपड़े रजक नीर॥
इनको भागत देखो तुरन्त। पीछे से रज उड़ती लखंत॥५५॥
तब धोबी चितमाहीं डरात। पूछी इनसूं क्या है सुभात॥
तब निःकलंक इम वच सुनाय। यह शत्रुसैन पहुंची सुआय५६
जिनको मगमें देखे अयान। तिसही जनके यह हनत प्रान॥
तातें मैं शीघ्र चलो अबार। तब धोबी भागो इन सुलार॥५७॥

दोहा।

तब यह पापी आनकर, हनत भए इन प्रान॥
दोनों के शिर काटले, गए सो अपने थान॥५८॥
जे नर हैं इसलोक में, पाप विषै अति दक्ष॥
क्या क्या अध नहिं करत हैं, सबही करैं प्रत्यक्ष॥५९॥

चौपाई

कैसे हैं पापी मत हीन,। जैन धर्म कर रहित मलीन॥
मिथ्या विष कर सहित कुबोल। लोभी हिरदे धरैं न शील ६०॥
जिनवर धर्म सदा सुखकार। निश्चत जिनके चित न लगार॥
तिन के दया कहां ते होय। लेश मात्र जानो नहिं कोय ६१॥
तप छे अकलंक सुदेव। तज सरवर चाले स्वयमेव॥

दृढ़ चितधारैं तत्व मझार । जो जिनवर भाषो हितकार ॥६२॥
चलत २ केते दिन भए । देश कलिंग माहिं तब गए ॥
तहाँ रतन संचय पुर नाम । नगर बसत है अति अभिराम ६३॥
हिम शीतल तहँ नाम नरिंद । सब परजा को आनँद कन्द ॥
मदन सुन्दरी ताके नार । रूप शील गुण धरे अपार ॥ ६४ ॥
जिनपद कमल जगत में सार । भौरासम सेवैं हितकार ॥
निरमापो जिनवरको धाम । उसही नगर विषै अभिराम ॥६५॥

दोहा

फागुण की अष्टान्हिका, ताको आयो पर्व ।
प्रारम्भो उत्साह अति, जिन मन्दिर में सर्व ॥ ६६ ॥
कीजे श्री जिनचन्द्र की, रथ यात्रा सुखकार ॥
संपतयुत अति हर्ष कर, रानी चित में धार ॥ ६७ ॥
रथ यात्रा उद्यम लिखो, संघश्री तिस नाम ।
बोधमती पापिष्ट अति, विद्यामद युत काम ॥ ६८ ॥
सो राजा पै आय कर, कहत भयो इम बैन ।
रथ यात्रा कीजे नहीं, यह है बहु दुख दैन ॥ ६९ ॥

काव्य छन्द ।

ऐसा कहकर बौद्ध तबै चित माहिं विचारी । बाद पत्र एक लिखो तासमें येम उचारी ॥ करो बाद कोई जैनमती हमसेती अबही । ऐसे कह मुनि निकट पत्र भेजो उन तबही ॥ ७० ॥ तब नरपति बच त्रय सुनो रानी सुखकारी । जिन मत की सामर्थ दिखावै हमको प्यारी ॥७१॥ तो रथयात्रा करो अन्यथा होवे नाहीं । ऐसे बच सुन हो उदास गई जिन ग्रह माहीं ॥ ७२ ॥ नमन कियो तहं जाय बहुर मुनिवर ढिग आई । कहत भई इम बैन सुनो गुर चित्त लगाई ॥ ७३ ॥ हमरे जिनमत माहिं कोई नर है इस लायक । बौद्ध न देय हटाय बाद करके शुभ दायक ७३॥

दोहा।

बौद्ध गुरु को जीत कर, मेरी वांछा सार।
पूरे रथयात्रा करे, इसही नगर मझार ॥ ७३ ॥
इस लायक नर कौन है, सो कहिये भगवान।
तब मुनिवर कहते भये, सुन पुत्री गुणखान ॥७४॥

चौपाई

मान्यखेट नगर शुभ जान। तामें पण्डित हैं बुधवान।
इनको जीतन समरथ होय। यामें संशय नाहीं कोय ॥ ७५ ॥
मदन सुन्दरी वच सुन तेह। कहत भई सुनिये गुर येह ॥
कोप सहित जो सर्प कराल। डसन हेत आयो तत्काल ॥७६॥
दूर देश में गारुड़ होय। तो वह नर जीवे किम सोय।
ऐसा कह प्रभु पूजन करी। जिन ग्रहमें परतिज्ञा करी ॥ ७७ ॥
संघश्री पापी है सोय। उसको मत विध्वंसे कोय।
पूरब्बवत रथयात्रा करूं। जिन प्रभावना बहु विस्तरूं ॥ ७८ ॥
तो मैं भोजन करूं ललाम। नातर प्राण तजूं इसठाम ॥
ऐसी बिध परतिज्ञा धार। कायोतसर्ग खड़ी तिहबार ॥ ७९ ॥
श्रीजिन प्रतिमा आगे सार। नमोकार शुभ मंत्र उचार ॥
मेरु चूलका वत अति धीर। निश्चल ऊभी गई गंभीर ॥८०॥
पीछे अर्ध रात्रि जब गई। याके पुन्य प्रभावें सही।
देवी चक्रेस्वरी उदार। तिस आसन कम्पो तिह बार ॥८१॥
अवध ज्ञान ते ज्ञान तुरन्त। तबही आई हर्षित वंत ॥
कहत भई ऐसे वच ताम। मदन सुन्दरी सुन अभिराम ॥८२॥
तेरो मन जिन चरण मझार। ताते किंचित भय नहिं धार।
होत प्रभात समय इस थान। आवैगा अकलंक महान ॥८३॥
संघ श्री मद मदन करै। जैन धर्म बहु विध विस्तरे।

रथ प्रभावना कर है सार । तेरी बांछा पूर्न हार ॥ ८४॥
आनन दिव्य धरै वह बीर । जिन मत माहीं साहस धीर ।
ऐसा कह देवी ततकार । जात भई सो जिन आगार ॥ ८५ ॥
देवा के बच सुन तिह बार । रानी आनंद धरो अपार ।
फिर जिनवर की स्तुति करी । पहु प्रकार मुख से उच्चरी ॥८६॥
भयो प्रभात समय सुखदाय । तब प्रभु को अभिषेक कराय ।
पूजन कीनी चित्त लगाय । अष्ट प्रकार द्रव्य शुभ लाय ॥८७॥
जे चर कारज में परवीन । चारों दिश भेजे गुण लीन ।
कहत भइ ऐसे समभाय । जावो बेग न ढील कराय ॥ ८८ ॥
जहं देखो अकलंक महान । लावो बेग सही बुधवान ।
ऐसे सुन चाले तत्काल । ढूंडन हेत सबै गुण माल ॥
पूरब दिश जो गए प्रवीन । तरु अशोक नीचे तिनचीन ॥
केइ यक शिष्यनको समुदाय । तिष्ठत हैं ताढिग हरषाय ॥६०॥
सर्ब शास्त्र के जानन हार । प्रोढत देखे बाग मझार ॥
एक शिष्य से पूछ तुरन्त । रानी से आ कहो ब्रतंत ॥६१॥
सुनतेही रानी तिह बार । बड़ी बिभूति लई निज लार ।
सब परजन युत चढ़ झंपान । प्रीत सहित पहुंची तहं आन ।।६२॥
वात्सल्य गुण धरै अधिकार । बन्दनकीनी सीस नवाय ।
स्तुति कीनी विविध प्रकार । श्री अकलंकदेव की सार ॥६३॥

दोहा ।

जैसे रवि उद्योत में, खिलै कमलनी सोय ।
अथवा गुण आतम लखै, त्यों रानी सुख जोय ॥६४॥
चन्दन अगर कपूर शुभ, अरु बहुविध के चोर ॥
धर्म राग रानी गहो, पूजे अकलंक धीर ॥ ६५ ॥

पद्धड़ी ।

आतम पवित्र अकलंक देव । पंडित बुध आकर कहत ऐव ॥
तुमरे अरु सब संघ के मझार । बरतत है कुशल अनंतकार ।९६।
ऐसे सुन रानी हो उदास । आसूं जुत नैन किये प्रकाश ॥
हो स्वामी सुनिये धर्म लीन । ऐसेतो कुशल सबहै प्रवीन ॥ ९७।
पण सबही संग अपमान थाय । यह तिष्टत हैं बहु दुःखपाय ॥
संघ श्रीनामा बौद्ध थाय । ताको सब भेद कहो सुनाय ॥ ९८॥
रानी बच सन अकलंक देव । बहु क्रोध सहित बोले सुयेव ॥
क्या संघश्री हे दीन रंक । मद कर उद्धत जैसे पतंग ॥ ९९ ॥
मोसूं समरथ नहि वाद बीच । वह बौद्धन को गुरुहै सुनीच॥
ऐसे कह बहु संतोष कीन । बुध धारक वे पण्डित प्रवीन ॥१००॥
तबही लिखवाद सुपत्र संत । संघश्री पै भेजो तुरंत ॥
अरु आप चित्त उच्छाह ठान । जिन भवन गए रंजाय मान ॥१॥

दोहा ।

वाद पत्रको देखकर, बौद्ध गुरू तिहवार ।
और पराक्रम बहु सुनो, बाद करो तत्कार ॥ २ ॥
अपनी शक्ति प्रकाशयो, अकलंक देव उदार ॥
नाना विधि उत्तर दिये, जैन वचन अनुसार ॥ ३ ॥

चौपाई

संघश्री तब चित्त विचार । मैं इन से नहिं जीतन हार ॥
जेते बौद्धन के समुदाय । सब देशन ते लिए बुलाय ॥ ४ ॥
पहिले सिद्ध करी थी जोय । तारा नाम देवी सोय ॥
ताके आह्वानन विधि ठान । तहां बुलाई बहु करमान ॥ ५ ॥
तासों कहत भयो इम बैन । सुन देवी तू है सुख दैन ॥
या नरते इस बाद मझार । मैं तो जीत सकूं नलगार ॥६॥

ताते सुन्दर तुम इस धाम। बाद ठान जीतो सुखधाम ॥
ऐसे सुनकर देवी सोय। कहत भई ऐसेही होय ॥ ७ ॥
राज सभा के बीच सुजाय। आड़ो पट तुम खड़ो कराय ॥
माटी को इक घट मंगवाय। ता मांही मो दे बैठाय ॥ ८ ॥
पीछै बाद तनो बिस्तार। कीजो तू इस सभा मंझार ॥
ऐसे बच सुन बौध मलीन। वाही भांति कपट तिन कीन ॥९॥
इम कहकर तिष्ठो तहँ सोय। मेरो मुख मत देखो कोय ॥
बहु प्रकार पूजाकर भाय। देवी कुंभ मांहि पधराय॥ १० ॥
जबही बाद करन यह लगो। अक्षर शब्द अर्थ में पगो।
तबही श्री अकलंक सुआय। तिसको खंडन कियो पलाय ॥११॥
अनेकांत मतके अनुसार। बौद्ध पक्ष खंडो तिहबार ॥
अपने मतकी जगमग जोत। कीनी भव वर्जित उद्योत ॥१२॥

दोहा।

या प्रकार षटमासलों, भयो बाद विख्यात।
कोइ तहँ हारो नहा, यह अचरज की वात ॥ १३ ॥

सवैया इकतीसा।

तब अकलंक देव रैनके समय मझार, करत बिचार ऐसे चित्त मांही आई है। याही मोह बौधदीन शब्द में नही प्रवीन, एते दिन वाद करो कारन न पाई है॥ ऐसे मन संशय धार छिन एक तिष्ठे एह, एते तहं आई देवी चक्रवती माई है। कहो तु उदारचित तेरी बुद्धहै पवित्र, सप्ततत्व जानवे को तूही सुखदाई है।

दोहा।

अहो वाद तोसो करन, समरथ नोही देव।
यहतो बंधक दीन है, पै है यहां कछु भेव ॥ १५ ॥
बाद कियो षटमासलों, तोसो बुद्धि निधान।

तारादेवी ने सही, यह निश्चय कर जान ॥ १६ ॥

चौपाई।

देवी चक्रेस्वरी महान। ऐसे वच भाषे हित ठान।
अहो पुत्र तू है बुध लीन। विद्यावर पूरन परवीन ॥ १७ ॥
होत प्रभात समय सुखदाय। पहले प्रश्न कीजियो जाय ॥
मान भंग ताको तत्कार। होवैगो नृप सभा मंझार ॥ १८ ॥
तबही तारा देवी जोय। निश्चयकर भागेगी सोय ॥
जैसे भानु उद्योत मंझार। भागे तिमर असंख्य अपार ॥ १९ ॥
तेरी जीत होयगी सही। ऐसे कह देवी तब गई ॥
देवी दर्शनते सुख पाय। अरु वह बचन सुने हितदाय ॥ २० ॥
खिले कमल सम आनन जान। होत भयो तिह बार महान।
प्रातकाल उठयो हरषाय। दिव्य मूर्ति जिन मंदिर जाय ॥ २१ ॥
दर्शन कीनों आनंद लीन। बहुप्रकार वंदन सो कीन ॥
फिरनरपति की सभा मझार। कहत भयो ऐसे तिहबार ॥ २२ ॥
ऐते दिन मैंने इस ठाम। वाद कियो बहु बिध अभिराम ॥
क्रीड़ा मात्र जानियो सोय। तथा प्रभावन कारन जोय ॥ २३ ॥
आज जीतकर भोजन करूं। यह निश्चय परतिज्ञा धरूं ॥
ऐसे कहकर लगो तुरन्त। वादहेत बच कहैं महंत ॥ २४ ॥
पहिले दिना प्रश्न जोकरो. सोकिस बिध हमको उच्चरो ॥
इस प्रकार इनपूछन करी। तबदेवी मन चिंता धरी ॥ २५ ॥
इनके बहुबच वज्र समान। हृदय विषे लागे दुखदान ॥
कहने को असमर्थ हि होय। मान भंग है भागी सोय ॥ २६ ॥
जैसे रवि उद्योत मंझार। भागैं रैन रहै न लगार ॥
तबही अकलंक देव महंत। क्रोध धार उट्ठे गुणवंत ॥ २७ ॥
अंतरपट कर भेद सुरांत। लातमार घट फोड़ तुरन्त ॥

बौद्ध मति को हतानिहवार। मान भंग कीनो तत्कार॥ २८॥
भव्य जीव जैनी जन जेह। तिनके आगे सहित सनेह॥
मदनसुन्दरी नरपति नार। कीनो आनंद सहित अपार॥२९॥
फेर गर्जना सहित सुवैन। भाषत भए महा सुख दैन॥
धर्म रहित संघश्री दीन। बौद्धमती यह महा मलीन॥ ३०॥
पहलेही दिन करके वाद। हरतो याको सब उनमाद॥
पर श्री जिनवर चन्द मनोग। तिनके मत उद्योतन जोग॥३१॥
बहु प्रभावना जगमें होय। ज्ञान उद्योत लखै सब कोय॥
याते मैं देवी के संग। वाद कियो षटमास अभंग॥
ऐसे कह यक काव्य महान। सबही आगे पढ़ो सुजान॥

काव्य।

नाहंकार बशीकृतेन मनसा न द्वेषिणा केवलं।
नौरात्म्यं प्रतिपद्य नश्यति जने कारुण्य बुध्यामया॥
राज्ञः श्रीहिमशीतलस्य सदसि प्रायो बिदग्धात्मनम्।
बौद्धोघान् सकलान् विजत्यसघटः पादेनविष्फालितः ३३

अर्थ कवित्त॥ छन्द॥

अहंकार बशि नाहिं बाद मैंने यह कीनो। अथवा केवल दोष चित्तमें नाहि धरीनो॥ समझो मनमें एम जीव भोले जगमांहीं। बौद्ध धर्म में लीन होय तो नाश लहांही॥ ३४॥ ताते दया सुआन कियो में वाद प्रचारी। हिम शीतल नरनाथ तासकी सभा मझारी॥ आए थे बहु बौद्ध तिनोंकी मति हरलीनी। कीनो जैन उद्योत और घट लात सुदीनी॥ ३५॥ ऐसे वैन महान कहे अकलङ्क सुस्वामी। नृपने दिए निकास बौद्ध जोथे बहुनामी॥ दशों दिशा को छोड़ तबै वे गए पलाई। ज्यों रविके उद्योत होत पग द्योत नशाई॥ ३६॥ ऐसे श्री अरिहंत देवको ज्ञान

प्रभावन । देखो अपनी दृष्टि राय आदिक जे पावन ॥ भक्ति चित्त निज आन तजो मिथ्यामत भारी । जैन धर्म में रागधार भए सम्यक धारी ॥ ३७ ॥ नाना विधके रतन हेम पहु विध ले आए । पंडित श्रीअकलंक तने तब चर्ण चढ़ाये ॥ बहु स्तुति उच्चरी धन्य तुम जन्म लियो है । जैन धर्म परकाश बौद्ध मत नाश कियो है ॥ ३८ ॥

दोहा

मत अरिहन्त जिनेशको, जिन उद्योतहि कीन ।
पूज्य पुरुष या जगत में, क्यों नहिं होंय प्रवीन ॥ ३९ ॥

पद्धड़ी

फिर मदनसुन्दरी जो प्रवीण । रथयात्रा को उद्यम सुकीन ॥
नाना प्रकार रचना समेत । रथ ऊपर लहकत है सुकेत ॥४०॥
रेशम फुन्दे दैदीप्यमान । अरु छुद्र घंटका शोर ठान ॥
जहँ चमर सुलटकत हैं अपार । बहु छत्र फिरें रथ के मझार ४१
अरु रतनदास मोती सुसाल । लटकत है तहं झालर रसाल ।
ऐसो रथ सजयो अति विचित्र । सिंहासन तामध है पवित्र ४२
तामध श्रीजिनवर चन्द्रराय । अस्थापन कीने हरष पाय ॥
तब भव्यन के समुदाय जेह । मुख बोलत जे जैकार तेह ४३॥
तहँ पुष्पनकी वरषा अपार । रथ ऊपर करत सु बार बार ॥
झाझर मृदंग कंसाल ताल । भंभाफेरी पटहा रिशाल ॥४४॥
बाजत बहु विध सुर ताल लीन । पंडितजन जिनगुणगानकीन
बंदीजन चारण आदि जेह । जिन बृद्धबखानत आन तेह४५॥
अरु गीत नृत्य करती अपार । नारी चाली रथकी सुलार ॥
मानों यह पुन्य तनो सुमेर । चलतो सोहै सबजन सुहेर ॥४६॥
जे भव्यन के समुदाय आय । रानी बहु विध आदर कराय ॥

षट भूषण नाना भांति जेह । तंबोल दिए बहु धार नेह ॥४७॥
रथको देखो बहु हरषवन्त । मानो चलतो सुर तरु दिपन्त ॥
जाका शोभा बरणी न जाय । जन देखत सम्यक लच्च पाय४८
नानाविध सम्मतिजास लार। भव जीव मनोहर पूर्णहार ॥
मानो जसहीका पुञ्जथाय । ऐसा रथ चालो समंमदाय ॥४६॥
सो आचारज भाषे दयाल । सोई रथ हम ध्यावें त्रिकाल ॥
अर भव्यजीव जे हैं उदार । तेभी भावो जग के मझार॥५०॥

सोरठा ।

ऐसे संभावन कियो जिन मतको उद्योत ।
सो सबको प्रापतकरो, सम्यक लक्ष्मी जोत ॥ ५१ ॥
या विध अकलङ्क देवने, ज्ञान प्रभावन कीन ।
और जीव जे जगविषें, नितप्रति करो प्रवीन ॥५३॥

गीता छन्द ।

इस ग्रन्थ के करता कवीश्वर ब्रह्म नेमीदत्त कही ।
श्री प्रभाचन्द्र मुनिन्द्र मुझको सुःख बहु विध दो सही ॥
कैसे हुते मुनिराज जग में ज्ञान के अम्बुध भले ।
गुण रतन उद्यम हृदय माहीं कर्मशत्रुन को दले ॥५३॥
अरिहन्त बरनो ज्ञान उत्तम तास रहस सुपाइयो ।
इन दीप सम परकाश कीनो जगतको दिखलाइयो ॥
अरु देव इन्द्र नरिन्द्र करके बंदनीक महान हैं ।
ऐसे जिनेन्द्र सुचन्द्र जगमें करत सब कल्याण हैं ॥५४॥

सोरठा ।

अर्थ यथारथ पाय, अरु शुभकारन को लखो ।
तब यह छन्द रचाय, बखतावर अरु रतन ने ॥ ५५ ॥

इति श्रीआराधनासारकथाकोष विषे ज्ञानउद्योतकृत श्री अकलंकदेवजीकी कथा सम्पूर्णम् ।

अथ श्री सनतकुमारचक्रवर्ति की कथा

प्रारम्भः ॥ नं० ३

मङ्गलाचरण छप्पय ।

स्वर्ग मोक्ष सुखदैन पंच परमेष्ठी जानो। तिनकी भक्ति सुधार नमन बहु विधमें ठानो ॥ चारित को उद्योत कियो चक्री गुण धारी । सनतकुमार महान भए चौथे हितकारी ॥ तिनकी कथा बखानहूं, सुनो भव्य चित लाइये । तासुनत महा दृढ़ता बढ़ै, बहुविध आनंद पाइये ॥ १ ॥

कथारम्भ चौपाई ॥

एही भरत क्षेत्र सोभाय । तामें बीतशोकपुर थाय ॥
ताको स्वामी बहु गुण पाय । अनंतवीर्य तिस नाम सुथाय ॥ २॥
पटदेवी सीता तसु गेह । नृपको तासों अधिक सनेह ।
तिनके पुन्य उदयते सार। उपजो पुत्र जुसनत कुमार ॥ ३ ॥
चौथो चक्रवर्ति बरबीर । सम्यकवंत शिरोमणि धीर ।
षट खंड साधे भुज बलधार । नवनिध चौदह रतन भंडार ॥४॥
अरु चौरासी लाख करिंद। नव्वै सहस बतीस नरिंद ।
सहस चौरासी रथ शुभजान । कोड अठारह घोटक मान ॥५॥
सुवरणके गहनन करजोय । दिव्य मनोहर बहुविध सोय ॥
कोट चौरासी अति बलवंत । शस्त्र सहित प्यादे शोभंत ॥६॥
धानन के समूह करभरे । कोड़ छानवें ग्राम सुखरे ।
सहस छानवे वनितागेह । तिनते राखत अधिक सनेह ॥ ७ ॥
इत्यादिक संपति भंडार । चक्र वर्तिपद धरै उदार ।
देव खगेश्वर नितप्रति आय । सेव करैं तिसकी हरपाय ॥८॥
धरै रूप लावन्य अपार । महाभाग बुध आकर सार ।

श्री जिनचंद तने सो दास। धर्म कर्म धारै गुण रास ॥ ९ ॥

दोहा।

यह विध वहुशोभा धरे, तिष्टत जिन आगार।
प्रथम इंद्र जिन सभामें, इह विध बचन उचार ॥ १० ॥
रूप अरु गुण बरणन कियो, पुरुषन को अधिकान।
तब इकदेव विनय सहित, प्रश्न कियो तिह थान ॥११॥
जैसो वरणन तुम कियो, अहो नाथ गुणगेह।
भरत क्षेत्र में नर कोई, है अक नाही तेह ॥ १२ ॥

अड़िल्ल ॥

तबै इन्द्र महाराज बचन इम उच्चरै। चक्री सनतकुमार रूप इह विध धरै ॥ तैसो रूप महान सुरनको भी नही। औरन की कहा बात जो शोभा उन लही ॥१३॥ ऐसे सुनके बैन तबै सुरयुग मिले मणिमाली अरु रतनचूल जव ही चले ॥ १४ ॥ रूप देखने काज न्हौन थानक गयो। छिपकर देखो और महा आनंद लयो। १४। बस्त्राभूषण रहित नगन तन धारहै। तौ पणतीन जगतको मोहन हार है ॥ जबही अमरन चितमें विस्मय आनियो। सिरहलाय कर इन्द्र बचन सत जानियो ॥ १५ ॥

दोहा।

हरष धार द्वारे गए, अपनो रूप प्रकास।
द्वारपाल सो इम कहो, जावो चक्री पास ॥ १६ ॥
ऐसे बचन बखानियो, तुम देखन को एव।
स्वर्ग लोक ते आन कर, तिष्टत द्वारे देव ॥ १७ ॥

पद्धड़ी

तब द्वारपाल सुन बच प्रबीन। पृथ्वी पति के ढिग गमनकीन ॥
जाकर सबही भाषो व्रतंत। सुन नरपति हूवे हरषवंत ॥१८॥

तनको बहुविध शृंगार कीन । पट भूषण बहु पहरे नवीन ॥
बहु शोभावत तिष्ठो महंत । युग त्रिदश बुलाय लिये तुरंत ॥१९॥
तब सभा विषै युगदेव आय । इन रूप देख इम बच कहाय ॥
है कष्ट बड़ो इस जग मझार । छिन भंगुरमानुष रूप धार ॥२०॥
जैसे हम देखो न्होंन थान । तन लेप सहित दै दीप्य मान ॥
सो अब दाखत नाहीं लगार । तातें यह सब जग है असार ॥२१॥
नृपहुते सभाके बीच जेह । तिन कहो सुनो बच देव येह ॥
जैसोमंजन थानक मझार । नृप रूप हुते तैसो अवार ॥ २२ ॥
ऐसे बच सुन निरजर प्रवीन । जल भरो कुंभ मंगवाय लीन ॥
सबको दिखाय घट पूर्णवार । फिर बाहर जन दीने निकार ॥२३॥
तब चक्रवर्ति देखत दयाल । तृणते इक बूंद दई निकाल ॥
सबही जन फिर लीने बुलाय । जल भरो कुंभ उनको दिखाय २४॥
युग सुर तिनसे पूछन सुकीन । इसमें जल पूरण है किहीन ॥
जैसे पहिले हमने निहार । उतनोही है कम नहिं लगार ॥२५॥

दोहा ।

तबै देव कहते भये, सुन चक्री बुधिवान ।
रूप तिहारो इम घटो, जिम जल बूंद न जान ॥ २६ ॥
ऐसो कहकर देव युग, गए सुनिज आगार ।
चमत्कार चक्री लखो, मनमें करै विचार ॥ २७ ॥

छन्द जोगीरासा ।

पुत्रमित्र नारी परियन जन चपलावत नशिजावे । इह शरीर अपवित्र विनावन नितप्रति ताप बढ़ावै ॥ विनशजाय क्षण मांहीं दीखत पंडित नेह न लावैं । पंचेंद्री के भोग चोर तिनसे यह जीव ठगावैं ॥२८॥ इन भोगन कर ठगे जीव बहु है पिशाच सम नाचैं । अमृत सम जिन बैन मनोहर मिथ्याकार नहिं राचैं ॥ यह

ज़ड़ बुद्धी ज्ञान बिना सठ निजरस मे नहि पागै। जैसे ज्वर वाले को मिश्री दूध जहर सम लागै ॥ २९ ॥

दोहा।

चक्रवर्ति इम चिंतवै अबही मोह जंजाल।
तजकर आतम हित करूं, लूं दीक्षा दरहाल ॥ ३० ॥
तत्पर हो वैराग में, जि पूजन बहु कीन।
करुणा भाव जुधार कर, दान बहुत जब दीन ॥ ३१ ॥

चौपाई।

देव कुमार नाम सुत जास। ताको राज दियो सुखराज ॥
बुद्धि रूप धनको आवास। आपगयो श्री मुनिवर पास ॥३२॥
नाम त्रिगुप्त दिगम्बर धीर। तिनको नमन कियो बरवीर ॥
हितकारी जो जगत मझार। बड़ी भक्ति से दीक्षा धार ॥
नग्न उग्र तप करत महान। पाले पंच महाबृत जान ॥
ऐसो चक्रवर्ति जोगिंद। करै तपस्या अति गुण वृंद ॥ ३४ ॥
प्रकृति बिरुद्ध अहार पसाय। सब शरीर में रोग लहाय ॥
खुजली आदिक बहु दुखदाय। तौ पण चिंता कछु नकराय ।३५।
तनसे निस्नेही मुनिराय। उत्तम तपको बहुत तपाय ॥
तिस अवसर में प्रथम सुरिंद। सभा विषै तिष्ठे गुणब्रिंद ॥३६॥
धर्म रागते करो बखान। पंच प्रकार चरित्र महान ॥
पालैं जे धन जगत मझार। हरष सहित ऐसे उच्चार ॥ ३७ ॥
मदन केतु इक देव महान। मघवाते पूछो तिहथान ॥
जो प्रभु तुम चारित्र बखान। सो हम निश्चय उरमें आन ।३८।
परे इस भरतक्षेत्र इस काल। सम्यक दृष्टी नर गुण माल ॥
चारित्र धारी हैं इक नही। सो तुम नाथ कहो अब सही ॥३९॥
तबै पाकसासन उच्चार। चक्रवर्ति जो सनत कुमार ॥

तृणवत् जान राज तज दीन। सो निस्प्रेही चारित्र लीन ।४०॥
सुनाशीर ऐसे उच्चरी। सब अमरन ने शरधा करी।
मदनकेत अचरज चितलाय। देखनको आयो उमगाय ॥४१॥
वन में देखे मुनि गुण माल। सब जीवन के हैं रिछपाल।
रोग अनेक रह वपु छाय। पर सुमेर सम, ध्यान लगाय ॥४२॥
सुर अरु असुरन मैं नित चर्ण। चारित धारी मुनि दुखहरण।
पृथ्वीतल पवित्र कर सोय। ठाठे आतमको अवलोय ॥४३॥

दोहा।

ध्यान लीन ऐसे लखे, श्रीगुर दीनदयाल।
वैद्य रूप सुरधारक, बोले वचन रसाल ॥ ४४ ॥
मैं सब वैद्यन को पती, खोवूं व्याधि तुरन्त।
दिव्य रूप अबही करूं, इह विध शब्द कहंत ॥४५॥

सवैया

ऐसे वच बार बार कहत पुकार सार, आग पीछे मुनि के समीप यह जायके। तब गुरु दीननके नाथ वैन इमकहे, कारन है कोन फिरै वनमें तू आयके ॥ जब सुरकहै मोह वैद्यनको पतिजान, जेते रोग सबदेहु छिनमें भगाय के। कंचन समान छवि तन की बनाऊंबेग, देवो जो हुकम मोहि आप हरपाय कै॥४६

दोहा।

इम बोले तब शिवधनी, जोतू वैद्य निधान।
जन्म मर्ण की व्याधिको, करो दूर बुधिमान ॥ ४७ ॥
वैद्यरूप सुर इम कहो, सुन मुनिवर जगदीश।
दूर करन इम व्याधि को, मैं समरथ नहि इश ॥ ४८ ॥

सोरठा।

जन्म मरण जो व्याध, तात हरण समरथ प्रभु।
तुमही हो जग साध, और वैद्य कोई नहीं ॥ ४९ ॥

पद्धड़ी ।

तब मुनिवर कहत सुनाय एम । तन व्याध हरण कारन सुकेम ॥
यह है शरीर अपवित्र जोय । निर्गुन दुर्जन समजान सोय ५०।
हमव्याध हरन इच्छा जुधार । नासामलते टारैं अवार ॥
तब वैद्य तनी औषधि अपार। तिसतें क्या काज हिये बिचार।५१॥
ऐसा कह नासामैल लीन । भुज रोग सबै नासो प्रवीन ॥
सुबरन सम बांह तबै दिपंत। माया तजप्रगटो सुर तुरन्त । ५२॥
फिर नमन ठान अरु इम उचार । स्वामी चरित्र तुमरो उदार ॥
अचरज कारी निरदोष सार । अरु तनमें निस्प्रेही अपार।५३॥
ऐसो निज सभा बिषै सुरेश । बरनो जैसा देखो बिसेश ॥
ताते तुमअवनी में महान । भन तुमरो जनम दया निधान ५४॥
सब जनको तुम सुखदैनहार । इम स्तुति कीनी बार बार ॥
चित भक्ति धारकर नमस्कार । वह देव गयो अपने अगार ॥५५॥

दोहा ।

सनत कुमा मुनीश तब, करतसो निज कल्यान ।
चारित्र पंच प्रकारको, करोउद्योत महान ॥ ५६ ॥
शुक्ल ध्यान करकर्मअरि, चार घतिया नाश ॥
इंद्र चंद्र पूजते चरण, केवल ज्ञान प्रकाश ॥ ५७ ॥

चौपाई ।

तबै केवली सनत कुमार । धर्म रूप बरषावत बार ॥
भव जीवन को दे उपदेश । रहे कर्म सब नाश असेश॥ ५८॥
तबही पहुंचे मोक्ष सुथान । नंत गुणों की आकरजान ।
तिष्टे सिद्धथान गुण लीन । आवागमन रहित परवीन ॥ ५९ ॥
सम्यक्तादि अष्ट गुणसार । ताकर शोभित ज्ञान भँडार ।
बंदन किए महंत । निज लक्ष्मी सों दो भगवन्त ॥ ६०॥

सनत कुमार मुनी जगपोत। चारित्रको कीनो उद्योत॥
तैसे और भव्य जन जेह। बहु विध कर परकाशोतेह॥ ९१॥

छप्पय छन्द।

गच्छ भारती मांहि मूल संघी सुखदाई। श्री भट्टारक नाम मल्ल भूषण वरदाई॥ तिनके शिष्य महान सिंघ नन्दी मुनिजानो। गुण रतनन की खान बुद्धि तिनकी वरमानो॥ सो मुझको संसार ते, तारन हार दयाल हैं। भव जीवन को शुभगति करैं, ऐसे गुरु गुण माल हैं॥ ९२॥

सोरठा।

ब्रह्मनेमिदत जान, कथा तीसरी वर्णई।
तापर छन्द बखान, की वखतावर रतन ने॥ ९३॥

इति श्री आराधना सार कथा कोप विषै सनतकुमार जी जक्री की चारित्र उद्योत में कथा समाप्तः

अथ श्री समंतभद्र स्वामी की दर्शन

उद्योत कथा प्रारम्भः॥ नं॰ ४

मंगलाचरण॥ सवैया इकतीसा।

तीन जगतके सुजीव पूजैं चरनारबिंद, ऐसे अरिहंत जिन ताको शीश नायकै॥ सम्यकदरश सार तासको उद्योत कीनो, श्रीमत समंतभद्र शूर चित्त लायकै॥ तिनकी कथा महान सोई मैं करू बखान, सुनो भव्य जीव तीनो जोग को लगायकै। जासके सुनत ही ते सम्यकदरश होत, जा तत्काल भाग दुरनय पलाय कै॥१॥

चौपाई।

भरतक्षेत्र आरज खंड जान। ताकी दक्षण दिशा महान॥
काशीपुर शुभ नगर बसात। तामें पंडित मुनि विख्यात॥ २॥
आतम ज्ञानी बहु बुधवान। तर्क छन्द व्याकरण निधान॥

अलंकार आदिक जु पुरान। तिनको जानै रहस पुमान ॥ ३ ॥
चारित मणि को सागर सार। स्वामी समंतभद्र हितकार ॥
तिष्टत है तहँ ध्यान लगाय। कर्म असाता उदय पसाय ॥४॥
भस्म व्याधि उपजी तन आय। तीव्र कष्ट दाई अधिकाय ॥
तिसी व्याधि कर पीडित मुनी। तपकाय चित चिंता ठनी ॥ ५॥
इस प्रथ्वी तल पे तप करो। दर्शन उद्योतहि बिस्तरो ॥
अब यह भस्म व्याधि दुखदाय। उपजी हमरे तनमें आय ॥ ६॥
इसके नाश करन ततकाल। कोई बिध कीजो दरहाल ॥
घृत मिश्रित पकवान मनोग। तामों नाश होय यह रोग ॥७॥
यहां अहार प्राप्ति नहि होय। तातें भेख धरूं अब कोय ॥
कोई थान कोइ भेष बनाय। इस को उपसम कीजो जाय ८ ॥
ऐसो मनमें धार बिचार। तबही काशीपुर को छार ॥
उत्तर दिश को चले तुरन्त। पौडोंड नगरी पहुचंत ॥ ९ ॥
बौद्धमतन के मठ तिह थान। तहा जो दान बटै अधिकान ॥
देख जबै मन हरष सुधार। बौद्ध रूप कीनौ तत्कार ॥ १० ॥
तहां भी अल्प अहार पसाय। क्षुधा रोग नहि उपसमथाय ॥
तहँ ते निकस चले बुधवान। बहुत नगरमें कियो पयान ॥११॥

दोहा।

केतक दिन में पहुंचयो, दशपुर नगर सुजाय।
क्षुधा लीन अति दुखित है, देखे मठ अधिकाय ॥ १२ ॥
भगवत भेषी तहँ रहैं, है तिको समुदाय।
जैसे वायस वन विषै, दीखत है अधिकाय ॥ १३ ॥

चौपाई।

उनके सेवक दान जु देत। सदा काल अति हर्ष समेत ॥
लख मत बौद्ध सुढाल। भगवा भेष धरो तत्काल ॥ १४ ॥

तहां भस्म व्याधी नहिं गई । तन में साता नेक न भई ॥
वहँ से निकस चले दरहाल । दशों दिशा में फिर दयाल ॥१५॥
भ्रमते पहुंचे काशी देश । तामें नगर बनारस वेश ।
तहं परवेश कियो हरषाय । जानी यहां मम क्षुधा पलाय १६॥
वै समन्तभद्र वरवीर । हिरदे सम्यक् धरो गंभीर ।
भस्म व्याधि संयोग पसाय । वाह्य भेष अनेक बनाय ॥१७॥
जैसे कम्प माहिं है लाल । तैसे वाहज येह गुण माल ।
नगर बनारस में अधिकाय । जोगी जनके हैं समुदाय ॥१८॥
तब इन भगवा पटको छार । जोगी रूप कियो तत्कार ॥
शिव कोटी राजा कर जहां । करवाए शिव मन्दिर तहां ॥१९॥
भेद अठारह धान मनोग । मिश्री युत तहां चढै सुभोग ।
तहां देख मन कियो विचार । यहँ मम व्याधि होय निरवार२०॥

दोहा

करत विचार सु इम तहां, सेवक नृप के आइ ।
नैवेद्य के पिण्ड बहु, शिवको दियो चढ़ाय ॥ २१ ॥
फिर उठाय बाहर नख्यो, देख्यों मिशड गिरात ।
तब जोगी ऐसे कहो, सुनो सबै तुम बात ॥२२॥

पद्धड़ी

अहो राज्य में समरथ कोई है नहीं । षटरस कर संयुक्त महा उत्तम सही । आह्वानन कर शिवको देय खुवायही । जाकर पुन्य भंडार भरें अधिकायही ॥ २३ ॥ ऐसे इनके बैन सुने सेवक जबै कहत भये क्या तुम में समरथ है अबै ॥ समन्तभद्र इम बैन कहे हरषाय के । है समरथ मुझ माहिं कहो नृप जायके ॥ २४ ॥

दोहा

सुनतेही सेवक तबै, नृपपे गये सुभाज ।

शिवथानक जोगीश इक, तिष्टत है महाराज ॥२५॥
तुम भेजो नैवेद्य सो बाहर गेरत देख ।
कहत भयो बच एम तब, जोगी सुन्दर भेख ॥२६॥
मैं भोजन इस देव को, करवाऊं तत्कार ।
आह्वानन विधि ठानके, इह विध वचन उचार ॥२७॥

अडिल्ल

इम सुन शिव कोटी तब नरेश । मन माहीं हरष धरो विशेष ।
नाना प्रकार पकवान सार। घृत दधि के कुम्भ लिए सुलार २८
पूरी पापड़ रस ईख जेह । सत कलेश भरे लायो सुतेह ।
जोगी के ढिग आयो तुरन्त । बोलो नृप बच तब हर्षवन्त २९॥
अब देव तनो भोजन कराय । सुन जोगी बोलो हर्ष पाय ॥
मैं करवाऊं भोजन अपार । इम कह सामग्री ली उदार ॥ ३० ॥
मंदिर भीतर परबैश कीन । सेवक जन बाहर काढ़दीन ॥
अरपाट जुगल तबही भिड़ाय । वह सब सामग्री आप खाय ३१
फिर खोल किवाड़ कहो पुकार । भोजन बाहर सबलो निकार ।
तब नरपति चित आश्चर्य धार। नितप्रति भेजे पकवान सार ३२।
शिव मन्दिर में बहु धार प्रीत । षटमास भए ऐसे ब्यतीत ॥
तब भस्म ब्याधि उपशांति थाय। भोजन बाकी नितप्रति बचाय ३३

दोहा ।

जो अहार मरजाद थी, तितने पै वह राय ।
भोजन बचतो देख के, सेवक बोले आय ॥ ३४ ॥
हो जोगी यह क्यों बचै; नित भोजन अभिराम ।
समंतभद्र तब इम कहो, अब तुम सुनो ललाम ॥ ३५ ॥
नृपकी भक्ति सुबहु लखी, तृप्ते देव महान ।
ताते भोजन अल्प अब, लेन लगे सुखमान ॥३६ ॥

चौपाई

इम वच सुन सेवक जन जेह । नृपसों जाय कहो सब तेह ॥
तब इसचरित निहारन काज । नृपने कीनो एम इलाज ॥ ३७ ॥
सूके पुष्पन में नर कोय । मोरी मध्य छिपायो सोय ॥
किह विध भोजन देव कराय । सो चरित्र तुम देखत जाय ॥ ३८
उन देखो सो कहो तुरन्त । नरपति आगे सब बिरतन्त ॥
जोगी भोजन आप सुखाय । शिवपर पग धर सैन कराय ॥ ३९ ॥
शिवकोटी सुन बैन सुएव । हिरदे कोप धरो बहु भेव ॥
जोगी से वच कहे सुनाय । तू धूरत झूठो अधिकाय ॥ ४० ॥
तूही भोजन नितप्रति करै । देव नाम बिरथा उच्चरै ॥
अर नहिं नमन करै किस काज । भेद बतावो हमको आज । ४१ ॥
कहे समन्तभद्र वच एव । रागद्वेष जुत हैं यह देव ॥
हमरी नमस्कार परवीन । यह सहने समरथ नहिं दीन ॥ ४२ ॥
अहो महीपति सुन मुझ बैन । दोष अठारह जिनके हैन ॥
केवल जुत अरिहन्त सुएव । मेरी नमन सहैं ते देव ॥ ४३ ॥
तातै इस कुदेवको जदा । नमस्कार करहुं नहिं कदा ।
जो मैं नाऊं इसको भाल । तेरो देव फटै तत्काल ॥ ४४ ॥
इनके वच सुनके नर नाथ । कहत भयो तू नाय सुमाथ ।
खंड खंड होव तो होय । हम देखैं तुमसमरथ जोय

दोहा

तब जोगी ऐसे कही, तुम सुनिये नरनाथ ।
निज सामर्थ दिखायदूं, होत समय परभात ॥ ४६ ॥
तब नरनायक बोलियो, ऐसीही जो होय ।
इम कह इनको लेगयो, मंदिर पीछे सोय ॥ ४७ ॥

काव्य

तब पृथ्वीपति जतन कियो बहु विधि तिह ठाई ।
असि जिनके करमाहिं सुभट चौकी बैठाई ॥
गज समूह चहुं ओर खड़े घूमैं मतवारे ।
इम रत्नाकर नृपति गयो निज धाम मझारे ॥ ४८
समंतभद्र महाराज रात को एम विचारी ।
मैंने जलदी माहिं बचन नृपसे उच्चारी ।
सो होवै अक नाहिं यही संशय मन माहीं ॥
ऐसो चिंता करी प्रभूको ध्यान कराहीं ॥ ४९ ॥
जिन शासन रिछपाल अम्बका देवी तबही ॥
निज आसन कम्पाय आय इनके ढिग जबही ।
कहत भई जोगींद्र सुनो तुम बैन हमारे ।
निज चरणाम्बुज भ्रमर समां सब जगको प्यारे ॥५० ॥
तुम सम दृष्टी जीव करो मत चिंता कोई ।
जोतुम नृपसे कहीहोय सोनिश्चय सोई ।
चौबिस जिन महराज तनी अस्तुति उच्चारो ।
रचोस्वयंभू पाठ कोट सुख को दातारो ॥ ५१

दोहा

यह स्तुति उच्चारके, तू न्यावैगो माल ।
सहस खंड उसदेव के होवैंगे तत्काल॥ ॥५२॥
वह देवी जिन भक्ति जुत ,ऐसेकह शुभ बैन ।
जात भई निज गेहको, भवि जनको सुख दैन ॥५३

चौपाई

देवी के दर्शन पाय । बिगसत आनन अंग न माय ।
निजकोपाठमनोग । रचतभयो शुधकर त्रयजोग ।५४॥

सुखसे तिष्ठे वुद्धि निधान । इतने प्रगटो भानु सुज्ञान ।
सागी नगरी के जन जेह । नृप जुत आए सब शिवगेह । ५५ ॥
कौतूहल जुत देखन हार । वेग उघारो शिवको द्वार ।
समंतभद्र को बाह्य बुलाय । देखो नृप ने विकसित काय ॥ ५५ ॥
सूरज सम तेजस्वी जान । आनंद चित्त घरे अधिकान ।
ऐसो लख शिव कोटी राय । मन विचार यह भांति कराय ॥५७॥
दिव्य मूर्ति दीखै जोगिंद । पालैगो निज बच गुण वृन्द ।
इम विचार बोलो भूपाल । अहो देव को नावो भाल ॥ ५८
हम देखैं तुम शक्ति प्रवीन । तब श्री समंतभद्र यह कीन ।
बहु विधभक्तिहिये मेंआन । चौबीसी जिन स्तुति ठान ॥५६
देव वचनकर आरम्भ कीन । पढ़ो पाठ अति आनंदलीन ।
अष्टम तिर्थेश्वरजिनचंद । तिन स्तुति कीनी जोगिंद ॥ ६० ॥
जितने मुखते करै उचार । तितने शिव दीरघ आकार ।
खंड खंड तिस काया भई । सब जनके देखत फट गई ॥ ६१ ॥
तबहीप्रतिमाअधिक रसाल ।चतुर्मुखी निकसी तत्काल ।
चंद्र प्रभूकी अति छबिवान । देखत जन जै जै बच ठान ॥६२
कोलाहल लख नप तिहबार । अतिशय देखो नैन निहार ॥
कहत भए सुनिये जोगीश । कौन पुरुष तुमहो जगदीश ॥ ६६
दीरघ समरथ धारी आप । ऐसे नृपने बचन अलाप ॥
तबही समंतभद्र सब कहो । दो काव्यन में सब बरनयो ॥ ६४ ॥

संस्कृत ॥ काव्य

काञ्च्यां नग्नाटकोऽहं मलमलिततनुर्लाम्बुशे पाण्डुपिण्डः ।
पुण्ड्रोण्ड्रे शाकभक्षी दशपुरनगरे मृष्टभोजी परिव्राट् ॥
वाराणस्यामभूवन्शशधरधवलः पाण्डुरागस्तपस्वी ।
राजन्यस्यास्तिशक्तिः स वदतु पुरतो जैननिर्ग्रंथवादी ॥ १

पूर्वं पाटलिपुत्रमध्यनगरे भेरी मया ताड़िता।
पश्चान्मालवसिंधुठक्कविषये कांचीपुरे वैदिशे॥
प्राप्तोऽहं करहाटकं बहुभटैर्विद्योत्कटैःसंकटं।
वादार्थी विचराम्यहं नरपते शार्दूलविक्रीडितं॥ २॥

चौपाई

यह वृतांत सब कह परवीन। तजो पिनाकी लिंग मलीन॥
मोर पिच्छिका सहित तुरन्त। भए निर्ग्रंथ जतीश्वर संत॥६५

दोहा

खोटे मतधारन ते, मत एकांती जोय।
अनेकांत परभाव ते, जीतैं छिनमें सोय॥६६

पद्धड़ी

जो सुरग मुकत दायक रसाल। ऐसे श्रीजिनको मत बिशाल॥
ताको उद्योतन बहु कराय। उत्तम सम्यक्दर्शन पसाय॥६७॥
यह धीर बीर गुणवंत सार। अब काल अनागत होनहार॥
तामें तीर्थंकर पद दयाल। पावेंगे निश्चय सुगुण माल। ६८॥
शिव पिंडी को इन खंड कीन। यह कवि सत्तम जगमें प्रवीन॥
सब वादीगण दीने नशाय। श्रीसमन्तभद्र निर्ग्रंथ काय॥ ६९॥
श्री जिनवर कर भाषो सुज्ञान। ताको उद्योतन बहुत ठान॥
ऐसो भारी अचरज लखाय। नृप आदिक बहुजन हर्षपाय ७०।
श्रीभगवतचंद तनो सुधर्म। तामें दृढ़होय तजो सुभर्म॥
अरु शिवकोटी राजा उदार। क्षय उपशम चारित्र मोहकार ७१
सब राज त्याग दिक्षा महान। लीनी तबही सुखकी निधान
धर बहु बिबेक हिरदे मझार। शिव कोटी मुनि बैराग धार ७२
गुरु भक्ति करी इनने अपार। तातें हिय ज्ञान बढ़ो उदार॥
लोहाचारज कृत पुरान। चारों आराधन को बखान॥ ७३

चौरासी सहस्र श्लोक थाय । ताको इनने टीका रचाय ॥
चौंतीस सूत्र तामें उचार । संख्या ताको ढाई हजार ॥ ७४ ॥
अब काल अल्प अरु तुच्छ काय । तातें संक्षेप दियो बनाय ॥
सोई आराधन जग मझार । सबही जनको आनन्दकार ॥ ७५ ॥

गीता छंद ।

श्री मूलसंघ विषै भए देदीप्यमान सु जानये ।
सम्यक्त दर्शन ज्ञान चारित्र नाम वारधि मानिये ॥
विद्या सुनन्द गुरु हमारे काम जग को हरवली ।
श्री मल्लभूषण जी भट्टारक सकल दुरनय जिन दली ॥ ७६ ॥

दोहा

जैन शास्त्र षटमत विषै, है परवीन दिनेश ।
सो शिव लक्ष्मी दो मुझे, किरपाधार विशेष ॥ ७७ ॥
ब्रह्म नेमिदत्त देव वच, बरनो यही पुरान ।
ताकी भाषा को करो, बखत रतन हितठान ॥ ७८ ॥

इतिश्री आराधनासार कथाकोस विषय श्रीसमन्तभद्र स्वामिनू दर्शनज्ञान उद्योत कथा सम्पूर्णम् ।

अथ श्रीसंजयन्त मुनीकीकथा प्रारम्भः

मंगलाचरण सवैया तेतीसा नं ५

श्रीअरिहंत जिनेश्वरजी तिनके चरनारसुविंद जजेरे । है सुपवित्र महा सुखदाय हरै दुख ताप सबै जन केरे ॥ ताहि नमूं सिरनाय अबै तुम हूजे दयाल प्रभू अब मेरी । श्रीपतको उद्योतनकीन कहूं जिनकी सुकथा अब टेरी ॥ १ ॥

दोहा

संजयंत नामा मुनी, प्रगट जगत में सार ।
ताकी कथा सुहावनी, बरनूं बुध अनुसार ॥ २

चौपाई

सब दीपन मध्य जम्बूदीप। जो सब जगमें दिपै महीप
मेरु सुदर्शन तामध जान। देश विदेह सुपश्चिम थान ॥ ३ ॥
गंध मालनी देश विख्यात। बीतशोक नगरी अवदात ॥
तिसको बैजयंत नर नाथ। भव्य श्री रानी तिस साथ ॥४ ॥
तिनके संजयंत सुजयंत। जुगम पुत्र उपजे गुणवंत ॥
एक दिना चपला बिकराल। अम्बर तें जुपड़ी तत्काल ॥५ ॥
ताकर पट्ट बंध जुकरिन्द। भस्म होत देखो सुनरिन्द ॥
तब मनमें बैराग उपाय। दोनों सुत लीनो बुलवाय ॥ ६ ॥
राज संपदा को बहु भार। तिनको देन लगो तत्कार ॥
तब दोनों सुत बोले बैन। सुनो तात हम बिनती ऐन ॥७ ॥
आप चतुर हो अरु शुभ राज। होते क्यों छोड़ो महराज ॥
हमतो ग्रहण करैं नहिं कदा। पंडितजन कर बर्जित सदा ॥८ ॥
ऐसे बच सुन नृप बुधलीन। पोतें कोबुलावाय प्रवीन ॥
संजयंत को पुत्र महान। बिजयवंत तिस नाम सुठान ॥ ९ ॥
ताको राज संपदा दई। युगम पुत्र जुत दिक्षा लई ॥
नाना बिध तप तपैं मुनीश। वैजयंत नामा जगदीश ॥१० ॥
शुक्ल ध्यान में अग्नि प्रज्वाल। चार कर्म नाशै तत्काल ॥
जबही केवल लक्ष्मी पाय। पूजन को आए सुरराय ॥ ११ ॥

दोहा

तिन अमरन में नाग पति, आयो छबी निहार।
तिस बिभूति सुजयंत मुनि, लख कर कियो निदान १२
इस तप के प्रभाव तें, दूजे जन्म मझार।
मेरे ऐसी संपदा, हूजो सुख दातार ॥ १३ ॥

इम निदान धर मरन कर, भट असुरन के राय ।
नागपती धरनेंद्र जो उपजे पुन्य वसाय ॥ १४ ॥

छन्द

अब संजयंत मुनिराई । तप उग्र करैं अधिकाई
इक पक्ष तने उपवासी । तनक्षीण अधिक सुख रासी ॥१५ ॥
बाईस परीषह जेहैं । सब महैं मुनीश्वर तेहैं ॥
कानन में धारो ध्याना । तिष्ठे थिर मेरु समाना ॥ १६॥
एक दिन रवि सन्मुख कीना । पद्मासन ध्यान प्रवीना ।
आतम से लव जिन लाई । तिष्ठे थे श्री मुनिराई ॥ १७ ॥
खग विद्युदंष्ट अयानो । अम्बर में करै पयानो ॥
मुनि ऊपर गमन करंतो । थंभयो विमान सु तुरन्तो ॥१८ ॥
यह देख खेट तिह बारा । मन मांही करत विचारा ॥
है क्या कारन यह भायो । मुनि लखते क्रोध उपायो ॥ १९ ॥
परभव की बात विचारी । उपसर्ग करो अतिभारी ॥
मुनि आतम माहिं पगे हैं । वहु कष्ट थकी नचिके हैं ॥२० ॥

दोहा

जैसे पवन प्रचंड से, हले न मेरु महान ।
त्यों मुनि इस उपसर्ग ते, चिके न दया निधान ॥२१॥
विद्या के परभाव ते, विद्युदंष्ट अयान ।
संजयंत को ले चलो, क्रोधहिये में आन ॥२२॥

चाल ॥ अहो जगत गुरू की

भरत क्षेत्र में लाय पूरब दिशा भली है । सिंधुवती को आदि नदी जहँ पांच मिली हैं ॥ तहँ मुनिवर को क्षेप देश के जन बुलवाए । यह पापी अति दुष्ट वैन इस भांति सुनाए ॥२३ ॥

अहो सबै सुन लेहु यहै राक्षस अधिकाई। तुम भक्षण के हेत यहां आयो दुखदाई ॥ याको हनो तुरंत यही में बैन सुनायो। तिस बच सुन तत्कार सबैजन क्रोध उपायो ॥२४॥
काष्ट खंड पाषान और तहँ त्रास अपारा। दंत भणते मूढ़ तहां मुनिवर को मारा ॥ तोभी दीन दयाल क्रोध रंचक नहिं आनो शत्रु मित्र सम जान चित्त आतममें ठानो ॥ २५ ॥
चारों कर्म प्रचंड घातकर केवल पायो। तबही हने अघाति बास शिवथान करायो ॥ ताही छिनके माहि सुरासुर पूजन धाए। लघू भ्राताधरनिंद्र भक्ति कर तेभी आए ॥ २६ ॥

दोहा

मुनिवर काय बंधी लखी, क्रोध कियो फणधार।
सबपापी मम भ्रातको, मारो बहु परकार ॥ २७ ॥
इम विचार धरनिंद्र कर, नागफांस कर धार।
सर्व जनन को पकड़ कर, दृढ़ बांधे तत्कार ॥ २८ ॥

चौपाई

तब सब जन इम करी पुकार। अहो नागपति सूनों उदार।
हमरो दोष रंच नहीं मान। कियोसुविद्युदंष्ट अयान ॥ २९ ॥
ऐसे दीन बचन सुन जबै। छोड़ दिए सबही जनतबै।
अरु बह पापी विद्यू दंष्ट। ताको बांध दियो बहु कष्ट ॥ ३०
वारिधमें डोबन तिह बार। लागो फण पति क्रोध सुधार।
तबै दिवाकर निरजर आय। कहत भयो इनको समभाय ॥ ३१ ॥
दीन जीव इह भोफण राज। तिहिके मारन ते क्या काज।
इसका उनका बैर महान। चार जन्मते है दुखदान ॥ ३२ ॥
इन उपसर्ग कराय। कोप करो मत तुम फणराय।

ऐसे वच सुनकर नागेंद । कहो करूं कैसे परवंद ।
तवे दिवाकार देव महान । कहत भयो तुमसुनोसुजान ।
पूरव भवको इन सम्बंद । वैर तनो भाषे गुण ग्रंद ॥ ३४ ॥

पद्धडी

जम्बु सुद्वीप मधमें विख्यात । शुभ भरत क्षेत्र तामें सुहात ।
तिस मांहि सिंहपुर नगरजान । तहँ सिंहसैन नरपतिमहान ॥ ३५ ॥
नारी सु रामदत्ता प्रवीन । श्रीभूत परोहत कपटलीन ।
सुखसों तिष्टे निज नगर माहि । इकपद्मखंडपुर और थाहि ॥ ३६ ॥
ताको वासी इक वनकजेह । गुण उज्जल सेठसुमित्र तेह ।
तिस नारि सुमित्रा चित उदार । वारभद्दत नामा पुत्र सार ॥ ३७ ॥
सत सौच विषय तत्पर सुजान । वाणिजके हेत कियोपयान ।
सो सिंह पुरी आयो तुरंत । ले पांच रतन उत्तम महंत ॥ ३८ ॥
श्रीभूत परोहित पास जाय । ताको सौंपे बहु हर्षपाय ।
फिर उदधदत्त इम वच वखान । यह लेवेंगे निज रत्नआन ॥ ३९ ॥
इम कहजो गयोसागर मभ्कार । वहु द्रव्य कमायो करव्योहार ।
प्रोहन भर निजघरको चलंत । सोपाप उदय फटयो तुरंत ॥ ४० ॥
यह करम जोग कर तटलहाय । सिंहपुरमें आयो दुखत काय ।
श्रीभूत पास निज रत्नजेह । मांगे पांचों सौंपे जो तेह ॥ ४१ ॥
तव श्रीयभूत इम वच वखान । सब जनके आगे हर्षठान ।
में तुमसे जो पाहिले कहाय । यहभयो नावलोधन गंवाय ॥ ४२ ॥
काहू जनको तोहमन अवार । लेसी इसही जु सभा मंभ्कार ॥
अब भए ठीक मम वचन ऐह । ऐसे निरमोलिक रतनजेह ॥ ४३ ॥
अवनीपर कोने कित लहाय । काहू नरपै कवहू लखाय ।
ऐसे सबजनतें कुटिल चैन । भाषे भद्रदत्त परतीत देन ॥ ४४ ॥

दोहा

इम कहकर याको तबै, दियो निकार तुरंत ।
लोभी जन या लोकमें, क्या नाहि काज करंत ॥ ४५ ॥
जब यह सेठ समुद्रदत, नगरी मद्ध पुकार ।
पांच रतन श्रीभूत मम, देवै नाहि लगार ॥ ४६ ॥

चौपाई

ऐसे नित प्राति करै पुकार । महल निकट तहँ रैन मझार ।
इस प्रकार बीते षट मास । राजा न्याव करै नाहि तास ॥ ४७ ॥
ऐके दिन रानी इम कही । नृप इस न्याव करोक्योंनही ।
बोले राजा गहलो एह । तब रानी इम उत्तर देह ॥ ४८ ॥
यह नित प्राति इक वचन सुनाय । याको किम गहलोठहराय ।
सुन प्यारी नरपति इमकही । याको न्याव करो तुमसही ॥ ४९ ॥
रानी रामदता सुखदाय । समुद दत्तको निकठ बुलाय ।
वासों पूछो भेद तुरंत । उन सब साच कहो बिरतंत ॥ ५० ॥
फिर यहरानी चतुर सुजान । श्रीयभूत ते जूवा ठान ।
पांच रतन लेनेको सही । ताघर दासी भेजत भई ॥ ५१ ॥
बिप्र नार तबही नट गई । रानी जीत अंगूठीलई ।
सहनाणी यहदई पठाय । तोपण रतन दिएनाहि ताहि ॥ ५२ ॥
फेर जनेऊ जीत सो लियो । दासीके करमें तादियो ।
सो पहुंची लेकर तत्कार । श्रेयभूतके ग्रेह मझार ॥ ५३ ॥
ताकी नारीको दिखलाय । तब उन चितमें अति भयपाय ।
पांचो रतन सौंप उनदिए । दासी करतें रानी लिए ॥ ५४ ॥
रनी राजा के पास । रतन दिखाए जुत परकाश ।
निज रतन मांहिमिलाय । सेठ तनुज को तबै दिखाय ॥ ५५ ॥

सोरठा

अपने रतन प्रवीन, तू चुनले इन मांहि ते ।
तब उन काढ़ सुलीन, अपने ही पांचों रतन ॥५६॥
जे नर हैं सतवन्त, ते नहि छोड़ें सांचको ।
भूलें नहीं महंत, बहुत काल वीते कोऊ ॥ ५७ ॥

काव्य

तब नरिंद्र मनमांहि क्रोध कीनो अतिभारी । लीने निकट बुलाय हुते जेते अधिकारी ॥ इस पापी श्रीभूत चोरको दंड क्या दीजे तब मंत्रिन इम कहे बैन हमरे सुनलीजे ॥ ५८ ॥ तीन दंड जग मांहि इसी लायक हैं नामी । यातो गोबर खाय नही सरवस दे स्वामी । अथवा बत्तिस मुष्ट मल्लकी तनमें खावै । यह ही इसके योग्य करो जो तुम मन आवै ॥५९॥

दोहा

तब पापी श्रीभूतको, लीनो नृपति बुलाय ।
तीन दंड क्रमते दियो. मरो तबै दुख पाय ॥६०॥
आरत ध्यान प्रभावते, उपजो सर्प कराल ।
नृपत तने भंडार में, मानो दूजो काल ॥६१॥

चौपाई

बुद्धिमान जो सागरदत्त । बनमें पहुंचो हर्षित चित्त ॥
नाम सुधर्माचारज पास । धर्म स्वरूप सुनो मुखरास ॥६२॥
दिक्षा ग्रहण करो तत्काल । नाना विध तप करत त्रकाल ॥
पूरण थिर कर उपजो जाय । सिंघसेन जो है नरराय ॥६३॥
रानी रामदत्त गुण खान । तिनके पुत्र भए धीमान ॥
निरमल कीरत धारी जान । सब जगमें विख्यात महान ॥६४॥
एक दिना हरसेन नरिंद्र । निज भंडार गए गुणवृंद ॥

श्रीयभूत चर अहि तिहथान । उपजा था दीरघ तन आन ॥६५॥
डसत भयो नरपति को सोय । तबही मरन प्रापति होय ॥
नाम सल्यकी बनमें जान । उपजो हस्ती अतिबलवान ॥६६॥
इस अंतर नृप मरण निहार । मंत्री नाम सुघोख अवार ॥
क्रोध धार कर अहि तत्कार । बुलवाए सब तिसही बार ॥६७॥

दोहा

तब मंत्री कहतो भयो, सुनो नाग सब एह ।
अगन कुंड परवेश कर, जावो अपने गेह ॥ ६८॥
तबही सब परवेश कर, गए सुनिज निज धाम ।
श्रीयभूत चर दुष्ट यह, आवत भयो सुताम ॥ ६९ ॥
तब सुघोखना सर्पसूं, कहै सुबैन सुनाय
क्या तो बिषको चूसले, नातर तू जरजाय ॥७०॥
तबै सर्प कहतो भयो, में अगंध कुल मांहि ।
उपजोहूं ताते जहर, चूसूंगो अब नाहि ॥७१॥

सोरठा

इम बच कह बिषधार, अगन कुंड में तब जरो ।
बन सल्य की मझार, कुरकट अहि होतो भयो ॥७२॥
जो पापी जगमांहि, क्रूर भाव ना तजत हैं ।
ते खोटी गति जांहि, यामें संशय को नही ॥७३॥

अडिल्ल

रामदत्ता नृप नार शोक पतिको कियो। जाय कनकश्री बृतका पै चारित लियो ॥ सिंहचंद्र नृप पुत्र मरन लख तातको । ह्वै विरक्त चित राज दियो लघु भ्रातको ॥७४॥ पूरन चंदको थाप आप बन में गयो । सुब्रत नाम मुनीश्वर पै चारित लियो ॥ तप नाना किये मन लायके । मन परजय शुभ ज्ञान सो उपजो ॥ ७५ ॥

चौपाई

एक दिना तप कर तन छीन। रामदत्ता आयो बुधलीन ॥
देख सिंहचंद्र मुनिराय। चार ज्ञान धारी सुख दाय ॥ ७६ ॥
भक्ति ठान थुत इन मुनि करी। आर्या जी ऐसे उच्चरी ॥
हे स्वामिन धन कूख हमार। जासैं लीनो तुम अवतार ।७७।
तुम लघु भ्राता पूरन चंद्र। धर्म ग्रहण कब करे मुनिंद्र ॥
ऐसे वच सुन दीन दयाल। कहत भए निर्मल गुणमाल ॥७८॥
देख मात संसार चरित्र। ताको बरणन सुनो विचित्र ॥
सिंहसेन हमरो जो तात। सर्प थकी जो मरो विख्यात ॥७९॥
उपजो वह वन सल्य मँझार। हस्ती की परयाय सुधार ॥
अहो मात मुझको अवलोय। आयो मारन सन्मुख जोय ।८०।
तबमें ऐसो वचन बखान। होकरिंद्र मोको पहचान ॥
तुम थे सिंहसैन नर राय। मैं सुत तुम प्यारो अधिकाय ॥८१॥
सिंहचंद्र नामा मुझ जान। अब गजेंद्र हो मारन आन ॥
क्या वह बात भूलबो गयो। ऐसो वच मैंने तब कहो ॥ ८२ ॥

दोहा

ऐसे सुन करके तबै, अहो मात गजराज ।
जाती सुमरन होय के, अश्रुपात ढलकाय ॥८३॥
मुझ चरणन ढिग तिष्ठयो, तब मैं धर्म सुनाय ।
ताहि श्रवण करके तबै, सम्यकदर्श लहाय ॥८४॥

पद्धड़ी

तब वह करिंद्र अणुव्रतवंत। प्राशुक अहार जल लेत संत ॥
तब छीण भयो सोखी कषाय। तटनी तट करदम में फँसाय ॥५॥
तिस अवसर में श्रीभूत जीव। जो कुरकट नाग भयो अतीव ॥
तिस आय डसो गजराज भाल। सो जपत मरो नवकार माल ।८६।

सन्यास मरन करके तुरन्त। सहस्रार सुरग उपजो महंत॥
श्रीधर नामा सुर दीसकाय। नाना प्रकार संपत लहाय॥ ८७॥
इस धर्म थकी क्या क्या नहोय। याते अधिकी नहि वस्तु कोय॥
अरु वह कुरकट मरके अयान। पायो चौथे तिन नर्क थान। ८८।
हेमात वही गजराज काय। भीलों के पति ने देख आय॥
तिसके दोउ दांत लिए उपार। अरु मस्तक के मोती निकार। ८६।
लेकर धन मित्र जुसार्थ बाह। ताको दीने अति हर्ष पाय॥
सो बनक पती लेकर प्रवीन। नृप पूरनचंद को सौंपदीन॥६०॥
नृप दांत तने पाये बनाय। सो पलंग माहि दीने लगाय॥
अरु मोतिन को कीनो सुहार। पहिरो रानी हिरदे मँझार॥६१॥
हे मात इसी बिध तुम निहार। संसार तनोगत मन मँझार॥
अब तुम पूरनचंद पास जाय। जिन धर्म ग्रहन ताको कराय ६२
तब ब्रतका मुनिको नमन ठान। फिर नृप मंदिर पहुंची महान॥
तब पूरनचंद निज मात जान। उतरो पलंग ते हर्षवान॥६३॥
बहु बिनय ठान हिरदे मंझार। भूपति तिष्ठो करनमस्कार।
तब आर्याजी सबही उचार। इन पिता तनो बिरतंतसार॥ ६४॥
अरकहत भई सुन पुत्रजोग। यह पाये तें कीनि मनोग।
निज तात तने यह रदनजान। अर मोती बाकेसीसथान॥ ६५॥
ताको शुभ हार सुतैं कराय। निज रानी को दीनोपहराय।
इम सुनके पूरनचंद संत। बहु शोक अगन करके तपंत।
जिम दावानल कर गिरतपाय। तैसे नरिंद्र बहु तपतकाय।
अति मोह थकी पाये मंगाय। ताको दृढ़ आलिंगन कराय॥ ६७॥

दोहा

हाय मम तातजी, ऐसे करत पुकार।
अंतेपुरके जन सबै, रुदन कियो तिहवार॥ ६८॥

चंदन अक्षत पुष्पले, पूजा करी अपार।
दांततथा मोतीनकी, चितमें मोह सुधार ॥ ९९ ॥
संसकार ताको कियो, अगन माहि पधराय।
मोही जन या जगतमें, क्या क्या नाहि कराय ॥ १०० ॥

सोरठा

पूरन चंद्र प्रवीन, श्रावक धर्म सुपालयो।
नाक वास तिन लीन, महा सुक्र दशमों सुरग ॥ १ ॥
आर्याजी वृत पाल, उसही स्वर्ग विषै गई।
भयो देव गुणमाल, नाना विध सुख भोगवै ॥ २ ॥

चौपाई

चार ज्ञान धारी मुनिराय। सिंहचंद्र नामा सुखदाय।
शुद्ध चारित्र तने परभाय। भए अहमिंद्र सुग्रीवकजाय ॥ ३ ॥
या अंतर अब सुनोसुजान। येही जम्बूद्वीप महान।
ताकी दक्षिण भरत निहार। तामध विजयारध गिरसार ॥ ४ ॥
श्री सूर्यप्रभ पुर तहँ थाय। सुरावर्त तामें नरराय ॥
नाम जसोधर रानी जास। धरै रूप लावन्य प्रकास ॥५॥
पूजा दान व्रत्त अधिकाय। भलो शील पालै सुखदाय।
ताके सिंहसेन चर आय। रस्मवेग सुर नाम लहाय ॥६॥
इक दिन सुरावर्त भूपाल। चित वैराग भयो तत्काल ॥
रस्म वेग सुत बुद्धि निधान। ताहि राज दे मुनि वृतठान ॥७॥
अब यह रस्म वेग बडभाग। हिरदे में धरके अनुराग ॥
सिद्ध कूट चैत्यालय जाय। भक्ति सहित बहु नमन कराय ॥८॥
तहँ मुनिवर जगके रिछपाल। हरीचंद्र नामा गुणमाल ॥
तिन ढिग धर्म सुनो नरनाथ। भगवत भाषित जग विख्यात ॥९॥
तबही तजकर राज समाज। रस्मवेग कीनो निजकाज ॥

एक दिना यह गहन मझार। महा गुफा में ध्यान सुधार ॥१०॥
क्षीण शरीर खड़े तप लीन। निज आतमको अनुभव कीन ॥
अब यह पापी कुरकट थाय। चौथे नर्क थकी निकसाय ॥११॥
याही बनमें अजगर भयो। अति दीरघ तन ताने लयो ॥
करत फुँकार सुबारम्बार। तनको भस्म करै तत्कार ॥१२॥
मुनि सन्मुख आयो मुखफार। भक्षण हेत वदन बिकरार ॥
अहिको आवत देख मुनिंद। ध्यान धार तिष्ठे गुण वृंद ॥१३॥
उस पापी ने मुनि भख लीन। तब जोगिंद्र काय तजदीन ॥
उपजे अष्टम स्वर्ग मझार। प्रभु आदित्य नाम शुभधार ॥१४॥
श्रीजिन चरण कमल को भ्रंग। बढ़ी रिद्ध सुख लहो अभंग ॥
अरु वह अजगर तज निजकाय। उपजो चौथे नर्क सुजाय ॥१५॥

सोरठा

कैसो नरक स्थान, छेदन भेदन है जहां।
सूलारोपन ठान, ऐसेदुख भोगत भयो ॥ १६ ॥
दीरघ काल प्रमान, नाना बिध दुखको सहो।
कीनो पाप महान, ताको फल पायो यही ॥१७॥

चौपाई

तब चक्रायुधजी महाराज। बज्रायुध को दीनो राज ॥
आप जाय निज दिक्षा लेह। बहु बिध तप कीनो गुण गेह ॥१८॥
अब जो बज्रायुध बड़भाग। परजा पाले जुत अनुराग ॥
बहुत काल तिन कीनो राज। कारण लख चितवो निजकाज ॥२०॥
अपने तात मुनिंद्र उदार। तिन ढिग लीनो संजम भार ॥
अब वह अजगर जीव मलीन। नरक थकी निकसो दुखलीन ॥२१॥
भयानक भील सुआय। पाप थकी क्या क्या नहि पाय ॥
..य मुनि दीन दयाल। परवत नाम प्रयंग मझार ॥२२॥

कायोत्सर्ग ध्यान धर धीर। तिष्टे थे साहस जुत वीर ॥
तहँ वह पापी भील सुआय। बान थकी भेदी मुनि काय ॥२३॥
सो गुरु पुन्य तने परभाय। सरवारथ सिद्धि उपजे जाय ॥
तेतिस सागर आयु लहाय। एकहस्त की उज्जल काय ॥२४॥

दोहा

अब यह पापी भील मर, । नर्क सातवें जाय ।
छेदन भेदन आदि बहु, । नाना वेदन पाय ॥ २५ ॥
इस अन्तर अहिमिंद्र सो, करके पूरी आय ।
भए जगत विख्यात यह, संजयंत मुनिराय ॥ २६ ॥

सोरठा

पूरनचंद सुराय, कितने ही भव शुभ लहे ।
वे जयंतमुनिराय, कर निदान फणपति भए ॥२७॥

पद्धड़ी

अब तज कर सप्तम नर्क थान। वह भील जीव पापी अयान।
नाना कुयोनि में भ्रमर ठान। उपजो ऐरावत क्षेत्र आन ॥२८॥
तहँ भूत रमन नामा उद्यान। जहँ वेगमती सरिता बखानं ॥
तहँ श्रृंग नाम तापसि रहाय। संवरनी ताकी नार थाय ॥२९॥
तिनकेही सुत उपजो अयान। हरि सिंह नाम ताको बखान ॥
श्रीभूत परोहित जीव जान। पञ्चाग्नि तपस्या सो करान ॥३०॥
वह मरकर कर्म थकी लहाय। खग विद्युदंष्ट्र भयो सुआय ॥
सो पूरब वैर थकी अवार। मुनिको उपसर्ग कियो अपार ॥३१॥
मुनि सम भावन सह धीरकाय। जिम मेर सदा निश्चल रहाय ॥
बाईस परीषह जीत लीन। परगट तपको उद्योत कीन ॥३२॥
सो कर्म नाश लह मोक्ष थान। गुण अष्ट तहां पाये महान ॥
अब कहे दिवाकर देव सार। सुन भो धरनेंद्र महा उदार ॥३३॥

संसार तनी गति इम निहार। चितसे दीजे अब क्रोध टार॥
अब नागपास ते दो छुटाय। यह दीन विचारो रंकथाय ॥३४॥
इम नागराज बच सुन तुरन्त। यों कहत भयो सुन सुर महंत॥
मैंने याको छोड़ो अबार। पण यह दशातमा पाप धार ॥३५॥
इस के मद नाशन हेत तेह। मैंने सराप दीनो जु एह॥
इसके कुलमें विद्या जु कोय। काहू जनको नहिं सिद्ध होय॥३६॥

दोहा

होवै तो या विध थकी, करै सबै मनलाय।
संजयंत मुनि राय की, प्रतिमा लेय बनाय ॥३७॥
ताको ध्यान सनित करैं, पूजैं गंध जुलाय।
नारी तब विद्या लहैं, पुरुषन को नहिं थाय ॥३८॥
ऐसी कह धरनेंद्र तब, खग छोड़ो तत्कार।
फेर सुधो निज थानको, जात भयो तिहबार ॥३९॥

कवित्त

ऐसे संजयंतमुनि ईश्वर, कठिन तपस्या को जिनधार।
तप रूपी लक्ष्मी को बर कर, फिर पायो शिव सुख भंडार॥
सो भगवान हरो मम कालुस, मम निज दीजे सर्म अपार॥
तप उद्योत कियो जगमें इन, तैसे और करो हितधार॥४०॥

गीता छंद

श्री कुंद कुंद सो बसे नभमें मल्ल भूषण इंदु ही।
सो गुरु हमारे जानिये इम ब्रह्मनेमीदत्त कही॥
संसार सागर में पुरोहन ज्ञान बारेघहै यही।
श्री जिन पदाम्बुज सेवने को भ्रमर सम जानो सही ॥४१॥
रित रतन भंडार है मुनि भव्यगण सेवैं सदा।
४ मंगल देउ हमको स्वर्ग शिव लक्ष्मी मुदा॥

यह तप उद्योतन कथा पूरन करी छंद बनायके।
कहे बखत रत्न सुनो सबै जन चित्तको हरषायके ॥ ४२ ॥

इति श्री आराधनासार कथाकोषविषे मंजयंत मुनि तपोद्योतन कथा सम्पूर्णम्

अथ अंजन चोरके निशांकित गुणकी

कथा प्रारम्भः ॥ नं ६

मङ्गलाचरण ॥ दोहा

सुख दाता सर्वज्ञ के, चरण कमल सिर नाय।
कथा निशांकित सुगुण की, बरनूं चित्त लगाय ॥१॥
अंजन चोर विख्यात जग, तिन कीनो उद्योत।
तप कर कर्म खिपायके, भये सुपूरन जोत ॥२॥

चौपाई

मगध देश इस भरत मँझार। राजग्रही नगरी तहँ सार ॥
तामध वनक्रीड़ा अभिराम। जिनदत्त नाम महा गुणधाम ॥ ३ ॥
जिन पदाब्ज सेवनको भृंग। पालै श्रावक वृत्त अभंग ॥
पूजा दान करै बड़भाग। सुनै शास्त्र चितधर अनुराग ॥ ४ ॥
इक दिन सेठ महा बुधिवान। चौदश के दिन प्रोषध ठान ॥
रात्री विषय मसान मँझार। मन वच काय वैराग सुधार ॥ ५ ॥
कायोत्सग ध्यान तिन दीन। निज आतमको अनुभव कीन ॥
इस अंतर जिन भक्त सुलीन। अमित प्रभु सुर एक प्रवीन ॥ ६ ॥
दूजा मिथ्या दर्शन वान। विद्युतप्रभ सुर नाम सुजान ॥
तिन दोनो की चरचा भई। निज निज धर्म टेक तिनगही ॥ ७ ॥
धर्म परीक्षा लेने काज। अवनीपै आए सुर राज।
एकतापसी थो जमदग्न। ताको तपते कीनी भंग्न ॥ ८ ॥

पीछे जुग सुर चित्त उमगाय। जिनदत ध्यान लखो अधिकाय॥
कायोतसर्ग धरैं बुधवान। भूम मसान बिषैचित ठान॥९॥
अमित प्रभु सुर हर्षित होय। विद्युतप्रभ ते बोलो सोय॥
उत्तम चारित धारन हार। श्रीमुनिवर हैं तोहि निहार॥ १०॥
पण इक श्रावक सेठ महान। याको देखा निश्चल ध्यान॥
तुम में समरथ जो अधिकाय। देखैं इनको ध्यान चिगाय॥ ११॥
तब बिद्युतप्रभ सुन बच एव। रैन अँधेरी में बहु भेव॥
नाना बिध उपसर्ग अयान। करत भयो भय कारी जान॥ १२॥
तोपण सम्यक दृष्टी धीर। ध्यान थकी न चलो बर बीर॥
होत प्रभात समय युग देव। नमस्कार कीनी बहु भेव॥१६॥
माया दूर करी तत्कार। अस्तुति कीनी बहु परकार॥
तुम सम दृष्टी जगत मँझार। भव्य शिरोमणि थिर मन धार॥१४॥

दोहा

नभ गामी बिद्या तबै। दीनी सुर हरपाय।
चित्त सप्रन्न करजी तबै। अहो सेठ सुखदाय॥१५॥
अरु जो काहू पुरुषको। यह बिद्या तुम दोय।
नमो कार बिध ठानके, ताको सिद्ध सो होय॥ १६॥

चौपाई

इम कहकर सुर निज घर जाय। अब यह सेठ महा सुखपाय॥
सम्यक वंत महा गुणवान। बिद्या के परभावहि जान॥ १७॥
स्वर्ग मोक्ष दाता जिन गेह। सदा सास्वते बंदन तेह॥
भक्ति ठान शुभद्रव्य मंगाय। पूजे मेर कुलाचल जाय॥१८॥
दिन सोमदत्त भूपाल। हो खुशाल पूछो तत्काल॥
सेठजी दया निधान। जैन धर्म में लीन महान॥ १९॥
स्वामी तुम उठपरभात। ले सामिग्री नितकहँ जात॥

भलो वचन जिनदत्त उचार । विद्या लाभ हुई मो सार ॥ २०
ता प्रभावकर गमन अकाश । सुवरन रतन मई परकाश ॥
ऐसे जिनवर धाम पवित्र । तहं पूजन में जाऊं नित्त ॥ २१
सोमदत्त विनती तब करी । हो स्वामिन विद्या गुण भरी ॥
मोकों दीजे चित्त दयाल । तो मैं चालूं तुम संग काल ॥ २२ ॥
भली गंध पुष्पादिक लेय । पूजो श्रीजिन प्रतिमा तेह ॥
तुमरे पुन्य तने परभाय । भक्ति वंदना करूं सो जाय ॥ २३ ॥

दोहा

तबै सेठ कहते भए, विद्या की विधि जेह ।
सो सुन कर माली चतुर, निज उर धारी तेह ॥२४॥

सवैया इकतीसा

चौदश की रैन कारी भूम जो मसान माहीं, महा भयकारी वट वृक्ष तले जायकै । अगन की ज्वाला सम शस्त्र जो प्रचंड महा ताके नीचे गाड़ दीजै चित्त हरषाय के ॥ एक शाखा विच सत लड़ी को प्रमाण जामें, ऐसे इक छींको तहँ दीजो लटकायके । षट उपवास धार ऊरध सो मुख कीनो, पुष्प आदि द्रव्य लेय पूजत सो धायके ॥ २५ ॥

दोहा

छींके में बैठत भयो, नमोकार उच्चार ।
एक एक लड़ छेदये, यह विधि किया विचार ॥२६॥
नीचे शस्त्र निहार के, भय लागे तत्कार ।
सोमदत्त मन चिन्तवे, मन कायरता धार ॥२७॥

काव्य

जो कदाचित यह सेठ वचन मिथ्या हाजाव ।
तो मम प्राण विनाश होंय इक पल न लगावें ॥

इम संशय मन आन चढ़ै उतरै बहु बारा ।
चित उद्वेग मझार मूढ़ निश्चय नहिं धारी ॥ २८ ॥
जै जिनवर जगदीश सुरग शिवके दातारं ।
तिनके बचन महान मूढ़ निश्चय नहिंधारं ॥
तिनके अवनी मांहिं सिद्ध कहो कैसे होई ।
भटके जगत मझार दुःख बहु पावें सोई ॥ २९ ॥

चौपाई

इस अंतर इक गणका जान । अंजन सुन्दरि नाम बखान ॥
तिसको प्रीतम अंजन चोर । तासों बच्च इम भाषे जोर ॥३०॥
तिस दी रात्रिको कहो सुनाय । अहो प्राण बल्लभ सुख दाय ॥
प्रजापाल राजा की नार । कनक प्रभा ताके गल हार ॥३१॥
अति सुन्दर तिस क्रांति अनंत । सो मुझको लादेय तुरंत ॥
जो अवार लावै नहिं हार । तो मेरा तू नहिं भरतार ॥ ३२ ॥
इम सुन तस्कर बेश्वा भक्त । हार बिषय चितकर आशक्त ॥
लेन गयो निज काय छिपाय । नृप मंदिर में बुद्धि पसाय ॥३३॥
लेय हार निश तिमिर मझार । आवैथा गणिका के द्वार ॥
तिसकी द्युतिकी क्रांति अपार । देख तबै दौरो कुतवार ॥३४॥
तब इन हार दियो छिटकाय । भाग मसान भूमिमें आय ॥
सोमदत्त को कायर जान । तासों पूछो आदर ठान ॥ ३५ ॥

दोहा

कहो बीर क्या करत हो, काज बहुत दुखदाय ।
तब वाने विद्या तनी, कथा कही समझाय ॥ ३६ ॥
सुनके अंजन चोर तब, मंत्र लेय नवकार ।
उसही बिधिसे राख कर, चितमें दृढ़ता धार ॥३७॥

छप्पय

सेठ वचन जे कहे सत्त निश्चय कर सोइ । यों मन संशय भान
चढ़ो छींके पर सोइ ॥ सतक लड़ी इकवार छेद ततकार सुदीनी ।
जितने भ्रम नहि पडे तिते विद्या गुण भीनी ॥ सो चित्र मांहि
थाँवत भई, हाथ जोड़ विनती करे । हो देव हमें आज्ञा करो,
जासे तुम कारज सरें ॥ ३८ ॥

पद्धडी

तब हर्ष सहित अंजन बखान । गिर मेर विसे जिन धाम जान
तहँ पुजा सेठ करे उदार । लेचल ताढिग मोको अवार ॥ ३९ ॥
सुनतेही विद्या हरपवंत । जा सेठ पास थापो तुरंत ।
जिन धर्म थकी क्या २ न होय । या सम जग मे दूजा न कोय ।४०।
अंजन निरभय चित भक्ति आन । जिनदत्त सेठको नमन ठान ।
अरु कहत भयो तुमरे पसाय । नभ गामी विद्या में लहाय ॥ ४२ ।
हो धीर वीर करुणा निधान । जासों होवै मोहि सिद्ध थान ।
सोही मंतर दीजे दयाल । तुम परउपगारी सुगुणमाल ॥४२ ॥
तब सेठ चित्त हरपो प्रवीन । अंजनको अपने संगलीन ।
गुणाकर मंडितमुनिवरन नाम । कर कष्ट काय जीतो सुकाम ४३॥
तिनके ढिग पहुंचे हर्षयुक्त । मुनि चरण नमो बहु भक्तियुक्त ।
जिनदत्त तबै रंजाय मान । अंजनको जिन दिच्छा महान ।४४॥
गुरुके ढिग दिलवाई तुरंत । तब इन व्रतलीने हरपवंत ॥
श्री अंजन मुनि बहुतपत काय । तिसदिच्छा को पालन कराय २५।
क्रमते अष्टापद गिर सु आय । तहँ कर्म नाश केवल लहाय ।
सुर असुरनकर पूजित महान । होकर पायो फिर मोक्षथान २६
यह निः शंकित गुणके प्रभाव । अंजन निरअंजनपद लहाय ।
अरु भीजो पण्डित बुद्धिवान । ते इस गुणको पालो महान ।२७।

यह कथा छूटी पूरन बिशाल । बरनी कवि नेमीदत्त रिशाल ।
ताके अनुसार करी बखान । बखतावर रतन सुद्दगप ठान ॥४८॥

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषै अंजन चोरने निःशांकित गुणपाला ताकी कथा सम्पूर्णम्—

अथ निकांक्षितगुण अनंत मतीने पाला

ताकी कथा प्रारम्भः नं० ७

मङ्गलाचरण * अड़िल्ल

सुखकारी अरिहन्त नमूं सिर नायके । निःकांक्षित गुण पालो ।
जिन हरपायकें ॥ ताकी कथा रिशाल सुनो शुचिकर हियो ।
अनंतमती बाईने उद्योतन कियो ॥ १ ॥

चौपाई

अंग देश चम्पापुर जान । बसुबरधन राजा तिह थान ।
लच्छमी मती नार तिसगेह । नृपसों ताको अधिक सनेह ॥२॥
तिसही नगरी में धनवान । प्रयेदत्त श्रेष्टी धीमान् ॥
पंच प्रकार गुरु बचन मझार । सम्यक जुत सरधा चितधार ॥३॥
अंगवती तिसगेह सुनार । धरम करमेंम चतुर अपार ।
तिन दोनोंके तनुजा भई । अनंत मती तिन सज्ञादई ॥ ४ ॥
मुखकी आभा जृम्भ सुधंक । तिस देखे लागे रतरन्क ।
शोभा आदिक गुणते जान । तिनही रतननकी है खान ॥५॥
इक दिन प्रयेदत्त सुखकार । नन्दीस्वरके पर्व मझार ।
धर्म कीर्ति नामा मुनिराय । तिनको नमन कियो हरषाय ॥६॥
अष्ट दिननको नेम सुकियो । उत्तम ब्रह्मचर्य ब्रत लियो ॥
क्रीड़ा मात्र नचित उमगाय । पुत्री कोभी ब्रत दिलवाय ॥७॥
सोयह बात सत्य कर जान । सत्पुरुषनकी है यह बान ॥

जो विनोद ठाने चितमाहिं । सोभी शुभपथ रूपकराय ॥ ८ ॥
इक दिन प्रयेदत्त सोशाह । आरोप्यो पुत्रीको व्याह ।
तनुजा लख बोली सुननात । यह तुम क्या अरम्भी बात ॥ ९॥
पहिले ब्रह्मचर्य व्रतभार ग्रहण । करायो तुम हितकार ।
ताते इम ववाह कर । आज हमको कौन रहो अब काज ॥१०

दोहा

तब बोले इम सेठजी, सुन पुत्री चितलाय ।
क्रीड़ाकरकेमें तहां, तुम्है व्रत दिलवाय ॥ ११ ॥
सुखदाई यह धर्म व्रत, अहो तात बुधिवान ।
तामें क्रीड़ा है नहीं, यह निश्चय चितआन ॥ १२॥

काव्य

तबै सेठ इमकहे सुनो पुत्री कुलमंडन ।
दिलवायो व्रत शील अष्टदिनको दुख खंडन ॥
तब पुत्री इम कहे सुनो मम बचन तात अब।
श्रीगुरु तुम नहिं कही कछु मरजाद तहां जब॥ १३ ॥
ताते तात दयाल शीलव्रत निश्चयपालूं ।
इस भव व्याह न करो सबै अघ पंक पखालूं ॥
ऐसे कह तब जैन शास्त्रमें बुद्धी लगाई ।
तिष्ठन अपनेगेह शीलमें दृढ़ अधिकाई ॥ १४ ॥

चौपाई

इक दिन समय बसंत निहार । क्रीड़ा हेत गई सबनार ।
निज उद्यान में झूलहि डोर । अनंतमती झूले तिह ठौर ॥१५
जोबन मंडित रूप अपार । पट भूषण बहु तनमेंधार ।
इस अवसर रूपाचल जान । ताकी दक्षिण श्रेणी महान ॥१६ ॥
तामें किन्नर पुर सुखदाय । कुंडल मंडित ताको राय ।
नार सुकेशी ताके संग । नभमें गमन करे सुखसंग ॥ १७ ॥

देख अनंतमती का रूप। विच्छित चित्त भयो खगभूप ॥
तत्मनमें इम करो बिचार। या बिनजीवन अथा निहार ॥ १८॥
बेग गयो तब निज आगार। तहां नार छोड़ी तत्कार ॥
आप उलट तिह थानक आय। झूलत बाई लई उठाय ॥ १९॥
चलो गगन में हर्षित काय। सन्मुख निज नारीदरसाय ॥
तिसके भयते खग तत्काल। लघु परनी बिद्या दे नाल ॥ २०॥
महा भयानक अटवी बीच। डारत भया तबै वह नीच ॥
अनंतमती चितमें दुख नील। ब्रह्मचर्य जिन गही प्रवीन। २१।

सवैया इकतीसा

हाय तात हाय तात ऐसे बिलाप करै। नैननते अश्रुपात डारे दुख पायके। तहां भोम नामभील राज एक आयकर लेगयोतबैही निज पल्ली में उठायके॥ कहे तिम ऐसे बैन मम तू पियारी नार, पटरानीपद तोहि देऊं मन लायके। और बहु संपद भंडार सब तोहे लिये मोको बेग इन्छो निज चित्त हरषायके ॥ २२ ॥

दोहा

अनंत मती इन्छो नहीं, भील महा चंडाल।
तब वह पापी रात्र में, कियो उपद्रव भार ॥ २३ ॥

चौपाई।

जबरीतें भोगू यह नार। ऐसी चिंता मनमे धार॥
ताही समय शील परभाव। बन देवी आई तिह ठाव ॥ २४॥
ताड़न करी भील की काय। तब पापी डरपो अधिकाय॥
कर बिचार मनमें तिह धरी। यह नारी नहिं है कोई सुरी॥ २५॥
बारिज नैनी रूप अपार। बहु प्रकार समरथ यह धार ॥
चित धर कर कन्या लेय। पुष्पक नाम बणिक को देय ॥२६॥
समरथ वाह मलीन। कन्या रूप अधिक तिन चीन ॥

कामातुर पापी तब भयो । निंद्य बचन मुखते वह चयो ॥२७॥
नाना भूषण बसन मनोग । है सुंदर यह तुमही जोग ॥
सो लीजे सब इसही बार । मोकूं कीजे अंगीकार ॥ २८ ॥
तेरो दास रहूं मैं सदा । हौं अलीक भाषूं नहिं कदा ॥
कैसो है यह सारथ वाह । दुष्ट बुद्धि ताकी अधिकाय ॥२६ ॥
तब यह दृढ़व्रत धारन हार । अनंतमती इम बैन उचार ॥
प्रयेदत्त जो मेरो तात । तैसोही तू है अवदात ॥ ३० ॥
ऐसे पाप मई तू बैन । भाषे मत कबहूं दुख दैन ॥
ऐसे सुनकर सारथ वाह । नगर अयोध्या में तब आह ॥ ३१ ॥
तहां काम सेना विख्यात । गणिका के तिन बेची हात ॥
प्रानी कर्म उदय अनुसार । सुख दुख सब भोगे अधिकार

दोहा

वह वेश्या अतिही चतुर. किये प्रपंच अपार ॥
शील मेरु तो सतीको, भेद न सकी लगार ॥ ६६ ॥

चौपाई

तब गणिका संग कन्या लई । सिंहराज नरपति को दई ॥
सोभी इसको रूप निहार । मनमें धारे काम विचार ॥ ३४ ॥
जब रीते तब रैन मंझार । भोगन की इच्छा मन धार ॥
तब इस शील तने परभाय । नगरी तनि देवी तह आय ॥ ३५ ॥
मनमें क्रोध धार कर सुरी । नृपको भय दीने तिह घरी ॥
डर मानो पायो बहु त्रास । कन्या को तब दई निकास ॥३६॥
तब यह शील व्रत दृढ़ धार । सुमरन करो मंत्र नवकार ॥
काहू थानक बेठी जाय । याके पुन्य तने परभाय ॥ ३७ ॥
पदमश्री आर्या इस देख । याको उत्तम जान विशेख ॥
इसते सब पूछो विरतन्त । अपने ढिग राखो गुणवन्त ॥३८॥

कैसी है व्रतका शुभ चित्त । निरमल आतम धरै पवित्त ॥
सत्पुरुषन के जे आचार । सो परही के अर्थ निहार ॥६६॥
या अंतर प्रयेदत्त सुजान । अनंत मती को पिता महान ॥
याके शोक अगन कर जीव । व्याकुल मन दिन रैन सदीव । ४० ।
यहां सेठ बुद्धि धर सेत । कन्या शोक निवारण हेत ॥
केते इक सज्जनं ले लार । जिन तीरथ को कियो विहार ॥ ४१ ॥
तीरथ यात्रा करे बहु भाय । पहुचे नगर अयुध्या आय ॥
तहं इक जिनदत्त सेठ बिख्यात । सोइनकी नारी को भ्रात ॥ ४२ ॥
संध्या समय तास ग्रह गए । गुण उज्जल तहं उतरत भए ॥
जिनदतने पाहुन गत करी । खेम कुशल पूछी तिहघरी ॥ ४६

दोहा

दुखदाई बिरतांत सब, अपनो कहो सुनाय ।
　　प्रयेदत्त की सुन गिरा, जिनदत बहु दुख पाय ॥४४॥
फिर जिनदत धरमात्मा, प्रात काल उठ न्हाय ।
　　जिन दर्शन जातो भयो, दर्शन कर हरषाय ॥ ५ ॥

काव्य

जिनदतकी तब नार करी भोजन की त्यारी । आर्जा पदमश्रीय पास कन्या सुखकारी ॥ चौका देने हेत तासको लियो बुलाई । तब कन्या गुणवन्त तहां जबही चलि आई ॥ ४६ ॥
चौका दीनो सार बहुरि अमरत सम भोजन । करके गइ तुरंत तबें निज थानक शुभमन ॥ तिस पीछे जिन बिंब महा जगमें हितकारी । देव इंद्र नागेंद्र नमे तिन चरन मँझारी ॥ ४७ ॥
ऐसे श्री जिन चंद्र तनी पूजन बिस्तारी । कर आयो निजधाम सज्जन हितकारी ॥ तिस चौके को प्रयेदत्त तब सेठ देखकर । कीनी याद नैन लीने आंसू भर ॥ ४८ ॥

दोहा

हो उदास चाले तबै, जिन चौका यह दीन ।
तिसको शीघ्र बुलाइये, इसही ठौर प्रवीन ॥ ४६ ॥
कंते इक सज्जन तबै, गए आर्य को पास ।
तहँ ते कन्या लाय के, प्रयेदत्त दी तास ॥ ५० ॥

चालमेघ कुमार देशी

शोकरूप जलकर भरेजी, दोनों नैन विशाल । अपनी पुत्री देख कर जी, सेठ मिलो तत्काल ॥ सयाने हिरदे शोक अपार ॥ ५१ ॥
मिष्टवचन बहु भाषियोजी, हो पुत्री सुखकार । किस पापीने तुम हरीजी, झूलत बाग मझार ॥ सयाने हिरदे शोक अपार ॥ ५२ ॥
कैसी है तू शुभ मतीजी, शील शिलीकर सोय । पाप प्रक्षालनसब कियेजी दृढ़ वृत धारक होय । सयाने हिरदे शोक अपार ॥ ५३ ॥
हरन हार दुर्जन महाजी, पाप पंक करलीन । दया नतिस हिरदे विषयजी, जाने मुझ दुखदीन ॥ सयाने हिरदे शोक अपार ॥ ५४ ॥
फिर पूछो इम तातनेजी, सुन पुत्री सुकुमार । यहां तुमको कोलाइ योजी, करमुझ सुन्य अगार ॥ सयाने हिरदे शोक अपार ॥ ५५ ॥

सोरठा

अनंतमती तिहवार, सब व्रतांत कहती भई ।
सुनकर दुखित अपार, प्रयेदत्त होतो भयो ॥ ५६ ॥

पद्धड़ी

ताही छिन जिनदत हर्षवंत । दोनोको मिलने को तुरंत ॥
सब नगरीमें कीनो उछाय । बहु दान दियो आनंद पाय ॥ ५७ ॥
फिर प्रयेदत्त वचयों बखान । सुन पुत्री निज घर कर पयान ॥
तब तनु जाने वच इम सुनाय । संसार तनी गतिमें लखाय ॥ ५८ ॥
हे तात आप मंगल सुभार । दिलवायो तातें मैं अवार ॥

तब पिता कही सुन चित लगाय। तुम कोमललता समानकाय ५६
जिन दिच्छा दुःसह जग मझार। याते निज घरमें बरत पार॥
कितने दिन पीछे पुन्य जोग। मन बांछित फिर कीजोमनोग६०॥
बहु कोमल बचन कहे सुतात। तो पण याके नहिं चित्त आत
तबही मनमें बैराग भाय। पदमश्री ब्रतका पास जाय॥६१॥
सुख दैनहार दिच्छा महन्त। बहु भक्ति सहित धारी तुरन्त॥
अरु पच्छ मास उपबास आदि। दुद्धर तप कीने तज प्रमाद ६२
सन्यास तनी बिध कर प्रवीन। नवकार मन्त्र सुमरन सुकीन।
हो धर्म लीन तज दीन काय। सहस्रारसुरग सबही लहाय ६३
वह देव भया अति दीप्त अंग। पट भूषण मुकुट धरै उतंग॥
श्री जिनवर चन्द्र तनो सुदास। नाना विध संपतको अवास॥६४
यह सुकृत फल प्रत्यच्छ पाय। शुभ पुन्य थकी क्या २ न थाय॥
देखो इह नन्तमती सुजान। क्रीड़ा कर शील गहो महान॥ ६५॥
फिर निरमल पालो जग मझार। उपसर्ग सहे नाना प्रकार॥
सब शील थकी भाषे तुरन्त सुखदायक है यहही महन्त ६६॥

दोहा।

श्रीजिन चन्द पदाब्जको भ्रंगी सम सेवन्त।
निः कांच्छित गुण पालके, नाना सुःख लहन्त॥ ६७॥
भोगनको स्थान जो, स्वर्ग बारमो ताम।
दीरघ ऋद्धि धारी भयो, देव तहां अभिराम॥ ६८॥

सोरठा।

सो वह देव महान, सब सत्पुरुषन को अबै।
दीजो मंगल दान, अतिशय करके जग बिषय॥६९॥

इति श्रीआराधनासार कथा कोष बिषय निः कांक्षित गुण अनन्त मतीने पाला
तांकी कथा समाप्तम्

अथ श्री उद्यापन नृपने निर्विचिकित्सा

अंग पाला ताकी कथा प्रारम्भ; ॥ नं० ८

मंगला चरण छप्पय

तीन जगतमें हैं पवित्र अरिहंत देववर। और भारती माय तास कोनमस्कार कर॥ गुरु चरननकोध्यानधार हिरदेके माहीं। निर्वि चिकित्सा अंग जगतमें जिन प्रगटाही॥
उद्यापन नरपतितनी, कथा सुताही बखानिये। अब सुनो भव्य चितलायके, जाते पातिग हानिये॥ १॥

चौपाई

भरतक्षेत्र में कच्छ सुदेस। तामे रोरव नगर विशेस॥
उद्यापन प्रभु नाम नरिंद। सम्यक दृष्टी है गुण बृन्द॥२॥
जिन चरणांबुजमें धर राग। नित प्रति पुजत सो बड़भाग।
दाता भुक्ता धरै विचार। परजा पालै बहु हित धार॥ ३॥
तानरपति कैहै पटरान। नामपरभावति चतुर सुजान॥
नृप बहु पण्डित बुद्धिनिधान। धार सम्यकदरश महान॥४॥
पूरन कला मयंक समान। पुजा दान मोई जल जान।
ताकर मनको मैल निहार। उज्जलकीनो चित अधिकार॥ ५॥

दोहा

निःकंटक निजराजको, भोगै नृपबलवान।
धर्म विषै तत्पर महा, तिष्टै पुन्य निधान।

चौपाई

या अंतर सौधर्म सुरेश। धर्म राग उर धार विशेश॥
सब अमरन आगे हित आन। सभा विषै इम करो बखान॥
दोष रहित अरिहंत सुदेव। ताही की निज कीजे सेव॥
उत्तम क्षमा आदि में जान। ऐसो धर्म कहो भगवान॥ ८॥

रहित परिग्रह गुरु निरग्रन्थ । तेही दिखलावै शिव पन्थ ॥
जिनवर कथित तत्व अभिराम । तिनकी सरधा सो रुचि नाम।६।

सवैया । इकतीसा

सोई रुचि स्वर्ग मोक्ष दैनहार जान लेहु, काहे कर होय ताहि चित माही भाई है ॥ धर्म अनुराग कर तीरथ गमन कीजे, उत्सव ठान जिन मंदिर बनाई है ॥
बिंब जिन चंद्रके धराय परतिष्ठा करै, बात्सल्य गुण जाके नित प्रति पाईये ।इत्यदिक कारनते होत रुचि सोई मान, सम्यक दरश ज्ञान मिथ्या को नशाइये ॥ १० ॥

दोहा ।

हो देवो या जगत में, उत्तम सम्यक जान ।
ताहीके परभाव ते, लहिये सुर शिव थान ॥११ ॥
इत्यादिक बरणन कियो, सम्यक तनो सुरेश ।
निर बिचिकित्सा अंगकी, महिमा करी विशेष ॥

सोरठा

नृप उद्यापन जान, ताकी स्तुति बहु करी ।
वासम और न मान, निरबिचिकित्सा अंगमें ॥१३ ॥

पद्धड़ी

इक वासव सर तिसही सुवार । सुनकर मुनिवर को भेष धार ॥
बहु कोढ़ गलित निज काय कीन । ब्रण घाव बहे दीखै मलीन ।१४
सो लेन परीक्षा हेत आय । मध्यान समै नृप गेह जाय ॥
उद्यापन नृप मुनिको लखाय। माखिन कर बेष्ठित दुखित काय १५
तबही नृप उठकर हर्ष धार । तिष्ठो तिष्ठो इम बच उचार ॥
बहु भक्ति धार थापे मुनिंद । फिर पद प्रक्षालन कर नरिंद ।१६
प्रासुक आहार संयुक्त लेह । मुनिवर को देत भयो सुतेह ॥

कीनो अहार दीनो जु भूप । फिर वमन करी दुरगंध रूप ॥१७॥

दोहा

तब नृप अपनी नारयुत, मुनिसन्मुख ठहराय ।
अरु तहँते सज्जन जना, ते भागे दुख पाय ॥ १८ ॥
मुनि शरीर को पूंछतो, भूप खड़ो कर जोर ।
तिनने नृप की नार पै, वमन करी अति घोर ॥१६ ॥

पायता

तब राजा शोक करीनो । मैं पापी यह क्या कीनो ।
जो प्रकृति विरुद्ध अहारा । मुनि को दीनो इह वारा ॥२०॥
इस पृथ्वी तलके माहीं । शुभ पुन्य विना कछु नाहीं ।
यह पात्र दान अति भारी । किम बन आवे सुख कारी ॥२१॥
चिंतामणि रतन अनूपा । अरु कल्प वृक्ष सुख रूपा ।
मन वांछित फलके दाई । तुछ पुन्नी केम लहाई ॥ २२ ॥
इस पात्रदान विध जोहै । कम पुन्नी को किम होवै ॥
ऐसे निज निंदा ठानी । फिर लेकर उज्जल पानी ॥२३ ॥
मुनि काय धोवने काजा । ऊभे उद्यापन राजा ।
तब सुरमन माहिं विचारी । यह भक्तिवान अधिकारी ॥२४॥

दोहा

निजमाया को दूर कर, सुर हरषो तिहवार ।
बहु प्रकार स्तुति करी, मुखते प्रेम उचार ॥ २५॥

जोगीरासा

हो नरिंद्र सुन लीजियेजी, तुमहो सम्यक्वान । निरविचिकित्सा गुण धरो जी, दान विषे अधिकान ॥ सयाने तुमसम अवरनकोय २६
श्री जिनवर वरनयो जी, तत्व स्वरूप महान । ता जाननको तुम सरो जी, पण्डित चतुर सुजान । सयानेतुमसमअवरनकोय ॥२७॥

हे समदृष्टिशिरोमणीजी, तुम बिन और नकोय। हस्त रूपकमलन थकीजी, पूंछी बमन सुघोय। सयाने तुम सम अबरनकोय।२८।
ऐसे कहकर सुर तबैजी, पूज करीबहु भाय। निज अवरन बिरतांत कहजी, नमि फिर निज थल जाय॥ सयाने तुम सम०॥२६॥

दोहा

देखो तत्पुरुषन तनो, पुन्य महात्तम जोय।
सुरपति जसबरणन करैं, यह बरने किम सोय॥३०॥

चौपाई

इस अंतर उद्यापन राय। पूजा दान ब्रतअधि काय।
करते तिष्ठे निज आगार। धरम बिषै तत्पर आधार॥ ३१ ॥
कितोकाल सो इह बिधिगयो। इकदिन कछु कारनलखलियो।
मन बच कायबैराग उपाय। राज पुत्रको दे हरपाय ॥३२ ॥
स्वर्ग मोक्षदाई जिन ईश। बर्द्धमान स्वामी जगदीश।
तिनके चरण कमलढिगजाय। दीक्षा लीनीभक्ति उपाय॥ ३३॥
कैसी है जिन दिक्षा सोय। देव इंद्रकर पूजित सोय।
सम्यक दर्शन ज्ञान चरित्र। जगत मांहि यह महा पवित्र॥३४॥
ताहि पाल करके धीमान। ध्यान हुताशनमें अरिहान।
सुर असुरनकर पूज महान। उद्यापन लहि केवल ज्ञान॥ ३५॥
भव्यनको उपदेश कराय। फेर अघाती कर्म नशाय।
अबिनाशी शिव थान मझार। तिष्टे आवागमन निवार ॥२६॥
बहुर प्रभावति नृपकी नार। अर्या ब्रत धर तपकर सार।
दुखदाई तिय लिंग नशाय। ब्रह्म सुरगमें सुर उपजाय ।३७॥

दोहा

पूरन कथा सुयह कही, ब्रह्म नेमिदत्त जान।
नृप उद्यापतन केवली। ताकी स्तुति ठान॥३८॥

चौपाई

तुमरी भक्ति विषै जिम चंद । मैं बरनो मनधर आनंद ।
कैसेही तुम गुण दधि राश । केवल रूप भए परकाश ॥ ३९ ॥

दोहा

देव इंद्र सम तुम चरण, । सीस निवावत आय ।
सुख राता या जगतमें, तुम हीहो जिनराय ॥४०॥
गुण समूह सोई रतन, ताके हैं भंडार
ज्ञान उदधि इन्द्री जिता, इत्यादिक गुण धार ॥४१ ॥

इति श्री आराधना सार कथाकोष विषै निर्विचिकित्सा अंग राजा उद्दायनने पाला ताकी कथा सम्पूर्णम्

अथ अमूढ दृष्टि अंग धारणी रेवती रानी पाला ताकी कथा प्रारम्भः नं ॥ ९ ॥

मंगलाचरण गीता

त्रैलोकके हित कार जिनवर सर्व इन्द्री तिन जई ।
जिनकी सु भक्ति हिये विषै धर नमस्कार करूं सही ॥
अमूढ दृष्टि जो रेवती तिय पालयो चित लायके ।
ताकी कथा वरनन करूं मैं सुनो भवि हरषायके ॥ १ ॥

चाल अहनगतगरु

ऐसी भरत सु क्षेत्र, विजयारध सुख कारी । मेघकूट पुर नाम दक्षिण दिशा मझारी, ॥ चन्द्र प्रभु बुधिवान खग, नृप तहँ सुख दाई । भोगै दीरघ राज पूरब पुन्य बड़ाई ॥२ ॥
एकै दिन महाराज, आप निज पुत्र बुलायो । शशि शेखरको राज, देय चितमें हरषायो ॥ श्री जिन तीरथ काज, गमनकीनो

हित कारी। जाज्ञा करत महान, भ्रमत आये बुध धारी ॥ ३॥
भ्रमते पुन्य प्रभाव, सुदत्तण मथुरा आए, गुप्ताचारज नाम, तहँ ऋषि तिष्ठ पाए ॥ नमन कियो सिर नाय, तबै मुनि धरम सुनायो। परउपकार महान, यही जग सार बतायो ॥४

दोहा

इम सुनकर मुनि मुखथकी, क्षुल्लक व्रत करलीन
इक विद्या नभ गामिनी, रखकर सब तजदीन ॥ ५ ॥
तीरथ जात्रा हेतको, तथा सु परउपकार।
याकारण इक राखियो, और न काज लगार ॥ ६ ॥

चौपाई

इक दिन जात्रा चित में धार। उत्तर मथुरा गमन बिचार।
गुरुके निकट गयो हरषाय। पूछत भयो सीसको नाय ॥ ७॥
अहो देव करुनाके राश। मोको आज्ञा करो प्रकाश।
काहू ते कछु कहनो होय। कृपा धार कर कहिये सोय ॥ ८॥
अब आनंद सहित मुनि राय। कहत भए खगको समझाय।
गुणकर शोभितअति गणवान। सुव्रत नाम ऋषीश्वरजान ॥ ९ ॥
मम ओरीते बचन सुनाय। नमस्कार कहियो तुमजाय।
सम्यक जत तहँनृपकीनारि नामरेवती है सुखकार ॥ १० ॥

दोहा

ताको हमरी ओरतें, धरम बृद्ध अधिकाय।
कहियो इम तुम जायके, हो श्रावक हितदाय ॥ ११ ॥

चौपाई

अरु तृपृष्टि नामा मुनिराय। तहँ तिष्ठे भ्रजन सुखदाय।
कहत भये बच एम। गुप्ताचारज भाषे जेम ॥ १२ ॥
शि प्रभक्षुल्लकनिहवार। अपने मनमें करत बिचार।

भव्य सैन मुनिवर तिह थान । ग्यारह अंगके पाठी जान ॥१३॥
तिनको गुरु वचन है नकोय। ताते ह्यां कारन कछु होय ।
ऐसे छुल्लक मनमें धार। तहँते गमनकीयो तत्कार ॥ १४ ॥
सुव्रत नाम मुनीश्वर पास। अपने गुरुके वचन प्रकाश।
वातस्ल्या जुत वंदन कही। नमस्कारकर साता लही ॥१५॥

दोहा

जो भविजन धरमात्मा, धरम विषै चित धार।
करैं वातसल सबनते तिन हूं जन्म सुसार ॥ १६ ॥

पद्धरी

फिर छुल्लक इह शुभ बुद्धिवान। क्रीड़ा कर आयो हर्षवान।
जहँ भव्यसैन मुनि भेखधार। विद्या मदकर गर्भित अपार ॥ १७ ॥
तिन धर्मवृद्धिखगको नदीन। मदकर उन्मत्त भयो मलीन।
कोड़ो कठनका दैनहार। एगर्व महा ताको धिकार ॥ १८॥
जहँ वचन विषै दारिद्रअपार। तहँ और बड़ाई को निहार।
पाहुण गति आदि क्रया महान। तिनके सपनेमे भी नआन ।१६।
सब दोष रहित श्रीजैन ज्ञान। तिसमेंभी प्राणी मदजुलान।
यहबात सत्य जगके मझार। जे पुन्य हीन पापी निहार ॥२०॥
तिनके अमृत विषकी समान। होजावै निश्चयकरसोमान।
तब वह छुल्लक उठप्रातकाल। भव सैन क्रिया देखन सुचाल ।२१।

सोरठा

भव्यसैन तिहवार, वहिर भूमको जायथो।
पीछे यह व्रतधार, लेय कमंडलको चलो ॥ २२ ॥
फिर विद्यापरभाय, मारगमें छुल्लक रची।
चहुं दिश हग्त भुकाय, चिक्कनी और सुहावनी ॥२३॥

पायता

तब नष्ट बुद्धिको धारी। मुनि मनमें करत विचारी।

वेद ध्वनीको करै बखान। सुर अर असुरनमें तिस आन।
ब्रह्मा रूप करो तत्कार। लीला कर तिष्टो पुर बार॥ ३६॥
ब्रह्माकोसुन आयो राय। अभयसैन आदिक तहं जाय।
बडे हर्ष जुत बंदन करी। सब पुरजननै भी तिसघरी॥ ३७॥
कैसे जन मूरख अभिधाय। जड़ आतम दूषित अधिकाय।
तबही बरुण नाम नरराय। रानी को बहु विधसमभाय॥३८॥
तुम भी जावो जात्रा हेत। तौभी गई नहीं गुणसेत।
सम्यक रत्न सहित वहनार। जिनवर भक्ति हियेमेंधार॥३९॥
करो विचार चित्त यह भंत। यूं भाषोहै जैन सिद्धांत।
ऋषभदेव सो ब्रह्माभए। आतम ज्ञानी शिवपुर गए॥ ४०॥
अरु कोई ब्रह्मा नहिं आय। यह दीखै धूरत अधिकाय।
आयोहै ठगने को यहां। इम विचार कर गई नहितहां॥४१॥
और दिना दक्षणदिशजाय। क्षुल्लक माया धरी अधिकाय।
विश्नु रूप कीनो तिह थान। चार भूजा गरुड़ासन जान॥४२॥
संख गदा अरु चक्र अनूप। करमें असि विकराल स्वरूप।
सर्व दैत्य गणको भयदाय। ऐसो रूप सबै दिखलाय॥ ४३॥

दोहा

तोपण रानी रेवती, गई नहीं तिस पास।
सम्यक तिस हिरदेविमल, वरतत है सुखरास॥ ४४॥
अरुइक दिन छुल्लक विमल, पश्चम गोपुरजाय।
शंकर रूप बनाइयो, मायाकर अधि काय॥ ४५॥

काव्य

वृषभ पीठ असवार जटा सिर उपर छाई। पारबती अर धंग तास मुख कंज लखाई॥ सुर असुरन कर पूज्य सर्वजन को सुखदाई। धाए पुरके लोग तोहू रानी नहिं आई॥४६॥

और दिनाके विषै बृह्मचारी इम ठानी । उत्तर दिशकी ओरकरी माया अधिकानी ॥ समवशरन रचनील ध्वजा जामें फहरावै। प्रात्यहार्य वसु युक्त तहां सुर गान करौं ॥ ४७ ॥
मानी जनका मानसुमानुष थंभ नशावै । कूप वापिका आदि जुमंगल द्रब्या लखावै ॥ तीर्थंकरको रूप रचो ताने अतिभारी सुर नर असुर अधीश । आय पूजा बिस्तारी ॥ ४८ ॥
तब नृप बारन भव्यसैन आदिक जन सारे । आए अर्चनहेत हर्ष चितमें अति धारे ॥ समझाई नृपनार सबै पुरजन तिहबारा कहत भई इम भांत सुनो तुम वचन हमारा ॥ ४९ ॥
अहो जिनागम मांहि कहे चौबिसतिर्थंकर । ज्ञानरुद्र बिख्यात भए नववासु देव बर ॥ ते पहुंचे पर लोक आपने गुणअनु सारी तातें निश्चय जान लेहु यह माया चारी ॥ ५० ॥

दोहा

कैसोहै यह भेख धरे, ठग विद्या अधिकाय ।
मूरख जनकी बुधहरै, नाना रूप दिखाय ॥ ५१ ॥
ऐसी रानी रेवती, सम्यक रतन भरंत ।
सबजनको समझायके, निज ग्रहमें तिष्ठंत ॥ ५२ ॥
जैसे सुर गिर चूलका, निश्चलहै अधिकार ।
ताहि चलावनको पवन, समरथ नाहिं लगार ॥ ५३ ॥

चौपाई

फिर यह छुल्लक कपट सुधार । व्याधि युक्त तनकर तिहवार ।
ब्रतकर शोभित चीन शरीर श्रावक रूप धरो वरवीर ॥ ५४ ॥
चर्या समय रेवती ग्रेह । याको लेन अहार सुतेह ।
छिन पीड़ाके भार । मूर्छा खाय पड़ो तत्काल ॥ ५५ ॥
दीख नृपति की नार । धर्म सनेह चित्तमें धार ।

हाहाकार करी अधिकाय । भक्ति ठान इनके दिग आय ॥५६॥
सुंदर शीतल करी समीर । ताकर किय सचेत शरीर ।
आदर कर घर भीतर लाय । तहँ तिष्ठाये बहु सुख पाय ॥५७॥
करीहै यह दया निधान । प्राशुक रस मई दीनों दान ।
दयावान जो प्रानी होय । दान विषे बुध धारै सोय ॥५८॥

सवैया

तब यह ब्रम्हचारी लेयके आहार शुभ, तिहिथान माया फिर रोग विस्तारी है । करीहे प्रचंड वौन अति दुर्गन्ध रूप, जाके देखे ते गिलान आवै तहां भारीहै ॥ जबै रानी रेवती पश्चाताप ऐसे करै, भोजन अपथ मैंने दियो दुख भारी है । हाय हाय पापनी मैं कौन यहकाज कीनो, इत्यादिक निंदा निज कानीतिहवाराहै॥५९

दोहा

फेर भक्ति हिरदय सोधरे, निःशांकित मनहोय ।
वमन सबै धोवत भई, लेकर उश्न जु तोय ॥६०॥

पायता

तब चंद्र प्रभ ब्रह्मचारी । श्रावक दृढ़ व्रतको धारी ।
धीमान चित्त हरपानो । रानीको भगति लखानो ॥६१॥
जब माया तज ततकारा । आदर जुत वचन उचारा ।
कैसे जु बैन उचरेहैं । रस युक्त संतोष भरेहैं । ॥६२॥
हो देवी अब सुन लीजे । मन वचन काय थिर कीजे ,
त्रय जग में सारजो मानो । त्रिय गुप्ताचार्ज जानो ॥ ६३ ॥

अडिल्ल

तिनकी देख सुधर्म बृद्धिचित धारिये । जाते सबही सिद्ध होन सु निहारिये । तुह्मरे मनको सार पवित्र करो वही । या प्रकार शुभ गिरा ब्रह्मचारी कही ॥६४॥

पद्धडी

अरु मनमें धर्मनुराग धार । नाना प्रकार जिन लिङ्ग सार ।
कीनो है सो तुम को अबार । कल्याण हेत बरनो अपार ॥ ६५ ॥

यह अमूढ़ दृष्टि गुण जग मझार। संसार जलधि से करत पार।
मैं नाना बिधि मायो दिखाय। पण तुम्हरी दृढ़ता अति लखायै। ६६।
तात तिहुंलोक सुपूज्य मान। तुमरे हृदय सम्यक महान।
श्रीजिनवर चंद्रतने सु चर्न। जग जीवन को आनंद कर्म ॥ ६७॥
तिन पूज्न को तुमहीसुजान। पंडित नहिं कोई तुम समान।
ताते तुम्हरी महिमा अपार। या जगमें कौन करे उचार॥ ६८॥
ऐसे गुण जुत रानी मनोग। ताकी स्तुति कीनी सु जोग।
फिर निज ब्रतंत सबही उचार। ब्रह्मचारी कीनो गमनसार। ६९।
तिस पीछे चारुण नाम राय। शिब कीर्ति नाम सतका बुलाय।
निज राज दय बन मांहिजाय। जिन भाषित तप धारन कराय। ७०।
सो काय त्याग तपक प्रभाव। माहेंद्र स्वर्ग उपजो सुजाय।
ददीप्यमाम बपुक्रांति वान। जिन पद पूजै नित भक्ति ठान ॥७१॥

दोहा

फिर वह रानी रेवती, जिन बव में अनु राग।
धर कर जिन दिक्षा लई, तप कीनो बड़ भाग ॥७२॥
ब्रह्म स्वर्ग म सुर भयो, ऋद्धि लहो अधिकाय।
जिन तीरथ जात्रा करै, मन में हरष लहाय॥ ७३॥

काव्य

आचारज इम कहैं, सुनो तुम भबि जन सारे।
देव इन्द्र नर धीश, रैन दिन सेवन हारे॥
स्वर्ग मोक्ष दातार, धर्म जिन भाषत सोई।
अति पवित्र हिय धरो, तासते सब सुख होई॥ ७४॥
बहत कालते लगो, कुमारग मिथ्या भारी।
ताको तज नृपनारी, हिये दृढ़ सम्यक धारी॥
तुम भी करो, जगतमें पूजा पावो।
मते शिव सुख लहो, बहुरि जगमें नहिं आवो॥ ७५॥

इति श्री आराधनासार बेषै रानी रेवती की कथा सम्पूर्णम्

अथ उपगूहन अंग सेठ जिनेंद्रभक्ति ने

पाला ताकी कथा प्रारम्भः ॥ नं० ॥ १० ॥

मंगलाचरण सोरठा।

सुर शिव सुख दातार, श्री अरहंत जिनेश हैं।
तिनकी भक्ति सुधार, नमन करूं सिर नायके ॥ १ ॥
उपगूहन गुण सार, जिनेन्द्र भक्ति श्रेष्टी करो।
ताकी कथा उदार, भाषा में भविजन सुनहु ॥ २ ॥

चौपाई

रस संयुक्त दयाकी खान। ऐसो सोरठ देश महान।
श्री नेमीश्वर जन्म प्रभाय। ताते देश पवित्र कहाय ॥ ३ ॥
पाटलपुर तहँ नगरी जोग। नृप विशुद्धनामा जु मनोग।
नाम सुसीमा तिसके नार। रूप और लावन्य अपार ॥ ४ ॥
तिन दोनोंके करम बनाय। पुत्र सुवीर भयो दुखदाय।
सब चोरनमें वह सिरताज। सप्त विशन सेवै तजलाज ॥ ५ ॥
मात पिता शुभ कुल अरुजात। दीखतहै निमल विख्यात।
होनहार दुर्गति दुख जास। कुल आदिक निरफलहैतास ॥ ६ ॥
इस अंतर इक गौड़सुदेश। ताम्रलिप्त नगरी तहँ वेश।
जहां बसें नर श्री रत वान। पूजा दान करें अधिकान ॥ ७ ॥
तिसही नगर विषय बड़भाग। जैन धर्ममें धर अनुराग ॥
सम्यक दृष्टी श्रावक जान। सेठ जिनेन्द्र भक्ति धुधवान ॥ ८ ॥
तिसको चित सो मेघ स्वरूप। सुर शिव सुख जो धान अनूप ॥
ताको सींचत चित्त लगाय। सप्त क्षेत्र में धन खर्चाय ॥ ६ ॥
श्री जिन मन्दिर बीच मनोग। शास्त्र लिखावें बाँचन जोग ॥
चार प्रकार संघ को दान। येही सप्त क्षेत्र पहिचान ॥ १० ॥
सम्यक दृष्टि शिरोमणि येह। सेठ बुद्धि आकर गुण गेह ॥

ताके महल बिषय जिनधाम । सप्तम खण पैहै अभिराम ॥ ११ ॥
रतन मई प्रतिमा तहँ जोग । श्रीजिन पारश नाथ मनोग ॥
तिनके शीस छत्र त्रय जान । अद्भुत रतन मई दुतिवान ॥ १२ ॥

दोहा

जिन छत्रन में एक मणि, दुतिकर क्रांति अपार ।
बैडूरज मणिमय दिपै, ता रक्षा अधिकार ॥ १३ ॥
ता मणिकी महिमाअधिक, फैली जगत मझार ।
सुनी चोर भूपति तनुज, मनमें हरष सुधार ॥ १४ ॥

पद्धड़ी

सब चोरनको तबहि बुलाय । तिन सों यह बात कही सुनाय ॥
तुममें कोई सामथ वान । जो उस मणि को लावेसुजान ॥ १५ ॥
तिनमें इक सूरज नामचोर । सो कहत भयो इम बैन जोर ॥
मैं इन्द्र मुकटकी मणि उदार । क्षणमें लाऊं अवनी मँझार ॥ १६
जो दुराचार कर युक्त नीच । ते तत्पर खोटे करम बीच ॥
यह बात युक्त जानो प्रवीन । यामें संशय रंचक न हीन ॥ १७ ॥
तिस बच सुनकर तस्कर सूबीर । तिमको आज्ञा दीनी गहीर ॥
तस्कर सूरज कपटी महान । क्षुल्लक को भेष धरो निदान ॥ १८ ॥
सो काया क्लेश करै अपार । बपु क्षीण कियो बहु बरत पार ॥
पुर ग्राम द्रोण पट्टन सुदेश । तिनमें भिरमन करता बिशेष ॥ १९ ॥
उपदेश सर्व जनको कहंत । अपने आपो परगट करन्त ॥
नाना प्रकार तप तपत सोय । हिरदयमें धारै कपट जोय ॥ २० ॥

दोहा

क्रम कर ताम्र सुलिप्त पुर, आयो तप मैं रक्त ।
सुन कर बंदनको चलो, सेठ जिनेन्द्र जुभक्त ॥ २१ ॥
माया चारी की तबै, देखी दुर्बल काय ।
नमस्कार कर सेठ जी, स्तुति कर घर लाय ॥ २२ ॥

सोरठा

कोई न जानन हार, धूरत जनको धूर्तपन ।
जे पण्डित बुधवार, तेभी ठगे सुजाये हैं ॥ २३ ॥

चौपाई

मणिको लखकर तस्कर सोय । हर्षित मन में बहु विधि होय ॥
जैसे सुवरण देख सुनार । मनमें धार हर्ष अपार ॥ २४ ॥
तब वह सेठ महा बुधिवान । सरल चित्त सम्यक्त निधान ॥
इसको श्रावक निर्मल देख । यासों वचन कहे सुविशेष ॥ २५ ॥
छत्र तनी रक्षा तुम करो । मेरे मनको संशय हरो ॥
तबही कहे सुनो चितलाय । मैं तो नहीं रहुं इस ठाय ॥ २६ ॥
आग्रह करके भक्ति सुधार । याको राखो जिन आगार ॥
आप चले व्यापार निमित्त । इसे पूछकर हर्षित चित्त ॥ २७ ॥
भेरा परोहन बहु बुधवान । नगर बाह्य तब किया पयान ॥
सब कुटुम्ब निज काज लगाय । आवे जावे जन अधिकाय ॥ २८ ॥
तादिन क्षुल्लक यह मन लाय । अर्द्ध रात्रि मणि लियो चुराय ॥
सेठ धाम तज चलो लबार । मणिकी रस्म लखी कुतवार ॥ २९ ॥
चोर जान तिस पकड़न काज । तत्वर धावो जाय न भाज ॥
तब यह दौड़ा चोर अयान । सेठ जिनेन्द्र भक्ति जिस थान ॥ ३० ॥
रक्ष रक्ष इमि कह सिर नाय । शरन सेठ में तुम्हरी आय ॥
तब वह सेठ बनिक सिरताज । सम्यक दृष्टी धर्म जिहाज ॥ ३१ ॥
कोलाहल सुनके गुणवन्त । याको जानो चोर तुरन्त ॥
जो इसको पकड़ाऊं जाय । दर्शन मलिन होय अधिकाय ॥ ३२ ॥
ऐसो मनमें कियो विचार । कहत भयो सुनरे कुतवार ॥
यह धर्मातमा बुद्धि निधान । हो मूरख तुम नाहिं पिछान ॥ ३३ ॥
इन्हें ठहरायो तुमने चोर । मुखते बहुत मचायो शोर ॥
चारित रतन तनों भंडार । यह श्रावक सन्तोषी सार ॥ ३४ ॥

मैंने मणि मँगवायो सोय । तातें अब लायो थो सोय ॥
ऐसे बच सुनके कुतवार । नमिकर गयो गेह तत्कार ॥३५॥

सोरठा ।

तब एकांत सुजाय, वणिक पती निज मणि लई ।
कहत भयो समझाय, माया चारी ताहि लख ॥

दोहा

रे रे पापी मढ़ मति, तैं क्या कियो विचार ।
यह चेष्टा दुख दायनी, तोको है धिक्कार ॥ ३७ ॥

काव्य

जे अन्यायी जीव जगतमें हैं दुखकारी । सो निश्चय दुख लहैं जाय वे नर्क मंझारी ॥ जे पापी शुभ न्याय छोड़ पातिक रति होव । अपनो पोषन कर तेई भवि बीज सुबोवें ॥ ३८ ॥
फर सेठ महाराज चोर ते गिरा उचारी । तू इस लोक मंझार तीव्र तृष्णा को धारी ॥ पडता पातिग माहिं नास निश्चय तुझ होवे । यामें संशय नांहि बिफल नर भव तू खोवे ॥ ३९ ॥

दोहा

इत्यादिक दर बचन बहु, भापे बज्र समान ।
काढ़ दियो निज थानतैं, कपटी चोर अयान ॥ ४० ॥

पद्धड़ी

ऐसे जगमें जो भव्य जीव । उपगहन गुन पालो सदीव ॥
दुर्जन लंपट पापिष्ठ जोय । तिन जोग दर्श में होय ॥ ४१ ॥
तिसको ढक लीजे बार बार । कल्याण हेत हिरदय बिचार ॥
[illegible] निर्मल श्रीजिनेश । तिनकर भाषित जिन मत विशेष
बुद्धि हीन या जग मंझार । तिसमें भी दोष धरैं निकार ॥
। पापी मतवाले अयान । यामें संशय रंचक न मान ॥ ४३ ॥
जैसे निश्री अरु दुग्ध जान । पीवे जन जो अमृत समान ॥
जिसको पित्त ज्वर रोग होय । ताको लागत है कटुक सोय ।४४।

इति श्री आराधनासार विषय जिनेन्द्र भक्ति की कथा समाप्तम्

अथ स्थितिकरण अंग वारिषेणजी ने पाला ताकी कथा प्रारम्भः नं० ॥ ११ ॥

मंगलाचरण । कवित्त

जगत पूज्य श्री वीतरागको, भक्ति सहित सो नमन कराय ।
स्थिति करण गुण पालो जाने, ताकी कथा कहुं हरषाय ॥
वारिषेण श्रेणिक सुत नाने, अंग यही उद्योत कराय ।
भव्य समूह सुनो चित देकर, जाते सम्यक शुद्ध लहाय ॥ १ ॥

चौपाई

भरतक्षेत्र में मागध देश । संपति को भंडार विशेश ॥
राजग्रही नगरी तहँ जान । श्रेणिक नरपति सम्यक वान ॥२॥
सम्यक व्रतको धारन हार । नार चेलना तिस आगार ॥
तिन दोनो के पुन्य संजोग । वारिषेण सुत भयो मनोग ॥३॥
उत्तम श्रावक व्रत धारन्त । तत्व लखन में श्रावक सन्त ॥
इकदिन प्रोपधि कर धीमान । चौदश रैन गयो समसान ॥ ४ ॥
कायोत्सर्ग ध्यान धर धीर । तिष्टे तहँ गुण गण गंभीर ॥
ताहि दिवस इक कारज जान । मदन सुन्दरी गणिका आन ॥५॥
वनमें क्रीडा करत अपार । श्रीकीरत तहँ सेठ निहार ॥
ताके गले हार द्युतिवंत । देखो वेश्या ने चमकंत ॥६॥
नगर नायका करे विचार । बिना हार मम जन्म असार ॥
ऐसे चिनवन कर बहु भाय । दुःखित होकर निज ग्रह आय ॥७॥
जिनने दुखित तिष्टे नार । तिनने आये रैन मंझार ॥
विद्युत तसकर यामें रक्त । चोरी करन विषे आशक्त ॥ ८ ॥
कहन भयो प्यारी सुन बात । क्या तुम दुःख आजहै गात ॥
वारन मोको देउ बताय । तब वह कहन भई मुसकाय ॥ ९ ॥

अहो प्राण बल्लभ सुखदान । श्रीकीरत जो सेठ महान ॥
ताके गले हार द्युति वन्त । सो मोको दो लाय तुरन्त ॥ १० ॥

दोहा

जो तू मोको लायदे, तो मेरो भरतार ।
जो लावै नहि हारको, तो नहि प्रीत लगार ॥ ११ ॥

सवैया

बचन सुनाए नार लिये सोई हिये धार साहस अपार कर रैन माही जायके । गयो सेठके अगार लियोहै चुराय हार, बुध अनुसार चतुराई को फेलायके ॥ पथमे चलो सो आत तेज मणि की लखात, तव कुतवार साथ लगो पीछै धायके । जब यह पापी चोर सको नहि तहँ दौर, गयो है मसान भूमि हिये डर पाय के ॥ १२ ॥

दोहा

बारषेण चित ध्यान में ठाढे आतम लीन
तिन चरनो ढिग हार धर, अदृश भयो मलीन ॥ १३ ॥
कोत वाल तत्क्षण गयो, राजा के दरबार ।
कहत भयो बिर तांत सब. सुनिये प्रभु चित धार ॥१४॥

चौपाई

बारिषेण तुम सुत महाराज । चोरी करत लखो हम आज ॥
राजा इसके सुन बैन । कोप सहित कीने निजनैन ॥१५ ॥
कहत भयो नृपराय । हो पुरुषो सुनलो चित लाय ॥
खोटे चरित्र पाप की खान । मो सुत को देखो अधिकान ॥१६॥
भूमि मसान भयानक काय । तामे ध्यान धरे अधिकाय ॥
कहँ तो धर्म तनी यह बात । कहा ठगन करनो बिख्यात ॥ १७॥
जे ठगहैं जग में अधिकार । क्या क्या काज करे न लगार ॥

फिर नृपति मन कीन बिचार । दीरघ राज हमारो सार ॥१८॥
निसभोगन लायक सत जेह । तितने कारज कीनो येह ।
यातें अधिक कष्ट नहिं कोय । जगत माहिं देखो अब लोय १९॥

दोहा

इम विचार कर नृपति ने, हुक्म दिया तत्काल ।
ताको मस्तक छेदिये, शीघ्र जाय कुलवाल ॥२०॥

चौपाई

इम आज्ञा दीनी नृपाल, कुँवर हतन को चले चंडाल ।
इकठे भये सबै मातंग । चोर हतनको उद्धित अंग ॥ २१ ॥

काव्य

तहां एक चंडाल तीव्र असि करमें लीनी । वारिषेण के सीस विषै तिन ततच्छिण दीनी ॥ नगरीके सबलोग खड़े देखें तिह ठाहीं । इनके पुन्यप्रसाद भयो कारन अधिकाई ॥ सो खड्ग फूल मालाभई, देखन जन हरषाइयो । बहु देवन जै जै करी, पुलकित चित गुण गाइयो ॥ २२

चौपाई

आचारज इम कहैं उचार । पुन्य महा सुखको भंडार ।
तीव्र अग्नि जल सम ह्वै जाय । वारध सेती थल दरशाय ॥२३॥
विष अमृत अरु मित्र समान । विपति संपदा है अधिकान ।
तातें सुख इच्छुक भवि जेह । करो पुन्य नाना विधि तेह २४॥
पुन्य कौनको कहिये वीर । ताको वर्णन सुनो गहीर ।
श्री जिनचरन कमल की सेव । पांच दान दीजे बहु भेव २५
शीलतनी रक्षा उपवास । या विधि पुन्य जिनेश्वर भास ।
इम अचरज सुर असुर निहार । हर्षित ह्वै इम करत पुकार२६॥
पुन्न बड़ो है जगत मझार । इहविधि अस्तुति करी अपार ।

पुष्प बृष्टि नभते बरषंत । तापर अलि गुंजार करंत ॥ २७ ॥
धर आनंद हिये तिहबार । बड़े बड़े सावंत अपार ।
कहतभये नृपति से जाय । हो साधू सुनये मनलाय ॥ २८ ॥
बारिषेनको चरित महान । ताको अब हम करैं बखान ।
तुम्हरे सुतको चित्त अभंग । जिन चरनांवुज सेवनभृंग ॥२६॥
श्रावक क्रिया करै बुधवान । शुद्ध आत्मा निर्मल ज्ञान ।
जैन धर्म में निपुण महंत । तिस महिमा वर्णत नहिं अंत ३० ॥

दोहा

इम अस्तुति करते भये, नृपके आगे शूर ।
पून्य थकी क्या क्या न है, याते कुछ नहिं दूर ॥ ३१ ॥
श्रेणिक नृप सब चरित सुन, पश्चाताप कराय ।
मैं कारज कीनो कहा, हाय हाय दुखदाय ॥ ३२ ॥

अडिल्ल

करैं नरेंद्र विचार सोच उर धारके ।
जे जन हैं बुधवान करैं सुविचारके ॥
तेही सुख अधिकान लहैं या जग सही ।
तिनकी कीरति प्रगटहोय संशय नहीं ॥ ३३ ॥
जे महंत जड़बुद्धी हम सम जग बिषै ।
बिना बिचारे कारज निज मुखते अखै ॥
तेई सुख सागरमें डूबत देखिये ।
अपकीरति परत्यक्ष तिन्हींकी पेखिये ॥ ३४ ॥

दोहा

इत्यादिक आलोचना, करके श्रेणिक राय ।
महा भयान मसान में, गयो तबै दुख पाय ॥ ३५ ॥

मेघकुमार

कहत भयो जिन पुत्रसेजी सुनिये ज्ञान निधान।
बिना विचार से कियोजी यह कारज दुखदाय ॥
सयाने क्षमा करो बुधिवान ॥ ३६ ॥
इत्यादिक वच भाषियोजी श्रेणिक बारंबार ।
विनयधार करतो भयोजी विनती बहुत प्रकार ॥
सयाने क्षमाकरो बुधिवान ॥ ३७ ॥
मलियागिरि दाहो थकोजी अथवा घिसन कराय ।
देत सुगंधत ऊसही जी त्योंही धूचित थाय ॥
सयाने श्रीगुरु के यह बैन ॥ ३८ ॥
तिस पीछे तस्कर वही जी सुभट महा बलवान ।
नमस्कार कर मांगियो जी, नृपसे अभय सुदान ॥
सयाने मोविनती सुन भूप ॥ ३९ ॥
अहो देव मैने कियोजी यह कारज दुखदाय ।
गणका शक्त सदारहो जी हूं पापी अधिकाय ॥
सयाने मो विनती सुन भूप ॥ ४० ॥
तुमरो पुत्र महान है जी श्रावक शुद्धाचार ।
इम वृत्तांत भाषो सही जी विद्युत ने तत्कार ॥
सयाने मो विनती सुन भूप ॥ ४१ ॥
तब नृप आदरयुत कहोजी पुत्र चलो निज गेह ।
राज संपदा भोगवोजी तुमसे अधिक सनेह ॥
सयाने मो वच लीजे मान ॥ ४२ ॥
वारिषेण कहते भयेजी, सुनो तात चित लाय ।
यह सब संसार कीजी, मैं देखी बहु भाय ॥
सयाने सुनिये तात महान ॥ ४३ ॥

अब निज चरन कमल तनोजी, मोको शरण महान।
पान पत्र भोजन करोजी, आतमको हितठान ॥
सयाने सुनिये तात दयाल ॥ ४४ ॥
बनमें जाऊं बेगहीजी, मुनि मारग चित लाय ।
तिष्टूंगो नित ही तहांजी,हो दीगम्बर काय॥
सयाने सुनिये तात दयाल ॥ ४५ ॥
ऐसे कह संसार तेजी, के बिरक्त अधिकार ।
सूरदेव मुनि गयोजी, दिक्षाले तत्काल ॥
सयाने निज आतमके काज ॥४६ ॥

चौपाई ।

तब यह वारिषेण मुनि संत । निज भाषित चारित पालंत ॥
अवनीपर सो करत बिहार । भव्यनको संबोधत सार ॥४७॥
ग्राम पलाश कूट इक जान । तहँ चर्याको गयो महान ॥
श्रेणिकको मंत्री तिहि ठाम । अग्नि भूत तिस नाम ललाम ।४८
तनुज तासके पुष्प सुडार । पूजा दान विषै रतसार ॥
तामें गुण शोभित मुनिराज। आवत देखे धर्म जिहाज ॥४९॥
हर्ष सहित उठकर तिहि घरी। तिष्ट तिष्टकर बंदन करी॥
नवधा भक्ति करी अधिकाय । दाताके गुण सप्त लहाय ॥५०॥
हर्ष सहित रसकर संयुक्त। दीनों मुनिको प्रासुक भुक्त॥
भले सुपात्र अर्थ जो दान । देवै सुख जग में अधिकान॥ ५१॥

दोहा ।

लघु वयसे इन मित्रथो, पुष्प डाल हितकार ।
मुनिको पहुंचावन चलो पूछ सो मिला नार ॥५२॥

काव्य ।

भक्ति धार हिय मांहि, कमंडल कर निज लीना ।
थोड़ी दूर सुजाय, फेर ग्रह को मन कीना ॥

पुष्प डाल इम वैन कहे, मुनि से तिहि वारी ।
अहो देवपथ में तड़ाग, यह है सुखकारी ॥५३॥
हम तुम दोनों कीनी थी, यहाँ क्रीड़ा भारी ।
सघन छांहि यातीर, अधिक शोभा विस्तारी ॥
कल्प वृक्ष सम वृक्ष, फलन कर उन्नत पेखो ।
मोहत हैं सहकार तने, यह आगे देखो ॥५४॥
यह दूजो अस्थान, लखो तुम श्री मुनिराई ।
हम तुम क्रीड़ा प्रथम, करी थी बहु सुखदाई ॥
कैसो यह स्थान महा, विस्तीरण जानो ।
सत पुरुषन मन जेम, यहैं निश्चय मन आनो ॥५५॥

दोहा ।

इत्यादिक वहु वचन कर, चिन्ह दिखाये सार ।
नमस्कार करतो भयो, मुनि को वारम्वार ॥ ५६ ॥

चौपाई ।

इसके चितकी जान तुरंत । तत्व वचन भाषे वुधिवन्त ॥
आदर सहित सुधर्म सुनाय । याको मन वैराग कराय ॥५७॥
भगवत दिक्षा याको दीन । शास्त्र पढाये वहुत प्रवीन ॥
पालत संजम पढ़त पुरान । तो पण मोह धरै अधिकान ॥५८॥
कानी नारि सोमिला जोय । ताको भूलत नाहीं सोय ॥
आचारज इम कहे उचार । काम मोहको है धिक्कार ॥५९॥
ताकर जीव ठगाये जाय । हित अनहितको जानत नांहि ॥
वारिषेन मुनि दीन दयाल । तपकी सिद्ध हेत तत्काल ॥ ६० ॥
तीरथ जात्रा करत अपार । द्वादश वर्ष गये निरधार ॥
इक दिन ये दोनों मुनिराय । समो शरन में पहुँचे जाय ॥ ६१ ॥
वीरनाथ को वंदन करी । निज कोठे बैठे तिहि घरी ॥

तहं गंधर्बन की बहु नार । प्रभूके गुण गावें थी सार ॥ ६२ ॥
नाना बिधिके गान कराय । तामें बिरह अधिक दरसाय ॥
इत्यादिक गावें थी गान । ताको बरन सुनो दे कान ॥ ६३ ॥

गाथा ।

मलय कुचेली उम्मणी नोहे पबसियरणि ।
कह जीवो षणयधर इमंत बिरहेण ॥ ६४ ॥

चौपाई ।

इह बिधि गान सुनै देकान । काम अग्नि तिसतन उपजान ।
पुष्प डाल लघु बरती साद । नारि सोमिला कीनी याद ॥६५॥
बारिषेण जोगीश्वर तबै । याके मनकी जानी सबै ॥
स्थिति करण गुणपालन काज । याको साथ लेय महराज ॥६६॥
राज ग्रही नगरीमें आय । आवत देखे चेलन माय ॥
अपने मनमें करो बिचार। क्या मुझ सुत चित चलो अपार ।६७।
ऐसे मनमें चितवनकीन । कनक काष्ट दो आसन दीन ॥
तब यह बारिषेण धीमान । बीतराग आसन थित ठान ॥६८॥

दोहा ।

जे मुनिराज जहाज सम, ऐसे क्रिया कराय ।
सत्पुरुषन के चित्तमें, भ्रांत नहीं उपजाय ॥
यह जतीन्द्र ताही समय, सुधा समाने बैन ।
बिनय वान माता थकी, कहत भये सुखदैन ॥ ७० ॥

पद्धड़ी

या बिधिते श्रीमुनि बचकहाय । सुनमाता अबतू चित्तलाय ।
मेरे अन्तेबरकी जुनार । श्रँगारसहित लावो अवार ॥ ७१ ॥
ऐसे सुनकर मातातुरंत । बत्तीस नार अति रूपवन्त ॥
पटभूषण जुतबहुबिधि श्रँगार। लाई मुनिढिग तिसहीसुबार ।७२।

शिष्य पुष्पडाल परमादलीन। तिष्ठथोइन ढिंग चितमलीन।
तब वारिषेण मुनि इम भनंत। सुन पुष्पडाल मोबच तुरंत ।७३।
जुगराज पदी मेरीअपार। बहुसार संपदाकी भंडार ॥
अरुये नारी अतिरूपवान। हो मुनितुझ रुचि तोलेमहान।७४।
तिनके बच सुनकर पुष्पडार। लज्जाजुत उठकर भूनिहार ॥
गुरुचरन कमलमें शीसधार। बचकहत भयोकर नमस्कार ॥७५॥
होमुनि स्वामिनतुम धन्यधम्य।तुमलोभ पिशाच कियोकदन्य ॥
अरु साततत्व भापेजिनेन्द्र। तिनजाननको पंडितजितेन्द्र ।७६।

दोहा

जे महंत तुम सारिखे, तज संपति तप ठान।
तिनको क्या इसलोक में, दुर्लभ है भगवान ॥ ७७ ॥

चौपाई

मैं तो जन्म अंधसम होय। यामें संशय नाहीं कोय।
तपरूपीमणि ग्रहणकराय। तऊकारण तियनाहि बिराय ।७८।
तुमने द्वादशवर्ष प्रजंत। तप निर्मल कीनो गुणवन्त ॥
अरुमैं मूरखभी तपकीन।पणमुझ चित सलरही मलीन ॥७९॥
तातें करुणानिधि तुमईस। मैं अपराधी विस्वेबीस ॥
प्राश्चित मोकूं दीजे देव। जाते नाशहोय अघभेव ॥ ८० ॥
तबही बारषेण मुनिचन्द। निश्चल वृतधारी गुणवृन्द ॥
परमानंद उपजावनहार। बचन कहे ताको हितकार ॥ ८१ ॥
होमुनि धीरवीर मनमांहि। दुखअब कीजै रंचकनांहि ॥
यह मानीउठ करमबसाय। पंडित्तजन भी मग बिसराय ॥८२॥

काव्य

ऐसे कहकर वैन सरस धीरज उपजायो।
प्राश्चित आगम जुक्त देयकर शुद्ध करायो ॥

फिर श्री पुष्प सुडाल बचन गुरु के चित आने ॥
है वैराग सुभाव बहुत दुःसह तप ठाने ॥ ८३ ॥
धर्म रूप पर्वतते जो कोइ पड़तो प्रानी ।
तिसको थांभा भव्यनने जो करअधिकान ॥
निज कल्याण निमित्त यही गुण हिरदय धारो ।
स्वर्ग मोक्षफल लहोजगत महिमा बिस्तारो ॥८४॥

दोहा

देह आदिक अरु संपदा, यह जग अथिर सुजोय ।
तो पण करहू थान में, रक्षाते सुख होय ॥ ८५ ॥
कोड़ो सुख दातार जो, धर्म जगत बिख्यात ।
तिसही रक्षाकरन ते, क्या क्या सुख नहिंपात ॥८६॥

सवैया इकतीसा

ऐसो जान भव्य जन तजो परमाद बेगा, एही दुख कारन हैं जग मांहि जानिये । भवदधि तारन को अंग स्थिति कर्न सेत ताहि, पालो बार बार छिन न भुलानिये ॥ कहे गुरु बैन येह बारिषेन मुनि वह, हमें मोक्ष थान देउ भव भ्रम हानिये। और सुख मंगल की प्राप्त नित प्रति करो, यह बर मांगत हूं मेरे कर्म भानिये ॥ ८७ ॥

चौपाई

कैसेहैं वे श्रीमुनि राय । बारिषेन जी जन सुखदाय ॥
श्री जिनचरन कमलके भृंग। ज्ञानध्यान रतजयो अभंग ॥८८॥
है प्रसिद्धमहिमा जगबीच। ज्योंपूरव शशिसहित मरीच ॥
भू भृततेजान । पड़तो मुनिथामो धीमान ॥ ८९ ॥

दोहा

हस्तालंबन देयके, व्रत को प्रापति कीन ।
स्थिति करन गुन पालिये, बारषेण परबीन ॥ ९० ॥

इति श्री आराधना सार कथा कोष बिषै स्थिती करण अग बारषेण जी ने पाला ताकी कथा समाप्तः ।

*अथ वात्सल्य गुण विष्णुकुमार मुनि *

नै पाला तिनकी कथा प्रारम्भः नं० १२

अडिल्ल

श्री अरिहंत जिनेश्वर को सिरनायके, और सरस्वति मात
तनों मनलायके । गुरुके चरन कमल जग में सुखकार जी,
तिनको वंदन करूं हर्ष उरधारजी ॥ १ ॥

चौपाई

वातसल्य गुण प्रगटकराय । विश्नु कुमार भये मुनिराय ।
तिनकी कथाकहूं चितलाय।सुनते भविजन आनंदपाय ॥२॥
येही भरतक्षेत्र है वेश । तामधि आवंती शुद्ध देश ॥
तहँ उज्जैनीपुरी अनूप । श्रीवर माता कोवर भूप ॥ ३ ॥
श्रीयमती ताके पटनार । ताकोलख रति लज्जाधार ॥
फिर कैसोहै नृपतिउदार । न्यायशास्त्रको जाननहार ॥ ४ ॥
अरिमद मर्दनको बलवान । परजा पालन दक्षमहान ॥
धर्मातमा धर्ममें लीन । दुष्टनको जिन निग्रह कीन ॥ ५ ॥
तिस नृपतिके मंत्रीचार । जैन धर्मके शत्रु निहार ॥
बलनिमुंच वृहस्पति पहलाद । तिष्ठत नृपढिग जुतअहलाद।६।
धर्मलीन नरपति है जेह । ए पापी सैवै कर नेह ॥
जैसें चंदनके तरुमांहि । दुष्टसर्प निसदिन लिपटाहि ॥ ७ ॥

दोहा

इक दिनके औसर विषै, ज्ञान नैन्न दुतिवान ।
नाम अकंपन सूरजी, आय तहं थिन ठान ॥ ८ ॥

मद अवलिप्त कपोल छंद

कैसे हैं ऋषिराज वचन अमृत बरसावैं ।
भव्यरूप जेधान सींच तिन मुदित करावैं ॥

काम जई मुनि शान्ति सतक तिन के संग मांही।
देव इन्द्र नागेन्द्रन कर पूजत अधिकाई ॥ ९ ॥
उज्जैनी उद्यान विषै तिष्टे सुखदाई।
तब आज्ञा गुरुहई सुनो सब चित्त लगाई ॥
राजादिक जन आय कहें कुछ जो सुन लीजो।
हो जतीन्द्र तुम बीच कोऊ मत उत्तर दीजो ॥ १० ॥

दोहा

अरु तुम में कोई मुनी, देगो उतर सोय।
सर्व संग को तास तें, महा उपद्रव होय ॥ ११ ॥

सोरठा

दोनों भव सुखकार, ऐसे गुरुके बैन सुन।
तब ही मौन सुधार, ध्यान लगा तिष्ठत भये ॥१२॥
जे हैं शिष्य महान, विनय सहित गुरु वच कहैं।
जो अग्या नहिंमान, ते कुपात्र सम जग विषैं॥१३॥

चाल—अहो जगत गुरु की

यों अन्तर पुरलोक चित्तमें हर्ष बढ़ाये।
पूजन बंदन काज सार सामग्री लाये ॥
तास समय भूपाल महल ऊपर थित ठाने।
पुरजन को समुदाय जात देखे अधिकाने ॥ १४ ॥
श्री बरमां महाराज तबै इम बचन उचारें।
बिना काल पुरलोक कहा को गमन सुधारें ॥
तब वे मंत्री चार दुष्ट निज बचन सुनावें।
अहो देव बन मांहि जती नित आवें जावें ॥ १५ ॥
तिन के ढिंग यह जात पुष्प लेकर जन सारे।
सुन ऐसे नरराय फेर इम बचन उचारे ॥

तिनके देखन काज चलें हम भी इहिबारा ।
लीने मंत्री साथ तहीं पहुंचे तत्कारा ॥ १६ ॥

दोहा

तहां जाय कर नृपति ने, देखो मुनि समुदाय ।
ध्यान जुक्त निश्चल सबे, आतम सों लवलाय ॥१७॥

दोहा

सब मुनिको लख नगन स्वरूप। प्रति प्रति बंदन कीनी भूप॥
भक्तिहर्ष करिके तिहघरी । बहु प्रकार अस्तुति बिस्तरी ॥१८॥
सब जतीन्द्रलख नृपको सही । धर्मलाभ काहू नाहिंकही॥
निसप्रेही वे साधुमहान । देखराय तब कियोपयान ॥ १६ ॥
तिसऔसर मंत्री पापेश । सत्पुरुषनसों राखे द्वेश ॥
कहत भये सुनिये नरनाह। क्यायह बोलन जानत नांह ॥२०॥
कपट सहित यह मौन धरंत। यह बिधि हास्य बचनभाषंत ॥
नृतजुत चाले तिसही बार। दुष्ट चित्त ये मंत्री चार ॥ २१ ॥

दोहा

इन्द्र चन्द्र नागेन्द्र कर, बंदनीक गुरु जान ।
जे पापी निंदा करैं, ते सठ स्वान समान ॥ २२ ॥

पद्धडी।

तिस पीछे मारगके मंझार । श्रुतसागर मुनि आवत उदार॥
चर्या निमित्त कीनो पयान । गुरुकी आज्ञा नहिं सुनी कान।२३।
इनको आवत लखके तुरंत । तब दुष्ट सचिव ऐसे भनंत ॥
यह तरुन बैल देख्यो प्रत्यक्ष । आवतहै मगमें पुष्ट कुक्ष ॥ २४ ॥
ऐसे मुनि सुनि इन जान भाव । इन बाद करनको चित्तचाव ॥
तब स्याद् वाद नभकर प्रचंड । नृप देखत बच भाषे प्रचंड ।२५।
कैसे हैं बच मुनिके महान । ज्ञानांबुज जल कल्लोलमान ॥
ऐसे बचकर जीते तुरंत । विद्या गर्भित दुजमति एकन्त ॥२६॥

दोहा ।

एक मुनी जीते बहुत, यह क्या अचरज जान ।
ऐसे भानु प्रकाश तैं, होत सबै तम हान ॥ २७ ॥

चौपाई ।

श्रुतसागर मुनि गुरुढिंग आय । बाद भयो सो कह्यो सुनाय ॥
तब गुरु सुन इम भाषे बैन । हां यह काज कियो दुखदैन ।२८।
सुखको देनहार जो संग । अपने करते कीनों भंग ॥
तात तुम एका की जाय । बाद थान तिष्ठो मुनिराय ॥ २९ ॥
कायोत्सर्ग रैनमें धार । ध्यान करो परमारथ सार ॥
तो जीवन संगको है सही । तुम निर्मल हो गुरु इमकही ॥३०॥
धीरबीर थिरमेरु समान । श्रुतसागर नामा ऋषि जान ॥
गुरु बच सुन संग रक्षा हेत । बाद थान तिष्ठे जग सेत ॥ ३१ ॥
तब वे ब्राह्मण मंत्री चार । मान भंगकर लाजित अपार ॥
रात्रि विषै मारनके काज । घरसे निकसे आयुध साज ॥ ३२ ॥
मारग में श्रुतसागर संत । कायोत्सर्ग धार तिष्ठंत ॥
दुष्ट चित्त इम करो बिचार । चारों खड्ग लई इकबार ॥३३॥
मुनि मस्तक वाही तत्काल । इन मुनिवरको पुन्य बिशाल ॥
नगरदेव आसन कंपाय । सब चरित्र लख ततछिन आय ॥३४॥

दोहा ।

इन चारों मंत्रीनको, कीलत भयो तुरंत ।
नगन खड्ग तिनकर विषै, ऋषि सिरपर शोभन्त ।३५।

चौपाई ।

होत प्रभात सबै जन आय । देखे मंत्री कीलत काय ॥
नृपके ढिंग जब कहो सुनाय । तब नृपति देखो तहँ आय ॥३७॥

जो पापी या जगत मंझार। कुत्सित मनके धारन हार॥
निराबाधको दुख बहु करैं। ते निश्चयकर नर्कहिं परैं॥ ३८॥
जो समान जनको मारत। तिनको मुख देखे महिसंत॥
येतो तीन जगत गुरु जान। इनको जेदें कष्ट महान॥ ३९॥
ते बहु विधि जन दुःख लहाहि। ताकी कथा कही नहिं जाहि॥
कुल क्रमते एते परधान। अरु इनको ब्राह्मण नृपजान॥४०॥
याते इनकी हनी न काय। क्रोध धार खरपे चढ़वाय॥
देश निकालो दियो तुरंत। न्याय शास्त्र वेत्ता नृपसंत॥ ४१॥

सोरठा।

अन्यायी नर जेह, ते असंगति को लहे।
यामें नहीं संदेह, आचारज इम कहत हैं॥ ४२॥
जैन प्रभाव निहार, भविजन आनंदित भये।
कीनी जयजयकार, कोलाहल बहु ठानके॥४३॥

पद्धडी।

इस अंतर हस्तिनापुर मंझार। नृप महा पदम तिष्टे उदार॥
सो कपट रहित धर्मज्ञसार। लक्ष्मी पति नामा तासुनार॥४४॥
तिन दोनोंके शुभपुन संजोग। जुगसुत उपजे अतिही मनोग॥
इक पदमनाम शुभतनुज जान। अरु विष्णुकुमार द्वितियमहान ४५
बहुसुखसे तिष्टे धर्म लीन। इस आगे और सुनो प्रवीन॥
इक पदम नृपतिहै पुन्यवान। लख धारे अंबुजकी समान॥४६॥
निज चरनकमलमें लीन सोय। एक दिन चित्त वैराग होय॥
निजपुत्र पद्मके राजदेय। छोटेसुतको निजसाथ लेय॥ ४७॥
श्रुतसागरचंद्र मुनीदयाल। परमारथमें निजचित विशाल॥
तिनको करके नृप नमस्कार। दिक्षा लीनी आनंद धार॥४८॥

अवधानविषै तत्परमुनिंद्र । श्रीविश्नुकुमार महा जोगिंद्र ॥
भगवतभावत तपको करंत । उपजी विक्रियसो रिधिमहंत ॥४९॥

दोहा ।

तिस अंतर नृप पदम अब, दीरघ राज कराय ।
हस्तिनागपुर नगरमें, तिष्टे बहु सुख पाय ॥ ५० ॥
बलि आदिक चारों सचिव, पदम रायपै आय ।
होत भये मंत्री तहां, अपनी बुद्धि पसाय ॥ ५१ ॥

चौपाई ।

एकदिना यह बलप्रधान । रायकाय कृषिलख अधिकाय ॥
कहतभये सुनियेहो देव । कृषितन क्यों सो कहियेभेव ॥५२॥
तब नरेंद्र बोले इमबान । कुंभ नगर सिंहबल राजान ॥
दुर्गम गढ़को बल धारंत । मेरो देश उजाड़ करंत ॥५३॥
याते मम चिन्ता अधिकाय । यह विधि कारन कहो सुनाय ।
तब राजाकी आज्ञा पाय । बल मंत्री ता ऊपर जाय ॥५४॥
अपनी बुध चतुराई ठान । ततछिन ताको गढ़के मान ।
हर बलको बांधो तत्कार । लायो गजपुर नगर मँझार ॥५५॥
पदमराय पै तबही जाय । कहत भयो लोहर बलराय ।
ऐसी सुनकर पदम नरेश । निज तनमें धर हर्ष विशेष ॥ ५६ ॥
कहत भयो बलसे तेहिबार । धीर बीर बच सुन तू सार ।
जो तुमरे चित इच्छा होइ । बर मांगो मैं देहूं सोइ ॥ ५७ ॥
बोलो बच सुन नृप गुण गेह । रहै भंडार बचन शुभ येह ।
जब मोको कछु पर है काज । लेऊंगो तब मैं महाराज ॥

काव्य

रस अन्तर मुनि सात सतक जिन के संग सोहै ।
नाम अकंपन सूर जगत जनके मन मोहै ॥

भविजनको उपदेश देत आये हितकारी ।
गजपुर बाह्यउद्यान विषै तिष्टे जगतारी ॥ ५६ ॥
जब सुनके पुरलोग किये उत्साह अपारा ।
ले सामग्री सार गये बंदन तिहिवारा ॥
जब ये मंत्री चार कियो मनमाहिं बिचारा ।
यह नृप मुनिको दास, एम डर चित बहु धारा ६०॥

दोहा

इम डर मनमें आनकै, चारों कियो बिचार ।
बलने नृप से आयके, बर मांगो तत्कार ॥ ८१ ॥
सप्तदिवस को राज अब, दीजे भूप उदार ।
तुम सतबादी जगत में, बचनकरो प्रतिपार ॥ ६२ ॥
तिन मंत्रिन के बचन कर, ठगो गयो नर राय ।
राजदियो वाही समय, आप महल तिष्ठाय ॥ ६३ ॥

चौपाई

तब ये मूरख मंत्री चार । राज पाय जिय कपट सुधार ।
मुनि गणके मारनको जबै । यज्ञ आरम्भ कियो इन तबै ६४
बाड़ो रोप्यो चारों ओर । तृणको मंडप कियो अघोर ।
तामें विप्र वेद ध्वनिकरैं । पशु घात बहुविधि विस्तरैं ॥ ६५ ॥
पशु होय करके दुर्गंध । घृत और अग्नि भयो सम्बध ।
ताको धूम उड़ो दुखदाय । जाकर मुनि उपसर्ग लहाय ॥६६॥
झूठीपातल ले मतिहीन । सब जतियन पे क्षेपन कीन ।
ताकर पीड़ित श्रीमुनिराय । द्वै प्रकार सन्याश धराय ॥ ६७ ॥
कैसे हैं सब वे मुनिचंद । परमातम में धरो अनंद ।
शत्रु मित्र में है सम भाय । अचल मेरु सम निश्चल काय ६८

इस अन्तर अब सुनो बखान। दक्षिण मथुरा नगर महान।
तहँ श्रुतिसागर चंद मुनिंद। अष्ट निमित्त जान गुणबृन्द ६९
तिष्ठे थे वे जन सुखकार। कारन एक लखो तिहिबार।
नभ में श्रवण नक्षत्र महान। कंपत देखो तिन अधिकान ७०
हाय हाय यह कष्ट अपार। मुनिगण पै इस समय मंझार।
पुष्पदंत क्षुल्लक तहँ एक। मुनिढ़िग तिष्ठे सहित विवेक ७१
ताते पूछो तब सिरनाय। कहँ उपसर्ग कौनको थाय।
तब श्रीगुरु बोले इम बान। गज पुरनगर विषै तू जान॥७२॥
नाम अकंपन शूर प्रधान। सात सतक मुनिता संग जान।
तिनको बहु उपसर्ग अवार। फिर श्रावक पूछो कर धार॥७३॥
अहो देव यह कष्ट अपार। क्योंकर दूर होय तत्कार।
तब गुरु कहत भये सुन बत्त। भू भूषण पर्वत परतत्त ७४
तापर विष्णुकुमार जोगिन्द्र। धरैविक्रिया ऋद्धि मुनिंद॥
तिष्ठत हैं तहँ ध्यान लगाय। तिनकर यह उपसर्ग पलाय ७५

दोहा

तबही क्षुल्लक गगन मग, ततछिन कियो पयान।
बिष्णुकुमार मुनिंदने, भाषो सब तिन आन॥ ७६॥
तब स्वामी कहते भये, क्या मुझको है ऋद्ध।
नाम विक्रिया तासको, उपजी है परसिद्ध॥ ७७॥

सोरठा

लेन परीक्षा जान, भुज फैलाई आपनी।
सो भू मृतको भानु, सागर तक पहुँचत भई॥ ७८॥
जानत भये तुरंत, मोकूं ऋद्ध उपजत सही।
धर्म स्नेह धरंत, हस्ति नागपुर में गये॥७९॥

गीता

तब जायकर नृपपद्म सेती बचन ऐसे उच्चरे ।
हो भ्रात कारज कष्ट दाता कौन तुम ने यह करे ॥
शुभ कुल हमारे में किसी ने आज लों यह नहिं करी ।
ऋषि गणन को उपसर्ग कीजो क्या सु यह चितमें धरी ॥८०॥
जो सृष्टि को पालै सदा अरु दुःख को निग्रह करै ।
वोही नृपति है जगत माहीं जस तिनों को विस्तरै ॥
जो साधु जन की करै बाधा ते लहै अति कष्टहीं ।
जैसे उषण जलते लहै तन जान या विधि तूसही ॥ ८१ ॥

दोहा

जोलों मुनिगण को अबै, कष्टग होय शरीर ।
तिनतेही तू शांतिकर, मान बचन मो वीर ॥ ८२ ॥

छप्पय

ऐसे बच सुन पद्म नरेश्वर उत्तर दीनो ।
हो मुनि मैं क्या करूं काज यह बलने कीनो ॥
सप्त दिवसको राज दियो मैं बचन बंध है ।
ताते तुम अब करो बेग जाते आनंद है ॥
यासेमें अब क्या कहूं कारज तुमहीं से सरै ।
दैदीप्यमान सूरज उदै दीप प्रभा नहिं विस्तरै ॥८३॥

पधड़ी

तब विष्णुकुमार मुनिन्द चंद । विक्रिया ऋद्धि धारैं अमन्द ॥
कीनो बावनको रूप धार । बहु वेदध्वनी मुखते उचार ॥८४॥
जहँ होत यज्ञ अतिही अघोर । अरु ब्राह्मण बहुविधि करत शोर ।
तिहि थानक निष्ट आप जाय । सुनकर बलआयो हरषपाय ८५
अरु कहतभयो इम वचनसार । हो विप्र रुचै सो ले अबार ।

वेदांग वेदपाठी जु येह। बालो ब्राह्मण बावन सुदेह ॥ ८६ ॥
हो राजन चित करके उदार। भू तीन पैंड़ दीजे अबार।
बल फेर कहौ सुन विप्र संत। कछु बहुत मांगियो हरषवंत ८७

दोहा

अहो विप्र क्या जांचियो, बलिसे दाता पास।
और कछू मांगो अबै, ऐसे बहुजन भास ॥ ८८ ॥

सोरठा

समझाये बहुवार, और कछू मांगों नहीं।
तीन पैंड़ सुखकार, धरती दीजे देव अब ॥ ८९ ॥
तब बलि कहो सुनाय, तीन पैंड़ भू लीजिये।
इम कह जलमँगवाय, छोड़ा तबही संकलप ॥

चाल

तब मुनि क्रोधकर एक करंतेभये एक पग लेय कर मेरुधारौ।
दूसरो चरण फिर मानबोत्तर धरो कियो बिस्तार नहिं टरे टारो
तीसरी पैंड़की भूमि दे बेग अब आपसुखनाथ बच इम उचारो।
तासमैं छोभ त्रैलोक्य माहींभयो और नभ में हुवो छोभभारी९१
सर्ब परबतचले सबै बारधिहले भूमिथरहरभई तिसीबारी।
भयो संघट्ट परचंड पाषाण में देव बीमान तब चिगे भारी ॥
जबै सुर असुरगण आव युतबिस्तरी छमाकरनाथ इमअर्जधारी॥
तबै बलिरायको बांधतात्छिणलियो ल्यायचरननतलेदियोडारी ९२

दोहा।

सबै देव मिलके तबै, पूजा करी अपार।
विष्णुकुमार मुनिने दये, छमाकराई सार ॥ ९३ ॥
सात सतक मुनिराजको, दूरकियो तिन कष्ट।
ऐसे विष्णुकुमार ऋषि ऋद्धिधार उत्कृष्ट ॥९४॥

चौपाई

तबहीं सुनकर पद्म सुराय। आंतेवर तज बाहर आय।
विष्णुकुमार आदि मुनिचंद्र। तिनके चरण परो गुणवृंद ॥९५॥
अरुवेभी चरणों परधान। खोटे अभिप्राय को मान।
विष्णुकुमार अकंपन शूर। और मुनी जे गुण भरपूर ॥ ९६ ॥
सबके चरनन में सिरनाय। मिथ्या मत तज ज्ञान लहाय।
जैन धर्ममें तत्पर होय। श्रावक व्रत धारे मदखोय ॥ ९७ ॥
ताही छिन सुरगाए गान। तीन बीन लाये बुधिवान।
तिनकर पूजे विष्णुकुमार। तीनलोक के आनंदकार ॥९८॥
आचारज अब कहैं उचार। और भव्य जे जगत मंझार।
तेभी वातसल्प गुण गेह। करो जगतमें सहित सनेह ॥ ९९ ॥
मुनि आदिक सबही भव जीव। इनते बतसलकरो सदीव।
स्वर्ग मोक्षकी आपत दोय। याही गुणकर निश्चय होय १००

अडिल्ल

ऐसे विष्णुकुमार मुनीश्वर जानिये।
जिन चरनाम्बुज सेव अलि सम मानिये॥
धर्मरागयुत उद्यमवंत अपार हैं।
बतसल गुण परकाश भये भव पार हैं ॥ १०१ ॥
सोही विष्णुकुमार मुनीश्वरजी सही।
हमको भवदधिपार करो विनती यही।
वात सल्य गुणतनी कथा पूरनभई।
सुर शिव सुखदातार बखत रतना कही ॥ १०२ ॥

इति श्रीआराधनासारकथाकोषविषै विष्णुकुमारमुनिसेवात्सल्य गुणपालनाताकीकथा समाप्तः ॥ १२ ॥

:0:

वज्रकुमार मुनिके प्रभावनांग गुण

पहला ताकीकथा प्रारम्भः नम्बर १३

मंगलाचरण दोहा

तीन जगत के गुरु प्रभू, परमातम भगवान ।
तिनको नमन सुठानके, कहूं कथा इस खान ॥ १॥
परभावन अंगक्क में, कीनों बहु उद्योत ।
वज्रकुमार मुनीश ने, तासु सुनत सुख होत ॥ २ ॥

चौपाई

गजपुरनगर महा रमणीक । बलनामा नरपति तहँ नीक॥
ताके प्रोहित गरुड़ सुनाम । चतुर महा बुधको सो धाम ॥ ३॥
तिसप्रोहित के तनुज महान । सोमदत्त तिस नाम सुजान ॥
श्रुतसागरको जाननहार । सज्जनजनको आनन्दकार ॥ ४ ॥
एक दिना अहछत्तपुर जाय । नाम सुभूत मामग्रह आय॥
विनय सहित इमबचन उचार । दयावन्त तुम माम उदार॥ ५ ॥
दुरमुख नामा नरपतिसार । मुझको दिखलावो तत्कार ॥
तब तिन गर्वधार मन मांहि । राजाको दिखलायो नांहि॥ ६॥
सोमदत्त तब बुद्धि पसाय । गहलेको तब रूप बनाय ॥
राजसभामें गयो तुरन्त । दे आशीरबाद बहु भंत ॥ ७ ॥
अपनी विद्या तहां प्रकाश । मंत्रीपद पायो सुखराश ॥
याको मंत्रीपद लख तेह । नामसुभूत जुमातुल जेह ॥ ८ ॥
अपनी जगदत्ताजो सुता । परनाई याको गुणजुता ॥
एक दिना जगदत्ता नार । ताको गर्भ रहो सुखकार ॥ ९ ॥
ताको भयो दोहलो येह । जो बिन सत अब बरसे मेह॥
पक्काफल होवे सहकार । मैं आश्वादन करूं अबार ॥ १०॥

ऐसे याके मनकी जान । सोमदत्त मुनि कियो पयान ॥
जे जगमें साहस धारन्त । बिना काल भी उद्यमवन्त ॥ ११ ॥
ढूंढ़त पाये पुन्य संजोग । मुनि सुमित्र नामा सुमनोग ॥
तरुसहकार तलै थिर ठान । तिन अतिशय तरु फलोमहान ।१२।
महन पुरुष जहँ थितको करैं । तहँके तरुभी शोभा धरैं ।
ऐसी अतिशय मुनिकी जान । हरषो सोमदत्त बुधिवान ॥१३॥

दोहा ।

फल इकले सहकार को, भेजो नारी पास ।
तिष्ठो आप मुनीश ढिंग, भक्ति सहित गुरुपास ।१४।
हैं पवित्र त्रिय जग विषै, वे सुमित्र मुनिराय ।
सोमदत्त पूँछत भयो, तिनको सीस नवाय ॥ २५ ॥

काव्य ।

हो मुनि दीनदयाल दयासागर जगतारी ।
तीन भुवन के मांहि कहो क्या है सुखकारी ॥
तुम सुख कमल समान तासते बचन बखानो ।
सार वस्तु को भेद कहो भ्रम संशय मानो ॥ १६ ॥
तब मुनीश अति दच्छ धर्मको भेद बतायो ।
जो जिन बर जगचंद्र तास बानी में गायो ॥
अहो वत्स सुन भेद धर्मको तुम चितलाई ।
अनागार सागार यही दो बिधि सुखदाई ॥ १७ ॥
तिन दोनोंमें प्रथम जती को धर्म बतायो ।
दश प्रकार सो जात सहित रतन त्रिय गायो ॥
दूजो श्रावक भेद कहो पूजा अधिकारी ।
व्रत प्रोषधि जुत करै शील पालन सुखकारी ॥ १८ ॥
पर उपगार निमित्त तथा कल्याण हेत बर ।

दीनों भेद बताय धर्मको इहि बिधि हितकर ॥१९॥
इम सुन सोमसुदत्त तबै मनमें वैरागो।
दीक्षा ले तत्काल निजातम रस को पागो

दोहा।

गुरुकी भक्ति प्रशादतें, पहुंचो आगम पार।
तिष्ठो पर्वत नाभि पै, आतापन तप धार ॥ २० ॥

पद्धडी छन्द

इस अंतर इनकी नार जेह। जगदत्ता नामा जान लेह ॥
तिन पुत्र जनो अति रूपवंत। सुखआकर पूजन जोग संत ॥२१॥
मानो यह श्रेष्ठ सुकाव जान। अथवा विदुषनकी बुध समान॥
इक दिन जगदत्ता ग्रहमंझार। निज नाथ सुनोतुम चरितसार२२
अपने परिवार विषैसुजाय। बहु रुदन कियो तिन दुःख पाय॥
सारेबिरतांत कहो सुनाय। जिस बिधि भरता दीक्षा लहाय॥२३।
तबसब परयन इस लारलेह। गिरि नाभि विषै पहुंचो सुतेह॥
आतापन जोग धरे महान। तब देख नार कहे कोप ठान।२४।

सवैया इकतीसा

रे रे दुष्ट क्यों कियो बिवाह कष्ट देनहार, मेरे साथ तैने बहु चित्त उमगायके। अब तज दीन मोहे प्रीत करी तप मांहि, तिष्टो शील धारतू तो चित हरषायके॥ ताते इस बालक को पाल अब तूही बेग, ऐसे जो कठोर बच भाषे रिसलाय के। खोटो अभिप्राय धार बाल धरो चर्न मांहि, आप निज धाम तब गई दुखपायके॥

दोहा

सिंह व्याघ्र करवन भरो, तामें शिशुगई डार।
क्रोध धार या जगत में, क्या नहिं कर है नार॥ २६ ॥

ताही औसर के विषै, बालक पुन्य पसाय ।
कारन एक भयो तहां, सो सुनिये चितलाय ॥ २७ ॥

चौपाई

अमरावती पुरीको ईश । नाम दिवाकर देव खगीश ।
तिसलघु भ्रात पुरन्दरदेव । तासों युद्धभयो बहु भेव ॥ २८ ॥
बड़े भ्रातको लघु तेहिबार। नारी जुततब दियो निकार ॥
कैसोहै लघु भ्राता जान । बुद्धकठोर धरै अधिकान ॥ २९ ॥
अबजो दिवाकर देवखगेन्द। चढ़ बिमानचालो गुणवृन्द ॥
तीरथ जात्राकरन उदार। दुर्गत बेदक सुखकरतार ॥ ३० ॥
नभमें जातहुतो बुधवन्त। पर्वत नाहि लखो दुतिवंत ॥
तापरतिष्ठे श्री मुनिराय। भक्तिसहित खग बंदेआय ॥ ३१ ॥
तहँ सुफरायमान दुतिवान । आननकंज समानमहान ॥
ऐसो बालक मुनिपद पास। पड़ोजो मानो पुनकी रास ॥ ३२ ॥
देखतही खग चितहरषाय। ततछिन ताको लियो उठाय ॥
निज नारीको दियो तुरंत। एहि बालक लीजे दुतिवंत ॥ ३३ ॥
तब नारीने देखो सार। याके करमें वज्र अकार ॥
ताते वज्रकुमार सुनाम। धरके लेयगयो निजधाम ॥ ३४ ॥
देखो मातातजो अयान। तो पण बालक पुन्यनिधान ॥
विद्याधरकी नारी लाय। याको पालो बहुत लडाय ॥ ३५ ॥

दोहा

अब वह बालक बुद्धवर, अपने गुणकी लार ।
बढ़त भयो आनंद कर, दोयज शशि समसार ॥

अडिल

या अन्तरयक कंकन पुरी को रायजी ।
नाम विमल वाहन खग बहु गुणदायजी ॥

जो सो दिवाकर देवतनों सालो सही ।
या बालक को माम भयो कृत्तम यही ॥ ३७ ॥
तिसके ढिंग सीखो बहु विद्या जायके ।
पार भयो गुणवन्त बुद्ध अति पाय के ॥
सब खगेश इस बालक को लखके तबै ।
अचरज वन्त महान भये चित में जबै ॥ ३८ ॥

चौपाई

इस अन्तर इकदिन बुधवान । गरुड़ वेग विद्याधर जान ॥
ताके आवंती नरनार । गुणाकर पंडित बहु सुकुमार ॥ ३९ ॥
ताके पुत्री रूपनिधान । नाम पवन वेगा दुतिवान ॥
सो श्रीमंत शिखिरपै जाय । विद्या साधैथी सुखदाय ॥ ४० ॥
तिनने ताके नैन मंझार । कंटक उड़कर पड़ो दुखकार ॥
ताकर पीड़त चल चितथई । याते विद्या सिद्ध नभई ॥ ४१ ॥
तबही कन्या पुन्यपसाय । वज्रकुमार कुंवर तहं आय ॥
आकुलता जुत ताहि निहार । दुर्जन समकाढ़ो दुखकार ॥४२॥
भले जतनते चतुर सुजान । काढ़तभयो कुंवर गुणखान ॥
तब वो कन्या बहु सुखपाय । निश्चल चित्त कियो अधिकाय ।४३।
मंत्र जोगकर लही तुरंत । विद्या पर गुणी दुतिवंत ॥
कोड़ो सुखकी जोदातार । याको सिद्धि भई तत्कार ॥ ४४ ॥

दोहा

तब कन्या कहती भई, सुनो धीर मम वैन ।
तुम प्रसाद ते में लही, ए विद्या सुख दैन ॥ ४५ ॥

सोरठा

काज सिद्ध एहकीन, याते तुम ममनाथ हो ।
वरूं तोहि परवीन, गुणी होय वा निर्गुणी ॥ ४६ ॥

चौपाई

गरुड़वेग कन्याको तात । विधि विवाहकी कर विख्यात ॥
वज्रकुमार कुंवर सुखदाहि । ताको पुत्री दीनी ब्याहि ॥ ४७ ॥
इस अंतरअब वज्रकुमार । विद्या जुतनारी ले लार ॥
सेन्या संगलई बहुभेव । लीनो साथ दिवाकर देव ॥ ४८ ॥
अमरावती पुरीमें जाय । कीनो युद्ध महा भयदाय ॥
तत छिन जीतालियो खगराय । नाम पुरन्दर जो दुखदाय ।४९।
उत्सव कीनों बहु बिधि साज । धर्मतातको दीनों राज ॥
सो यह बात सत्यही मान । भलो पुत्रकुं दीपक जान ॥५०॥
एक दिना राजाकी नार । मनमें कीनों एम विचार ।
या होते मेरे सुत कोय । राज लक्ष पावै नहि सोय ॥५१॥
उपजी कोन ठोर यह बाल । होत भयो हम सिरको साल ।
श्रीगुरु कहै कष्ट यह थाय । नारनकी बुध जड़ अधिकाय५२॥
वज्रकुमार कटुक बच सेह । माताके मुखसे सुनलेह ।
पिता पास सो गयो तुरन्त । कहत भयो यहिबिधि गुणवंत ५३
अहो खगेश्वर मैं किस बाल । याको भेद कहो तत्काल ।
तब खगेन्द्र बोलो मुसकाय । क्या तुम्हरीमत थिर नहिंथाय ५४
जो तुम बोलतहो यह बैन । मेरे चितको बहु दुखदैन ।
ऐसे कहे दिवाकर देव । फिर कुमार बोलो सुनलेव ॥५५॥
सांच बैन भाषो नर इंद । जाते मेरे होय अनंद ।
अरु न कहोगे तुम यह बात । तो भोजन परतिज्ञा तात ५६॥
याको हठ लखके नर राय । सब बृत्तान्त भाषो समझाय ।
ऐसे सुनकर कुँवर सुजान । है विरक्त चित चढ़ो विमान ५७॥

दोहा ।

सोमदत्त इनके पिता जो मुनि दीन दयाल ।
तिनकी वंदन करनको चलो कुँवर तत्काल ॥ ५८ ॥

सवैया इकतीसा

सर्व साथ परिवार लेयके तवै कुमार, मथुरानगर पास पहुँचो हरषायके। तहँ गुफा शुभ नाम क्षत्रिय मान, जहां तिष्टै हैं मुनिंद ध्यानको लगायके ॥ इंद्र चन्द्रनर वृंद सेवत पद्मारविंद, करे थुति तिनकी सो सीसको नवाय के। तहँ आयके कुमार देखो तात को निहार, देयपरदच्छणा सुमन हरषायके ॥ ५६ ॥

दोहा

बहु प्रकार पूजन करी, भक्तिधार सुख पाय।
नमस्कार करके तवै, बैठे सब समुदाय ॥ ६० ॥
तवै दिवाकर देवने, भाषो सब वृतन्त।
सोमदत्त मुनिके निकट, धर्मराग कर संत ॥ ६१ ॥

पद्धड़ी छंद

तब बोले बज्रकुमार येह। भो तात मोह आज्ञा सुदेह॥
जाकर तप ग्रहण करूं अवार। तब कहै दिवाकर खग उदार ६२
हे पुत्रपाय तेरी सहाय। मुझको तपकरतो जोग थाय।
तुमराज लक्ष मेरी अपार। अब ग्रहनकरो आनंद कार ६३ ॥
इत्यादिक मीठे बैन सार। खगने भाषे बहु युक्त धार।
तोपण कुमार उनको समोध। मुनि होतभयो चितपाय बोध६४
तप कीनो नाना विधि महंत। बाईस परीषह को सहंत।
अरु कामरूपते हैं करिंद्र। ता जीतन को वे मुनि मृगेंद्र ॥६५॥
श्रीजिनकोमन अम्बुध समान। तिसविरधकरनको शशिमहान।
यह विधि तिष्टे गुरुके सुपास। श्रीबज्रकुमार सुगुण प्रकास ६६

दोहा

इसअंतर सब भव्यजन, कथा सुनों सुखदाय।
मथुरा नगरी के विषै, पूत गंध नरराय ॥ ६७ ॥

तिस नरपति के नार वर, उर बल्पा बड़भाग ।
जिनवर चरण सरोज में, धारै बहु अनुराग ॥ ६८ ॥

चौपाई

सम्यक दृष्टिन में सरताज । जिन पूजनमें पंडितराज ।
एक बरसमें सो त्रिय बार । नंदीश्वर को पर्व मंझार ॥ ६९ ॥
रथ जात्राको उत्सव करे । अंग प्रभावन चितमें धरै ।
कर इकट्ठो सब संग समुदाय । नितप्रति ऐसी भांत कराय ।७०।
या अन्तर इसही पुरमांहि । सागर दत्त इक बणिक रहाय ॥
ताकेसागर दत्तानार । तिनके पाप उदय अनुसार ॥ ७१ ॥
दुख दरिद्रदाता अघमई । नाम दरिद्रा पुत्री भई ॥
याके उपजतहीं तिहवार । बन्धुवर्ग नासे तत्कार ॥ ७२ ॥
झूंठपराई कन्या खाय । वृद्धभई सो बहु दुख पाय ॥
जे नर पूजादान न करैं । सो यह बिधि दुखको अनुसरैं ।७३।
तहं नन्दन मुनिराय महान । दूजो अभिनन्दन लघुजान ॥
लेय अहार नगरमें आय। देखी कन्या झूंठ सुखाय ॥ ७४ ॥

दोहा

ताको लख छोटे मुनी, कहत भयो यहिभाय ।
हाय हाय कन्यातु येह, जीवत है दुखपाय ॥ ७५ ॥
ऐसे बच सुनकर तबै, नन्दन ऋषि तप रास ।
ज्ञान नेत्र कहते भये, मधुरे वचन प्रकास ॥ ७६ ॥

काव्य

अहो मुनी तुम सुनो दरिद्रा कन्या यो है ।
पूत गंध नरधीश तनी पटरानी सो है ॥
तहं ही भिक्षा अर्थ धर्म श्री बोध जु आयो ।
तातैं मुनि वच सुने, चित्त में निश्चय लायो ॥७

बचन जैन के तीन काल में मिथ्या नाहीं।
इम विचार कन्या को ले गयो ग्रह निज मांही।
बहु बिध मिष्ट अहार देयकर पोषन कीनो॥
यह दालिद्रा सेठ सुता तन जोबन लीनो ॥ ७८ ॥

दोहा

ऋतु बसंत पल चैत में, लीला सहित अपार।
झूलै थी बन के विषै, जोवन में मद धार ॥ ७९ ॥
देव जोगते नृपत ने, देखी कन्या आय।
काम अन्ध हो तो भयो, तिसको रूप लखाय॥८०॥

चौपाई।

तबही मंत्रीको बुलवाय। बोधमती ढिग दिये पठाय॥
जाय तिनोंते भाषे बैन। भो बंधक सुनिये सुखदैन ॥ ८१ ॥
तुम्हरी कन्याये सुखदाह। नृपको दीजे बेग बिवाह॥
अरु तू धन आदिक लेसार। सुख भोगे नाना परकार ॥ ८२ ॥
तबै बोध बोलो उमगाय। अहो सुनो तुम चित्तलगाय॥
मेरे मतको अंगीकार। करै नृपति जो चित्त मंझार ॥ ८३ ॥
तो गुण उज्जल कन्या येह। नृपको देहूं निज संदेह॥
तब राजा उसके बचमान। बोध धर्मको कर सरधान ॥ ८४ ॥
दारिद्रा परनी तत्काल। पटरानी कीनी दर हाल॥
कामी काम अग्नि तपताय। क्या क्या पातग नाहिं कराय।८५।
यह दारिद्रा लहि सुखरास। बुधदासी निज नाम प्रकास॥
पटरानी पदको पाय। बोध धर्मसे वे हर्षाय ॥ ८६ ॥
ज इम बचन बखान। यह तो बात सत्यकर जान॥
श्री जिन चन्द्रतनो मतसार। पृथ्वी तलमें सुख दातार॥ ८७ ॥

ताको लघु पुत्री नर जेह। ग्रहन करन समरथ नहिं तेह ॥
जैसे जन्म अंध नरकोय। ताको निधी प्राप्त किम होय ॥

दोहा।

या अंतर अष्टान का, आई फागुन मास।
उरवल्या नृप नार तब, धरो चित्त हुल्लास ॥ ८९ ॥

पद्धड़ी

पूजा विधान बहु बिधि सुठान, कंचनमई रथ देदीप्य मान।
जिन जात्राको उद्यम अपार, सो करत भई नृपनार सार।९०।
वो कैसो रथ जिम मारतंड, दैदीप्यमान आभा अखंड।
रेशमके पट नाना प्रकार, बहु शब्द करत घंटे निहार ॥९१॥
अरु छुद्र घंटका करत शोर, तहँ होय रहो आनंदजार।
नाना प्रकार के रतन सार, रथ माहि जड़े शोभैं अपार ॥९२॥
भीतर त्रिय छत्र बिराजमान, गंगा तरंग सम चमरजान।
जिन बिंवनकर सोरथ सनाथ, भव गणन्यावें तिनको सुमाथ।९३।
बहु लटकन चहुंदिश फुलमाल, सौरवदसदिस फैलो विशाल।
इत्यादिक शोभायुत अपार, उरविल्या रथ कीनों तयार ॥९४॥

दोहा।

ऐसो लख ताही समय, बुध दासी रिसधार।
पूत गंध नृपसे तबै, ऐसे बचन उचार ॥ ९५ ॥
हेनरिंद्र या नगर में, बौध तनों रथ जेह।
सो पहले मन थिर करै, असी आज्ञा देह ॥ ९६ ॥

चौपाई।

तिसके वच सुनके हरषाय। ऐसेही हो इम कहो राय ॥
मोहअंध प्रानी जगमाह। काज अकाज लखे कुछ नाय ॥९७॥
ऐसे आक गायपै जोय। मूरख अंतर लखे न कोय ॥
तब उरविल्या नृपकी नार। जिन चरणांबुज सेवनहार ॥९८॥

इम परतिज्ञा तबतिन कीन । मनमें निश्चयकर पावीन ॥
पहले मेरो रथ सुपदाय । नगर माँहि जो भ्रमण कराय ॥९९॥
तबतो मैं जो लेऊं अहार । नातर त्यागन कियो अपार ॥
ऐसे कह पहुंची हरषाय । छत्री नाम्र गुफा में जाय ॥ १००॥
सोमदत्त मुनिवर जग त्यार । तिनको नमन कियोहितधार ॥
तहँही बज्र कुमार मुनिंद । पूजे रानी धर आनन्द ॥ १ ॥
धर्मस्नेह धार, अधिकाय । बिनय सहित इम वचन सुनाय ॥
भो मुनिंद्र श्रीजिन सुखकार । तास धर्म सागर उनहार ॥२॥
तास बढ़ावन चंद्र समान । मिथ्यामत नाशनको भान ॥
याते तुमरी सरन महान । लीनी अब मैं निश्चय आन ॥ ३ ॥
भक्तिसहित इम स्तुति ठान । अपना सब बिरतंत बखान ॥
श्रीमुनि चरणनके ढिगसार । जबलों तिष्टतहै एहनार ॥ ४ ॥
इतने याके पुन्य पसाय । मुनि दोनों पूजन खग आय ॥
नाम दिवाकर देव महान । खगचर बहुत तास संगजान ॥५॥
तिनते बज्रकुमार मुनिंद । कहत भए ऐसे बुध वृंद ॥
भो सबखग सुनिये चित्त लाय । धर्म नेह धारक तुमराय ॥६॥
यह रानी उरबल्या जान । सम्यक् दृष्टि सिरोमणि मान ॥
तिसकी रथ यात्रा सुखकार । करवावो तुम नगर मंझार ॥ ७॥

दोहा ।

इम सुनके खग गण सबै, श्री मुनिको सिरनाय ।
पहुँचे मथुरा नगरमें, शीघ्र सबै हरषाय ॥ ८ ॥

काव्य ।

प्रथम जैनके धर्म बिषै तत्पर खग सारे ।
दूजे गुरु के बैन तिन्हों ने चित में धारे ॥
क्रोध धार चित्त मांहि बुद्धिदासी रत नासो ।
उत्सव कर संयुक्त जैन को रथ परकासो ॥९॥

धर्मलीन नृप नार नाम उरबिल्या जानो ।
रथ यात्रा तिन करी हर्ष जियमें तिन आनो ॥
वंद्य वंद्य इम शब्द करत भये जन मिल सारे ।
दसों दिशाके मांहि बजत बाजे अधिकारे ॥ १० ॥
चारन स्तुति करैं बृद्ध भासें अधिकाई ।
जय जय कार महान भयो नगरी के मांहीं ॥
रथ ऊपर जन करत पुष्प बरषा अधिकारी ।
नृत्य बिनोद उछांह होत नाना परकारी ॥ ११ ॥
श्रीजिनके गुण गान करत कामन तिहबारी ।
सुनते जन मन हरष बहुत उरधारैं भारी ॥
नाना बिध को दान जबै बांटत पंथमांही ।
सम्यक् दृष्टी भए जीव केते तिहठांही ॥ १२ ॥
श्रीजिन बिम्ब विराजमान दैदीप्य मानवर ।
सर्व संघकर सहित मनोरथ पूरलिए उर ॥
साज सहित रथ नगर बिषै चालो अधिकारी ।
उरबिल्या नृप नार तबै चित्त साता धारी ॥१३॥

दोहा

वहरथ सब भवि जननको, भयो जो सुखदातार ।
ताके बरणन करनको, को या जगत मंझार ॥ १४ ॥

पद्धड़ी

इस अंतर नृपको पूतगंध । बुधदासी के युत बौद्धबृंद ॥
ते रथ जात्रातिनकी निहार । जिनधर्म प्रभाव लखो अपार ॥१५॥
मिथ्या तब कीनों मनतुरंत । भए जैनधर्म रति सर्वसंत ॥
अब वज्रकुमार मुनिदयाल । करवाई परभावन रिसाल ॥१६॥
अरु और भव्यजे जग मंझार । ते करो प्रभावन अंगसार ॥
सो स्वर्ग मोक्षके देनहार । हितदाताहै त्रय जग मंझार ।१७।

किह बिधि प्रभावना अंग होय। श्रीजिन भाषो सो सुनो लोय।
नानाप्रकार तीरथ महान। तिन जात्राकीनी हरष ठान ॥१८॥
करवावै श्रीजिन बिम्बसार। अरु करै प्रतिष्ठा भावधार।
जिनमत का उद्योतन करंत। यह विधि प्रभावना अंग महंत १९
वर बुद्धि सहित जे धर्म लीन। सोई सम्यकयुत नर प्रवीन।
सोई सुर शिवको सुख लहाय। त्रय जगत पूज्य वोही कहाय २०
वो वज्रकुमार मुनिंदचंद। भवि जीवनको आनंद कंद।
सोई हमको दे बुद्धि यार। नित लीनकरो जिनमत मँझार २१॥

कवित्त

शोभितहै श्रीमूल संगमें गंबभारती तिनको जान। भट्टारक गुरु मल्ल सुभूषण तिनके गुणको करै बखान॥ बुद्धिवान बानी के बारिध सम्यक दर्शन चारित्र ज्ञान। सोई निर्मल रतन अनूपम तिनकी आकार हैं दुतिवान ॥ २२ ॥

दोहा

ऐसे गुरुकी भक्तिमें, अतिशय कर चितलाय।
हमको मंगल श्रेष्ठ अब, दीजे निज सुखदाय ॥ २३ ॥

सोरठा

कथा तेरमीसार, पूरन यह कीनी सही।
संस्कृतके अनुसार, बखतावर अरु रतनने ॥ २४ ॥

इति श्रीआराधनासारकथाकोषविषे भट्टारकश्रीमल्लभूषण तत्शिष्य ब्रह्मनेमीदत्तविरचितायां बज्रकुमारमुनि प्रभावनां अंग करो ताकी कथा सम्पूर्णम्

श्रीनागदत्त मुनिकीकथा प्रारम्भः १४

मङ्गलाचरण दोहा।

पंचपरम गुरु हैं सही, पंचमगति के स्वाम।
नागदत्त मुनिकी कथा, भाषूं कर परणाम ॥ १५ ॥

चौपाई

एही मागध देश सुढार। राजग्रही नगरी तहँ सार।
प्रजापाल नरपति तिह थान। परजापालन करै महान॥ २॥
न्यायशास्त्र को जानन हार। धरमातमा जिन भक्त अपार।
ताके ग्रह नारी गुणवंत। प्रिय धर्मा बर रूप धरंत ॥ ३॥
चितप्रसन्न कर धर अनुराग। पूजा दान करै बड़भाग।
जुगसुततिनके भए विख्यात। प्रियेधर्म प्रियेमित्र कहात ॥४॥
जैन धर्मके जाननहार। गुण उज्जल यह धरै कुमार।
एकदिना यह दोनों बीर। मनमें राग विचारो धीर ॥ ५ ॥
श्रीजिनवरकी दीक्षा धार। तप कीनो नाना परकार।
तन तज अच्चुत स्वर्ग सुजाय। बहुप्रकार तहँ रिद्धि लहाय ६
पहलोभव तहँ करके याद। जिनमत धारो कर अहलाद।
भगवतभक्ति मांहिं चित दीन। दोनों सुर तिष्ठे सुखलीन ॥७॥
धर्मराग धर त्रदश महान। आपुस में परतिज्ञा ठान।
जो पहले निरजर तजकाय, मध्यलोक में उपजे जाय ॥ ८ ॥
ताको स्वर्ग विषै जो देव। संबोधे करके बहुभेव।
दिक्षा दिलवावे तत्काल। थापे शिव मग जग अघटाल ॥९॥
इस अंतर अब सुनो बखान। उज्जैनी नगरी में जान।
नागधर्म नरपति बड़भाग। धर्म विषै धारे अनुराग ॥ १० ॥

गीता छंद

ताके अनूपम नाग दत्ता नार ग्रह मध जानिये।
शुभ रूप लावन अधिक तनमें पुन्यवान प्रमानिये ॥

तिनके सुरग ते आनकर प्रियमित्रको चरसुत भयो।
तिस नागदत्त सुनामधारो बुध सदन विधना ठयो ॥ ११ ॥

दोहा

अहकर क्रीड़ा करन मैं, महा चतुर सुकुमार।
गारुड़ विद्यासीखियो सो, नानापरकार ॥ १२ ॥

पद्धडी

इक दिन प्रिये धर्मतनो जो जीव। तिष्टे अच्चुतमें अवस दीव।
ताने भ्राताको जानभेव। संबोधनको आयो स्वमेव ॥ १३ ॥
गारुड़को रूप करो तुरंत। युग अह लीने तिनजहरवंत।
ताको करंडमें धार लीन। उज्जैनी में परवेश कीन ॥ ७४ ॥
तब नागदत्त के पास जाय। सो कहतभयो निज वचसुनाय।
तू बड़ो चतुर क्रीड़ा संभार। में यह सुन आयो हूं अबार १५॥
तब राजपुत्र बहु गर्भधार। निज बचन भने ऐसे पुकार।
जो मणाधर तुझ ढिग जहरवंत। सो मो आगे छोड़ो तुरंत १६
तासों क्रीड़ा करहूं अबार। तब गारुड़ बच ऐसे उचार।
में बादकरूं नहिं आप सात। तुमराजपुत्रहो जग विख्यात १७

दोहा

पिता तुम्हारो जो सुनै, करै रोस अधिकान।
पकड़ मंगावै वेगही, हरै जो मेरे प्रान ॥ १८ ॥
ऐसे सुनके नागदत्त, ताको ले निज संग।
पिता पास दिलवाइयो, अभय दान भय भंग ॥१६॥

चौपाई

एकसर्प तिह ठौर। तासों क्रीड़ा कीना जोर ॥
मद दियो उड़ाय। अहिको पकड़ कंवर हरषाय।२०।
ह कँवर कहै सुनलेय। दूजो नाग छोड़ अबदेय ॥
वह कहत भयोहो देव। इस अहिको तुम लहो न भेव।२१।

बड़ो दुष्टहै यह दुखदान । देव जोगते हनै जो प्रान ॥
तो इसकी भेषज नहिकोय । यह निश्चयकर जानोसोय ॥ २२ ॥
नागदत्त तब रोस कराय । कहतभयो तू सुन चितलाय ॥
तेरोसर्प बिचारो दीन । मेरो कहाकरै बिष लीन ॥ २३ ॥
मंत्र तंत्रमें जाननहार । गारुड़ विद्याधरूं अपार ॥
ऐसे सुनकर गारुड़तबै । राजादिक साखी कर सबै ॥ २४ ॥
छोड़ो नाग तबै बिकराल । कंवर डसो ताने तत्काल ॥
ताही छिन बिपके परभाव । पड़ो सोभूंपर मूर्छा खाय ॥ २५ ॥
जैसे मोह अंधहो जीव । भव अम्बुधमें पड़े सदीव ॥
तब नरेश मनमें दुखपाय । मंत्रबादियों को बुलवाय ॥ २६ ॥

दोहा

वह यह बिध कहते भए, सुन अवनी के राय ।
काल सर्प कर यह डसो, याको नाहि उपाय ॥

चौपाई

तब नरिंद्रमन होयउदास । उसगारुड़ प्रति बचन प्रकास ॥
जो तू याको करै सचेत । आधो राज लेय सुखहेत ॥ २८ ॥
ऐसे कह निजपुत्र उठाय । गारुड़को सौंपो नरराय ॥
तब गारुड़ इम कहो पुकार । काल सर्पकर डसो कुमार ॥२९॥
जो कदाचजीवे तुम बाल । जिनदिक्षा लेवे तत्काल ॥
तोमें करूं इलाज अवार । येही भेषज इसकी सार ॥ ३० ॥
तब राजा मनधर हुल्लास । गारुड़ प्रति इम बचन प्रकास ॥
ऐसेही हो आज्ञादीन । तब निजसर्प ज़हर हर लीन ॥ ३१ ॥
नागदत्तको कियो सचेत । उठो तबे यह हर्ष समेत ॥
जैसे जगमें जीव अयान । मिथ्या बिषकीनो जिनपान ॥३२॥
तिनको श्रीगुरु करै सचेत । दे उपदेश तिन्हे सुखहेत ॥
तैसे इस सुरने उपकार । कीनो नागदत्तकी लार ॥ ३३ ॥

छप्पय छंद

तिस पीछे इह नागदत्त चित्त में हरषानो ।
राजादिक ते सब व्रतांत निश्चयकर जानो ॥
पर फुल्लित धीमान प्रतिज्ञा पालन कीनी ॥
दमधर मुनि ने चरन कमलकी सरन जो लीनी ॥
भक्तिहिये में धारकर, भगवत दीक्षा आदरी ।
जासों सुरिंद्र पूजैं सदा, सोई विधि याने धरी ॥ ३४ ॥

दोहा

तब वह देव सु प्रकट ह्वै, प्रिय ध[illegible] सोय ।
सब व्रतांत कह नमन कर, गयो [illegible]हर्षित होय ॥ ३५ ॥

पद्धडी

तिसपीछे तब मुनि नागदत्त। वैरागयुक्त चितवैं सुतत्व ॥
निर्मल आचरणगहो अत्यंत। जिनकलपी साधु भयो महंत।३६।
श्रीजिनवर चंद्र तने सुक्षेत्र । ताकी जात्रा करते पवित्र ॥
बहु चितमें भगवत भक्तिठान। विहरत अवनीमें हर्षमान ।३७।
एहमुनि सत्तम करते बिहार। इकदिन आए अटवीमंझार ॥
सोमहा बिकट संयुक्तथान । तहँ सूरदत्त इकचोर जान ॥३८॥
बहु तस्करजाके संगबीच । खोटी बुधधारे कर्म नीच ॥
मारगको रोककरै जुबात।इहमुनि हमको करहै विख्यात।३९।
ऐसे डरकर वह चित्तमांहि। मुनि पकड़ किए अतिभय जोखांहि ॥
तब सूरदत्त सबको हटाय । उन चोरनते इमबच कहाय ॥४०॥

छंद चाल

यह उत्तम चारित्र धारी, प्रभु बीतराग अनगारी । है बुद्धि-अधिकाई, देखतभी नाहि लखाई ॥४१॥ काहूसे कुछ नहिं । निज धीर बीर मन राखै॥ इनको तुम छांडो भाई। भय नहीं दुखदाई । ४२ ॥ तस्कर सुन के यह बानी । तबहीं

मुनि ज्ञानी ॥ तहँते रिषीगमन कराही । आवेंथे पथके मांही ४३
इस अंतर इनकी माता । है नागदत्त विख्याता । नागश्रीपुत्री
लारी । संगहै विभूति अधिकारी ॥४४॥ सो वत्सदेसके माहीं ।
कोसांबी नगरी कहाहीं ॥ तामध नरनायक जानो । जिन पाल
नाम बुधिवानो ॥४५॥ ताको सुत जिनदत्त जो है । जिन धर्म
विषय रतिसोहै ॥ ताके संग भई सगाई । नाग श्रीकी सुखदाई ४६

दो०—ताको एहपर भावते, ले निज पुत्री लार ।
सज्जन जनकर सहित जो, जावें थी तिहबार ॥ ४१ ॥

चौपाई ।

पथमें मुनिको मात निहार । नमन कियो चित हर्ष सुधार ॥
कहत भई हम आगे जाह । मारग निर्भलहै अकनाह ॥४८॥
तब मुनि मोह जई बड़भाग । सत्रु मित्रपे रोष नराग ॥
महा चरित्रको धारन हार । मौनलीन तब कियो विहार ॥४९॥
नागदत्ता तब आगे गई । सब चोरोंने पकड़ सो लई ॥
बहुधन लूट लियो तत्कार । अर कन्याकोभी लेलार ॥ ५० ॥
सूरदत्तको सौंपत भए । तब तिनने ऐसे वच लये ॥
देखो तुम सबही परधान । वे मुनि उदासीन अधिकान ॥५१॥
निस्प्रेही अतिही गम्भीर । जैन तत्व जाने वरवीर ॥
इन सबने उनसे पूछाय । तौ भी भेद न दियो बताय ॥ ५२ ॥
ऐसे वच सुन मुनिकी माय । सूरदत्त प्रतिएम कहाय ॥
एक छुरी अति तीक्षण देह । ताकर कूख विदारूं एह ॥५३॥
जामेंमें राखो तब मास । यह कुपुत्र मुनि दुखकी रास ।
मोह रहित चित मांहि कठोर । यूं नकहा आगेहैं चोर ॥५४॥
ऐसे वच तब याने भास । सूरदत्त सुन भयो उदास ॥
कहत भयो ऐसे विख्यात । तू मुनि मात सो मेरी मात ॥५५॥
इमवच कहसब धन लिसदीन । कन्याभी दे नमन करीन ॥

करी विदा सो ताही बार । अपने मन वैराग जु धार ॥५६॥
सब चोरनको जो यह राय । नागदत्त मुनिके ढिग जाय ॥
चरण कमलको नयो तुरंत । स्तुति मुखते बहुत चयंत ॥ ५७॥
तिन ढिग दिक्षा ले तस्कार । तपकीनों नाना परकार ॥
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्र । तिनको पालन करें सुनित्त ॥५८॥

छप्पय छंद

घातकर्मको नाश कियो तबही मुनि नायक ।
लोकालोक प्रकाश ज्ञानपायो सुखदायक ॥
देव इंद्र नागेंद्र चंद्रकर पूजत सोई ।
दे उपदेश महान बहुत न्यारे भवलोई ॥
फेर अघाती नाशकर, शिव नगरी छिनमें लही ।
श्रीसूरदत्त मुनिराजजी, निज अवास दीजे सही ५९ ॥

सवैया इकतीसा—सूरदत्त नागदत्त दोनों मुनिराज मोह, सांत अर्थ होय कल्याण शुभ ठानिये । गुणके समुद्रसार लोकालोक को निहार सर्वदेव इंद्रकर बंदनीक जानिये ॥ तीन जग जीवन के नेत्र जो कमोद भए तिन विकसावनको मृग अंक मानिये। कहै करजोर बखत हूजिये दयाल मोपै सुख विस्तारकर सर्वकर्म भानिये ॥ ६० ॥

इति श्रीआराधनासारकथाकोष विषै नागदत्त मुनिकीकथा समाप्तम्

कुसंगतदोषमें शिवभूतकी कथा १५

मंगलाचरण सोरठा

सर्व जीव हितदाय, श्री सर्वज्ञ महंत हैं ।
वंदूं सीसनिवाय, ताप्रशाद बरनूं कथा ॥ १ ॥
खोटो संग दुखकार, तास दोष बखान करूं ।
कीनों निज दुख धार, सुनो भव्य चितलाय के ॥२॥

चौपाई

वत्स देश कोशांवी पुरी । कोट खातिकर सहित सोखरी ।
तामें नृप सोहै वनपाल । दुष्ट जनन को दीखत काल ॥३॥
ताके प्रोहित है शिव भूत । चारवेद विद्या संयूत ।
सव विप्रनमें है परधान । राजा वहुत करै सन्मान ॥ ४ ॥
तिसही नगर विषै धनवान । पूरण चंद्रकलाल बखान ।
नारी मणीभद्र का नाम । पुत्र सुमित्र तासुके धाम ॥५॥
एक दिना यह पूरण चंद । पुत्र विवाह रचो सुखवृंद ।
वहुजनको भोजन करवाय । फिर शिवभूत विप्रबुलवाय ॥६॥
भोजन है तैयार इमकही । तवइनकहो शूद्र तू सही ।
तव ऐसे वोलो कल्लाल । हो गुणवान सुनो गुणपाल ॥७॥
वहु विप्रनने वनमें जाय । सामग्री राखी अधिकाय ।
ताको भोजन करो तुरंत । यामें दोष कछू न लहंत ॥८॥
याको हट शिवभूत लखाय । आरे करलीनी सतभाय ।
विनय युक्त जो देवै दान । मानलेय सोई परधान ॥ ८ ॥
दोहा—तव पूरन चंद वन विषै, गयो महा हरषाय ।
विप्र हाथ खट रस सहित, भोज ताहि जिमाय ॥ १० ॥
उस कलालको कुटम सव, एक तरफ तिष्टंत ।
दुतिय तरफ़ शिव भूत जो, पैमिश्री पीवंत ॥ ११ ॥

पद्धडी

किलने इकजन नृप पास जाय । शिवभूत चरित्रकहो सुनाय ॥
हमदेखो अपनी दृष्टिजोय । मधिरापीवत शिवभूत सोय ॥१२॥
ऐसी सुनकर तत्काल राय । शिवभूत विप्र लीनों वुलाय ॥
पूछनकीनी तासों नरेश । सो नटतभयो जानूं नलेश ॥ १३ ॥
नृप लेन परीक्षाके निमित । करवाई वमन तवैतुरंत ॥
तामाहींते दुर्गंध आय । नरधीश तवै निश्चय कराय ॥ १४ ॥

सो क्रोधधार अतिही प्रचंड । निष्ठुरवच भाषदियो जोदंड ॥
फिर कुरुदेय मनकर विचार । निजदेश थकी दीनों निकार ।१५।
खोटी संगतकर दुष्ट एह । ततछिन पायो शिवभूत तेह ॥
ताते खोटा संग जग मंझार । है निंदनीक देखो विचार ॥ १६ ॥
जे बुद्धिवान पंडितमहंत । ऐसो लख तज दीजे तुरंत ॥
सज्जन जनकी संगत महान । ताको कीजे आदर सुठान ॥१७॥
दोहा—जे श्री जिनवर चंद के, चरन कमल रसलीन ।
खोटी संगत तज करो, साधु संग परवीन ॥ १८ ॥
सोई संगत जग विषै, माननीय है सार ॥
ऊंचो पद तातें लहै, धन धान्यादि अपार ॥ १९ ॥
सोई संगत साधु की, दीजे मंगल मोह ।
तातें सुख की प्राप्ति है, नाशे दुख अरुद्रोह ॥ २० ॥

इति श्री आराधनासार कथा कोष विषय कुसगत दोष शिवभूत कथा समाप्तः

अथ बुद्धिवर्धनी कथा प्रारम्भनं० १६

मंगलाचरण । अडिल्ल

श्रीअरिहंतजिनेश्वरकोसिरनायके। बुद्धवर्धनी कथा कहूं हरषायके
जैसीबालकनै देखीतैसी कही।ताको वरननसुनो भव्याचित देसही
चालछंद—कोसांवी नगरी जानो,जयपाल विचक्षण रानो ।
तहं धर्मलीन अधिकाई, सागर दत्त सेठ रहाई ॥ २ ॥
सागरदत्ता तिसनारी; युग प्रीतिधरे अति भारी ॥
तिनके सुत रूप निधानो, बारधदत्त नाम बखानो ।३।
तिसही नगरी के मांही, गोपायन बनक रहांही ॥
तिसपाप उदय अधिकाई, दारिद्र धरै अधिकाई ॥४॥
खोटी बुध धरै अयानो, सो सप्त विषनरति जानो ।
तिनके है सोभा भामा, सोमक सुत ताके धामा ॥५॥

दोहा

समुद्र दत्तजो सेठ सुत, अर सोमक मिल दोय ।
रेत विषय क्रीड़ा करें, बहु विध हर्षित होय ॥ ६ ॥

चौपाई

एकदिन धनके लोभपसाय । पापी गोपायन अधिकाय ॥
समुद्र दत्त बालक जोथाय । भूषणकर शोभित बहुभाय । ७ ।
ताके भुषण सर्व उतार । बालकको मारो तत्कार ॥
अपने सुतके देखत लाय । घरमें गढ़ो खोद गड़वाय ॥ ८ ॥
तवही सागर दत्त तिस तात । अरु सागर दत्ताजो मात ॥
सब कुटंब मिलके तिहबार । बहु विलाप कीनो दुखकार । ९ ।
सारे ढूंढ फिरे अधिकाय । कहीं न पाई ताकी साय ॥
ऐसे पुन्यहीन नरजोय । ताको सुख प्रापति किम होय ॥१०॥
तिसपीछे बालक की माय । सोमक शिसु से पूछो आय ।
अरे समुद्रदत्ता किह थाय । जहँ देखो तहँ देय बतान ॥ ११ ॥

दोहा

तव तिन बालक भावतें, सांच बैन कहदीन ।
गड़ो हमारे घर विशे, गढ़ो माहिं दुखलीन ॥
बालक क्या जाने सही, भले बुरेकी बात ।
जैसे की तैसेकहै यह सुभाव शिसु जान ॥ १३ ॥

सोरठा

पापी पाप छिपाय, करै सुचित हरषायकै ।
तौभी प्रगट है जाय, कोड़ दुःख दाता सही ॥ १४ ॥

पद्धडी

तब सागर दत्ता सेठनार । निज बालकको मृतक निहार ।
अपने पतिके तब पास जाय । दुखदायनि बात कही सुनाय १५

जब सेठ जाय जमदंड पास । सब बातकही तासों प्रकास ।
उसने नरपति सेती बखान । सुनके नरिंद्र कोपो महान ॥ १६ ॥
गोपायन बुलवायो नरेश । ताको निग्रह कीनो विशेश ॥
यह जान भव्य नितपापत्याग । दुखिदाता लखकरतजो राग ॥१७॥
सुखदाय श्री निज धर्मसार । ताको सेवो अनुराग धार ॥
इम आचारज भाष महान । तुम निश्चयकरजानो सुजान ॥१८॥

दोहा

इतने जन जाने नहीं, हित अनहित क्या होय ।
ताको वरणन करतहूं, सुनो सबे भव लोय ॥

चौपाई

बालक और विकल नरजान । कामातुर फुनि जोबनवान ॥
तथारोगकर पीड़ित जोय । बहु कुटम्ब कर दूखित होय ॥ २० ॥
इत्यादिक जब जानो सही । ऐसे श्री जिनवर बरनई ॥
अरजेथिर चित धारणहार । प्रभुको धर्म गहो सुखकार ॥ २१ ॥
तेहित अनहितको जानंत, यह विधि भाषे श्री अरिहंत ।
कथा सोलमी यह बरनई, जिम बालक देखी तिमकही ॥२२

इति श्री आराधना सार कथा कोष विषे जिनपद्मिपतिमवदति

कथा सम्पूर्णम्

श्री धनदत्त नरेश्वरकी कथा नं० १७

मगलाचरण । सवैया तेईसा

श्री मत देव जिनेन्द्र नमूं तिन पूजन इंद्रन के गुण सारे ।
लोक अलोक प्रकाश करो जिन सिद्ध भए सब कर्म प्रजारे ॥
तास प्रसाद कथावरनूं धनदत्त नरेश्वर की हितधारे ।
भव्यन के समुदाय सुनो सुख होय सबै अघजाय निवारे ॥१॥

चौपाई।

अंध्रदेश जगमें विख्यात। ध्यान कनकपुरनगर सुहात॥
ताकोधनदत्त नृपवड़ भाग। सम्यक् दृष्टी जिनमतराग॥ २॥
बोधमती मंत्री मत हीन। संघश्री मिथ्या मति लीन॥
धर्म कर्ममें तत्पर राय। ताजुतराज करै सुख दाय॥ ३॥
एकेदिन धनदत्त नरिंद्र। महल सिखर तिष्ठे गुणवृन्द॥
संघश्री मंत्री ढिगजान। क्रीडामात्र मंत्र कछु ठान॥ ४॥
तव मध्यान समै नरराय। अंबरमें जुगमुनि सुखदाय॥
देखे चमतकार युतसोय। मनमें अति आनंदित होय॥५॥
धरअनुराग उठे तत्काल। दोकर जोड़ नवायो भाल॥
आदरकर निजमहल मभार।लायो जुगमुनिको तिहवार॥६॥
साधोकी संगत सुखदाय। सत्पुरुषनको सदा सुहाय॥
नृपतव पूछो सीसनवाय। धर्म स्वरूप कहो मुनिराय॥ ७॥

दोहा।

तव श्रीगुरु जिन धर्मको, कीनों बिबिध बखान।
सुन संघश्री वोध मत, लायो चित श्रद्धान॥८॥
कर श्रावक इस बोधको, वे मुनि दीन दयाल।
गुण मंडित अम्बर विषै, जात भए तत्काल॥९॥

छप्पै।

पहले मिथ्या मोह ग्रसित मंत्री जो थाई।
वुधश्री तिसका नाम कुगुरुथो दुरगति दाई॥
जावै थो तिस पास एक दिनमें त्रियबारी।
करतो वंदन सदा हर्ष चित मैं बहु धारी॥
सो अब ता ढिग वंदना, करनेको नाही गयो।
बुद्धश्री वंधक तबै, ताको बुलवावत भयो॥ १०॥

जब सेठ जाय जमदंड पास । सब बातकही तासों प्रकास ।
उसने नरपति सेती बखान । सुनके नरिंद्र कोपो महान ॥ १६ ॥
गोपायन बुलवायो नरेश । ताको निग्रह कीनो विशेश ॥
यह जान भव्य नितपापत्याग । दुखदाता लखकरतजो राग ॥१७॥
सुखदाय श्री निज धर्मसार । ताको सेवो अनुराग धार ॥
इम आचारज भाषे महान । तुम निश्चयकरजानो सुजान ॥१८॥

दोहा

इतने जन जाने नहीं, हित अनहित क्या होय ।
ताको वरणन करतहूं, सुनो सबै भव लोय ॥

चौपाई

बालक और विकल नरजान । कामातुर फुनि जोबनवान ॥
तथारोगकर पीड़ित जोय । बहु कुटम्ब कर दूखित होय ॥ २० ॥
इत्यादिक जब जानो सही । ऐसे श्री जिनवर बरनई ॥
अरजेथिर चित धारणहार । प्रभुको धर्म गहो सुखकार ॥ २१ ॥
तेहित अनहितको जानंत, यह विधि भाषो श्री अरिहंत ।
कथा सोलमी यह बरनई, जिम बालक देखी तिमकही ॥२२

इति श्री आराधना सार कथा कोष विषै जिमपश्चिपतिमवदति
कथा सम्पूर्णम्

श्री धनदत्त नरेश्वरकी कथा नं० १७

मंगलाचरण । सवैया तेईसा

श्री मत देव जिनेन्द्र नमूं तिन पूजन इंद्रन के गुण सारे ।
लोक अलोक प्रकाश करो जिन सिद्ध भए सब कर्म प्रजारे ॥
तास प्रसाद कथाबरनूं धनदत्त नरेश्वर की हितधारे ।
भव्यन के समुदाय सुनो सुख होय सबै अघजाय निवारे ॥१॥

चौपाई ।

अंगदेश जगमें विख्यात । थान चम्पापुरनगर सुहात ॥
ताको धनदत्त भूप बड़भाग । सम्यक दृष्टी जिनमतराग ॥ २ ॥
सोमशर्मा मंत्री मन हीन । संघश्री मिथ्या मति लीन ॥
धर्म कर्ममें तत्पर राय । ता पुर राज करै सुख दाय ॥ ३ ॥
एक दिन धनदत्त नरिंद । महल शिखर तिष्ठ गुणवृन्द ॥
संघश्री मंत्री ढिग जान । क्रीड़ामात्र मंत्र कछु ठान ॥ ४ ॥
तब मध्यान गमन नरराय । अंबरमें जुगमुनि सुखदाय ॥
देख चमत्कार गुनराय । मनमें अति आनंदित होय ॥ ५ ॥
धर्मानुराग उठे तत्काल । दोकर जोड़ नवायो भाल ॥
आदरयुत निजमहल मझार । लायो जुगमुनिको तिहवार ॥ ६ ॥
साधांको संगम सुखदाय । सत्पुरुषनको सदा सुहाय ॥
नृपवर पूछो संशयभाय । धर्म स्वरूप कहो मुनिराय ॥ ७ ॥

दोहा ।

तब श्रीगुरु जिन धर्मको, कीनों विविध बखान ।
सुन संघश्री बोध मत, लायो चित श्रद्धान ॥ ८ ॥
कर श्रावक इम बोधको, ये मुनि दीन दयाल ।
गुरु मंदिर अन्दर विषै, ज्ञान भए तत्काल ॥ ९ ॥

छप्पै ।

पहले मिथ्या मोह मलिन मंत्री जो थाई ।
बुद्धश्री तिसका नाम कुगुरुओ दुर्गति दाई ॥
आवै सो तिस पास एक दिनमें त्रिगचारी ।
कर्यो वंदन सदा हर्ष निज में बहु धारी ॥
सो अब ना तिस वंदना, करनेको नाही गयो ।
बुद्धश्री चंचक नष्ट, ताको पुनवाहन भयो ॥ १० ॥

दोहा

ब्रह्मनेमी दत्त कर भई, पूरन कथा विशाल।
भव्य जीव बांचो सुनो, तज चोरी अघ टाल ॥ ४०॥

इति श्रीआराधनासारकथाकोष विषयचोरीदोषमें श्रीयभूतकी कथा समाप्तम्

॥ अथ नीलीबाईकी कथा प्रारम्भः ॥

मंगलाचरण ॥ सोरठा।

हितकारी भगवान, तिनके चरन सरोज को।
नमन करूं धर ध्यान, कथा शीलकी अब कहूं ॥ १ ॥
असुव्रत चौथो येह, नीली बाईने धरो।
दृढ़ पालो धर नेह, कष्ट भयो पर नहिं चिगी ॥ २ ॥

चौपाई

एही भरतछेत्र जु पवित्र। तामधि लाढ देश इक मित्र।
श्रीजिनवर को धरम उदार। फैल रहो तिस देश मझार ॥३॥
तहँ भृगु कच्छ नगर इक खरो। शुभ बस्तुन करके शुभभरो।
तामें राज करे बसुपाल। परजापाले सब श्रम टाल ॥४॥
श्रीजिनदत्त नाम तिस सेठ। कोई बणिक तिस आन नमेट।
श्रीजिनचन्द्र चरनको दास। जिन दत्ता सेठानी तास ॥ ५ ॥
परिडत दान करनमें लीन। ग्रह कारज में अति परवीन।
तिन दोनोंके पुत्री भई। नीली बाई संज्ञा दई ॥ ६ ॥
शीलवान गुणवन्त अपार। रूप अधिक निज तनमें धार।
बसे बनिक इक ताही ठौर। नष्ट बुद्धि मिथ्याती और ॥ ७ ॥
नाम समुद्रदत्त है तेह। सागर दत्ता नारी गेह।
सागर दत्त भयो सुत आन। प्रिय दत्त तिसमित्र सुजान ॥८॥
इस अन्तर नीली हरषाय। अलंकार मरिडत अधिकाय।
जिन मन्दिर में गई तुरन्त। पूजे श्रीजिनवर अरहन्त ॥ ६ ॥

कायोत्सर्ग धरे वड़ भाग । निरमलध्यान विषय चितपाग ।
वह सागरदत्त ताहि निहार । विहवल चित्तभयो तिह वार १०॥
ऐसे कहतभयो निज वैन । क्या यह नागदत्ता सुखदैन ।
वा इह तनुजा सुरकी होय । अथवा खग पुत्री है कोय ॥११॥
भली काय सो भाग धरन्त । याके रूप तनो नहिं अन्त ।
तब प्रियदत्त मित्र इम कही । तुम क्या याको जानत नहीं १२
श्रीजिनदत्त सेठ गुणगेह । तासु सुता इह सुन्दरदेह ।
मित्रतने इह सुनके वैन । सकल अंग में व्यापो मैन ॥ १३ ॥
मोह मिलेगो किह विधि येह । चिन्ता भूत लगो तिह देह ।
ताकर तन दुर्वल अधिकाय । होतभयो कछु नाहिं सुहाय १४

दोहा

हरि लक्ष्मीके वसि भयो, गंगा वसि महादेव ।
ब्रह्मा लखिके उरवसी, भयो कामवस येव ॥ १५ ॥
कौन कौन इस दर्पने, वस कीने नहिं राय ।
सब कोई जीतत भयो, याकी कौन चलाय ॥१६॥
अपने सुतको दुखित लख, कहे वारिधदत्त आय ।
अहो पुत्र जिन दत्तजी, जैनी है अधिकाय ॥ १७ ॥
श्रावक विन अपनी सुता, काहूको नहिं देय ।
इमि कह दीनो तात सुत, कियो कपट सो येह ॥ १८ ॥

पद्धडी

है दोनो जिन मत मांहि लीन । ऊपरतें अंतरता मलीन ॥
तब जिन दत्त इनते हेत ठान । श्रावक किरियामें निपुन जान १९
अपनी पुत्री व्याही तुरंत । अंवुज समानसा चखु धरंत ॥
यह लेकर आये आपगेह । फिर बोध धरम मूंकर सनेह । २० ।
गह वान बुद्धकें जग संस्कार । पापीवुध धरम विषय नकार ॥
जैसे घोटकके उदर मांहि । भोजन जु खीर ठहरात नाहि ।२१।

दोहा

ऐसो सुन जिनदत्तजी, कीनो दुख अधिकार।
बांधन कर के मैं ठगो, फिर मनयेम विचार ॥ २२ ॥

चौपाई

मेरी पुत्री नीली सार। मानो पड़ी सो कूप मझार ॥
अथवा काल ग्रसी है सोय। दुरजन संग दुखमें अवलोय।२३।
अब नीली उन धाम मझार। होत भई पतिप्राण अधार॥
जुदे गेहमें रहे सो नित्त। जिनवर धरम धरे निज चित्त।२४।
नित जिनवरकी पूजा करे। पात्र दान देकर अघ हरे ॥
बरत शील उपवास करंत। धर्मी जनसे नेह धरंत ॥ २५ ॥
इमि तिष्ठे निज पतिके धाम। नित प्रति जिनवर भजे ललाम॥
ऐसे सुसर देखके सबै। मन में येम विचारी तबै ॥ २६ ॥
यह नीली सुन बंधक बैन। दर्शन करत यहै मत जैन ॥
तब इन कही सुता सुनलेह। बोधनको तू भोजन देह ॥२७॥
तिस पीछे भोजनके हेत। आये बौध बहुत जिम प्रेत ॥
तब नीलीने लिये बिठाय। निज दासीको येम कहाय ॥२८॥
लाओ इनके पैरातनी। जोड़ी तुच्छ कतरके घनी ॥
वह तब लाई आज्ञा पाय। मीठे भोजन माहि रलाय ॥२९॥
भोजन करवायो तिहबार। तबपे खाय गये तत्कार ॥
कर अहार वे चले तुरंत। मन मांही बहु हर्ष धरंत ॥ ३० ॥

दोहा

निज पनही देखी नही, मन तब भये उदास।
नीली से पूंछत भये, बे बंधक अघ रास ॥ ३१ ॥
तब नीली बाई कही, तुम हो ज्ञान बिधान।
अपने चित्त बिचार लो, पनही जिस अस्थान ॥ ३२ ॥

वे बोले हम को नहीं, हैगो इतनो ज्ञान ।
कहत भई तुम उदर में, देखो वमन सुठान ॥ ३३ ॥

चौपाई

कीनी वमन जु काहू जने । देखे टूक पगरखी तने ॥
मान भङ्ग बौधनको देख । ससुर आयकर क्रोध विशेष ।३४।
सागर दत्तकी भगनी जेह । महापाप चित धारत तेह ॥
नीली ऊपरकर बहु रोस । और पुरुषको लायो दोष । ३५ ।
साध जननको दोष लगाय।पापी जन चित भय न धराय ॥
सारे प्रकट करी इह भाय । इह कुशीलनी है अधिकाय ।३६।
ऐसो दोष सुनों जिन कान । इह गुण ज्वाला कियो प्रवान ॥
जब इन दोष नसैगो सही । करूं अहार अन्यथा नही ।३७।
इमि विचारकर जिन गृहजाय । प्रभु पद कंजनमें हरषाय ॥
दो प्रकार धर कर सन्यास । खड़ी मेरुवत जो गुण रास ।३८।
अहो बात इह सत्य निहार । जे सत्पुरुष जगत में सार ॥
तिनपै पड़े आपदा आय । सुख दुख विषै हजारो भाय ।३९।
नर सुरेश पूजित भगवान । तिनही को वे धारत ध्यान ॥
याके शील तने परसाद । नगर देवता जुत अहलाद । ४० ।
आई रैन विषै इस पास । नीली बाई ते बच भास ॥
सती शिरोमणि सुन बड़भाग । निज प्राणनको कर मत त्याग ४१
अपने चितमें धर हुलास । मैं अबही जाऊं नृप पास ॥
या मुखया पर जानन सबै । तिनको सुपनो देहूं अबै । ४२ ।

दोहा

गोपुर सब इस नगर के, कीलूंगी इह बार ।
और वचन ऐसे कहूं, सुनो सबै चित्त धार ॥ ४३ ॥

अडिल

महामनीकोवायोपद जबही लगे । तबही खुले कपाट सबै जन हुलस

भगे। यही बात तुम सुनो तबै वां जाईयो। अपनो बायों पद अंगुष्ठ लगाईयो ॥ ४४ ॥

इमि कह कर वह सुरी गई तत छिन सही। सबको सुपनो दे कपाट कीलत भई ॥ होत प्रभात लखे कीले गोपुर सबै नृप आदिक ने सुपनों याद कियो तबै ॥ ४५ ॥

सवैया इकतीसा

तब नर नायक विचार मन माहिं ठान लीनी सब नर नारी नगर बुलायके। गोपुर तो बारबार तिनको छुवाय पद, खुले न कपाट तब रहे बिलखायके ॥ तुच्छ पुन्नी जन पास होय न महान काज एही बात सत्त सब जाने चितलायके। पीछे नीली को बुलाय शील कर शोभे काय पद के लगत गये पाट खुलवाय के ॥ ४६ ॥

चौपाई

जैसे बैद सलाई ठान। नेत्र मैल खोवे अधिकान ॥
त्यों नीली बाई सुखदाय। पगकर लिये कपाट खुलाय ॥४७॥
याको शील भयो परकास। नरपति आदिक जन लख तास ॥
हर्षित होय बस्त्र बहु आन। पूजन भये अधिक थुति ठान ॥४८॥
ऐसे मुखते बचन कहात। जैवन्ती हूजो तू मात।
जिन चरनाम्बुज जगमें सार। भ्रमरी सम तू सेवन हार ॥४९॥
तुमरो शील महातम जोय। किस करके बरनन तिस होय ॥
ऐसे कहवे पुरके लोग। श्री जिन धर्म गहो जु मनोग ॥५०॥

छप्पय

श्री जिनवर जग चन्द्र सदा जय वन्त जगत में।
देवइन्द्र नागेन्द्र बन्द नित रहैं भगत में ॥
तिनकी गिरा महान करे सब जग उपकारी।

तिसमें बरनो शील श्रेष्ट पालो हितकारी ॥
सो कैसो यह बरत है, गुणको मूल सुहावनो।
याते कीरति जग बढ़े, भूल न इसे गंवावनो ॥ ५१ ॥

सोरठा

ऐसो श्री भगवान, दीजे सुर शिव लच्छमी ।
कीजे सब कल्याण, पूरन कथा प्रबन्ध में ॥ ५२ ॥

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषय शील प्रभावनामें नीलीबाई की शील गुण कथा समाप्तम् ।

अथ कडार पिंगकी कुशीलदोषकथा २८

मंगलाचरण ॥ छप्पय ॥

जगत मांहि जे हैं पवित्र अरिहन्त जिनेश्वर ।
बहुरि भारती माय खिरी जो प्रभु आनन कर ॥
तीजे गुरु निर ग्रन्थ इन्होंको सीस नवाऊं ।
ब्रह्मचर्य में दोष कियो तिस कथा सुनाऊं ॥
जिस नाम कडार जु पिंग है, तिनने यह व्रत खण्ड कियो ।
ताकर इसही लोक में, निन्दनीक होतो भयो ॥ १ ॥

चाल

नगरी कम्पिला जानों । नरसिंह नृपति बुधवानो ।
सो धर्म कर्म चतुराई । तापुत महाराज कराई ॥ २ ॥
तिस सुमति सु मंत्री सोहे । बुध धरे विप्र जे जोहे ।
तिसके धन श्री है नारी । प्रानों सेती अति प्यारी ॥ ३ ॥
तिन दोनों के भयो आई । इक पुत्र महा दुखदाई ।
कडार पिंग तिस नामा । सो है अघही को धामा ॥ ४ ॥

दोहरा ।

ताही नगरी के विषय, सुधी सेठ धर्मज्ञ ।
नाम कुंवर जु दत्त है, करे दान बहु यज्ञ ॥५॥

चौपाई ॥

तानेनमन करो नहिं आन । तब बंधकइम बचन बखान ॥
रेतूने मोकूं इहघरी । नमस्कार क्यों नाहीं करी ॥ ११ ॥
तब मंत्रीने सबै चरित्र । मुनिवर को भाखियो पवित्र ॥
पल भक्षी बंधक बुध हीन । ऐसे बचन कहे सुमलीन ॥१२॥
हाय हाय तू ठगयो वीर । को चारन कहँहै कहो धीर ॥
निरआश्रय एहहै आकास । तामधगमन होय किमभास ॥१३॥
कपटखान तेरोनरराय । इंद्र जाल तोहि भांति दिखाय ॥
सो तू बोध भक्त परवीन । तू मति हो जिन मतमें लीन ॥१४॥
ऐसे मिथ्याकर दुःखंत । मने कियो याको बहु भंत ॥
अरु तू मत जायो चित धार । प्रातकाल नृप सभामंझार ॥१५॥
जो कदाचिभी जानो होय । सभा विषै इम कहिये सोय ॥
मैंने मुनि देखे नहिं कोय । ऐसे थे किसने अवलोय ॥ १६ ॥
ऐसे बोधगुरुके बैन । सुन संधश्री तज मन जैन ॥
बंधकमतकी श्रद्धा करी । श्रावक ब्रत छोड़े तिह घड़ी ॥१७॥

दोहा ।

पाप करावै और से, आप करै अधिकार ।
ते नर अगन समान हैं, आप जरैं परजार ॥ १८ ॥
सम्यक दृष्टि शिरोमणी, धनदत्त नृप बुधिवान ।
प्रातकाल निज सभामें, धर्म राग चित आन ॥ १९ ॥
सामंतादिक भव्य जन, तिनके आगे राय ।
चारन मुनि देखे हुते, तिनकी कथा कहाय ॥ २० ॥

छप्पय ।

साक्षि हेत मंत्री बुलवायो तब नरनायक ।
तासौं कहे सुनाय आप निज मुखतें बायक ।

कल हम तुम जुगचारन मुनिके दरशन पाए ।
सो कैसे थे कहो अबे जिह भांत लखाए ॥
तब निंदक वंदकमती, कहत भयो सुन रायजी ।
चारन मुनि किम होत हैं, मैंने नांहि लखायजी ।२१।

पद्धड़ी

ताहीछिन मंत्री अतिमलीन, यहवच भाषित बहु दुःख लीन ।
महापाप उदय आयो प्रचंड । युगनेत्र तने भये खंड खंड ॥२२॥
जिन धर्म जगतमें मारतंड । सब जनको सुख दाता अखंड ॥
एक पापी धूधू दुखपात । ताको सुभाव एही विख्यात ॥ २३ ॥
ऐसो कारन लखके तुरंत । नृप आदिकजन सब धर्मवंत ॥
जिनमतकी सरधाकर अपार ।श्रावकव्रत धारै चित मझार ॥२४॥

काव्य ।

देव इंद्र नागेंद्र चंद्रकर पूजा जिन मत ।
ताकी सरधा करो तासते ह्वै सुर शिवगत ॥
कुबुध भ्रांत को त्याग चाह जो सुख निधकेरी ।
निरमल धी निज करो मिटै तातें भवफेरी ॥ २५ ॥

इतिश्रीआरधनासारकथाकोषविषै धनदत्तनृपतिकीकथासम्पूर्णम् ।

श्रीब्रह्मदत्त चक्रेश्वरकी कथा नं० १८

(मंगलाचरण कवित)

तीन जगतकर पूजत जिनवर तिनकी भक्ति करूं अधिकाय ।
जिनके चरणकमलमें नमहूं शुद्धकिये निज मन वच काय ॥
सत्पुरुषन सम्बोधनकारन, अब चरित्र भाषूं उमगाय ।
ब्रह्मदत्त बारमचक्रेश्वर तिनकी कथा कहूं चितलाय ॥ १ ॥

चौपाई

कम्पल्या नगरी एहजान । ब्रह्मरथ राजा धीमान ॥
ताके प्राणवल्लभा थाय । नाम रामला है सुखदाय ॥ २ ॥
रूप गुणानकर मंडित भली । तालख नृप मन धारत रली ॥
तिन दोनोंके पुन्य पसाय । ब्रह्मदत्त सुत उपजो आय ॥ ३ ॥
द्वादश मोसोंहै चक्रीश । छहों खंड पालक अवनीश ॥
सो तिष्ठत है अपने धाम । सुखसे बीतत हैं वसुजाम ॥ ४ ॥
एक दिना रसोईदार । विजे सैन तिसनाम निहार ॥
चक्रवर्तिके जीमन बार । खीर परोसी उश्न अपार ॥ ५ ॥

सवैया इकतीसा

सोई खीर खावने को समरथ भयो नाहि, चक्रवर्ति कोप अंध भयो अधिकाई है । मनमें कुबुधिधार करमांहि लेयथार, उश्न खीर युत उस सीसपे बगाई है ॥ भयो दुखलीन सोय तन तिसदाझ गयो, ततछिन माह मौत पाई दुखदाई है ॥ खारड़ी समुद्र बीच दीरघ रतन दीप, तहां परयाय तिन व्यंतर की पाई है ॥ ६ ॥

सोरठा

कोड़ो दुख दातार, क्रोध जगत में जनन को ।
तातें है धिकार, भव्य जीव त्यागो सदा ॥ ७ ॥

चौपाई

तब वह जीव रसोईदार । व्यंतर ऋधिपाई अधिकार ॥
अवध विभंगा धर कर सोय । पूर्व चरित्र सबै अवलोय ॥ ८ ॥
महाक्रोधकर कम्पित होय । पूरबबैर सबै तिन जोय ।
दंडी रूपधरो रिस ठान । मीठे फल लीने रसवान ॥ ९ ॥
शीघ्र जाय चक्रीके पास । फलदीने घर चित हुल्लास ।
सरना लंपट अवनीपाल । खायो फल तन भयो खुशाल १० ॥

दोहा

चक्रवर्ति तब पूछियो, हे परिव्राज महान ।
बहुत मनोहर फल विमल, एह उपजत किस थान ।११।

छप्पय

तब दंडी इमकहो सुनो अब हे नर नायक ।
सागरके मध जान हमारो मठ सुख दायक ॥
ताके निकट महान बाग इकरीरघ जानो ।
तामें फल बहु लसैं इसी विध के तुम मानो ॥
ताके वच सुन चक्र धर, चलने कीइच्छाकरी ।
जे रसना लंपट पुरुष हैं, जानत नहिं भली बुरी ।१२।

चौपाई

दंडी संग चले चक्रेश । अंतःपुर जन लेय विशेश ॥
पहुंचो वारधिके मधजाय । तब वह व्यंतर तहं प्रगटाय ॥१३॥
चक्रवर्तिके मारन हेत । दुख दीनो उपसर्ग समेत ॥
तब चक्री सुमरे नवकार । व्यंतर जोर चले नलगार ॥ १४ ॥
दुष्ट भाव धारक वह देव । प्रगट वचन भाषेतिन येव ॥
रे रे दुष्ट प्रथम भवबीच । कष्ट देय मोह मारो नीच ॥ १५ ॥
तातें अबमें तेरे प्रान । कष्ट देय हनहूं इस थान ॥
एक तरह ते छोडूं सही । तु निश्चयकर मन में यही ॥ १६ ॥
अपने मुखसे एम बखान । जिनवर को मत झूंटो जान ॥
अरजो मत है जगत मझार । तिनको परशंसा कर सार ।१७।
लिख नवकार मंत्र इस बार । अपने पगते मेट छुडार ॥
तो तोको छोडूं तत्काल । नातर तु अपनो लखकाल ॥१८॥

दोहा

ताही विध करतो भयो, ब्रह्मदत्त चक्रेश ।
मिथ्या भाव प्रचंडते, रही बुद्धि नहि लेश ॥ १९॥

पद्धड़ी ।

व्यंतर तब बैर हिये धरंत । सागर मध डोब दियो तुरन्त ॥
सो मरकर सप्तम नरक जाय । इह मिथ्या जगमें कष्टदाय ।२०।
जिनके हिरदे नहिं धर्म प्रीत । तिनकेदोऊ लोक न कुशलमीत ॥
मिथ्यात समान न और जान । बहुनिंद नीक अरु तुच्छमान।२१।
जिसके प्रभावतें चक्रधार । पहुंचे सप्तम प्रथिवी मंझार ॥
तातेंहो पंडित भव्य संत । मिथ्यात वमन कीजे तुरंत ॥ २२ ॥
सम्यक्त गहो तुम बार बार । ताकर पावो सुर शिव अगार ॥
जिनवच धारो हिरदेमंझार । सोई बचदे मंगल अपार ॥ २३ ॥
कैसेहैं सो बच अतिमहान । भव अंबुधितारन पोत जान ॥
अरु बहु प्रकार सुख देत येह । यामें नाहीं जानो संदेह ॥२४॥
जिन भगवतके यह बच उदार । सो कैसेहैं हिरदे निहार ॥
सब दोष रहितसो हैं दयाल । संग बरजत नाशैं कर्मजाल ।२५।
अरु देवइंद्र नागेंद्र चंद्र । रविखग बहु भक्तिधरैं नरेंद्र ॥
पूजैं तिनको सिरनाय नाथ । तिहुं काल विषै आनंद पाय ।२६।

दोहा

ब्रह्मदत्त चक्रेशकी, कथा सो पूरन थाय ।
भव्य जीव बांचे सुनैं, तिनको मंगलदाय ॥ २७ ॥

इति श्रीआराधनासार कथाकोष विषै ब्रह्मदत्त बारमें चक्रेशकीकथा सम्पूर्णम्

अथ श्रेणिक नृपतिकी कथा नं० १६

मंगलाचरण ॥ सवैया इकतीसा ।

जय पूज केवल बिशाल नैन धारैं देव, तिष्टैं समोशर्ण बीच छबि अधिकाई है । ज्ञान दर्शन सुख बीरज अनंतजाके बानी खिरैं, मेघसम जान ताहि भव्य सुखदाई है ॥

तिन्हैं सीस नाय नृप श्रेणिककी कथासार। तासको बखान करूं मेरे मन आई है॥ सुन जेते जग जीव तिनके कल्याण होय, सम्यक प्रकाश होत दुरनय नशाई है॥ १॥

चौपाई।

यही मागध देश सुहात। राज ग्रही नगरी विख्यात॥
तहां राज विद्या करलीन। नृप श्रेणिक शोभै परवीन॥ २॥
ताके महला लक्षणवती। नाम चेलना शोभै सती॥
सम्यक दृष्टि नमें परधान। भगवत चर्या जजैं गुणखान॥३॥
एक दिन नृप कहो सुनाय। सुनदेवी तू चित्त लगाय।
विश्नु धर्म जगमें है सार। ताको तू कर अंगीकार॥ ४॥
तब वह जैन तत्व मे लीन। निश्चल तत्व धरै परवीन॥
बोली वायक मिष्टर शात। बिनय सहित सुनये भूपाल॥५॥
बोध भक्ति जेते हैं सार। तिनको भोजन दो तत्कार॥
ऐसे सुनकर अवनीपाल। हिरदे मांहि भयो खुशहाल॥ ६॥

अडिल्ल

इस अंतर इस सती चेलनाने तबै।
बिश्नु भक्त बुलवाए निज ग्रह में सबै॥
भोजन देने अर्थ उनै थापन करो॥
कपट सहित सो मूरख ध्यान तहां धरो॥ ७॥
तिन के पक्षल करी चेलनाने सही।
अहो तपस्वी करत कहा कहिये यही॥
तब बोले हम करत सो निज कल्याण हैं।
भैल मई तन त्याग जाय शिव थान हैं॥ ८॥

दोहा

तब चेलन तिस थान मैं, दीनी अगनि लगाय॥
भागे वायू सम सबै, महा कष्ट को पाय॥ ९॥

तब अशोक बहु रोस कर, कहत भए सुन लेय ।
जो तू भक्ति धरै नहीं, मारत क्यों दुख देय ॥१०॥

पद्धड़ी

जब रानीबोली सुनहु देव । इन ध्यान धरो है विश्मसेव ॥
खोटोशरीर तज मोक्ष थान । हम जावतहैं इनइम बखान ॥११॥
तब मैने चित्त विचार लीन । इह सुख सेवा तिष्टो प्रवीन ॥
या आकर क्या करहै अवार । इम जान करो उपगारसार ॥१२॥
मम बच कीजो परतीत होय । इक कथा कहूं दृष्टांत जोय ॥
सो आदरकर सुनिये नरेश । जिमतुम मत में भाषी विषेश ॥१४॥
इक वत्स देश बिख्यात जान । नगरी कोसांबी मध्यमान ॥
तहँ प्रजापाल सोहै नरिंद्र । लीलाकर तिष्टत जिम फणिंद्र ॥१४॥
सागरदत्त सेठ तहां राय । बसुमती नार तिस गेह थाय ॥
तहँ दूजो सेठ समुद्रदत्त । नारी समुद्रदत्ता पवित्त ॥ १५॥

दोहा

तिन दोनों के परस्पर, हुती प्रीति अधिकार ।
वचन बंध आपस विषै, इह विधि कियो करार ॥१६॥
हमरे तुमरे ग्रह बिषै, पुत्र सुता है मीत ।
तो बिवाहू करनोसही, सदाकाल रहे प्रीत ॥१७॥

चौपाई

तापीछे सागर दत्त जेह । पुत्र सुमित्र भयो तिह गेह ।
दिनमें सर्प रहै बिकराल । रैन समय है कुंवर रिसाल ॥ १८ ॥
अरु समुद्रदतके गृह आय । पुत्री भई रूप अधिकाय ।
नागदत्ता तिस नाम बखान । लावनता जुत जोबनवान ॥१९॥
कर्म कर बसुमित्रके साथ । भयो बिवाह जगत विख्यात ।
बचन बंधहै सेठ उदार । दई सर्पको कन्या सार ॥ २० ॥

सत्पुरुषनकी है यह बान। कोड़ो कष्ट होय जो आन।
तौभी निज बचनाहि तजंत। मुख सो कहैं सोकरैं तुरंत॥२१॥
अब यह वसुमित्र अहिजान। रात्रिसमय है कुँवर महान।
लिला करके सर्प जुकाय। धरत पिटारेमें हरषाय॥ २२॥
नागदत्ता नारीके संग। भोगत भोग अनूप अभंग।
नागदत्ता की माता आन। देखी पुत्री जोबनवान॥२३॥
कहत भई तब सीस हलाय। कर्म तनी गति कही न जाय।
कहाममपुत्री जोबनवन्त। कहा सर्प बर लखै डरंत॥२४॥
माताके इम बच सुनकान। कहत भई तू दुखमत ठान।
निज भरताको सब विरतंत। मातासे भाषियो तुरंत॥ २५॥
तब समुद्रदत्ताहरषाय। रही रैन पुत्री ग्रहजाय।
वसु मित्र अहि तन दुखरास। तजकर गयो नारके पास॥२६॥
निंदनीक अहितन भेदाय। धरो पिटारेमाहिं लखाय।
ताको छिपकर दियो जराय। तब समुद्रदत्ता सुखपाय॥२७॥

दोहा

वसुमित्र तब नर रहो, गई सरप परयाय।
भोगत भोग सुहावने, तिष्टत दीपत काय॥ २८॥
इसप्रकार शुभ चेलना, कथा कही समझाय।
याही विधि शिवलोकमें, ए रहते सुखपाय॥ २९॥
यह विचार करके तबै, दीनी अगन लगाय।
ब्रह्मलोक ए थिररहे, जरैं मलीन जुकाय॥ ३०॥
ऐसे बच श्रेणक सुने, मनमें रोश जुआन।
उत्तरको असमर्थ है, तिष्टे मौन सुठान॥ ३१॥

छंदचाल

इस अंतर श्रेणिक नरिंद्र मन इच्छाधारी ।
करन अखेट प्रचंड गयो कानन दुख भारी ॥
तहां आतापन जोग धरैं तिष्ठैं मुनि नायक ।
नाम जशोधर देव जगत जनको सुखदायक ॥ ३२ ॥
तिनैं देख नरनाथ क्रोध धारो अधिकाही ।
इह मो बिघन निमित्त भए या वन के माहीं ॥
मारूं इन्हैं तुरंत एम मन चितवन कीना ।
तबै पांचसै स्वान छोड़ मुनिवर पर दीना ॥ ३३ ॥
जबै स्वान विकराल महा उद्धत तनवारे ।
मुनि तपके परभाव शांतहूवे वे सारे ॥
दे परदच्छणा चरण कमल में सीस नवाई ।
भक्ति हियेमें धार पास बैठे ते आई ॥ ३४ ॥
इहविध देख नरेश क्रोध में अंध होयकर ।
छोड़ो बान तुरंत मुनीपै रोश हिये धर ॥
सायक फूल सुमाल भयो ततछन दुखदाई ।
मुनिप्रभाव जगमाहिं किसी तें कहो न जाई ॥३५॥

दोहा

ताहीविध श्रेणिक तनी, बँधी आय दुखकार ।
नरक सातवें की सही, बहुत कष्ट दातार ॥ ३६ ॥

चौपाई

मुनिप्रभाव लखि श्रेणिकराय । भक्तिसहित तिनके ढिगजाय ।
चरन कमलमें धारो सीस । खोटी बुद्धि त्यागो नर ईस ॥३७॥
नृपको पुन्य उदय जब भयो । मुनिको पूरन जोग सुभयो ॥
इंद्रचंद्रकर पूजित जान । तत्व स्वरूप कहा हितै दान ॥ ३८ ॥

तबसुनके श्रेणिक बड़भाग। भक्तिसहित धारो अनुराग।
उपसम सम्यक प्रापत भई। दीरघ आयु छेद तिन दई ॥३९॥
वरस चौरासी सहस प्रमान। प्रथम नर्कमें रही सुजान ॥
सम्यक दर्शतने परभाय। कौन २ दुख मिट नाहिं जाय ॥४०॥
तिस पीछे नरनाथ महान। चित्र गुप्त श्रीमुनि गुणखान ॥
तिनकी भक्तिकरी अधिकार। चै उपशम सम्यक तबधार ॥४१॥
फिर श्री जगत पूज परमेश। बर्द्धमान स्वामी जगतेश ॥
तिनके चरणकमलके पास। चायक सम्यक लहि सुखरास।४२।
तिसही सम्यक तने प्रबन्ध। तीर्थंकर बिरकत कर बंध ॥
तीन लोक करहैं जिन सेव। होवेंगे तीर्थंकर देव ॥ ४३ ॥
प्रथम तिर्थंकर पदम सुनाम। अब होवेंगे बहु गुणधाम ॥
सो जैवंतो होय सदीव। केवल ज्ञान सहित शिवपीव ॥४४॥
देव इंद्र चक्रीश गधीस। तिनको आन नवावे सीस ॥
भक्ति भाव धारे अधिकाय। पूजा अस्तुति करे बनाय ॥४५॥
जिनके श्रेष्ठ वचन हिये आन। हर्ष सहित धारैं सरधान ॥
सो निरमल लक्ष्मी भरतार। होवे निश्चय जगत मंझार ॥४६॥

दोहा

श्री श्रेणिक महाराज की, कही कथा हित दाय।
भव्य जीव बांचो सुनो, जातैं सम्यक पाय ॥ ४७ ॥

इतिश्री आराधनासार कथाकोष विषय श्रेणिक महाराजकी कथा समाप्तम् १९

अथ रायपद्मरथकी कथा प्रारम्भः २०

मंगलाचरण कवित्त।

तीन जगत पति पूजतहैं ऐसे श्री अरिहंत महन्त [illegible]
चरणकमल को नतकर कथा [illegible]

रथ प्रगट भये हैं भव्य नमैं उत्कृष्ट सुजान। जिनवर भक्ति धार चित माहीं ताकर फल पायो अधिकान ॥ १ ॥

चाल

तर्ज–सुन भाईरे, मागध देश सुहावनो सुन भाई रे। मिथला पुरी बिख्यात सत्य सुन भाई रे ॥ भूप पदम रथ तासको, सुन भाई रे। सो सूरख अव दात, सत्य सुन भाई रे ॥ २ ॥

एक दिना अटवी विषय, सुन भाईरे। खेट करन गयो सोय, सत्य सुन भाईरे॥ हयको दौड़ावत भयो, सुन भाईरे। एक मुसा अवलोय, सत्य सुन भाई रे ॥ ३ ॥

दूर निकलगयो वन विषय, सुन भाईरे। एक की नरराय, सत्य सुन भाईरे। पुन्य उदय जब आइयो, सुन भाईरे। काल गुफा में जाय, सत्य सुन भाईरे ॥ ४ ॥

तपो दीप्त रिधिके धनी सुन, भाईरे। तहां तिष्टे मुनिराय, सत्य सुन भाईरे। रत्न त्रयकर सोहने, सुन भाईरे। है सौधर्म ऋषिराज, सत्यसुन भाईरे ॥ ५ ॥

चाल मेघकुमारकी

देखी तिने देख नृप सुखलहो जी शांत चित्त है सोय। तप्त पिण्ड जिनलोहका जी, पैते शीतलहोय रेभाई ॥ ६॥

त्यों नृप समता लीन बाजीते उतरो जबैजी। मुनि ढिग गयो तुरंत सिर धारो चरण विषयजी। मनमें अति हरषत रेभाई। नृपको पुन्य विशेष ॥ ७ ॥

दोनों बहुत उपदेश सुन नृप सम्यक हिये धरीजी। गहे अनुव्रत वसे रेभाई। नृ० पु० वि०। ८।

फिरमुनि को नायकेजी, बुद्धिमान भूपाल। प्रश्नकियो एह

विधि तबैजी। सुनिये दीनदयाल गुरुजी। मेरी संसय हान रेभाई ॥ नृपको पुन्य विशेष ॥ ९ ॥

सवैया इकतीसा

जैन धर्म रूपी सार सागर तरनजोग और बच आदि गुण जास मांहिं पाइये। ऐसेकोई उत्तम पुरुष इस अवनीपर तुम सम हूके नाहिं मोह मन लाइये ॥ तत्व ज्ञानी मुनिराय काहे नरधीश सुन चंपा नगर अनूप सुखदाइये। ताविषै विराजमान बांस पूज जिनराज पूजे गिरवान आप तिने शिरनाइये ॥ १० ॥

चौपाई

भविजनको सुखके दातार। कोटभानु ते दुति अधिकार।
ज्ञान दीप्त गुणको धारंत। ऐसे बांस पूज भगवंत ॥ ११ ॥
तिन जिनवर को ज्ञान महान। अरु मेरे में अन्तर जान।
जैसे मेरु सुदर्शन जोय। अरु सरसों तासम किम होय ॥१२॥
इमि मुनिवरके बच सुन राय। धर्म विषै बहु प्रीति लगाय।
श्रीजिनवरके बंदन हेत। कीनो मन उत्साह समेत ॥ १३ ॥
होत प्रभात समय नर राय। बहु विभूति संग लेउ मँगाय।
प्रीति सहित बन्दन के काज। चम्पापुर चालो महाराज १४॥
तितने कारन एक मनोग। होत भयो इस कर्म संजोग ॥
नाम धनन्तर एक सुजान। दूजो विश्वानल बुधवान ॥१५॥
रायभक्त देखनके हेत। आयो भूपर हर्ष समेत ॥
पथमें जात लख्यो भूपाल। माया फैलाई तत्काल ॥ १६ ॥
स्याम शरीर नाग अधिकाय। मारगमें आडो दिखलाय॥
छत्र भंग अरु हाहाकार। रज पत्थर अम्बरते झार॥ १७ ॥
करी अकाल वृष्टि अधिकान। ताकर पंक भई दुख दान ॥
तामध गज झूमत दिखलाय। इमि माया बहुत विधि ...

दोहा।

इस प्रकार अप शकुन लख, बोले मन्त्री एव ।
अहो अबै चालो नहीं, भयो अमंगल देव ॥ १९ ॥

चौपाई

तब प्रसन्न धीमान नरेश । कहत भयो ऐसे वच वेश ॥
बांस पूज स्वामी को सही । नमस्कार हो इमि मुखकही ॥२०॥
ऐसे कहकर पंक मझार । प्रेरो करी भक्ति हियधार ॥
इमि लखि सुर माया तज दीन । बारम्बार प्रशंसा कीन ॥२१॥
सर्व रोगको नाशन हार । जो जन एक पवन विस्तार ॥
ऐसो भेरी बहु गुणवन्त । नृपको देकर गये तुरन्त ॥ २२ ॥

दोहा

जिनके चित्त सदा बसे, जिन वर धर्म अपार ।
तिन के कारज सिद्ध सब, होवें जगत मंझार ॥ २३ ॥

काव्य

तिस पीछे नरनाथ गयो चम्पापुर मांही ।
परफुल्लत हिये कमल भक्त रूपी खग पाहीं ॥
मंगल तीनों लोक तनें वे जिनवर स्वामी ।
तिन के दर्शन किये नृपति ने बहु सुख यामी ॥२४॥
बहु स्तुति उच्चार फेर निज सीस नवायो ।
सुनो तत्व व्याख्यान चित्त में निश्चय लायो ॥
तबै पद्म रथ राय लई दीक्षा सुखदाई ।
बांस पूज जिन नाथ चरन में तिन लौ लाई ॥२५॥
कैसे हैं जिन देव समोश्रित मांह विराजें ।
बानी खिरे त्रकाल प्रात हारज वसु साजें ॥

सेवैं चरन सरोज सदा सुर नर खग सारे।
केवल ज्ञान प्रकाश तत्व जिनने विस्तारे ॥ २६ ॥

दोहा

लगो अनादि जु काल तें, मिथ्या भाव अयान।
ताके नासन हार प्रभु, वांस पूज भगवान ॥ २७ ॥
चार ज्ञान धारक सुधी, श्री गणधर महाराज।
तिनकर सेवत चरन युग, ऐसे जिन भव पाज ॥ २८ ॥

चौपाई

ऐसे प्रभुके चरन महान। मिथ्या तज सेवो भव आन ॥
यातें सुर शिव तुमको होय। यामें संशय नाहीं कोय ॥२९॥
जैसे राय पदम रथ करी। भक्ति प्रभूकी हिय विस्तरी।
तैसे तुम भी करो सुजान। जो श्री पावो तासु समान ॥३०॥
अब वे श्रीमान भगवान। केवल ज्ञान विराज सुमान ॥
सत्पुरुषन कर सेवत जेह। सब जगको दीजे सुख गेह ॥३१॥
जिनकी भक्ति जगतमें जान। निश्चय सुख देवें निरवान ॥
वाहजे इंद्र आदि चक्रेश। पद अथवा पावैं धरनेश ॥ ३२ ॥

दोहा

राय पदम रथ की भई, पूरन कथा-महान।
पढ़ें सुनें जे भव्य जन, तिनको ह्वै कल्यान ॥ ३३ ॥

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषय पद्मरथ राजा
दृष्टान्त कथा समाप्तः

अथ सेठ सुदर्शन की कथा प्रारंभः नं. २१

मंगलाचरण । सोरठा

पंच गती के हेत, पंच परम गुरुको नमूं ।
कहूं कथा दुख केत, नमोकार फल की अबै ॥ १ ॥

चौपाई

अंग देश शोभा जुतलसे । तामध चम्पापुर शुभ बसे ॥
ताको नृप बाहन भूपाल । धारे सुन्दर नेत्र विशाल ॥ २ ॥
निज प्रताप कर अरिगण जास । परजा पालत सहित हुलास ॥
तिसही अवनीपति के जान । वृषभदास एक सेठ महान ॥ ३ ॥
सो वह सेठ जिनेश्वर दास । प्रभुकी भक्ति हिये परकास ॥
जिन चरनांबुज सेवन भंग । पाले निरमल क्रिया अभंग ।४।
तिस बानक पतिके वृष पाल । सब गौधनको है रिछपाल ॥
इक दिन बनते आवत धाम । पुन्य जोग पथमें अभिराम । ५ ।
जुग चारन मुनि ध्यान धरंत । सब जगमें उत्तम शिवकंत ॥
तिनको देख गोप हरषाय । मन बिचार इहि भांति कराय ।६।
एह मुनि मारतण्ड गुणवन्त । वस्त्र रहित तननगन धरन्त ॥
शिला श्रुत्तपर धारत ध्यान । और एह शीत पड़े अधिकान ।७।
कैसे कर है रैन बितीत । इमि करुनाकर ह्वै भयभीत ॥
कर बिचारसो निज गृह आय । मुनि चरननमें चित्त लगाय ।८।
पिछली रैन समय उठधाय । भैंस चरावनको तहं जाय ॥
देखे जुग मुनि ताही ठाम । तन तें निस्नेही गुणदाम ॥ ९ ॥
सब शरीर पर पड़ो तुशार । देख ग्वाल करुणा मन धार ॥
अपने करतें हिमकण सबै । कीने दूर हरष जुत तबै ॥ १० ॥
जुग मुनिके चरनाम्बुज सार । बहु तप लोटे थिरचित धार ॥
ताही छिन सुकृत भंडार । भरत भयो नाना परकार ॥ ११ ॥
इतने मांही भयो परभात । पूरन ध्यान कियो जगनाथ ॥

निकट भव्ययाको अविलोय । स्वर्ग मोक्ष सुख जाते होय।१२।
ऐसो मंत्र दियो तत्काल । णमो अरिहंताणं गुणमाल ॥
याको याद राखयो बीर । इमिकहि गये गगन तव बीर ।१३।

दोहा

तव ही उस गोपाल को, श्रद्धा भई महान ।
सुख दाता दोउ लोक में, मन्त्र प्रभाव सुजान ॥ १४ ॥
सब कारज के आदि में, पहिले मंत्र उचार ॥
यह निश्चय हित में धरी, गोपालक सुखकार ॥ १५ ॥

पद्धडी छन्द

एकै दिन सेठ महा सुजान । या सुख ते मंत्र सुनो महान ॥
तव कही अरे तू क्या कहन्त । तव गोप सबै भाखो वृतन्त ।१६।
सुन सेठ चित्तमें हर्षधार । धन धन भूपर तुमही औतार ॥
तू ने देखे मुनिराज जेह । तिहुंलोक पूज गुरूजान तेह ।१७।
जे धर्म राग प्रानी धरन्त । तेजगत विषय शोभा लहंत ॥
एक दिन याकी एक भैंसजान । गंगाके पार गयीनिदान ।१८।
तव ताके ढूंढनको गुवार । वो मंत्र उचारत बार बार ॥
सो नदी विपय ऐसो तुरंत । तहां काष्ठ खंड आवत बहंत ।१९।
याने ताको नाही निहार । तानें हिरदो तताछिन बिदार ॥
जिमि दुरजन अपनो पायदाव।छिपकर शायकतै करतघाव।२०।
तव गोप मंत्र मुखतें बखान । करके निदान छोड़े पिरान ॥
सो वृषभदासकी नार सार। ताकी सुकूख लीनो औतार ।२१।

दोहा

नाम सुदर्शन तासुको, उपजे रूप निधान ।
महा भाग्य निज पुन्यते, शोभा धेरै महान ॥२२॥
पुन्यवान को जगत में, क्या दुर्लभहै वस्तु ।
कोई दूर न देखिये, निकट निहार समस्त ॥ २३ ॥

चौपाई

इस अन्तर इस नगर मँझार । सागर दत्त एक सेठ निहार ।

सागर सोना ताकी भाम । मनोरमा पुत्री गुणधाम ॥ २४ ॥
सेठ कुंवरको ताके संग । भयो विवाह सहित सुखरंग ।
वृषभदास अब सेठ पुनीत । धर वैराग विषै तिन प्रीत ॥२५॥
अपनो पुत्र सुदर्शन सार । ताको निजपददे तत्कार ।
गुरु समाधि गुप्त यह जाय । दीक्षा लीनी मन वचकाय २६॥
सेठ सुदर्शन अब बुधवान । राजादिक ते पायो मान ।
भयो प्रसिद्ध जगतके बीच । फैली कीरति सहित मरीच २७॥
भगवत भाषत किरपासार । पाले श्रावककी अविकार ।
पूजादान शील व्रत मांहिं । नितप्रति सावधान अधिकाहिं २८
एक दिन बनमें क्रीड़ा काज । नृपसंग गये सहित समाज ।
इनकी रूप सम्पदा सार । देखत भई नृपतिकी नार ॥ २९ ॥
भवयानाम तासुको जान । होतभई विहबल अधिकान ।
धाय प्रतीबोली दुखपाय । हे माता सुनिये चितलाय ॥ ३० ॥
क्रोड़ों मुनि गणमें परधान । को तिष्टत यहकाम समान ।
तब वह कहतभई मुसकाय । सुनरानी मैं कहुं समझाय ।३१।
नाम सुदर्शन सेठ महान । जग विख्यात काम सम जान ॥
ऐसे बच सुन नृपकी भाम । धाय प्रति बोली अभिराम ३२ ॥

दोहा

हे माता इस पुरुषको, दीजे मोहिं मिलाय ।
तो मेरो जीवनरहे नातरु जमपुर जाय ॥ ३३ ॥
तब धातृ बच इमकहे, सुन पुत्री अभिराम ।
छिनमें करहूं सही, तेरे पूरन काम ॥ ३४ ॥

सोरठा

जे कुलटा हैं नार, निन्द काज सबही करैं ।
रंचक भय नहिंधार, आचारज बच इम कहैं ॥ ३५ ॥

काव्य

इस अन्तर अब सेठ सुदर्शन जो बड़ भागे ।
श्रावक ब्रत कर सहित सदा जिनमत अनुरागे ॥
आठें चौदस रैन विषै वन खण्डमें जावे ।
भूमि मसान मंझार जायकर ध्यान लगावै ॥ ३६ ॥
वन में जातो देख सेठको धाय अयानी ।
पाप कर्म में चूर उष्ट मनमें अधकानी ॥
यह कुम्हार घरजाय एक इन पुतलो लीनो ।
मनुष समानी काय गन्ध बहु तिस बपु दीनों ॥३७॥
पटमें ढको तुरंत चली रानी गृह आवे ।
रोकी तब दरवान जबै यह बहु खुनसावै ॥
पुतलोको तब लेय सीसते भू पर डारो ।
फूटत भयो तुरन्त तबै रिस बैन उचारो ॥ ३८ ॥
रे रे दुष्ट अयान निन्द कारज तुम कीना ।
रानी के उपवास आज था वह नहिं चीन्हा ॥
इस पुतलेको पूज फेर वह भोजन करती ।
बिन देखे नहिं खाय यही व्रत मनमें धरती ॥ ३९ ॥
ताते तुमको अबै दण्ड बहु विधि दिलवाऊं ।
प्रातकाल के होत सीस तुमरो छिदवाऊं ॥
तबही सारे द्वारपाल याके ढिग आये ।
स्तुति बहु विधि करी फेर इम वचन सुनाये ॥ ४० ॥

दोहा

अबतो क्षमाकीजिये, फेर न रोकें तोहिं ।
इनको बसकरके तबै, गई सो हर्षित होय ॥ ४१ ॥

रैन अँधेरी अष्टमी, भूम मशानमें जाय ।
सेठ सुदर्शन ध्यानजुत, देख धाय हर्षाय ॥ ४२ ॥
बड़े जतन ते सेठको, लीनो कंध बठाय ।
रानी को सौंपत भई, मनमें बहु सुख पाय ॥ ४३ ॥

सवैया इकतीसा

काम कर पीड़ितभई है नृप नार तबै, आलीगन आदर करत तब बोली है । नाना उपसर्ग किये सारी रैनके मंझार, त्रियाके चरित्र तोभी पार न बसाई है ॥ सेठ धीय मानकियो मेरु के समान चित्त, निज मनमाहिं प्रतिज्ञा इम आनी है । टरै उपसर्ग एह मुनिव्रत धारकर, पान पात्र लेऊं अन्न ऐसे विधि ठानी है ४४॥

दोहा

जिन चरनाम्बुज को भ्रमर, वारिध सम गम्भीर ।
काष्ट खंड सम होयकर, तिष्टोतित ही धीर ॥ ४५ ॥
सन्त जीव जे जगतमें, कोड़ों कष्ट लहाय ।
तो भी नेक न चिगतहैं, चित्त धीरज अधिकाय ४६

छन्द चाल

तब नृप त्रिय निश्चै जानो । यह है पाखान समानो ॥
इस शील खराडने रानी । ना भई समर्थ अयानी ॥ ४७ ॥
सो दुष्ट चित्त अधिकाई । तब ऐसे चरित कराई ॥
नखतें शरीर जु बिदारो । मुखते तिन कियो पुकारो ॥ ४८ ॥
एह सेठ अवस्था कीनी । ऐसे भाषो रिस भीनी ॥
जे पापन हैं अधिकाई । ते क्या क्या नाहिं कराई ॥ ४९ ॥
तब राजा सुन दुख पायो । रिसते शरीर कंपायो ॥
तब हुक्म दियो तत्कारा । ले जाओ पकड़ यह बारा ॥ ५० ॥
मारो मसान में जाई । एह सेठ महा अन्यायी ॥

नृप वच सुनके भट आये । गह केश मसाणे लाये ॥ ५१ ॥

दोहा

एक दुरमती ने तवै, बांधी असि तत्काल ।
तब ही शील प्रभावतें, भई फूल की माल ॥ ५२ ॥
दशों दिशा गंधित भई, गूंजे अलि बहु भाय ।
सेठ गले शोभित भई, सो किमि वरनी जाय ॥५३॥

सवैया इकतीसा

देवन के गण सार कियो तहँ जैजै कार, कहो सब भव्यन मै तुम परधान हो । धन धन सेठ आप जगकर पूजनीक, जिन पद सेवनको भृग केसमान हो ॥ श्रावक आचार महा पंडित प्रवीन अति, शीलके निधान अरु रूप अप्रमान हो । इत्यादिक वच सुरभाषे तहं वार वार, पुष्प वृष्टि कीनी कहो दया के निधान हो ॥ ५४ ॥

दोहा

पुन्यवान जनको सदा, होवे कष्ट अपार ।
सुखरूप ह्वै परनवै, महिमा धर्म अपार ॥ ५५ ॥
तातें भविजन जतन सें, पुन्य करोहित कार ।
जैसा भगवत ने कहा, तैसा हिरदे धार ॥ ५६ ॥

चौपाई ।

पुन्य सोयको कहिये मित्त । श्री जिन पूजन कीजे नित्त ॥
दान दीजिये चार प्रकार । पालो शील सदा अविकार ॥५७॥
आठें चौदश धर उपवास । रैन मसाण विषय करवास ॥
सामायिक कीजे तिरकाल । एही पुन्य सबै अघटाल ॥५८॥
सेठ सुदर्शन शील प्रभाय । लखकर तिनही आयो राय ॥
नगरीके जन सारे तवै । सेठ चरन को नमिये सबै ॥५९॥

क्षमा कराई बारम्बार । लज्जा चित में नरपति धार ॥
सेठ सुदर्शन होय उदास । पुत्र सुकान्त बुलायो पास ॥ ६० ॥
अपनो पद दीनों तत्काल । आप गयो कारन गुणमाल ॥
नाम विमल बाहन मुनिचन्द । तिनके चरननमों गुणवृन्द ॥६१॥
जैनिन्द्री दीक्षा तिस पास । लई सेठ धर चित्त हुलास ॥
दर्शन ज्ञान चरित तपसार । तिनको धारो सब अघटार ॥६२॥
निर्मल केवल ज्ञान प्रकास । सब चर अचर पदारथ भास ॥
देवइन्द्र कर पूज महान । मोक्ष पुरीमें कियो पयान ॥ ६३ ॥
और भव्यते है परधान । मन्त्र जयो नौकार महान ॥
सुखको देनहार है यही । ऐसी प्रभु बानी में कही ॥ ६४ ॥
नित सर धान करो मनलाय । निश्चल चितकर हर्ष बढ़ाय ॥
इसही मन्त्रतनें परभाय । भये सेठ शिवपुर के राय ॥६५॥
सोई प्रभु वरतो जैवन्त । जो शिव नारतने है कन्त ॥
केवल ज्ञान मरीच प्रकाश । भवजनके हिय कंच विकाश ॥६६॥
सुरखग असुर और चक्रेश । अथवा श्रीमुनिवर जगतेश ॥
बनि बारिध जाननहार । इत्यादिक सेवें हितधार ॥६७॥
ऐसे प्रभुके कवि चित लाय । सुमिरन करे सीस भू नाय ॥
तुमही दीना नाथ दयाल । मेरे भव अघ दीजे टाल ॥६८॥

इतिश्री आराधनासार कथाकोष विषय सेठ सुदर्शनकी कथा समाप्तम्

अथ यमभूतकी कथा प्रारम्भः नं० २२

मंगलाचरण । सोरठा ।

श्री अरिहन्त महान, और भारती मात जी ।
गुरु निर ग्रन्थ महान, तिनको वन्दूं भाव जुत ॥१॥

कहूं कथा सुखकार, भई खण्ड श्लोक तें।
ताको सुन चित धार, अहो भव्य प्रानी सबै ॥ २ ॥

चौपाई।

उंड्र देश सबसे विख्यात। धर्म नगर ता मांहि सुहात॥
सर्वशास्त्र को जाननहार। बुद्धिमान यमभूत उदार॥ ३॥
धनवंती तासू गृह भाम। गर्दभ पुत्ररूप अभिराम।
नाम कौनका तनुजा जान। लावन मण्डत तन अधिकान ४
तिसही नृपके और जो नार। तिनके पुत्र पांच सौ सार॥
जैन धर्ममें तत्पर सोय। सज्जन जन लख हर्षित होय ॥५॥
मन्त्री दीरघनाम बखान। मन्त्र कर्ममें है परधान॥
या विधि राज करत भूपाल। सुखसे बीतत है तिसकाल॥ ६॥
एक दिना इक निमती आय। राजासे इमि वचन कहाय॥
तुमरी सुता कौन का जोय। चक्रवर्त्ति के नारी होय॥ ७॥
ऐसे वचन सुने नरराय। पुत्री पालत भयो छिपाय॥
एक दिना उस नगर उद्यान। नाम सुधर्मा सूर महान॥ ८॥
पांच शतक मुनि तिन संग धीर। आय विराजे नगन शरीर॥
तब सबजन मिल हर्ष बढ़ाय। सामग्री ले वन्दे जाय॥ ९॥

दोहा।

पुरजन जाते देख नृप, ज्ञान गर्भ चित आन।
मुनि निन्दा करतो गयो, एह भी उसही थान॥१०॥
मुनि निन्दा परभावतें, अथवा गर्भ पसाय॥
ताछिन पाप उदै थकी, नृपकी बुद्धि नसाय॥ ११॥
महा कष्ट दाता सही, गर्भ सो आठ प्रकार।
याको ततछिन छोड़िये, अहो भव्य चित धार।१२।

पद्धडी

तब नृपत ज्ञानकर हीनहोय। निरमद करीन्द्र सम भयोसोय।
मुनिको कीनो तब नमस्कार। तिष्टो तिनढिग बहु भगतधार।१३।
जिन भाषित धर्मसु दो प्रकार। सुनिये नरिन्द्र हियमांहि धार।
तब राज लखते ह्वै उदास। गर्दभ सुतको बुलवाय पास ॥१४॥
सब राज सौंपताको जु दीन। सुत पांच शतक जिनसंग लीन।
मनबचन काय त्रय शुद्धवान। मुनि होत भये ततक्षण महान १५
सबशास्त्र पढ़े पण सत मुनीश। जिन आगम पार भये जगईश।
अरुयम मुनिको श्रम जात बाद। नहि नमोकर भी होत याद।१६।
तब इह लज्जा चित मांहि आन। श्रीगुरुते पूछ कियो पयान॥
तीरथ यात्राके हेत जाय। एकाकी विचरे शुद्ध काय ॥ १७ ॥
इक दिन मारग बिहरत मुनिन्द। यकरथ देखोजुत मनुष वृन्द।
अरु खेत खात गर्दभ निहार। तब खण्ड रचो यह श्लोकसार १८

गाथा

१ कहसि पुण शिर केवल सिरे गदहा जब पेछ सिर वादीडुमिते १९

चौपाई।

फिर और दिना मगमें निहार। बालक करते लीला अपार॥
गिल्ली जु काष्टकी तिन बगाय। सो पड़ी गढ़ेके मध्य जाय।१९।

दोहा

तबभी मुनिवर ने रचो, खण्ड श्लोक सुखकार।
कछु यक बुद्धि प्रसादते, इहि बिधि कियो उचार।२०।

गाथा

२ अणाछकिं पलोव लुम्हेए क्षाणि बुद्धि पाछिदे
अबई कोणा आई तिछे ॥ २१ ॥

दोहा

इक दिन कमलन पत्रकर, अच्छादित फण धार।
मींडक लख मुनिकूं तबै, भागो भय चित धार। २१

चौपाई

तव यह मुनिवर तहां बनाय । रच्यो खण्ड श्लोक सुखदाय ॥
या विधितें आपो गुण गेह । ताको वर्णन अब सुन लेह ॥२२॥

गाथा

२ अन्हा दोण छियं दिही दोपीसे देभयं तुम्हेलि गच्छ गये हजे

चौपाई

इस प्रकार त्रय खन्ड बनाय । इनकी नित स्वाध्याय कराय ॥
जिन तीर्थनकी वन्दन करैं । शुद्धातम निरमल चित धरै ॥२३॥
विहरत आये दया निधान । नाम धर्मपुर नगर उद्यान ॥
कायोत्सर्ग धरो जगदीश । तिष्ठे ध्यान विषय मुनि ईश ॥२४॥
दीरघ मंत्री गर्दभ राय । यममुनि आये सुन दुख पाय ॥
राज हमारो लेने काज । आये हैं वह विहरत आज ॥२५॥
ऐसा मनमें किया विचार । इन मारनकी इच्छा धार ।
अर्द्धरात्रि खोटी मत ठान । खड्गलेय आये बन थान ॥२६॥
मुनिके पीछे ऊभे जाय । मूरख नृप मंत्री अधिकाय ।
तव गर्दभ दीरघ मिल दोय । खड्ग उठाइ हर्षित होय ॥२७
फिर मुनिकी हत्यातें डरे । खड्ग लेय कर म्यान सुकरे ।
हत्याको भय चितमें आन । काढ़े खड्ग करे फिर म्यान २८
उसी समय मुनि दयानिधान । खण्ड श्लोक त्रिय कियेवखान ।
प्रथम श्लोक सुन गर्दभराय । मंत्रीसे ऐसे वतलाय ॥ २९ ॥
हम तुम दोनों दुष्ट अयान । इन मुनिने अव लिये पिछान ।
दूजा सुन श्लोक नरेश । दीरघ प्रत वोलो वच वेश ॥ ३० ॥
यह तपसी नहिं चाहत राज । पर उपकारी धर्म जहाज ।

नोट—यह तीनों गाथाएँ हमको ऐसेही मिली हैं इसकारण हमने ज्योंका ज्यों नकल करदी हैं बुद्धिमान शुद्ध करलेवें और हमको सूचित करें

नाम कौणका इनकी सुता । मम भगनी जो है गुणयुता ३१ ॥
तिष्ठत है जो तेखानेमाहिं । तिस सनेह बतलावन आहि ।
तृतीय श्लोक जो खंड बनाय । सोभी पढ़ो तबै मुनिराय ॥३२
सुनकर गर्दभ चित्त मंझार । ऐसे कीनों सार विचार ।
यह मंत्री दीरघ दुखदाय । दुष्ट स्वभाव धेरै अधिकाय ॥३३॥
मुझको मारन चाहत एह । यामें तो ना है सन्देह ।
मेरा पिता मोह वश आय । गुप्तभेद मोहिं दियो बताय ॥३४
इमि विचारकर नृप परधान । कियो प्रनाम भक्त बहु आन ।
अभिप्राय खोटा तजदीन । उत्तम श्रावक व्रत तिन लीन ३५॥
अब यह यम मुनिंद गुणवान । अति वैराग लीन तपखान ।
भगवत भाषित शुद्ध चरित्र । तिसको पालत सदा पवित्र ३६॥
तप जु प्रभाव कर्म नस गये । सातों रिद्धिके धारी भये ।
तुच्छ ज्ञान धारी यह राय । गुण भाजन है ऋद्धि लहाय ३७
तातें अहो भव्यजन सबै । भगवत ज्ञान अराधौ अबै ।
तुच्छ ज्ञान भी है सुखदाय । जगमें है सो यम मुनिराय ३८॥
कैसे हैं गुणनिधि योगिंद्र । सप्त ऋद्धि धारी सुखकंद ।
तातें भगवत भाषत ज्ञान । सत्पुरुषन को करै कल्यान ॥३९॥

दोहा

पूरन कथा जो यह भई, यम मुनिकी जुमहान ।
कवितके वे श्रीमुनी, करहैं सब कल्याण ॥ ४० ॥

इति श्रीआराधनासारकथाकोष विषय खण्ड सप्तऋद्धिकर शोभित यममुनिकी कथा समाप्तम् २२ ।

अथ नवकारमंत्र फलसैं सूरजचोरकी

कथा प्रारभ्यते नम्बर २३ ।

मंगलाचरण । सवैया तेईसा ।

लोक अलोक प्रकाश कियो जिन श्रीअरहन्त नमूं सुखकारी।
तीनहुं लोक विषय जु पदारथ भासरहे जिन ज्ञान मंझारी ॥
तासु प्रसाद कथा वरनूं शुभ श्री नवकार तनी अति भारी ।
श्रीदृढ सूरज चोर लहो फल तासु चरित्रकहूं अघटारी ॥१॥

दोहा।

येही उज्जैनीपुरी, ताको नृप धनपाल ।
धनवति रानी तासुकी, गुण रतननकी माल ॥२॥

चौपाई

एकदिना वन देखनकाज ऋतुबसंतमें सहित समाज ।
क्रीड़ा हेत गई नृप नार, लारलेय सबही परिवार ॥ ३ ॥
तिस रानीके गल विच हार । तामें रतन जड़े अति सार ।
तिस अवसर एक गणिका आय । नाम वसंबसेना तिसथाय ४
देखहार चित विस्मै भई । मन विचार इमि कीनों सही ।
या विन जीवन निष्फल जान । है उदास गृह पहुँची आन ५॥
दृढ़ सूरज तस्कर इस गेह । रैन समय आयो जुत नेह ।
कहत भयो दुःखित क्यों बाल । तब गणका बोली दरहाल ६
रानीके गलमें जो हार । मोको लाय देय तत्काल ।
तो तू पीतम है परधान । नाहीं तो जावे मुझ प्रान ॥७॥

दोहा

दृढ़ सूरज यह बचन सुन, धीरज बहुत बंधाय ।
राजाके गृह जाय के लीनो हार चुराय ॥ ८ ॥

रैन समय लेकर चलो, भयो उद्योत अपार।
नाम तास जमपास है, तहँ आयो कुतवार॥ ९॥

बन्द्‌चाल

दृढ़ सूरज कूं तिन चीन्हा। बांधो बहु कष्ट सो दीना।
नृप आज्ञा फिर तिन पाई। सूली पर दियो चढ़ाई॥१०॥
ताही नगरी के मांहीं। एक धनदत्त सेठ रहाहीं।
सो प्रातकाल उठ धावे। श्रीजिनमन्दर को आवे॥ ११॥
सो तस्कर दुख जुत भारी। कंठागत प्राण सुधारी।
इम कही सेठसे बानी। मोहे वेगहि लावो पानी॥ १२॥
तुम दयावान अधिकाई। जिन भक्ति महा सुखदाई।
तब सेठ कहे सुन भाई। मेरे बच चित्त लगाई॥
द्वादश वर्ष माहि लहायो। गुरुकी सेवा तैं पायो॥
इह मंत्र महा सुखदाता। तिस याद करो अब भ्राता॥ १४॥
जो मैं अब जलको लाऊं। तो मंत्र भूल यह जाऊं॥
ताते इसको तू भासे। तो जल लाऊं तुझ पासे॥ १५॥
जबमैं जल लाऊं भाई। तब दीजो मोहि बताई॥
सुन चोर कही सुन नामी। करहूं ऐसे ही स्वामी॥ १६॥

दोहा

धरम तत्त्व ज्ञायक सुधी, पर उपकारी सार।
ऐसे धनदत सेठ ने, मंत्र दियो नवकार॥ १७॥
आप गयो पय कारने, सज्जन जन हित दाय।
इतने दृढ़ रथ चोर तब, मंत्र सुधार कराय॥ १८॥

सोरठा

ततच्छण छोड़ी काय, मंत्र घोषतें चोरने।
प्रथम स्वर्ग में जाय, उपजो निर्जर ऋद्धि धर। १९।

अहो मंत्र परताप, क्या न लहै प्रानी सबै ।
तातें कीजे जाप, सदा मंत्र नवकार की ॥ २० ॥

चौपाई

इतनेमें दुर्जन इक जाय । नरपति तें इम अरज कराय ॥
वाणिक पद धनदत्त महाराज । चोर थकी बतलाये आज ।२१।
यातें याके गृह भविजान । चोर द्रव्य तिष्ठे अधिकान ॥
दुरजन जनको है धिक्कार । सज्जन जनको भी भैकार ॥२२॥
याके बच सुन अवनीपाल । क्रोध थकी कम्पो तत्काल।
सेठ पकड़ने हेत तुरंत । किंकर भेजे अवनीकन्त ॥ २३ ॥
ताही छिन तस्कर चरजेह । भयो त्रिदश अति सुंदर देह॥
अवध ज्ञानते सब उपकार । सेठ तनो जानो तेहिबार ॥२४॥
अवनी पै आयो हरपाय । द्वारपाल को रूप बनाय ॥
सेठ पौल तिष्टो तिह घरी । करमें छड़ी सुरतनों जड़ी॥ २५ ॥

दोहा

राजा के किंकरन को, करत प्रवेश निहार ।
मने कियो इसने तबै, उन हठ कियो अपार ॥ २६ ॥
तब सुर ने माया थकी, वे चर हने तुरन्त ।
नृपति वारता यह सुनी, भट भेजे बलवन्त ॥ २७ ॥

चौपाई

वे भी मारे सब रिपु धार । सुन के नृप ले सेना लार॥
गज चढ़ आयो तिहही थान। जहँ तिष्ठत हैं वह दरवान।२८।
सब सेना नृपकी तिहघरी । सुरने तबही मूरछा करी ॥
राजा भयकर कम्पित काय । भागत भयो महा डरपाय । २९ ।
कहे अमर सुनरे नर राय । सेठ तने जो सरने जाय ॥
तो तुझ जीवन है निरधार । नातर मारूं इसही बार ॥ ३०॥

दोहा

तब नरपति जिन धाम में, गयो सबै मद छार ।
सेठ प्रती कहतो भयो, रच्छ रच्छ यह वार ॥ ३१ ॥

पद्धड़ी

तबही शुभ आतम सेठ धीर । निर्जर प्रति बैन कहे गंभीर ॥
हो धीर वीर यह सब चरित्र । तुमने कीने किस हेत मित्र । ३२।
तब दृढ़रथ सूरजको जु जीव । सुर नमस्कार बोलो सुईव ॥
हे महाराज तुमहो दयाल । जिनपद अम्बुज षट्पद विशाल । ३३।
मैं महा पाप गिरसत अथान । मोको दृढ़सूरज चोर जान ॥
तुमरे प्रसाद किरपानिधान । मैंने पायो सौधर्म थान ॥ ३४॥
पूरब भवमें निज यास्कीन । उपकार लखो तुमरो प्रवीन ॥
यातें मैं आयो हर्ष धार । मोको अपनो चाकर निहार । ३५।
रच्छा तुम्हरी हियमाहिं धार । याते इह काज कियो अवार ॥
इम कह रतनादिक सार लाय । धनदत्त तनी पूजा कराय । ३६।
फिर नमस्कार करके तुरंत । निज धामगयो बहु हर्षवन्त ॥
तब चित प्रसन्न नरनाथ होय । पूजे सु सेठके चर्न दोय ॥३७॥

दोहा

पर उपकारी जीव जे, धनदत सेठ समान ।
तिनको दुर्लभ कछुक नहिं, सबही सुलभ सुजान । ३८।

गीता छन्द

धन पाल नृपको आद लेकर मुख्य भविजन जे जहां ॥
इह मंत्र शुभ नवकार महिमा देख हरषित है तहां ॥
अरहंत भाषित धरम निरमल भक्ति रति उन आदरो ।
तातें सबै भव जीव अब भी धरम में बुधको धरो ॥ ३९ ॥

दोहा

पूरन कथा जू इह भई, दृढ़ सूरत की जान ।
मंत्र प्रभाव सुपाइयो, ताने नाक सु थान ॥ ४० ॥

इति श्री आराधनासार कथा कोष विषय दृढ़सूरज चोरकी कथा समाप्तम् ।

जयपालनाममातंगकीकथाप्रारंभ:२४

मंगलाचरण ॥ दोहा ॥

सुख दाता अरिहन्त को, धर्म हेत शिर नाय ।
कहूं कथा मातंग की, पूजो सुरतिस आय ॥ १ ॥

चौपाई

नगर बनारस उत्तम थान । नृपति एक शाशन गुणवान ॥
इक दिन अपने देश मंझार । पंडित जन देखे अधिकार ॥२॥
रोग शांति करनेके काज । उद्यम कियो आप महाराज ।
श्री नंदीश्वर पर्व मंझार । कार्तिक की अष्टानिक सार ॥३॥
तामें घोष नदी नीराय । कोई जीव न मारो जाय ।
कैसो है धरमातम भूप । प्रजा विषय हितधार अनूप ॥४॥
सेठ पुत्र इक दुष्ट स्वभाव । सप्त विषन सेवै अधिकाव ।
धर्म नाम नृपको उद्यान । तामें गयो पापकी खान ॥५॥
नृपको मींढो तामें एक । मारो पापी रहित विवेक ।
ताको पल भक्षो तत्कार । अस्थि गाड़ियो भूमि मंझार ॥६॥
सप्त व्यसनके सेवनहार । तिनके दया न हृदय मंझार ।
इहतो बात सत्य पहचान । यामें मिथ्या रंच न जान ॥७॥
तबै पाक शाशन नरपाल । मींढो ढुंढवायो तत्काल ।
कहिंय न पायो याको खोज । हेरे चर नगरी में रोज ॥८॥
रैन समय वन पालक आय । निज नारीसे इमि बतलाय ।
सेठ तनुज ने मींढो मार । ताको पल भक्षो तिहवार ॥९॥

दोहा

इसकी बार्त सुन सबै, हलकारे हरपाय ।
सब वृत्तान्त कहो भूपती, जिम मालिक बतलाय १०

राजा सुन मनरोशधर, लियो जम दंड बुलाय।
आज्ञा इहविधिकी दई। तू सुनले चितलाय ॥११॥
धरम सेठको जो तनुज, धर्म परायन जान।
ताको सूली दो अबै, रंचक देर न आन ॥ १२ ॥

चौपाई।

नृप आज्ञा सुनके कुतवार। शूली निकट गयो तिहिवार।
प्यादन को इम आज्ञा दई। एक चंडाल बुलावो सही ॥१३॥
सुन आज्ञा चरगये अभंग। जहँ जमपाल रहे मातंग।
ताने व्रत लीनों परधान। ताको वर्णन सुनो सुजान ॥१५॥
इकदिन सर्व औषधी नाम। मुन भेटे इन कियो प्रनाम।
धर्म सुनो जिन भाषित सार। दोनोंलोक सुधारनहार ॥१५
यम बालक नामा मातंग। यह विधि नेम लियो जु अभंग।
दिन चौदश के पर्व मंझार। कोई जीव हनूं न लगार ॥१६॥
इहविधि नेम पवित्र अपार। पहले लीनोथो सुखकार।
सो इन आवत देखे सही। कोतवाल के चाकर वही ॥१७॥

दोहा

नारी तें बतलाइयो, व्रत रचाके काज।
हे प्रिये ऐसे भाषियो, गयो गांव वह आज ॥१८॥
ऐसे कह निज भामते छिपो धाममें जाय।
शुद्ध बुद्ध धारक यही, इतने वे चरआय ॥ १६ ॥

अडिल्ल

तिनसेती चंडाली ऐसे बच कहे।
गयो ग्राम मुझ नाथ आज जानो यहै ॥
तिस बच सुनकर किंकर ऐसे तब कहो।
देव ठगो वह आज ग्रामको क्यों गयो ॥२०॥

सोरठा

सेठ पुत्रको आज, शूली दैनोथो सही ।
मिलतो सकल समाज, पट भूषण आदिक सबै २१।

पायता

किंकर वचसुन चंडारी । मन लोभ भयो अति भारी ।
ऊपरते इमि बतलावे । वह ग्रामगयो कल आवे ॥ २२ ॥
अरुसैन थकी बतलाई । गृह कोने माहिं छिपाई ।
मायाचारी है नारी । फिर लोभ मिले जब भारी ॥ २३ ॥
तबतो क्या कहो सुनावे । बहु विधिके चरित बनावे ।
जिमि अगिन तेज है भाई । है पवन थकी अधिकाई ॥२४॥

चाल मेघकुमार

कोतवारके चर तबै जी, पकड़ लियो चण्डाल । भूपति आगे लेगयोजी तब इनवचन उचार ॥ हो स्वामी ममविनती उरधार २५

हे नरेश मुझ नेमहै जी, जीवन हनहूं आज । जो मनभावे सो करोजी, सुनलीजे नरराज ॥ हो स्वामी ममविनती उरधार २६

इम सुनके तब नरपतीजी, कीनो क्रोध अपार । सेठपुत्र को दोष तैंजी ऐसे वचन उचार । सुनों चर लेजावो इन वेग २७।

इह शिसुमार विषय अवेरे, दोनों को दो डार । आज्ञा इह यम दण्ड सुनी जी, ठानी निज सिर धार ॥ तबेही ले चालो तत्काल ॥ २८ ॥

सेठ पुत्र चंडारको जी, गेरे गृह मध जाय । क्रूर जन्तु जामे भरे जी, अरु जलकी नाई थाय ॥ रे भाई धर्म बड़ो संसार २६

व्रत रक्षाके कारनेजी, संकट सहे अपार । ता प्रभाव अनुरागते जी, आये सुर तत्कार ॥ रे भाई धर्म बड़ो संसार ॥ ३० ॥

जलपे सिंहासन रचोजी तापर दियो बैठाय । फिर उत्तम जल

लायकेजी न्हौन कियो हरषाय ॥ रे भाई धर्म बड़ो संसार ॥३१॥
पटभूषण पहरायके जी दीने रतन अपार। यह कारन लख नृप तबै जी आयो हर्ष सुधार ॥ रे भाई धर्म वड़ो संसार ॥३२॥
गुण उज्जल यम पाल है जी ताको पूजो राय। बहु स्तुति मुखतें करीजी तू उत्तम अधिकाय ॥ रे भाई धर्म बड़ो संसार ३३
इह बिध भवि जन जानके जी धर्म करो अधिकाय। जो श्रीजिन वरने कहोजी स्वर्ग मुक्ति सुखदाय ॥ यह निश्चय मन धार ३४

छप्पय

वृत जुत जो चण्डार सुरोंकर पूजित होई।
तातें जगमें जात गर्व कीजो मत कोई ॥
देखो जिनवर धर्म लेश जिम चितमें धारो।
देवनकर भू मांहि पूज है सब अघ टारो ॥
सो श्रीभगवत धरम अब, तीन लोक में सुख करो।
अरुमेरे कल्याण कर, दुख दारिद्र बाधा हरो।३५।

सोरठा

यम पालक मातंग, तासु कथा पूरी भई।
सुनते अघहों भंग, बहु कीरत जगमें बढ़े ॥३६॥

इतिश्री आराधनासार कथाकोष विषय यमपालनाम चाण्डारकी कथा समाप्तम्

मृगसेन धीवरकी कथा प्रारम्भः नं० २५

मंगलाचरण ॥ मरहटा छन्द ॥

केवल चखु धारी ज्ञान भण्डारी ऐसे श्री अरिहन्त।
सब जनके ज्ञाता जन सुख दाता धारे सुगुण अनन्त ॥
तिनको सिरनाऊं, भगत बढ़ाऊं कहूं कथा रसवन्त।
धीवर अघधारी हिंसा छारी ताकर भयो महन्त ॥ १ ॥

कड़खाछन्द

सर्व सन्देह तमदूर करने विषय भानकी किरने सम जैनबानी।
प्रान सम जानकर प्रीतकर सेइये करे अघहान सुखलहै प्रानी ॥
खिरीजिन मुखथकी शब्द घनघोरसम श्रीगणधीश निजहियेआनी
अंग द्वादश तबै रचे पदरूप करसोई जगवंत जगमें बखानी २

सवैया इकतीसा

अट्ठाईस मूल गुण पाले सदा प्रीति कर नगन स्वरूप धरे जग हितकारी हैं। ज्ञान के उदाधिसार सुगुण तने भंडार भव दधिसेत और आप अणागारीहैं॥ बाईस परीषह जोर ताको सहे बार बार धर्म शुक्ल ध्यान गहे दया धर्म धारी हैं। ऐसे गुरु मेरे हिये बास करो मेटो त्रास हूजिये सहाय हम सरन तुम्हारी हैं ॥ ३ ॥

दोहा

ऐसे श्री अरहन्त को, और भारती माय।
गुरुको सीस नवाय के, कहूं कथा सुखदाय ॥ ४ ॥
एही मंगल रूप है, करम शान्ति करतार।
यातें सबको आदि में, इनको सुमरन सार ॥ ५ ॥

चौपाई

हिंसा सबजन को भै दार । नाम मात्र भी है दुखकार।
सोई हिंसा तीन प्रकार। पंडित जन त्यागो निरधार।६।
पितृ अर्थ इक जानों सई। दूजी देवता हित बरनई ॥
तृतिय शान्ति अर्थ निहार। त्यागी बुधलख दुख भंडार॥ ७ ॥
हो भवि जन सुनिये मनलाय। बरत अहिंसा सब सुखदाय॥
तासु महात्तमको व्याख्यान। सुख दाता कल्याण निधान।८।

पद्धड़ी छन्द

रमणीक अवन्ती देश नाम । तामे श्रीयुत सुसरीख ग्राम ॥
तहां धीवर इक मृगसेन जान । सो पाप तनी मूरख अयान । ६ ।
इक दिन कांधे धर जाललीन । शिप्रा सरिताको गमन कीन ॥
मछियनके पकड़न हेत जाय । इतने मगमें एक मुनि लखाय ।१०।
तिनको इह भविलखि हर्षपाय । कांधेते जाल दियो बगाय ॥
बहु भक्तिवन्त ह्वै के तुरंत । उनके पदपूजे हर्षवन्त ॥ ११ ॥
कैसे है श्री मुनिराज चंद । जिन नाम जसोधर सु गुण बृंद ॥
सुर असुर चक्रधारी सुआय । तिनके पद पूजे सीस नाय । १२ ।
अरहन्त कथित नैस्याद बाद । तिस जाननको पंडित अगाध ॥
सबजन उद्धारन चित्तठान । अरु कमरकसी मुनि भटनिधान ।१३।
धर्मामृतकर सब जीवराश । पोषे त्रियलोक कियो प्रकाश ॥
निजबचन भरीचितमें प्रभाव । मिथ्यात अन्ध कीनो अभाव ।१४।

दोहा

दिशा रूप अम्बर धरे, रत्न त्रयकर लीन ।
ऐसे श्री मुनिराज लख, धीवर मन सुख कीन ।१५।
कहत भयो कर जोरके, अंग बसू भुवि लाय ।
स्वामी कर्म करीन्द्र को, तुम मृगेन्द्र भयदाय ॥१६॥
कौन बरतकर नर लहे, नेम महा सुखदाय ।
इमि कह मस्तक नम्र करि, बैठो मौन लगाय । १७ ।

चौपाई

तबै जसोधर श्री मुनिराय । मनमें येम बिचार कराय ॥
इह धीवर हिंसक अधिकार । कैसे इन ब्रत चितमें धार ॥१८॥
अथवा बातजोग इहजान । कर्म चरित्र बिचित्र महान ॥
अवधि जानबल ज्ञानतुरंत । तुच्छ आयु याकी लखिसंत ।१९।

दया धुरंधर बोले ऐन । हे धीवर तू सुन मुझ वैन ॥
आजजाल मधि पहिलोजीव । जो आवे सो छोड़सदीव ।२०।
अहो जु महा भाग धीमान । मेरे बच हिरदेमें आन ॥
यही नेम तूले गुणवंत । याहीको पालन कर सन्त ॥ २१ ॥
वहुरि जगतमें जो हितकार । ऐसो मंत्र दियो नवकार ॥
फेर कह्यो तू राखियो याद । सदा सुमरियो तज परमाद ॥२२॥
ऐसे धीवर सुन मुनिवैन । स्वर्ग मोक्ष दाता सुख दैन ॥
अपने मनमें हर्ष सुधार । मुनि बच कीने अंगीकार ॥ २३ ॥
जे जन गुरु बचकरें प्रमान । तिनको सुर शिवहै आसान ॥
धींवर नम करके तिहंवार । शिप्रा नदी गयो तत्कार ॥ २४ ॥
डारो जाल नदी में तवै । दीरघ मत्स आइयो जवै ॥
तव मनमें इमि कियो विचार । मैं पापी धींवर अधकार ॥२५॥
कोई पुन्य उदय मुझ भयो । श्री मुनि बरको दर्शन लयो ॥
वहुरि बरत लीनो सुखखान । याते याके हनूं न प्रान ॥२६॥
व्रत रक्षाके हेत सुजान । पट टूकरो बांधो तिस कान ॥
छोड़ दियो सरिता महं सोय । व्रत पाल्यो चित हर्षित होय ।२७।
जे सत्पुरुष जीव जग मांहि । मरन प्रयन्त तजें व्रत नांहि ॥
विघन रहित पाले नित जेह । सुख सम्पतिको कारन येह ।२८।

दोहा

दूर जाय दुहनी निकट, डारो याने जाल ।
फिर वोही पाठी फंसो, आयो तब तत्काल ॥ २९ ॥
होनहार सुभगत जिसे, ऐसो धीवर सोय ।
छोड़ दियो तिस मच्छको, चितमें हर्षित होय ॥३०॥
सफरी पति तिस जाल में, आयो वरयां पंच ।
तब इस ने गह छोड़यो, भयो उदासन रंच ॥ ३१ ॥

सोरठा

मारतण्ड जिहिं बार छिपत, भयो पश्चिम दिशा।
भूमधि सार असार, सबै अस्त होवै सही ॥ ३२ ॥

चाल अहो जगत गुरुकी

तब ही इह मृगसेन चित्त में एम विचारे।
व्रत रच्छा के काज गुरु के वचन चितारे॥
घरको चलो तुरन्त जाल लीनों तिन खाली।
लख तब घंटा नार बचन बोली दे गाली ॥ ३३ ॥
रे मूरख मति मूढ़ गेह खाली क्यों आयो।
अब क्या खाय पखान कटुक इमि बचन सुनायो॥
करने लगो प्रवेश तबै निज घर तत्कारी।
नारि दियो कपाट रह्यो यह घर के बारी ॥ ३४ ॥
आचारज इमि कहैं जगत में हैं जे नारी।
लाभ विषय अति प्यार नहीं नर करहैं ख्वारी॥
जबही धींवर नमस्कार मुखतें उच्चारत।
बाहर गयो तुन्रत रैन में भूमि निहारत ॥ ३५ ॥
काष्ठखण्ड इक पड़ो सोइ सिर नीचे दीनों।
सोयो सुमिरन मन्त्र तहां अहिने उस लीनों॥
दसौं प्रानते रहित भयो ताही छिन मांही।
प्रातकाल इस नारि देखकर अति पछितानी ॥ ३६ ॥

दोहा

तब इस घण्टा नारने, मुख इम बचन उचार।
परभव में एही पुरुष, हूजो मम भरतार ॥ ३७ ॥
ऐसो कियो निदान तब, सब जन देखत हाल।
अगनि विषय जलती भई, अपने पतिकी नाल ॥ ३८ ॥

चौपाई

इस अन्तर इक नगरी जान। नाम विशाला है द्युतवान ॥
तहां विश्वम्भर नाम नरेश। विश्वगुणा तिस नारी वेश ॥३९॥
तहां गुणपाल सेठ इक रहे। भक्ति जिनेश्वरकी चित गहे।
धन श्रीनाम तासुगृह नार। तनुजा भई सुवन्धा नार ॥४०॥
फिर तिसहीके गर्भ मंझार। पूरव पुन्य उदय अनुसार।
मृगसेन धीवर चर आय। गुण मण्डित तिष्ठो सुखदाय ॥४१॥
इस अन्तर अब नगर नरेश। नष्ट बुद्धिधारी जुविशेष।
नर्म भर्म इसको परधान। नर्भ धर्म ताको सुतजान ॥४२॥
ताके हेत नृपति ने सही। इस गुणपाल वनिकते कही।
तुझ पुत्री जसुवन्धा येह। मन्त्रीके सुतको अब देह ॥ ४३ ॥
कैसी है कन्या द्युतवन्त। सब परयन लखि हर्ष धरन्त।
सेठ विचारी मनके माहिं। यहतो कष्ट भयो अधिकाय ४४॥
नष्ट बुद्धि यह है नरधीस। कन्या मांगे विश्वे बीस।
मन्त्री को सुत दुष्ट अपान। जो याको दूं कन्यादान ॥४५॥
तो अपकीरति जगमें होय। कुल कलंक लागे अब मोय।
अरु दूजो नाहीं इसबार। सरव नाशहै कष्ट अपार॥ ४६ ॥
ऐसे भयकर आकुल थाय। मन विचार इस भांति कराय।
श्रीयदत्त वाणिक इक जान। याको मित्र सुहै अधिकान ४७
तिस घर गर्भवती निज नार। छोड़ चलो पुत्री ले लार।
भाग कुसंभी नगरी गयो। छिपकरके तहां रहतो भयो ॥४८॥
दुर्जन संग सदा दुख मूल। ताके ढिग नहिं रहिये भूल।
निज गृह तज देशान्तर जाय। तो पण शांत सुख अधिकाय४९

दोहा

या अन्तर ऋषिराज दो, आये तिसही ग्राम।
शिवगुप्त सुनिगुप्त शुभ, हैं तिनके इह नाम ॥५०॥

चारित्र करी मण्डित प्रभू, सहत बहुत उपबास ।
श्रीयदत्त वाणिक गृहे, आये गुणकी रास ॥५१॥

अडिल्ल

सो कल्याण निमित्त चाव चित धारके ।
पगगाहें जुग साधु सबै भ्रम टारके ॥
सम्पतिको भंडार दुःखटारन यही ।
जगत मांहिं अति सार अन्न दीनों सही ॥ ५२॥
ताकरि पुन्य उपायो वाने अति घनो ।
तिस पीछे इक कारन भयो सोही सुनो ॥
धन श्रीगर्भवती लखि लघु मुनिराज जी ।
सब कुटुम्ब ते रहित महा दुखदायजी ॥ ५३ ॥

सवैया इकतीसा

परघर रहने थकी भयोहै जो दुख अपार आभूषण आदिक रहित उदासीन है। जैसे खोटेकवि केरी काज दुखदाई होत, तैसे गर्भ पीड़ित सो आपदाकीदासी है॥ जैसे इसे देखकर लघुमुनि तिसवार बड़े मुनि रायसेती पूछो सुखरासी है। खो महाराज याने किये कौन पाप घोर कौन जीव याके गर्भ आयो सुखनासी है ॥५४॥

दोहा

ऐसे बच सुन शिव धनी, ज्ञान नेत्र धारन्त ।
श्रीजिनेंद्र कहतेभये, सप्त तत्व सुखवन्त ।५५॥
तिन जानन को अति निपुण, ऐसे मुनि शिव गुप्त ।
कहत भये मुनि गुप्त तें, ज्ञान तलीने उक्त ॥५६॥

सवैया

वृथा बच ऐसे मत कहो अब साधु तुम यह केते दिनमांहि बसु सुख पावेगी । पुन्यके उदयतें राजमान बलवान अति ऐसो सुत जनसब दुःखको भगावेगी । धरमको धोरी बाल विश्वम्भर

नरपाल तासुकी सुताजो इह नारी कहलावेगी ॥ ऐसे कहे वैन साध सुन धनश्रीय तव मनमाहिं जानी अव विपति नसावेगी ॥ ५७ ॥

दोहा

यही वचन श्रीदत्त सुन, मनमें बहु दुख पाय ।
दुष्ट वुद्धि पापिष्ट अति, निज ग्रह तिष्टो जाय ॥५८॥

सोरठा

होनहार जो वाल, तासु सहन को दुःख यह ।
वगुलेवत तत्काल, कारन नित हेरा करे ॥५९॥

पद्धड़ी छंद

दुरजन जन विन कारन अयान। सज्जन जनतें वहुवैर ठान ।
अव एही धनश्री सेठ नार। सुत जयो पुन्यको पुंज सार ।६०।
परसूत दुःख ते है अचेत। मूर्छा आई नहिं रही चेत ।
तव यह पापी श्रीदत्त थाय। ऐसे वच प्रकटाकिये सुनाय ६१॥
मूवो धनश्रीके मृतक वाल। ऐसे कह वुलवायो चन्डाल ।
खोटी वुध धारक चित मलीन। मारनको वालक सौंप दीन ६२
जे वैरीजे जगमें विख्यात। तेभी शिशुकी नहिं करत घात ॥
हा कष्ट वड़ा जगमें दिखात। दुरजन अहिवत् क्या नहिंकरात ६३
जे मात गले शिशु रूपवन्त। मारन थानक पहुंचो तुरन्त ॥
इम दीस देखकर है दयाल। जीवतही तज आयो सुवाल ॥६४॥

दोहा

इस अन्तर श्रीदत्तको, भगनी पति तहां आय ।
ग्वाल थकी वृतान्त सुनि, तिस वालक ढिग जाय ।६५।
देख्यो वालक रूपवर, मानों दुती मयंक ।
गोपुत्र ताडिये खडे, शिला मोय पर जंक ॥ ६६ ।

भानु समान जु बाल लखि, लीनों गोद उठाय ।
पुत्र रहित थो इन्द्रदत्त, भयो सुखी अधिकाय ॥६७॥

चौपाई

अपने पुत्र समान निहार । निज नारी ते वचन उचार ॥
हे राधे तू सुन चित लाय । गूढ़ गरभथो तुम सुखदाय ॥६८॥
सो इह पुत्र भयो वड़भाग । ले पालो तुमकर अनुराग ॥
ऐसे कह नारी कर दियो । सुत उत्साह नगरमें कियो ॥ ६९॥
पूरव पुन्य उदय तिस थाय । तहां बैरीकी कौन बसाय ॥
आपद सम्पत होय रसाल । दुख होवे सुख में तत्काल ॥७०॥
इस अन्तर श्रीदत्त अयान । बालकको वृतान्त सुजान ।
इन्द्रदत्त के घर तव आय । कपट रूप हित बहुत जनाय ।७१।
अपनी भगिनी ते इह बात । कहत भयो इह हर्षित गात ।
भाग्यवानहै यह तव बाल । मम गृह इस युत चल तत्काल ७२
वहांही वृद्धि होयगी सही । कपट रूप इम बातें कही ॥
तबही लेय गयो निज धाम । बहन युक्त तासुत अभिराम ।७३।
जेजन दुष्ट चित्त अघमोर । मनमें और वचन कछु और ॥
कायाते कछु औरहि करे । ठगने में चतुराई धरे ॥७४॥
ऐसे इह श्रीदत्त मलीन । शिशु मारनकी इच्छा कीन ॥
पहिले तब चण्डाल बुलाय । कहत भयो याको ले जाय ॥७५॥
शीघ्र हतो तुम याके प्रान । निर्दय मन इम वचन बखान ॥
सो मातंग लेयकर गयो । रूप देख करुणा में भयो ॥ ७६ ॥

दोहा

एक गुफा ढिग जायकर, उत्तम वृक्ष निहार ।
सरिता वहै सुहावनी, तातट बालक डार ॥ ७७ ॥
दयावान मातंग है, हने न बालक प्रान ।
निज घर आये डारकर, बाल रहो तिह थान ॥७८॥

पद्धड़ी

गुणपाल पुत्र अति पुन्यवान। तहां एक गोप आयो सुजान।
अभिराम नाम ताको निहार। ताने अचरज देख्यो अपार ॥७६॥
गौवनके थनते दुग्ध धार। स्वयमेव करै आनन्द कार ॥
जिमि धाय हस्तमें बालहोत। तिस थनते क्षीरझरो बहोत ॥८०॥
सो इह गोपाल निहार येम। फिर शिशु मुख देख्यो कंजजेम।
सो संध्याको निज धाम आय। गोविन्द गोपको सब सुनाय ८१
सो सुनकरके आश्चर्यवान। इह गोपवती चित हर्ष ठान।
तिसठाम जाय सुत सम निहार। लाकर सौंप्यो तियकर मझार ८२
पालो सुमुनिन्दा हर्ष लीन। धन कीर्ति नाम प्रकटो प्रवीन ॥
वहु प्रीति सहित तिस तात मात। हितधारे वृद्धि करैं सुगात ।८३

सवैया

कैसा इह बाल रूप गोपनैन कंज सम ताहि विकसावन को अमृत समान है। सर्व देह लच्छण पूरण विराज मान अद्भुत प्रीति उपजावै गुणवान है। रूप काम के समान प्रभा जु मयंक मान तेज उदय भानवत जन सुख दान है। ऐसो दुतिवन्त बाल धर्म जाके सदा नाल वृद्धि होत गोप गेह पुन्य को निधान है ॥ ८४ ॥

दोहा

एकै दिन श्रीदत्त अब, दुष्ट चित्त अधिकाय।
घिरत हेत घर गोप के, आयो चित उमगाय ॥८५॥
इस बालक को देखकर, सब वृतान्त इह जान।
कहत भयो गोविन्दतैं, सुनियो ग्वाल सुजान ॥८६॥

चौपाई

मेरे घरमें है कछु काज। इस बालक कूं भेजूं आज ॥

कागज लिखकर देहुं तुरन्त । आज्ञादेवो अबै महन्त ॥८७॥
सिद्धातम गोबिन्द गुवाल । कहतेही भेज्यो तत्काल ॥
जे जन दुष्ट चित्त अधिकाय। तिनको भेद न जान्यो जाय ॥८८॥
तब पापी कागज करलीन । ऐसे अच्चर लिखे मलीन ॥
इह बालक बलवन्त अपार। हम कुल तरुको है चयकार ॥८६॥
प्रजलतकाल अगन सम जान। धन कीरति उज्जल गुणखान ॥
याहि पकड़ियो ममबच मान।मूसलते हनियो इहप्रान ॥६०॥
ब्रह्मनाम सुतको इहबात । लिखकर दीनो बालक हात ॥
कंठ बांधकर चलो तुरंत । इह बालक अतिही बलवन्त ।६१।
चलत चलत पहुंचो गुणरास। उज्जैनी नगरीके पास ॥
मारग खेद निवारन हेत । आमृ तले सोयो सु अचेत॥ ६२ ॥
या अन्तर इक कारन भयो । गणका बाग चलत वितठयो ॥
सब परिवार संगले बाम । जूंटे पुष्प बढ़ाये दाम ॥ ६३ ॥
अति चतुराई धाई सोय । नाम मदन सेन्या तिस जोय ॥
तरु सहकार तलै सोवन्त । बालक लखो महा दुतिवन्त।६४।
पूरव जन्म कियो उपकार । ताकर उपजो मोह अपार ॥
फेर लखो ताकंठ मझार । कागज लेख सहित तियबार।६५।
जतन थकी खोलो तत्काल । बांच लेख जानो सब हाल ॥
जानो सेठ महा दुटभाव । तब इन कीनो और उपाव ॥ ६६ ॥

दोहा

ताके अच्चर मेटियो कर चतुराई सार ।
चखुते सारंग सुत लियो, लता कलमकर धार ॥ ६७ ॥
ता मांहीं अच्चर लिखे, इह विधि भ्रांति निवार ।
ताको बरनन अब सुनो, पुन्य महा हितकार ॥ ६८ ॥

चौपाई।

सेठ औरते लिखियो येम । सुन मेरी नारी जुत येम ॥
जो प्यारो मोहे जाने नार । तो यह कीजो काम अवार ॥९९॥
इह बालक धन कीरत नाम । रूपवान अरु अति बलधाम ॥
मुझ आये पहिलेही जान । कन्या श्री यमती गुणवान ।१००।
दान मानकर दीजो व्याह । याकी साथ सहित उत्साह ॥
ऐसा लिखकर गणिका तबै । याके कंठ बांधियो जबै ॥ १ ॥
तिस अंतर धन कीरत जाग । सेठ धाम पहुंचो बड़भाग ॥
सेठ भाम अरु सुतको जोय । कागज तिनकर दीनो सोय ।२।
तातें बाचतही परमान । याको दीनो कन्या दान ॥
जे हैं पुन्यवान अधिकार । तिनको सुख है कष्ट मझार ॥३॥

दोहा

अब धन कीरति की सबै, बात सुनी श्री दत्त ।
ताही दिन घरको चलो, अति व्याकुल ह्वै चित्त ॥ ४ ॥
एक पुरुष चण्डी भवन, दीनों इन बैठाय ।
जो आवे निसि पूजने, तू हनियो तिस काय ॥ ५ ॥

चौपाई

इमि कहकर निज आयोधाम । तनुजा पतिते कह्यो ललाम ॥
यह हमरे कुलकी है रीत । रात्रि समय चंडी गृह मीत ॥६॥
उड़द बाल लेके कर जाय । कीर काकको देय खुवाय ॥
इमि कह रक्त वस्त्रमें धार । देकर कहि जावो इहवार ॥ ७ ॥
उत्सव सुन धन कीरत बाल । कहत भयो जाऊं तत्काल ॥
सुसरे करते लेपट लाल । आरज चित्त चलो दर हाल ॥ ८ ॥
नगर बाह्य अंधियारी रात । नाम महाबल नारी भ्रात ॥
पेखि इसे बोलो सुन बैन । कहां आज हो तुम इस रैन ॥९॥

तब इह कहत भयो इम बात। आज्ञा दई तुम्हारे तात ॥
कात्यायनी सुरी विकराल। ताको भेंट देहु इह हाल ॥ १० ॥
सो मैं जाऊं तिसके धाम। और नहीं मेरो कछु काम ॥
तब याको सालो हरषाय। कहत भयो तू निज घर जाय ॥११॥
मैं जाऊंगो चंडी थान। तब धन कीरत बचयो जान ॥
तुमरो तात करेगो रोष। तुम मति जावो हे गुण कोष ॥१२॥

दोहा।

तो पणभी जातो भयो, चंडी के स्थान।
धन कीरति निरबिघ्न तब, आयो घर बुधवान ॥ १३ ॥
गयो वेग चंडी भवन, नाम महा बल जोय।
तब उस नर ने शीघ्र ही, मारो अति से सोय ॥ १४ ॥

छप्पय

जिस के पूरब पुन्य उदै होवे अधिकाई।
काल रूप विकराल अगन जल सम हो जाई ॥
बारिध हो थल रूप शत्रु हो मित्र समाना।
हालाहल जो जहर होत सो सुधा समाना ॥
अरु होवे आपद सम्पदा, विघन उलट सुख विस्तरे।
तातें सुर शिव बीज यह, पुन्य करो गुर उच्चरे ॥ १५ ॥
कैसो है यह पुन्य दुख नाशक पहिचानो।
बरनो श्री जिन चन्द्र तहां इम भेद बखानो ॥
अर्चा भगवत तनी दान पात्र को दीजे।
ब्रत जु शील उपवास आद बहु विध सों कीजे ॥
सो या प्रकार इस धर्म को, भव्य जीव हिरदे धरो।
अनुकम्पा सब जन नये, कर के अघतम को हरो ॥१६॥

पायता

।अन्तर अब सुन भाई। पापी श्रीदत अन्याई ॥
अपुत्र दुःख में भीनों। अपनो चित व्याकुल कीनों ॥१७॥
ान्त विशाखा नारी। तासों इम बात उचारी ॥
प्यारी अब सुन मेरी। मोह सुतकी पीड़ घनेरी ॥ १८ ॥
धन कीरति जो थाई। मम कुल नाशक दुखदाई ॥
क्योंकर मारो जावे। जब मो चित साता पावे ॥ १६ ॥
रे घरमें तिष्टन्तो। यह वैरी अति बलवन्तो ॥
बोली वह सेठानी। अब नाथ सुनों मुझ वानी ॥ २० ॥
म वृद्ध भये अधिकाई। यातें सब बुद्धि नसाई ॥
करूं वेग उपकारी। ऐसे इन गिरा उचारी ॥ २१ ॥

दोहा

ऐसे कह निज नाथ को, धीरज बहुत बंधाय ॥
मोदक जहर तने किये, औरे दिन दो भाय ॥ २२ ॥
पाप विषय पंडित महा, नार विशाखा येह ।
पुत्री से कहती भई, तू सुनले गुणगेह ॥ २३ ॥
सुता समाने स्वेत बहु, मोदक अति सुखदाय ॥
अपने पतिको दीजिये, ऐसो वैन कहाय ॥ २४ ॥
स्याम वरन लाडू जुए, तू दीजो निज तात ।
इम कह सरिता मह गई, मंजनको हरखात ॥ २५ ॥

पद्धड़ी।

पीछे श्रीमति कीनों विचार। जगमें जानो जो वस्तु सार ॥
जो पिता जोग देनी तुरन्त। यह बात कहें सबही महन्त ।२६।
माताके चितकी नाहिं जान। निज पिता भक्ति हिरदे सुठान ॥
लाडू सुविपर्जय तब खुलाय। श्रीदत्त मुयो बहु दुःखपाय ॥२७॥

जगमाहिं कुकर्मी जीव जोय। तिनके कल्याण न होत कोय॥
फिर भाम विशाखा आनि तेह। भरतार विना लखि शून्यगेह २८
तहँ शोक किये तिन बार बार। अरु रुदन सहित कीनों पुकार॥
फिर पुत्रीने इम वच वखान। खोटी चेष्टा तुम्झतात ठान॥२९॥
सो अपनो बंश कियो बिनाश। अब सुखसों तिष्ठो तुम अवाश॥
ऐसे इन्द्रानी जुत नरिन्द्र। तैसे तुम सुख भुगतो करिंद्र।३०।

दोहा

यूं असीस बहु देय के, वोभी मोदक खाय।
जयपुर को जाती भई, जैसी मति गति पाय॥३१॥

सोरठा

दुष्ट मती जो थाय, परको विघन करे घने।
ते भी दुख को पाय, खोटी गतिको जात हैं॥३२॥

अडिल्ल

अब धन कीरति सुखसों तिष्ठत है सही।
पंच आपदा पुन्य थकी सो तिन जई॥
एक दिना विश्वम्भर नामानर पती।
याको रूप निहारो जैसे रति पती॥३३॥
अपने मन में बहु आश्चर्य जु आन के।
निज पुत्री दीनों इसू को हित ठान के॥
नाना बिधि के रतन बस्त्र ले सार जी।
दियो दात जो बहुत महाहित धार जी॥३४॥

दोहा।

दई सेठ पदवी तबै, भई सु जैजै कार।
जैन धरम परसादतें, होवे शिव पदसार॥३५॥

चौपाई

पुत्र प्रताप सुनों गुणमाल । ताढिग कोसांवी गुणमाल ॥
आयो उज्जैनी द्युतिवन्त । धन कीरति सों मिलो तुरन्त ॥ ३६॥
पिता पुत्र तिष्टे सुखपाय । सम्पति भोगैं पुन्य वसाय ॥
पांचों इन्द्रीके सुख जेह । भोगत नाना विधि के तेह ॥ ३७ ॥
सुखकी याकर धर्म रसाल । सावधान पाले अघटाल ॥
श्री जिन चरन कमल सेवन्त । वहु विधि भक्ति हिये धारन्त ।३८।
ज्ञान मई सम्पत कर लीन । पात्र दान देवें परवीन ॥
पर उपकारी इह वड़भाग । भव्य जीवसों अति अनुराग ॥ ३९॥
वहुत कहनते कौन विचार । सव इह पुन्य तनों फलसार ॥
जग जन चित्त करत आनन्द । भोगे वहुत काल सुख वृन्द।४०।
इस अन्तर अव इक दिन जान । गुण उज्जल गुण पाल महान ॥
मुनि वन्दनको कियो विचार । पुत्र मित्र संगले परिवार ।४१।

चौपाई

नाम अनंग सेना सहित, वेश्याभी संग लेय ।
वनमें पहुंचे जायके, चितमें हर्ष धरेय ॥ ४२ ॥

सोरठा

तीन जगत हितकार, नाम जसोधर मुनि भले ।
वन्दे भक्ति सुधार, फेर प्रश्न कियो सेठ ने ॥ ४३ ॥

गीता छन्द

हे नाथ यह धन कीर्ति मो सुत कौन पूरव पुन कियो ।
जाते सु वालक वय विपय इन सवे आपद जे लियो ॥
धनवान कीरतवान दाता कला द्युति गुणवान है ।
चित दया धारे भोगता अरु महा शर्म निधान है ॥ ४४ ॥
सो आप हे भगवान अवही कहन लायक हो सही ।

मेरे जु इच्छा सुनो केरी एम कह कर चुप गही ॥
तब चार ज्ञान धरे मुनीश्वर दया बारिध इम कही ।
हे वणिकपति सुन चित्त देकर सब चरित्र कहूं सही ॥ ४५ ॥

चौपाई

देश अवंती है अभिराम । तामें एक सिरीष सुग्राम ॥
ताबासी धींवर मृग सैन । सुने जसोधर मुनिके बैन ॥ ४६ ॥
लियो तहां इकव्रत बड़भाग । ताको पालो जुत अनुराग ॥
तिसही पुन्य तने परभाय । यह धन कीरति उपजो आय ।४७।
इसकी जो थी घंटा नार । सो निदान करके तन छार ॥
श्रीमती उपजी इह आय । याकी भाम भई सुख दाय ॥ ४८ ॥
अरु वो मच्छ तनो चर जान । भई अनंग सेना इह आन ॥
पर उपकार करनमें लीन । इह गणिका अतिही परवीन ।४९।
अहो सेठ सुन चित्तलगाय । वरत अहिंसा फल इहथाय ॥
जे जन जैनधर्म चितधरें । तिनके सबही वांछित सरें ॥५०॥
ऐसे सुनकर वचन रसाल । सुरशिव दायक सुन गुणपाल ॥
श्री जिनवरको धर्म महान । हिरदयमें धारो अधिकान । ५१ ।

दोहा

धन कीरति अरु श्री मती, तीजी वेश्या थाय ।
निज भव सुन ताही समय, जाती सुमरन पाय ॥ ५२ ॥
मन वच काय लगाय के, चित में राग सुधार ।
जानो फल इह करमको, फिर इम कियो विचार । ५३ ।

चाल मेघ कुमार की

अब धन कीरति सेठने जी, श्री मुनि को सिरनाय । भगवत दीक्षा तब लई जी, केश लौंच कराय ॥ सयाने धर्म बड़ो संसार ॥ ५४ ॥

निरमल तप बहु विधि किये जी तीनों काल मझार। भव्य जीव बोधे घने जी यश फैलो अधिकार ॥ सयाने धर्म बड़ो संसार ॥

श्रीमति जिनवर चंद्रने जी भाषा धर्म अबाध। ताकी परभावन करीजी, रत्नत्रय आराध ॥ सयाने धर्म बड़ो संसार ५६

अन्त सलेखन विध धरीजी प्रायोगमन सुठान। सरवारथ सिद्धी गये जी तजके तबही प्रान ॥ सयाने धर्म बड़ो संसार।

पहिले भव इक मच्छको जी छोड़ो पंच सुवार। ता फल कर सुख पाइयो जी आपद पंच निवार ॥ सयाने, धर्म बड़ो संसार

दोहा

ताके पीछे श्री मती, अरगण का हित धार।
यथा योग्य सिच्चा लई, सब तें मोह निवार ॥ ६० ॥
अपने अपने भाव तें, पायो स्वर्ग सुथान।
जैन धर्म परसाद तें, होवे सब कल्यान ॥ ६१ ॥

काव्य

ऐसे श्री जिन सूत्र विषय भाषी हितकारी।
कथा अहिंसा वरततनी भवि जनको प्यारी ॥
सो वरनी संचेप पथ की मै ने सुखदाई।
करि है सब कल्याण भव्य गण हिरदे भाई ॥ ६२ ॥
कथा धर्म अनुराग धार तुच्छ बुध से वरनी।
नाना विधि के हर्ष सुःख उपजावन धरनी ॥
विघन समूह अपार तास नासन को वन्ही।
हिंसा त्यागो वेग भव्य जे हैं शुभ मन्ही ॥ ६३ ॥

छप्पय

तिलक भूत शोभायमान श्री मूल संघवर।
कुन्द कुन्द भए तास भए मल्ल भूषण गुरु ॥

ज्ञानावुध निसपन्ह सिंहनंदी मुनि जानो ।
भवि जनको संसार सिन्धु तारन हिय आनो ॥
ऐसे श्री आचार्य गुरु, नमस्कार तिनको करूं ।
नंदो बिरदो चिरकाल लों, चरनाम्बुज में हिय धरूं।६४।

काव्य

कथा कोष इह ग्रन्थ देव वानी में जो है ।
ताही के अनुसार कियो भाषा में सो है ॥
बन्द प्रबन्ध मंझार भव्य सुनिये हितकारी ।
बखतावर अरु रतन कहो तुछ बुध अनुसारी ॥ ६५ ॥

इती श्री आराधनासार कथा कोष विषय अहिंसा धर्म मृग सैन धीवर ने पालो ताकी कथा समाप्तम् ।

अथ राजा वसुने असत्य बचन को सत्य कहा ताकी कथा प्रारम्भः नं० २६

। मंगलाचरण ॥ काव्य ।

सुर असुरन कर पूजनीक तिन चरन भले हैं ।
ऐसे श्री अरिहन्त सकल जिन करम दले हैं ।
जग जन के हित कार तिनों को सीस नमाऊं ।
असत बचन नृप बसु कह्यो तिस कथा सुनाऊं ॥ १ ॥

दोहा

पुरी स्वस्तिकावती मैं, विश्वा वसु भूपाल ।
श्रीय मती रानी भली, पुत्र बसू अरिसाल ॥ २ ॥

सवैया इकतीसा

ताहीं नगरी मझार उपाध्याय एक सार, नाम खीर कन्द वसु महा बुधवान है । उज्जल स्वभाव धरे विप्रवर माहिं सिरे जिन पद सेवन में अलि की समान है । जैन धर्म कृया में रहे

सावधान नित, भव्य जन सीखन को देत विद्या दान है।
ताके स्वस्ति मती नार शील की धरन हार, पति सेव करन में
सदा सावधान है ॥ ३ ॥

चौपाई

तिन दोनों के कर्म वसाय। पापी पुत्र भयो दुख दाय।
परवत नाम तासु को जान। खोटे कर्म विषय राति ठान॥ ४ ॥
एक विदेशी विप्र महन्त। नारद नाम महा गुण वन्त।
मद वर्जित जिन पदको भक्त। विद्या पढ़न विषय अनुरक्त ॥ ५ ॥
सोभी आयो तिस ही थान। खीर कन्द के ढिग बुधवान।
अरुवसु नृपको सुत तहँ आय। पढ़ै सु विद्या चित्त लगाय ॥ ६ ॥
खीर कन्द सुत परवत जेह। और वसू दूजो गिन लेह।
तीजो नारद विप्र उदार। ये त्रिय शास्त्र पढ़ें हित धार ॥ ७ ॥
वसु नारद पढ़ भये प्रवीन। भूमृत ने नाहिं विद्या लीन।
इकदिन स्वस्ति मती दुखपाय। निज पतितेंइमि गिरासुनाय ॥८॥
तुमने अपने सुतको सही। विद्या दान नरंचक दई।
खीर कन्द बोलो सुन नार। तेरो सुत मूरख अधिकार ॥ ९ ॥
पापातम कछु नाहिं भनन्त। हे प्यारी कीजे किह मन्त।
इस विसवास उपावन काज। कीनों पाठक एक इलाज॥ १० ॥
तीनों शिष्य बुलवाये पास। ऐसे बात कही गुण रास।
कौडी ले वानक पथ जाय। तीनों पेट भरो सुखपाय ॥ ११ ॥
फिर वराट काले गुण रास। जल्दी आयो मेरे पास।
इमि सुन तीनों चले उमाहिं। वानक पथमें न्यारे जाहिं॥ १२ ॥

दोहा

जा वानककी हाट पर, पापी परवत जोय।
कौड़ी के लेकर चने, खाकर हर्षित होय ॥ १३ ॥

खीली आयो धाम में, जबही गुरुके पास।
बिना पुन्य नहिं पाइये, जगमे बुद्धि बिलास ॥ १४ ॥
बसु नारद दोनों जने, लीने चने जु मोल।
बिर्थी और बाजार में, बेचत भये सु डोल ॥ १५ ॥
तामें नफ़ा उठायके, भोजन कर ले दाम।
गुरुपे आयो वेगही, वे दोनो गुण धाम ॥ १६ ॥

चौपाई

फिर पिट्ठी के अजा बनाय। तीनों कर दीने समझाय।
जहँ कोई देखे नहिं आन। तहँ तुम छेदो इनके कान ॥ १७ ॥
ऐसे गुरु कह भेजे तबै। आज्ञा पाय चले ये जबै।
परबत देख सुन्य अस्थान। छेदे अजा तनें जो कान ॥ १८ ॥
अरु वे दोनों बनमें जाय। करत बिचार फिरे अधिकाय।
अहो चन्द्र सूरज ग्रह देव। व्यन्तर पशु पंच्छी बहु भेव ॥ १९ ॥
मुनिज्ञानी देखत हैं सदा। हमतो कान न छेदें कदा ॥
इमि विचारकर गुरु पे आय। नमन कियो बहु सीस नवाय।२०।
अपनी अपनी बुद्धि समान। गुरु ढिग तीनों कियो बखान॥
पाठक इह लिखके विरतन्त। दोनों शिष जाने बुधिवन्त॥

दोहा

नारी ते सबही चरित, बिप्र कहो तिह काल।
हे प्यारी तू देखले, अपने सुत की चाल॥
एक दिना बसु राज सुत, कीनो कछुक बिगार।
तब गुरु मारन कारने, करमें लकड़ी धार॥

पायता।

तब स्वस्तमती गुरु नारी। छुड़वाय दियो तिहबारी॥
जब बसू चित्त हरषायो। कछु मांगो येव सुनायो॥ २४ ॥

कह स्वस्तमती सुन लीजे । वर मांगों जब मोहि दीजे ।
वसु कहो सु यही करूंहूं । तेरो वच हिरदे धरूं हूं । २५ ।
इस अन्तर इक दिन जानो । अध्यापक इह बुधिवानो ।
उठके कानन को धाये । तीनो शिष अङ्ग सु आये ॥ २६ ॥
तहँ निर्मल भूमि निहारी । चारों तिष्ठे हितधारी ॥
वृहदारण शास्त्र वखाने । क्रीड़ा बहु विधि चित्त ठाने ॥२७॥

दोहा

तिसही अस्थानक विषय, जुग चारन मुनि चन्द ।
तिष्ठ थे स्वाध्याय कर, तीन लोक सुख कन्द ॥ २८ ॥

पद्धड़ी छन्द

इन चारों को भणते निहार । बहु विनय सहित लघु मुनि उचार॥
हो स्वामी इह चारों पुमान । देखो किमि वेद करें वखान ॥ २९ ॥
बोले तब दीरघ मुनि दयाल । बहु ज्ञान नेत्र धारें विशाल ॥
इन वेद जीवके माहिं जान । दो उरधगतीके पात्र मान ॥३०॥
तब खीर कन्द बुधवान सार । मुनिवच सुन हिरदे माहिंधार ॥
तीनों शिष विदाकिये तुरंत । मुनिराज पास पहुंचो महंत ।३१।
बहु नमन ठानकर प्रश्नकीन । को स्वर्ग नर्क जावे प्रवीन ॥
तब काम जई मुनिराज एम । याने भाषो धरके सुप्रेम ॥

सोरठा

सुन विप्र नकुलचन्द, इक आपाको जान ले ।
दुति नारद गुण वृन्द, ऊंची गति पावे सही ॥ ३३ ॥
वसु परवत दुखकार, तेरें शिष्य अपान हैं ।
सो निश्चय उरधार, नर्क जाय बहु दुख सहें ॥ ३४ ॥

चौपाई

इमि वच सुन यह विप्र महान । गुरुके वचननमें हिट ठान ॥
पुत्र दुःखतें व्याकुल चित्त । दै विचार तिन क्रियो पवित्र ।३५।

काल अनंत जाय तहंकीक। तौ भी मुनिवच नहीं अलीक॥
इमि चितवन करके तब येह। बुध आकर आयो निज गेह।३६।
इस अंतर बिश्वावसु राय। मन बैराग विषय तिनलाय॥
अपने बसु सुतको दे राज। आपगये बनमें तप काज॥३७॥
अब इह वसु नृपराज करंत। पाले परजा हर्ष धरंत॥
एकै दिन क्रीडाके हेत। बनमें पहुंचो हरष समेत॥ ३८ ॥
तहं नभते पक्षीगण आय। भूमें पड़ते देखे राय॥
तब आश्चर्यवान है भूप। इहां कोइ कारन है जो अनूप।३९।
इमि बिचार सामायक लेह। हेत परीक्षा छोड़ो तेह॥
सो वह बान पड़ो भू आय। तब नरेश उस थानक जाय।४०।
सब वृतान्त लखिके बुधवंत। देख्यो थम्भ एक दुतिवंत॥
स्वेत वरन नभमें सोहंत। पक्षी भ्रमजे नाहि लखंत॥ ४१ ॥
लगकर गिरे सु भूमि मझार। यह अचरज देखो तिहबार॥
तब बसु गूढ़ खंभको लाय। ताके पाये चार बनाय॥ ४२ ॥
ता ऊपर सिंहासन थाय। सभा विषय बैठे सो आय॥
मायाधरके एक कहाय। मैं सतबादी हूं अधिकाय॥ ४३ ॥
सत्य तनें जानो परसाद। मुझ बिष्टर है अधर अबाध॥
इस ठग विद्या बहु परकाश। जन जाने तिष्ठो आकाश।४४।
जे मायाचारी ठग मूढ़। कोको कारज करे न गूढ़॥
सच्ही करें दया चित्त नांहि। सोतो निंद नीच गति जांहि।४५।
अब वह खीर कंद बड़भाग। सम दृष्टी जिन मतसे राग॥
तज संसार तनें जु उपाध। गुण उज्जल हूवो तब साध।४६।
स्वर्ग मोक्ष दाता तपसार। जिन बांछितकर बारम्बार॥
अंत सन्यास मरनको ठान। पायो भयो सुस्वर्ग विमान।४७।

दोहा

या अन्तर इनको तनुज, पापी परवत सोय ॥
पिता पट्ट बैठन भयो, चित अजीविका जोय ॥ ४८ ॥

काव्य

अब नारद प्रभु चरन कमलको भ्रमरस मानो ।
बुद्धिवान जसवान कियो परदेश पयानो ॥
बहुत दिनन के बीच सर्व शास्त्रनको ज्ञाता ।
आयो पर्वत पास जान गुरु सुत सुख दाता ॥ ४९ ॥

चौपाई

इक दिन परवत वेद भनंत । तामें शब्द सुगम कहंत ॥
अजैर्यष्टव्यं उचार । ताको अर्थ कयो दुखकार ॥ ५० ॥
अजा नाम बकरेको जान । ताकर यज्ञ कह्यो इस थान ॥
पापातम ऐसे वरनयो । तब नारदने वच इमि चयो ॥ ५१ ॥
हे भ्राता सुन चित्त लगाय । याको अर्थ जु इह विध थाय ॥
तीन वर्षके उपजे धान । ताको होम कथो भगवान ॥ ५२ ॥
उपाध्यायने हमको कही । याको अर्थसु इस विध सही ॥
अहो मूढ़ तू चित्त विचार । तू ने क्या नहिं पढो लचार ।५३।
फिरभी पापी भू मृत कही । यज्ञ अजाको वारनो सही ॥
जाकी गति खोटी दुखदाय । सांच बातको झूठ कहाय ॥ ५४ ॥
बहुत विवाद भयो इन माहि । निज पच टेव तजै कोई नाहि ॥
तब परतिज्ञा इह विध कीन । जो कोइ झूठो होय मलीन ॥५५॥
तिस रसना छेदे वसुराय । ऐसे कह तिष्ठे घर जाय ॥
स्वस्तिमती परवतकी माय । अपने सुततें इमि बतलाय ॥५६॥
पाप रूप कीनों व्याख्यान । खोटी मतिते चितमें ठान ॥
तेरो तात महा शुभ चित्त । जैन धर्म सेवे थो नित्त ॥ ५७ ॥

उसने धान तनों यज्ञ कहो । ते भाषो सो कभियन चयो ॥
पुन्यरूप ताकी थी बुद्ध । ताको सुत तू भयो कुबुद्ध ॥ ५८ ॥

दोहा

फिर निज सुतको मोहधर, गई वसू नृप पास ।
कहत भई मुझबर अबै, दीजे हो गुणरास ॥५९॥
कहो वसूले शीघ्रही, जो तुम्हरे चित चाय ।
स्वास्तिमती कहती भई, सुन अब तू नरराय ॥ ६० ॥
मेरो सुत जिह विध कहे, सो कीजो परमान ।
तब बसुने आरे करी, गई सु अपने थान ॥६१॥
आप पाप जे करत हैं, औरन पास करात ।
जैसे अहि परतन डसे, जहर रूप हो जात ॥६२॥

छप्पय

प्रातकालके विषय गये दोऊ वाद चित्त धर ।
पापातम बसुराय थयो सिंहासन ऊपर ॥ ६३ ॥
तासों नारद कही सुनों राजा चित लाई ।
अजा शब्दको अर्थ कहो जिमि गुरु बतलाई ॥६४॥
इह पापी जानत तऊ, असत रूप कहतो भयो ।
परबतके बच सत्यहैं, यही विधी गुरुने चयो ॥६५॥

कड़खा छन्द

झूठ परचण्डते टूट पायो गये फटी अवनी भयो शोर भारी ।
कण्ठ पर्यन्त नृप गडो भूमि मधि तवै जबै नारद गिरा इमि उचारी॥
अहो अबभी सुनो आप बसुरायजी भनो गुरु पाससो कहो सारी।
बृथा गाति नीचको जावो मत आपही बोल बच झूठबहु पापकारी ६६
इमि कहो विप्रने सभा सबही सुन पापके उदय बसु फेर भाखी ।
कहे परबत सोई सांच जानो वही अपने बचनकी टेक राखी ॥

गई ताही समय आप अवनी विषय सबैजन देखकर भये साखी
नरक सतम गयो दुख बहु विध सहो दुष्टको चित्त जिमिहोत माखी ॥

दोहा

पापी जनजे जगत में, दुष्ट चित्त अधिकाय ।
झूंठ बोल इहँ दुख सहें, मरके दुरगति जाय ॥ ६८ ॥

सोरठा

प्राण जाय तरकार, तौ असत्य नहिं भाषियो ।
सत्य जगत में सार, भव्य जीव भाखो सदा ॥ ६९ ॥

पायता

तब पुरजन मिल अधिकाई । पर्वतखर दियो चढ़ाई ।
याको अति दुष्ट निहारो । फिर दीनो देश निकारो ॥७०॥
फिर सज्जन मिल हितकारी । नारदकी भक्ति सुधारी ।
याको पूजो अधिकाई । मुखते अस्तुति बहु गाई ॥ ७१ ॥

दोहा

वह नारद अतिही चतुर, जैन धर्म परवीन ।
शकल शास्त्र जाने सुधी, जग यश तिन बहु लीन ॥७२॥

चौपाई

गिरतट नगरी तनों नरेश । होत भयो यह जेम दिनेश ।
बहुत काल भोगे सुख सार । पूजा दान वरत चित धार ॥७३॥
फिर वैराग्य भावना भाय । जिन दीक्षा लीनी वन जाय ॥
करके तप भयन सम्बोध । रत्न त्रय पाले सुध बोध ॥ ७४ ॥
भगवत चरन कमलको दास । जगत सुःखकी त्यागी आस ॥
सर्वारथ सिध गयो तुरन्त । तहां सुःख भोगे बहु भन्त ॥७५॥
श्री जिनवर के धर्म प्रसाद । भव सुख पावे क्यों न अबाद ॥
तातें जैन धर्म चित धरो । मिथ्या मतको त्यागन करो ॥७६॥

दोहा

श्रीमान जो विप्र कुल, मणि समान दीपन्त ।
नारद सत्पुरुषन विषय, मंगल करो अनन्त ॥७७॥
सर्व कुवादी जीतियो, मद वर्जित बुधवान ।
जिन मत अम्बुध वृद्धिकी, करे सोच दसमान ॥७८॥
ऐसे नारदको नमें, कवि बहु विधि सिर नाय ॥
मंगल कारक हूजिये, दीजे दुःख नसाय ॥ ७९ ॥
वसु नारद परवत तनी, कथा सु पूरन कीन ॥
झूठ दोष जगमें बुरो, सो सब लखो प्रवीन ॥८०॥

इति श्रीआराधनासारकथाकोष विषयअमृतदोषराजावसुनेकिया ताकी कथा समाप्तम्

चोरीदोष श्रीभूतकी कथा प्रारंभः २७

मंगलाचरण चौपाई ।

सुर असुरन कर पूजित चर्न । बरदायक है दुख अघ हर्न ।
ऐसो श्रीअरिहन्त महान । तिनको नमिहूं भक्ति सुठान ॥१॥
चोरी दोष तनी जो कथा । बरनूं श्रीअभूतकी यथा ।
नगर सिंहपुर एक बसाय । सिंहसेन धरमातम राय ॥ २ ॥
रामदत्ता नारी तिस गेह । सब कारजमें चतुर सुतेह ।
राजाको प्रोहत श्रीयभूत । मायचार विषय मजबूत ॥ ३ ॥
सतबादी कहलावे सोय । याको कपट लखे नहिं कोय ।
इस अन्तर इक नगर निहार । पदमखंड नामा सुखकार ४॥
तहां सुमित्र सेठ बुधिवान । नार सुमित्रा ताघर जान ।
तिन दोनोंके पुन्य संजोग । उदधिदत्त सुत भयो मनोग ५ ॥
सो यह चलो बनजके काज । भरलीने तिन बहुत जहाज ।
मारग चलत सिंहपुर आय । श्रीयभूततें मिलो सुजाय ॥ ६ ॥

पांच रतन सौंपे हरषाय । जब चाहूं तब लेऊं आय ।
इम कह रतनद्वीप को चलो । द्रव्य उपावन कारण भलो ७॥

दोहा।

सो यह द्रव्य उपाय कर, आवेयो निज धाम ।
पाप उदै प्रोहन फटे, बहु जन मरे ललाम ॥ ८ ॥
एक यही बचतो भयो, आयो सागर तीर ।
पुन्य बिना इस लोकमें, कुछ नहीं संपति धीर ॥९॥

पद्धडी

अब वारिधदत्त बहु कष्ट पाय । आयो हरिपुरमें धन गवांय ।
श्रीभूत पिरोहित पास जेह, लेऊंगो अपने रतनतेह ॥ १० ॥
ऐसे मनमांहीं कर विचार, तिस पास चलो चित हर्षधार ।
तब सत्यघोष याकू निहार, सब जन; आगे इमिवचउचार ११।
जन सुनो सुनी मैं बात आज, किसी बानकके फाटे जहाज ।
सो भयो बावरो धन विनाश, अब आवेगो मेरे जुपास ॥१२॥
यह करहै मोको नमस्कार, फिर मांगे गो सो रतन सार ।
ऐसे कह तिष्ठो दुष्ट भाय, इतने में वारिधदत्त आय ॥ १३ ॥
कर नमन सुमांगे रतन पांच. देश्रीयभूत तू भनत सांच ।
तब सत्यघोष सुनिके तुरन्त, सबजन आगे इहिविधि कहन्त१४॥
मैं बातकही सो भई तेह । तुम देखलेहु निज नेत्र येह ।
इम कहकर गलमें हाथ डार । निज घरसेती दीनों निकार १५

दोहा

जे धन लोभी जगत में, पापी दुष्ट अज्ञान ।
निन्द कर्म क्या क्या नहीं, सबही करैं अयान ॥१६॥

चायका

तब वारिधदत्त विचारी । यह पापी ठग है भारी ।

मे रे निज रतन न दीने । याने निश्चय कर छीने ॥ १७ ॥
या विधि नगरी में सारे । ऐसे बहु बचन उचारे ।
अरु राज महल ढिग जावे । निसमाहिं पुकार करावे ॥१८॥
इम बीतगये षटमासा । कोई नहिं करे दिलासा ।
इक दिन रानी मन आई । राजा से गिरा सुनाई ॥ १९ ॥
हे देव बनिक इह जानो । गहलो किह भांति पिछानो ।
यह बचन एक उच्चारे । सो गहलापन किम धारे ॥ २० ॥
तब नृपति कहो सुनलीजे । तुमही इस न्याय करीजे ।
रानी कर तब चतुराई । प्रोहतको लियो बुलाई ॥ २१ ॥
जूवाको खेल मचायो । पूछो तुमने क्या खायो ।
तब विप्र वृतान्त सुनायो । मैं येही आज सो खायो ॥ २२ ॥

दोहा

तब रानी निज बुद्धिकर, लीनी धाय बुलाय ।
निपुनमती तिस नाम है, ताको बहु समझाय ॥२३॥
भेजी रतन सुलैनको, विप्र वधू के पास ।
सहनाणी भोजन तणी, दे बताय गुण रास ॥२४॥

चौपाई

श्रीयभूतकी नारी येह । ताने रतन दिये नहिं तेह ।
रानी माया कर बहु भन्त । जीत मुद्रिका लई तुरन्त ॥२५॥
फिर भेजी प्रोहतानी पास । तोभी रतन दिये नाहिं तास ।
फेर जनेऊ लीनो जीत । धाय हाथ भेजो कर नीत ॥ २६ ॥
विप्र नार तब मनमें धार । दीने पांचो रतन निहार ।
ले रानी राजाके पास । दिखलाये चितधर हुल्लास ॥२७॥
बुद्धवान नरपति तिह बार । लेकर रतन थाल मधि धार ।
तामें और मंगाय मिलाय । वाणिकको तब लियो बुलाय २८

दोहा

इमि नरिन्द्र कहतोभयो, सुन गहले इह वार ।
अपने रतन पिछान कर, लेओ अवै निकार ॥२९॥
तवहि सुबुद्धी सेठ सुत, अपने रतन निहार ।
वहुत मोलके छोड़कर लीने वही निकार ॥३०॥
सत्पुरुषनको पर दरब, दीखैं जहर समान ।
सो कदाचि नहिं करत हैं, अंगीकार महान ॥ ३१ ॥

सोरठा

सिंहसेन नर राय, चित्त विषय हरषाय के ।
कर वाणिकपति थाह, दई सेठ पदवी विमल ॥३२॥
राजा फिर रिसठान, पूछो अधिकारीन ते ।
रतन चोर दुज जान, ताको कया कीजे अवै ॥३३॥

चौपाई

तब मंत्री बोले सुन ईस । मल्ल मुष्ट इह खावे तीस ।
अथवा सर्वस देय अचार । कया गोवर खावे निरधार ॥३४॥
यही तीन दण्ड इस जोग । दीने नरपति देखत लोग ।
तबै मुयो पापी दुख पाय । आरत ध्यान हियेमें लाय ॥३५॥
धन लम्पट इह विप्र अयान । सर्कर दुर्गति कियो पयान ।
ऐसे जान भव्य जन जेह । हिरदे व्रत धारो तुम यह ॥३६॥
कोड़ो कष्टनको दातार । चोरी छोड़ देहु तत्कार ।
भगवत भाषित धर्म रसाल । ताको पालो सब भ्रम टाल ३७
अथ श्रीप्रभाचन्द्र गुरुदेव । सो कल्याण करो बहु भेव ।
असुर सुरेन्द्र खगेन्द्र नरेश । तिनकर पूजनीक परमेश ॥३८॥
भगवन भगति तजतनहिं कदा । संसय हरन वचन इम सदा ।
तिनकर भाषे वचन महान । हिरदे धारो सुखकी खान ॥३९॥

दोहा

ब्रह्मनेमी दत्त कर भई, पूरन कथा विशाल।
भव्य जीव वांचो सुनो, तज चोरी अघ टाल ॥ ४०॥

इति श्रीआरधनासारकथाकोष विषयचोरीदोषमें श्रीयभूतकी कथा समाप्तम्

॥ अथ नीलीबाईकी कथा प्रारम्भः॥

मंगलाचरण ॥ सोरठा।

हितकारी भगवान, तिनके चरन सरोज को।
नमन करूं धर ध्यान, कथा शीलकी अब कहूं ॥ १ ॥
असुव्रत चौथो येह, नीली बाईने धरो।
दृढ़ पालो धर नेह, कष्ट भयो पर नहिं चिगी ॥ २ ॥

चौपाई

एही भरतछेत्र जु पवित्र। तामधि लाढ देश इक मित्र।
श्रीजिनवर को धरम उदार। फैल रहो तिस देश मझार ॥३॥
तहँ भृगु कच्छ नगर इक खरो। शुभ बस्तुन करके शुभभरो।
तामें राज करे बसुपाल। परजापाले सब श्रम टाल ॥४॥
श्रीजिनदत्त नाम तिस सेठ। कोई बणिक तिस आन नमेट।
श्रीजिनचन्द्र चरनको दास। जिन दत्ता सेठानी तास ॥ ५ ॥
पण्डित दान करनमें लीन। ग्रह कारज में अति परबीन।
तिन दोनोंके पुत्री भई। नीली बाई संज्ञा दई ॥ ६ ॥
शीलवान गुणवन्त अपार। रूप अधिक निज तनमें धार।
बसे बनिक इक ताही ठौर। नष्ट बुद्धि मिथ्याती और ॥ ७ ॥
नाम समुद्रदत्त है तेह। सागर दत्ता नारी गेह।
सागर दत्त भयो सुत आन। प्रिय दत्त तिसमित्र सुजान ॥८॥
इस अन्तर नीली हरषाय। अलंकार मण्डित अधिकाय।
जिन मन्दिर में गई तुरन्त। पूजे श्रीजिनवर अरहन्त ॥ ९ ॥

कायोत्सर्ग धरे बड़ भाग । निरमलध्यान विषय चितपाग ।
वह सागरदत्त ताहि निहार । विह्वल चित्तभयो तिह बार १०।
ऐसे कहतभयो निज वैन । क्या यह नागदत्ता सुखदैन ।
वा इह तनुजा सुरकी होय । अथवा खग पुत्री है कोय ॥११॥
भली काय सो भाग धरन्त । याके रूप तनो नहिं अन्त ।
तब प्रियदत्त मित्र इम कही । तुम क्या याको जानत नहीं १२
श्रीजिनदत्त सेठ गुणगेह । तासु सुता इह सुन्दरदेह ।
मित्रतने इह सुनके वैन । सकल अंग में व्यापो मैन ॥ १३ ।
मोह मिलेगी किह विधि येह । चिन्ता भूत लगो तिह देह ।
ताकर तन दुर्बल अधिकाय । होतभयो कछु नाहिं सुहाय १४

दोहा

हरि लक्ष्मीके वसि भयो, गंगा वसि महादेव ।
ब्रह्मा लखिके उरवसी, भयो कामवस येव ॥ १५ ॥
कौन कौन इस दर्पने, वस कीने नहिं राय ।
सब कोई जीतत भयो, याकी कौन चलाय ॥१६॥
अपने सुतको दुखित लख, कहे वारिधदत आय ।
अहो पुत्र जिन दत्तजी, जैनी है अधिकाय ॥ १७ ॥
श्रावक बिन अपनी सुता, काहूको नहिं देय ।
यमि कह दोनों तात सुत, कियो कपट सो येह ॥ १८ ॥

पद्धरी

मत मांहि लीन । ऊपरतें अंतरता मलीन ॥
...ने हैन थान । श्रावक किरियामें निपुन जान १९
...न्त । अंबुज समानमो वसु धरंत ॥
...र । फिर बांच धरम सुंकर मनेह । २० ।

तिसके पूरब पुन्यतें, पंडित रूप निधान ।
प्रियग सुन्दरी नामबर, नारी भई सु आन ॥६॥

चौपाई

मन्त्री सुत पापी बुध बिना । सेठ त्रिया देखी इक दिना ॥
गुणाकर मंडित सुन्दर काय । लखि बिहबल हूवो अधिकाय ॥७॥
जाकर तिष्ठो अपने धाम । छिन छिन ताको पीड़े काम ॥
तब इस माता आ इह पास । पूछो सुत क्यों भयो उदास ॥८॥
तब याने लज्जा तज दीन । मातासे बच कहे मलीन ॥
सेठ बधू जो मिलि है आय । तो मेरो जीवन है माय ॥ ९ ॥
काम अंधको है धिक्कार । लज्जा भयकर रहित बिचार ॥
काज अकाज गिने नहिं जेह । शुभ अरु अशुभ लखे नहिं तेह १०
एह बच सुन मंत्रीकी तिया । निजपतिते सबही कह दिया ॥
तब मंत्री सुनके तिय बैन । जानो पुत्र सतायो मैन ॥ ११ ॥
इमि बिचार करके पापिष्ट । कपट सहित बुध धारी नष्ट ॥
राजा नरसिंहके जा पास । करत भयो इह बिध अरदास ॥१२॥
अहो नाथ मणि द्वीप मंझार । खग किंजल्प रहे अधिकार ॥
सो तुमनेभी सुन नरेश । पक्षी धरे प्रभाव बिशेष ॥ १३ ॥
महा व्याधि दुर भिक्ष न सात । रोगमरी अरु भय सब जात ॥
सो मंगायलो देव तुरन्त । उन आये सुख ह्वै बहु भन्त ॥१४॥

दोहा

इस कारज में अति निपुन, सेठ महा बुधिवान ॥
भेजो कुबेर सुदत्तको, वह लावे पहिचान ॥ १५ ॥
सो राजा मूरख अधिक, मंत्री बच हिय धार ॥
भेजो उसही सेठको, खग लेने तत्कार ॥ १६ ॥

चौपाई

तब श्रेष्टी निर्मल धीमान । निज रानीते भाषी आन ॥

हम जावें खग लेने काज। राजा हुकम दियो यह आज ।१७।
तब तिय बोली वचन रसाल। अहो ठगाये तुम गुण माल ॥
मंत्री सुत यह कियो समाज। मेरे शील खण्डने काज ॥१८॥
तातें तुम मत जावो स्वाम। यहां ही तिष्टो अपने धाम ॥
ऐसे नारी वचन उचार। सुनके सेठ हिये निज धार ॥१९॥
भले महूरत मांहि जहाज। विदा किये खग लाने काज ॥
छिपकर निज गृह आप सुआय। तिष्टत भयो महा सुख पाय।२०।
तब मंत्रीको तनुज अयान। पापी कामातुर अधिकान ॥
आयो सेठानीके गेह। मन मांही बहु धार सनेह ॥ २१ ॥
तब प्रियङ्गु सुन्दरी नार। चित्त मांहि बहु विधि बुधधार ॥
भिष्टाधाम विषय सो जाय। गुण वरजित परजंक बिठाय ॥२२॥
श्वेन वस्त्र ताऊपर डार। कोइन जाने ताकी सार ॥
॥ ऊपर याको बैठाय। भिष्टा विषय पड़ो सो जाय ॥ २३ ॥
से नार कि नरक मझार। पड़त वेदना सहे अपार ॥
यों कडार पिंग दुख लीन। होत भयो इह महा मलीन ॥२४॥

सोरठा

कारागार मझार, राखो तिस षट मास लग।
इतने प्रोहन सार, फिरकर आये नगरमें ॥२५॥
तब नाना परकार, पक्षी अरु परलेय के।
मन्त्री सुत तन धार, कालो मुख तिसको कियो ॥२६॥
हाथ पांव बंधवाय, काष्ठ पिंजरे में धरो।
मत्र जन येम कहाय, खग ल्यायो यह सेठजी ॥२७।

चौपाई

भूपति आगे सेठ जु आय। लेय कडार पिंग दिखलाय ॥
ई पक्षी ल्यायो महाराज। अद्भुत रतन द्वीपतें आज ॥ २८

तिसके पूरब पुन्यतें, पंडित रूप निधान ।
प्रियगु सुन्दरी नामवर, नारी भई सु आन ॥६॥

चौपाई

मन्त्री सुत पापी बुध बिना । सेठ त्रिया देखी इक दिना ॥
गुणाकर मंडित सुन्दर काय । लखि बिहवल हूवो अधिकाय ॥
जाकर तिष्ठो अपने धाम । छिन छिन ताको पीडे काम ॥
तब इस माता आ इह पास । पूछो सुत क्यों भयो उदास ।८।
तब याने लज्जा तज दीन । मातासे बच कहे मलीन ॥
सेठ बधू जो मिलि है आय । तो मेरो जीवन है माय ॥ ९ ॥
काम अंधको है धिक्कार । लज्जा भयकर रहित बिचार ॥
काज अकाज गिने नहिं जेह । शुभ अरु अशुभ लखे नहिं तेह १०
एह बच सुन मंत्रीकी तिया । निजपतिते सबही कह दिया ॥
तब मंत्री सुनके तिय बैन । जानो पुत्र सतायो मैन ॥ ११ ॥
इमि बिचार करके पापिष्ठ । कपट सहित बुध धारी नष्ट ॥
राजा नरसिंहके जा पास । करत भयो इह बिध अरदास ।१२
अहो नाथ मणि द्वीप मंझार । खग किंजल्प रहे अधिकार ॥
सो तुमनेभी सुन नरेश । पच्छी धरे प्रभाव बिशेष ॥ १३ ॥
महा व्याधि दुर भिच्छ न सात । रोगमरी अरु भय सब जात ॥
सो मंगायलो देव तुरन्त । उन आये सुख ह्वै बहु भन्त ॥१४॥

दोहा

इस कारज में अति निपुन, सेठ महा बुधिवान ॥
भेजो कुबेर सुदत्तको, वह लावे पहिचान ॥ १५ ॥
सो राजा मूरख अधिक, मंत्री बच हिय धार ॥
भेजो उसही सेठको, खग लेने तत्कार ॥ १६ ॥

चौपाई

तब श्रेष्ठी निर्मल धीमान । निज रानीते भाषी आन ॥

हम जावें खग लेने काज। राजा हुकम दियो यह आज ।१७।
तब तिय बोली वचन रसाल। अहो ठगाये तुम गुण माल ॥
मंत्री सुत यह कियो समाज। मेरे शील खण्डने काज ॥१८॥
तातें तुम मत जावो स्वाम। यहां ही तिष्ठो अपने धाम ॥
ऐसे नारी वचन उचार। सुनके सेठ हिये निज धार ॥१९॥
भले महूरत मांहि जहाज। विदा किये खग लाने काज ॥
छिपकर निज गृह आप सुआय। तिष्ठत भयो महा सुख पाय।२०।
तब मंत्रीको तनुज अयान। पापी कामातुर अधिकान ॥
आयो सेठानीके गेह। मन मांही बहु धार सनेह ॥ २१ ॥
तब प्रियङ्ग सुन्दरी नार। चित्त मांहि बहु विधि बुधधार ॥
भिष्टाधाम विपय सो जाय। गुण वरजित परजंक बिठाय ॥२२॥
स्वेत वस्त्र ताऊपर डार। कोइन जाने ताकी सार ॥
ता ऊपर याको बैठाय। भिष्टा विपय पड़ो सो जाय ॥ २३ ॥
जैसे नार कि नरक मझार। पड़त वेदना सहे अपार ॥
त्यों कडार पिंग दुख लीन। होत भयो इह महा मलीन ॥२४॥

सोरठा

कारागार मझार, राखो तिस पट मास लग।
इतने प्रोहन सार, फिरकर आये नगरमें ॥२५॥
तब नाना परकार, पन्नी अरु परलेय के।
मन्त्री सुत तन धार, कालो मुख तिसको कियो ॥२६॥
हाथ पांव बंधवाय, काष्ट पिंजरे में धरो।
सब जन येम कहाय, खग ल्यायो यह सेठजी ॥२७॥

चौपाई

नरपति आगे सेठ जु आय। येम कडार पिंग दिखलाय ॥
यह पक्षी ल्यायो महाराज। अद्भुत रतन द्वीपतें आज ॥ २८॥

तिसके पूरब पुन्यतें, पंडित रूप निधान ।
प्रियग सुन्दरी नामवर, नारी भई सु आन ॥६॥

चौपाई

मन्त्री सुत पापी बुध बिना । सेठ त्रिया देखी इक दिना ॥
गुणाकर मंडित सुन्दर काय । लखि बिह्वल हूवो अधिकाय ॥
जाकर तिष्ठो अपने धाम । छिन छिन ताको पीड़े काम ॥
तब इस माता आ इह पास । पूछो सुत क्यों भयो उदास ।८।
तब याने लज्जा तज दीन । मातासे बच कहे मलीन ॥
सेठ बधू जो मिलि है आय । तो मेरो जीवन है माय ॥ ९ ॥
काम अंधको है धिक्कार । लज्जा भयकर रहित बिचार ॥
काज अकाज गिने नहि जेह । शुभ अरु अशुभ लखे नहिं तेह १०
एह बच सुन मंत्रीकी तिया । निजपतिते सबही कह दिया ॥
तब मंत्री सुनके तिय बैन । जानो पुत्र सतायो मैन ॥ ११ ॥
इमि बिचार करके पापिष्ट । कपट सहित बुध धारी नष्ट ॥
राजा नरसिंहके जा पास । करत भयो इह बिध अरदास ।१२।
अहो नाथ माणि द्वीप मंझार । खग किंजल्प रहे अधिकार ॥
सो तुमनेभी सुन नरेश । पच्छी धरे प्रभाव बिशेष ॥ १३ ॥
महा व्याधि दुर भिच्छ न सात । रोगमरी अरु भय सब जात ॥
सो मंगायलो देव तुरन्त । उन आये सुख ह्वै बहु भन्त ॥१४॥

दोहा

इस कारज में अति निपुन, सेठ महा बुधिवान ॥
भेजो कुबेर सुदत्तको, वह लावे पहिचान ॥ १५ ॥
सो राजा मूरख अधिक, मंत्री बच हिय धार ॥
भेजो उसही सेठको, खग लेने तत्कार ॥ १६ ॥

चौपाई

तब श्रेष्ठी निर्मल धीमान । निज रानीते भाषी आन ॥

हम जावें खग लेने काज । राजा हुकम दियो यह आज ।१७।
तब तिय बोली वचन रसाल । अहो ठगाये तुम गुण माल ॥
मंत्री सुत यह कियो समाज । मेरे शील खण्डने काज ॥१८॥
तातें तुम मत जावो स्वाम । यहां ही तिष्ठो अपने धाम ॥
ऐसे नारी वचन उचार । सुनके सेठ हिये निज धार ॥१९॥
भले महूरत मांहि जहाज । विदा किये खग लाने काज ॥
छिपकर निज गृह आप सुआय । तिष्ठत भयो महा सुख पाय ।२०।
तब मंत्रीको तनुज अयान । पापी कामातुर अधिकान ॥
आयो सेठानीके गेह । मन मांही बहु धार सनेह ॥ २१ ॥
तब प्रियङ्गु सुन्दरी नार । चित्त मांहि बहु विधि बुधधार ॥
भिष्टाधाम विषय सो जाय । गुण वरजित परजंक बिठाय ॥२२॥
स्वेत वस्त्र ताऊपर डार । कोइन जाने ताकी सार ॥
ता ऊपर याको बैठाय । भिष्टा विषय पड़ो सो जाय ॥ २३ ॥
जैसे नार कि नरक मझार । पड़त वेदना सहे अपार ॥
त्यों कडार पिंग दुख लीन । होत भयो इह महा मलीन ॥२४॥

सोरठा

कारागार मझार, राखो तिस षट मास लग ।
इतने प्रोहन सार, फिरकर आये नगरमें ॥२५॥
तब नाना परकार, पक्षी अरु परलय के ।
मन्त्री सुत तब टार, कालो मुख तिसको कियो ॥२६॥
हाथ पांव बंधवाय, काष्ट पिंजरे में धरो ।
सब जन येम कहाय, खग लायो यह सेठजी ॥२७॥

चौपाई

नरपति आगे सेठ सु आय । लय कडार पिंग दिखलाय ॥
यह पक्षी लायो महाराज । अद्भुत रतन द्वीपसे आज ॥ २८॥

इसको नाम जु है कंजल्प । ऐसे खग दीखत हैं अल्प ॥
इमि हांसी करके बहुभाय । नृपसों सब वृत्तान्त सुनाय ॥२९॥
तब नरसिंह नाम भूपाल । क्रोध धरो हिरदे बिकराल ॥
मंत्री सुतको गधे चढ़ाय । फेर दण्ड दीनों बहु भाय ॥३०॥
तब मंत्री सुतधर दुर ध्यान । पावत भयो शुभ्र को थान ॥
जे परनारी सेवैं मूढ़ । ते निश्चय दुख पावैं गूढ़ ॥ ३१ ॥
याते जे बुधजन हैं सार । त्यागन करो पराई नार ॥
जे भविजन जिन वर भावन्त । पालो शील सदा गुणवन्त ॥३२॥
ते पद पद पर पूजित होय । पाये शंसय नाहीं कोय ॥
जे मन बचन कायको लाय । पालें शील सदा सुखदाय ॥३३॥
सुरशिव सुख पावैं ते सही । ऐसे जिन बानी में कही ॥
अति पवित्र यह शील महान । देवइन्द्र याकी थुत ठान ॥३४॥

दोहा

इस बिधि सुख दुख देखके, लीजे चित्त बिचार ।
जामें सुख यश बिस्तरे, सोई करनो सार ॥३६॥

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषय ब्रह्मचर्य दोषमें कडार पिङ्गकी कथा समाप्तम् ॥ २५ ॥

अथ देवरतरक्ताशीलदोषीकीकथा ३०

मंगलाचरण ॥ दोहा ॥

तीन जगत अर्चत चरन, केवल नेत्र धरन्त ।
ऐसे श्री अरिहन्त को, नमकर कथा भनन्त ॥१॥

चौपाई ।

नगर बिनीताको भूपाल । नाम देवरत रूप विशाल ॥
ताके रक्ता नारी जान । सो सौभाग्य रूपकी खान ॥ २ ॥
यह नारिंद्र लमपट अतिरक्त । सदा काल नारी आशक्त ॥

शत्रु आयपुर घर जु लीन । नारी रति चिन्ता नहिं कीन ॥३॥
धर्म अर्थ वर्जित जे जोग । न्याय रहित भोगत हैं भोग ॥
ते दुखही के भाजन होय । यामें संशय नाहीं कोय ॥ ४ ॥
तब याके जो हैं परधान । तिन विचारकर इह विधि ठान ॥
याको सुत सुन्दर जयसेन । ताको राज दियो सुख देन ॥ ५ ॥
काढ़ो नारी युक्त नरेश । सो चलियो तजके निज देश ॥
चलत चलत काननमें आय । तियको क्षुधा लगी अधिकाय ॥६॥
तबै देवरत दुखधर चित्त । जानत भयो पड़ी जु विपत्त ॥
तब काहूको लेकर मांस । देकर पूर नई तिस आस ॥ ७ ॥
फिर नारीको लागी प्यास । जल नहिं दीखत तहँ पास ॥
तब मूरख नरपति तत्काल । भुजा तनों शोणित जु निकाल ॥८॥
महा औषधी तामधि डाल । पानी रूप कियो तिह काल ॥
निज नारीको दियो पिलाय । मोह ठगो क्या क्या न कराय ॥९॥

दोहा

ता पीछे जमुना निकट, तरु तल नारी त्याग ।
आप गयो काहू नगर, भोजन लेने काज ॥१०॥

पद्धरी

तिस पीछे रक्तानार सोय । इक बाड़ी सींचन हार जोय ॥
सो हुतो पांगुलो अति विरूप । अनुराग करे वह मधुरस्वरूप ॥११॥
तिससे रक्ता इम वच बखान । हे पंग मोह इच्छा सुजान ॥
तब वह बोलो अतिही डरात । तुम्ह सुभट शिरोमणि प्राणनाथ ॥१२॥
अब रक्ता पापन इम विचार । याकोतो अबही देहुं मार ॥
नृ किंचित भय मनमें न ठान । मोहि अंगीकार करो महान ॥१३॥
ले दुराचार नारी धरंत । क्या क्या पातिक नाहीं करंत ॥
इतनेमें भोजन ले नरेश । आयो नित नेह धरे विशेष ॥ १४ ॥

दोहा

तब रक्ता चित्त कुटिल अति, दुराचार की खान ।
मायाधर निज चित्त में, रुदन कियो अधिकान ॥ १५ ॥
तब राजा बोलत भयो, क्यों रोवत बर नार ।
बोली रजू सिला भई, मैं पापन इह बार ॥ १६ ॥

चौपाई

सालगिरह दिन तुमरी आज । अब मोसूं किम बने सुकाज ॥
पुन्य बिना प्रानी है जेह । शोक उदधिमें डूबत तेह । १७ ।
ऐसे बच सुन विषयाशक्त । कहत भयो सुनि नारी रक्त ॥
एहो शोकको कारज कौन । तुम होते इह बनही भौन ।१८।
फिर बोली इह पापन नार । किंचितको करहूं इह बार ॥
ऐसे कह पुष्पनकी माल । घोट गला डालो तत्काल । १९ ।
जमनाके तट लाय तुरंत । डार दियो तामधि निज कंत ॥
फेर दुष्ट मन पंगुले पास । खोटो कर्म कियो अघरास ॥ २० ॥

दोहा

या अन्तर नृप देवरत, कोई करम पसाय ।
सरिता में वह तो थको, बाहर निकसो आय ॥

चौपाई

नगरी नाम मंगला जोय । तरु उद्यान तहां रहो सोय ॥
श्रीवर्द्धन नृप नगरी बीच । पुत्र रहित पाई तिन मीच । २२ ।
ताके मंत्री बुद्ध निधान । सब मिलके इन कियो प्रमान ॥
पट्ट बंध नामा गज राज । जिसको लावे मस्तक आज ।२३।
सोई राज करे इस पुरी । कुंभ देय छोड़ो तब करी ॥
जहां देवरत सूतो राय । तहँ करिंद्र यह पहुंचो आय ॥ २४ ॥
वाको करवायो स्नान । पीठ चढ़ाय लियो बुधवान ॥

नगर विषय लायो तत्काल । उत्सवयुत कीनों नरपाल ।२५।
ताके पूछत पुन्य उद्योत । तिसको आदर संपति होत ॥
तातें श्री जिन भाषित पुन्न । सेवो भवि निसदिन मत छिन्न ।२६।
पुन्य नाम किसको है मीत । श्री जिनचंद्र चरनमें प्रीत ॥
पात्र दान व्रत ओषधि दान । पुन्य नाम याहीको जान ।२७।
अरु नरधीश देवरत सोय । राज करे मन हर्षित होय ॥
ऐसो चितमें धारो सदा । नारी सुख देखो नहि कदा ॥ २८॥
जो दुरजनके पास ठगाय । सो सज्जनतें भी न पत्याय ॥
जैसे दाझो पयतें कोय । छाछ फूंकफूंक पीवे सोय ॥ २९ ॥
अब यह नरपति दान करंत । सबही जनको दे अत्यंत ॥
पण पंगुलेको देय न दान । ऐसो राज करे हित ठान ॥३०॥
इस अंतर अब रक्तानार । खारी माथे पंगुलेको धार ॥
अपने मस्तक लियो चढ़ाय । सब जन आगे येम कहाय ।३१।

दोहा

मेरे तात अरु मात ने, दीनी या संग ब्याहि ।
सो सेवा याकी करूं, ऐसे गूढ़ कराहि ॥ ३२॥
नगर ग्राम आदिक विषय, भिक्षा मांगे जोय ।
सती कहावे आपको, धरे कुटिल मन सोय ॥ ३३ ॥

सोरठा

मांगत मांगत नार, आई नगरी मङ्गला ।
सब जन अचरज धार, इन दोनों को देख के ॥३४ ॥

अडिल्ल छंद

जिस नारी चारित्र पसाये । ब्रह्मादिक बहुत ठगाये ।
तो मूरख जन अधिकाई । ठगने कहो कौन गिनाई ॥ ३५ ॥
दोऊ गान करें बहु भाये । नृप आंगन विषै सो आये ॥

तब द्वारपाल हरखाई । राजा से अरज सुनाई ॥ ३६ ॥
हो स्वामी सुन इह वारी । इक पंगु पुरुष अरु नारी ॥
बहु मीठे गान करन्ते । सब जन के चित्त हरन्ते ॥ ३७ ॥
सो सिंह पौल पै आये । ऐसे शुभ वचन सुनाये ॥
नृप सुन के इस की वानी । नहि देखो एम बखानी । ३८ ।
सब जन हठ कीनो भारी । देखो ही नृप इह वारी ॥
तब आडो पट करवायो । उन दोनों को बुलवायो ॥ ३९ ॥
निज नारि की मैं वानी । पहिचानी राय सु ज्ञानी ॥
तब कहत भयो मैं जानी । यह सनी बड़ी अधिकानी । ४० ।

दोहा

यह कहकर बहु क्रोधधर, नृपने दई निकार ।
आप सुबुद्धि तासु में, चित वैराग सुधार ॥ ४१ ॥
अपने सुत जैसेनको, लीनों तहां बुलाय ।
या नगरीको तासुको, राजदियो हरषाय ॥ ४२ ॥

कवित्त

शीघ्र करी पूजा जिनवरकी भलीभक्तिते चित हरषाय । फिर सूरज मुनिवर ढिग जाकर दीक्षा लीनी मनवच काय ॥ जिनवर भाषित तप बहु कीनों निज आतममें चित्त लगाय । दे उपदेश भव्य गण तारे अन्त सन्यास धरो सुखदाय ॥४३॥

दोहा

कर सुलेखणा मरणको, पहुँचे स्वर्ग सुजाय ।
अधिक ऋद्धि अणमादिलह, पाई सुन्दर काय ४४॥

काव्य

निन्दनीक अरु दुष्ट चित्त दुखदायन नारी ।
ताको चरित अपार देवरत लख तिहवारी ॥

इन्द्र अनुव्रत देह, भोग लख दीक्षा भारी।
वे मुनि सतमह सैं करो मंगल सुखकारी ॥४५॥
रक्कानारी की भयै पूरन कथा जुगेह।
लखकर भविजन मतकरो तियसेती अति नेह ४६

इति श्रीआराधनासारकथाकोषविषय शीलद्वीपमें देवरक्काकी
कथा समाप्तम्

अथ गोपावतीकी कथा प्रारम्भः ३१

मंगलाचरण ॥ अडिल्ल ॥

जगत पूज अरिहन्त सुखदाता सही।
तिनको करूं प्रणाम सीस नाके मही ॥
सत्पुरुषन वैराग हेत बरनों कथा।
गोपवती को चरित कहुं जिनवर यथा ॥ १ ॥

चौपाई

ग्राम पलाश विषै जिम धाम। ताको सिंहबलहै शुभ भाम।
गोपवती ताके इक भाम। धारे कपट कुभाटो जाम ॥ २ ॥
ऐके दिन हरयक हरषाय। निज नारीते छिपकर जाय।
परम निरवेद ग्राम में जाय। सिंहसेन तहँ एक रहाय ॥३॥
तिसकी कन्या रूप निधान। नाम सुभद्रा ताको जान।
विध विवाहकी सबही ठान। व्याही हरबलने निह शान ।४॥
गोपवती सुन इह विरतन्त। क्रोध अग्नि तातन व्यापन्त।
गई सुभद्रा गेह तुरन्त। माता ढिग देखी सोवन्त ॥ ५ ॥
दुष्ट चित्त इह तिस सिर काट। अपने घरकी लीनी बाट।
हुवो सबेरो जब पव फाट। नारी सिर बिन देखी खाट ॥६॥
तबै सिंहबल दुखित गात। निज महमें आयो परभात।
गोपवती मनमें हरखात। आय भगत कीनी बहु भांत ॥७॥

देतभई भोजन तब सार । हरबलको नाहिं रुचो अहार ।
जाके चितमें दुःख अपार । ताको रुचो न भोजन बार ॥८॥
तब इह पापन उठ तत्काल । नार सुभद्राको ले भाल ।
थान विषै दीनों तिन डाल । बोली अबतो भई रसाल ॥९॥
तब हरबल लख नारी सीस । डरो चित्तमें बिस्वा बीस ।
यह तो राक्षसनी सी दीश । इम कहि भागो इह भट ईश १०
गोपवती नारी अति नीच । लागी पाछे दशन सो भींच ।
भालो मारो पिय कटि बीच । तिस करताने पाई मीच ॥११॥
जे हैं चतुर पुरुष जगमाहिं । नारी चरित जुचित्त लखाहिं ।
कहैं नहीं बिश्वास कराहिं । कामनते वे भिन्न रहाहिं ॥ १२ ॥

सोरठा

अब श्रीजिनवर चन्द्र, जैवन्ते बरतो सदा ।
पूजे नर सुरवृन्द, तिनके चरन सरोजको ॥१३॥
मदन करी महमन्त, ताबस करनेको हरी ।
भव दुख नाश करन्त, स्वर्ग मोक्ष दायक सदा १४
मुक्ति तिया भरतार, सांति करै सब जगत में ।
मैं भाऊं इहबार, शान्त अर्थ हूजे प्रभू ॥ १५ ॥
सुनो अर्थ चितलाय, गोपवतीको चरित यह ।
जो है सुखकी चाय, तिस विस्वास न कीजिये १६

इति श्रीआरधनासारकथाकोष विषयगोपवती चरित कथा समाप्तम् ३१ ।

॥ अथ बीरवतीनारीकी कथा प्रारंभः ॥

मंगलाचरण ॥ सवैया इकतीसा ॥

मोक्ष सुख दैनहार तीन जगत मांहिं सार वेद षट गुणधार अतिही पवित्र है । ऐसे अरिहन्त देव सुर नर करें सेव जन उपकार करनेको महामित्र है ॥ तिनको नवाय भाल कहूं अब श्रेमटाल बीरवती नारी तनी कथा जो बिचित्र है । सुन सत्पुरुष

ताहि होय वैराग भाव करि निज शुद्धकाय देखके चरित्र है १।

दोहा

राज अही नगरी विषय, सम्पति युत धन मित्र ।
सेठानी है धारनी, धारे रूप विचित्र ॥ २ ॥
तिस सेठानी सेठ के, पुत्र भयो इक आय ।
दत्तनाम ताको धरो, परियन जन सुखदाय ॥ ३ ॥
तिस अन्तर सम्पति सहित, नगर भूम यह और ।
आनन्द नामा सेठ इक, वसे सुताही ठोर ॥ ४ ॥
मित्रवती तिस नार है, पति को वल्लभ जान ।
वीरमती पुत्री भई, कुटिल चित्त दुख खान ॥ ५ ॥

चाल मेघकुमार की

इस अंतर अब दत्त ने जी, तिस ही नगर सुजाय । वीरवती परनत भयो जी, व्याह तनी विधि पाय ॥ सयाने कर्म लिखो सो होय ॥ ६ ॥

जो अच्चर विधिना लिखे जी, ताहि न मेटे कोय । जाको जो सम्बन्ध हैजी, सोई प्रापत होय ॥ सयाने कर्म लिखो सो होय ।

ताही नगरी में वसे जी, तस्कर कला प्रवीन । नाम प्रचंड अंगार है जी, सब विसनन में लीन ॥ सयाने नारी चरित अपार । ८ ।

वीरवती इह पापनीजी, तासों भई असक्त। कुलकी कान गँवाय के जी, भोगकोर है रक्त ॥ सयाने नारी चरित्त अपार । ९ ।

एक दिना सुत सेठ को जी, वीरवती भरतार । रत्नद्वीप जातो भयो जी, करने को व्यापार । सयाने उद्यमते मन होय ।

फिर कमाय उलटो फिरो जी, आवे यो निज गेह । पथ चलते ससुराल में जी, आये तिय के नेह ॥ सयाने काम महा दुखदाय । ११ ।

एक चोर अटवी विषय जी, लाग्यो याकी लार । सहश्र भट तिस नाम है जी, कौतूहल चित धार ॥ सयानें नारी चरित के काज । १२ ।

दोहा

या नारी के सब चरित, जाने थो वह चोर ।
यातें देखन कारने, आयो बन को छोर ॥ १३ ॥

छंद चाल

सोदत्त ससुर घर आयो । नारी लख अति सुख पायो ।
तब उन बहु आदर कीनो । कर भक्ति सु भोजन दीनो ।१४।
फिर रैन भई अंधियारी । इस ने तब निन्द्रा धारी ॥
अरु या सङ्ग चोर जु आही । छिप रह्यो पौल के माही ॥१५॥

दोहा

वाही दिन कुतवार ने, हुक्म राय को पाय ।
पकड़ प्रचण्ड अगार को, सूली दियो चढ़ाय ॥ १६ ॥

चौपाई

तब ही बीरवती दुट नार । रात्रि विषै तज निज भरतार ॥
हस्त विषय लेकर तरवार । चोर निकट चाली भै छार । १७।
ड्योढ़ी में वह चोर लखात । जो अटवी ते आयो सात ॥
सो इस चरित निहारन हेत । पीछे लागो होय सचेत ॥ १८ ॥
याके पदकी सुन झनकार । बीरवती फेरी तरवार ॥
ताकर तस्करकी आगुरी । कटकर भूमि विषै सो परी । १९ ।
तबै चढ़ी फिर बड़पे जाय । तहां बैठ सब चरित लखाय ॥
बीरवती सूली ढिग गई । तस्कर ने तब बानी चई । २० ।
हे प्यारी मैं मरूं अबार । तू आलिंगन दे बर नार ॥
सुख कारी निज मुखको पान । तस्कर आनन दियो निदान ।२१।

मो इस पाप उदय भयो आय । तब पैंड़ी पे गई डिगाय ॥
मरते तस्करने निहवार । अधर गहे इन दशन मभ्कार । २२ ।
होट रह्यो तस्कर मुख मांहि । पड़ी भूमपे यह दुख पाहि ॥
फेर उठी यह साहस धार । पट मुख ढक चाली तत्कार । २३ ।

दोहा

अपने घरमें आय के, कीनों बहुत पुकार ।
अधर हमारो काटियो, इन पापी भरतार ॥ २४ ॥
जे नारी पर पुरुष रत, ते निज कुल नाशन्त ।
दुखदाता कारज जिते क्या नहिं करे तुरन्त ॥२५॥

पद्धरी

तब ता घरके जनसर्व आय । राजा पै करी पुकार जाय ॥
नृप सुनके चित भयो रोसवन्त । बुलवायो दत्त तहां तुरन्त । २८ ।
मारनको हुकम दियो नरेश । इन काम बुरी कीनों विशेश ॥
तब चोर करी अतिही पुकार । जो अटवीतें आयोथो लार । २६ ।
जब राजा पूछी सर्व बात । तस्करने चरित कियो विख्यात ॥
यह सुनकर नृप आश्चर्य पाय । ताही छिनदत्त दियो छुड़ाय । ३० ।
उस नारीको बहु दण्ड दीन । पुर बाहर काढ़ दई मलीन ।
अरु दत्त जु पुन्य महान पाय । रक्षा कीनी तिन चोर आय । ३१ ।
इस लोक विषय जे पुन्यवान । तिनकी रक्षा सब करत आन ॥
जे भव्य जीवहैं जग मझार । अपने हियमें देखो विचार । ३२ ।
इह नारी चरित अपार जेह । अत्यन्त भयानक कष्ट देह ॥
इमि जानिकर विषै तजो तुरंत । जो अपनो चित चाहो महन्त । ३३

सवैया इकतीसा

तेई मुनिराज धन कियो जैन वस्त्र मन भायो जिनराज
सोई भांत अत भारो है । मेघराय घटा प्रचण्ड तास नाशने

को सिंह ज्ञान ध्यान माहि रत सर्वे अघ टारो है ॥ भवते विरक्त चित्त भव्य मन कंचन को करत विकाश रूप सार तंड प्यारो है । सोइ मुनिराज जग अंबुध में है जहाज करो कल्याण मम अब अधिकारो है ॥ ३४ ॥

दोहा

बीरवती नारी तनों, यह चरित्र अधिकार ।
याको सुन तिय नेह तज, जो चाहो सुख सार ॥३५॥

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषय बीरवती के चरित्र की कथा समाप्तम् नम्बर ॥ ३२ ॥

अथ रायसुदत्तकीकथा प्रारम्भः नं० ३३

मंगलाचरण ॥ काव्य ॥

इन्द्र चन्द्र नागेन्द्र भान चरनाम्बुज ध्यावें ।
ऐसे श्री भगवान तिन्हें हम सीस नवावें ॥
राय सुदत्तकी कथा कहूं अब चित्त लगाई ।
जिस सुनते सुख होय मोह नासे दुखदाई ॥१॥
नगर अयोध्या विषै सुदत्त राजा है भारी ।
ताके गृहके मध्य पांच सत सोहें नारी ॥
तामें दो पटनार सती नामा एक जो है ।
महादेवी है द्वितिय सदा नृपको मन मोहे ॥२॥
भोग लीन भूपाल द्वारपालक बुलवायो ।
अपने बचन प्रकाश तासुको इम समझायो ।
जो कोई कारज नगर विषै होवे अति भारी ।
अथवा को मुनिराज इहां आवें अनगारी ॥३॥
तो मुझ कीजो खबर अन्यथा इहां मत आना ।
ऐसे कहकर हर्ष महल में कियो पयाना ॥

भोगे भोग अपार सदा अचन सुखकारी ।
सब सामग्री सार तासके धाम मझारी ॥४॥
एक दिना नृप पुन्य जोग इस मन्दिर माहीं ।
आये जुग मुनिराय मास उपवास धराहीं ॥
दमदत्त नाम पवित्र धर्म रुच दूजो जानो ।
आये भोजन काज पौलियो लखि हरषानो ॥५॥
शीघ्र गयो नृप ढिग दरवान । सती नार तिष्ठ तिह थान ॥
तिलक करे थी भाल मझार । तबै बोलियो वचन उचार ॥६॥
हे राजन मो वच सुन लेह । देव इन्द्रकर पूजित जेह ।
ऐसे श्रीमुनिवर जुग नन्द । तुम मन्दिर आये सुखकन्द ॥७॥
द्वारपाल के ए सुन बैन । भूपति चित अति पायो चैन ॥
कहत भयो नारी ते एह । हे प्यारी मम वच सुन लेह । ८ ।
जब तक तिलक न सूखे भाल । तब तक मैं आऊं तत्काल ॥
श्री मुनिवरको भोजन देय । आऊं वेग नार सुन लेय ॥ ९ ॥
ऐसे कहकर गयो तुरन्त । युग मुनिवर थापे हरषन्त ।
नवधाभक्ति करी अधिकार । सातों गुणदाता के धार ॥१०॥
मुनिको उत्तम दीनो अन्न । ताकर नरपति पायो पुन्न ।
जे व्रत पूजा दान कराहिं । ते उत्तम श्रावक जगमाहिं ॥११॥
इनकर हीन जगत जन जेइ । फल वर्जित सम तरु है सेइ ।
तातें मन वच करि बहु भाय । दानदेहु निज शक्ति बसाय १२
भगवत पूजन नित प्रति करो । व्रत करके निज पातक हरो ।
याहीते सुख सम्पति होय । यामें संशय नाहीं कोय ॥ १३ ॥
तिसी समय नरपतिकी भाम । पट देवी जो सती तिस नाम ।
ताने रोसधरो अधिकाय । मुनि निन्दा बहु भांति कराय १४॥
तबही पाप उदय भयो पुष्ट । हुवो उदम्बर तनमें कुष्ट ।
कोढ़ी कष्ट तनो दातार । व्यापो दुख वपुमें अधिकार ॥१५॥

सोरठा

एक जन्म भै दाय, हालाहल खानो भलो ।
मुनि निंदा जो कराय, भव भव में ते दुख लहैं ॥१६॥

छप्पय

जे मुनि दीन दयाल बरत शीलादिक मण्डित ।
दरसावन शुभ पन्थ तने ए दीय अखण्डित ॥
गुरुही बन्धू जान गुरू भवि दधि के तारी ।
इनकी निन्दा करे जगत में पापाचारी ॥
ते बहु विध के दुख लहैं, जगत विषै नैनों दिखे ।
तातें बुध जन गुरु सदा, आराधो छिन छिन चिखे १७॥

दोहा

इस अन्तर नृप मोहवस, आयो तियके पास ।
देखे सब तन कुष्टयुत, अति विरूप अघरास ॥ १८ ॥

छन्दचाल

तब नृप मन एम विचारी । संसार भोग दुखकारी ।
ततछिन कानन में जाई । दीक्षा लीनी सुखदाई ॥ १६ ॥
अरु वह पापिन दुख लीना । संसार भ्रमण बहुकीना ।
निश्चयकर मनमें आनो । इहपाप पुन्य फल जानो ॥ २० ॥
संसार चरित्र विचित्रं । ताको देखो तुम मित्रं ।
भगवतकर भाषी बानी । जो स्वर्ग मोक्ष सुखदानी ॥ २१ ॥
ताको हिरदे में धारो । सुख हेत न छिनक विसारो ।
इह पूरन कथा भई है । ब्रह्म नेमीदत्त कही है ॥ २२ ॥

इति श्रीआराधनासारकथाकोष विषयसुदत्तनृपकी कथा समाप्तम् ।

अथ संसारीजीव दृष्टान्तकथा नं० ३४

मंगलाचरण । अडिल्ल ।

संसारा बुध तारनको बरसेतहै । ऐसो श्रीसर्वज्ञदेव सुखहेत

है। तिनको नमि संक्षेप धर्म्म भाषूं कथा। जग जीवन को जो चरित्र दुखमें यथा ॥ १ ॥

चौपाई

कोई पुरुष अटवी में जाय। तहां सिंह देखो दुखदाय।
तासों डरकर भगा तुरन्त। अन्धकूप इक लखो महन्त ॥२॥
तामें लता पकड़ लटकाय। तहां कंठीरव पहुंचो आय।
कूप निकट इक विटप निहार। ताकी सिंह हलाई डार ॥३॥
तहां सरघाको हुतो मुहाल। या तन दुखित कियो तत्काल।
मधुकी बूंद तहां ते पड़ी। इस आननमें तिसही घड़ी ॥ ४ ॥
लता पकड़ राखी इन करे। काटत स्याम स्वेत उंदरे।
नीचे चार सरप मुख फार। तिष्ठे याकी ओर निहार ॥ ५ ॥
तिस अवसर में एक खगिन्द। आकर वचन कहे सुख वृन्द।
हो मानुष मुझ दुःख छुड़ाय। लेहुं निज विमान बैठाय ॥६॥
तिस वच सुन यह महा अयान। कहतभयो लोभी निज यान।
एक बूंद मधुकी सुखदाय। मुझ मुखमें पड़नेदे भाय ॥ ७ ॥
इतने याही ठौर मँझार। खड़रहो विद्याधर सार।
तब खग वच सुन कीने गौन। अब इसकारन हारो कौन ८।
जे विषयनके पास ठगाय। ते हित अनहित नाहिं लखाय।
जैसे कूप विषे जन जान। मधुकी बूंद चाख सुखमान ॥९॥
खग काढ़ेयो इस दुख टार। याने निज हित नाहिं निहार।
तैसेही जन विषयाशक्त। अघन सुखमें रहें जुशक्त ॥ १० ॥
तिनको गुरु देवें उपदेश। तोभी चितमे धरे नलेश।
अंधकूप संसार निहार। काल रूपके हरवल धार ॥ ११ ॥
मार्ग्यो है परिवर के जीव। चारों गत ये सर्प सदीव।
श्रीगुरु विद्याधर समजान। काढ़ै दुखतें कहि निज यान १२ ॥

तो पश्‍ा दुरगति जाको होय । शुभ मारग में लगे न सोय ।
याते गुरुबच धारो चित्त । जातैं शुभ गत पावो मित्त ॥ १३॥

दोहा

तातैं इस संसार में, महा कष्ट दातार ।
जहर अन्न दुरजन जिसो विषय सुःख जुनिहार १४
ऐसे उरमें जानकर, भगवत भाषित धर्म ।
कोड़ो सुख दातार जो, नासें सबही कर्म ॥१५॥
ताको निश्चल भावधर, आराधो उर माँहैं ।
अपनो चाहो जो भलो, याको विसरो नाहिं ॥१६॥
संसारी सुख दुख तनो, दीनो यह दृष्टान ।
सुनके भविजन चित धरो, करो सुनिज कल्यान ।१७।

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषय ससारी जीव दृष्टान्त
दर्शन कथा समाप्तम् ॥ ३४ ॥

अथ चारुदत्तसेठकी कथा प्रारम्भः ३५

मंगलाचरण ॥ सोरठा ॥

देवनकर पूजन्त, प्रभुके चरन सरोज ।
कबिनमि कथा भनन्त, चारुदत वर सेठकी ॥१॥

पद्धडी

चम्पापुर नगरी अति रसाल । तहँ सूर सेन नृप है विशाल ।
ताके इक सेठ जु भान नाम । तागेह सुभद्रा नाम भाम ।२।
सो पुत्र हेत पूजे कुदेव । बहु भांति करे ताकी जु सेव ।
तौ भी सुत नहिं भयो सेठभौन । कुश्चित् सुरते लहि सिद्धकौन ।३।
इक दिन सुख थान जिनेश धाम । बंदनको पहुंची सेठ बाम ।
तहं जुग चारन मुनि अति दयाल । बंदे सेठानी नाय भाल ।४।
फिर बच भाषे इन दुःख लीन । हो स्वामी तुम जगमें प्रवीन ।

मोको नप श्री होवेक नाह । प्रभु भाषो जो संशय पलाय ।५।
इसके तब मुनके ज्ञान चक्षु । याके मनकी जानी प्रत्यक्ष ॥
तब कह्यो सुता सुनले अबार । मिथ्या मतको तू सब टार ।६।
तेरे सुत होवेगो महान । त्रिभुवन सुख दाता ज्ञानवान ॥
इह निश्चयकर निज चित्त माहिं । यामें संशय रंचक जु नाहिं ।७।

दोहा

श्री मुनिवरके वचन सुन, नमन कियो सिर नाय ।
यह सेठानी हर्षयुत, तबही निज गृह आय ॥८॥
ता पीछे भगवत कथित, धर्म गह्यो धर राग ।
केते यक दिनके विषय, पुत्र भयो बड़ भाग ॥९॥
गुण उज्वल धीमान अति, चारुदत्त तिस नाम ।
उत्सव कीनो सेठजी, नगर विषय अभिराम ॥१०॥

चौपाई ।

गुण युत वृद्ध भयो इह बाल । जग माहीं है पुन्य रसाल ॥
या करके क्या क्या नहिं होय । दिन दिन मंगल तावर जोय ।११।
सर्वारथ नामा इक भाम । मित्रवती पुत्री तिस धाम ॥
ताकूं चारुदत्त बुधवान । ब्याहत भयो तात हट ठान ॥१२॥
तो पण भी यह आतम शुद्ध । तिय सेवन से धारे बुद्ध ॥
तब इस मात सुभद्रा जेह । पुत्र मोह वश कीनो नेह ॥१३॥
जे जन वेश्यामें थे लीन । तिनके संग पुत्र को कीन ॥
तब वे खोटे संग पसाय । मूढ़ भयो [illegible] ॥१४॥
जो धीमान करे नहिं भूल । खोटे संग पाप को मूल ॥
चारुदत्त गणिका के बास । [illegible]
चौदह महस दीनार [illegible]
इक दिन तिनके [illegible]

दोहा

गणिकाकी माता तबै, लख आभूषण येह।
पुत्री से कहती भई, अबमम बच सुन लेह ॥१७॥
चारुदत्त धन रहित अब, इसते तज तू प्रीत।
लक्ष्मी जुतते नेह कर, जो हम कुलकी रीत ॥१८॥

चौपाई

ऐसे सुन गणिका तिह बार। यासों छोड़ दियो तब प्यार।
लोक बिषय यह है परतच्छ। गणिका निर्धनकों नहिं इच्छ ।१९॥
नगर नायकाको तज धाम। आयो निज गृह जहांथी भाम ॥
ताके आभूषण कछु लेह। मातुल पास गयो कर नेह। २०।
ताजुत चलो बनजके हेत। देश उलुरबल मांहि सचेत ॥
जहां मृसरावर्त सुनाम। नगर बसतहै अति अभिराम ॥२१॥
तहां कपास खरीदी जाय। चलत भये बोरे भरवाय ॥
ताम्र लिप्त नगरी को जात। पथमें अगन लगी दुख दात ।२२।
ताकर भस्म भई जु कपास। जब यह चितमें भयो उदास ॥
पुन्य बिना उद्यम नहिं सिद्ध। क्योंकर पावे प्रानी रिद्ध ॥२३॥
चारुदत्त धर चित उद्वेग। मातुल पूछन गयो यह बेग ॥
जहां समुद्रदत्त इक सेठ। बैठो प्रोहन ताके हेठ ॥ २४ ॥
ता संग पवन द्वीपमें जाय। कष्टथकी बहु द्रव्य उपाय ॥
आवेथो निज गेह मझार। पाप उदय तिस भयो अपार ॥२५॥
वारिध में प्रोहन फटगई। भई सोई बिधना निर्मई ॥
ऐसे सप्त वार फट पोत। पुन्य बिना किम प्रापत होत ॥२६॥
आप बचो कछु पुन्य बसाय। हुती जु इसकी पूरन आय ॥
गुरु बच सम इक लकड़ी खण्ड। पाकर वारिध तिरो अखंड।२७॥
राज ग्रहीके पथको चलो। तहँ इक धूरत याको मिलो ॥

विष्णु मित्र परिव्राजक दुष्ट । याको लखि बोलो वच मिष्ट ॥२८॥
मम वच सुन तू पुत्र उदार । अबही चलियो मेरी लार ॥
अटवीमें परबत है कूप । ताको जान रसायन रूप ॥ २९ ॥
सो तोकूं मैं देहूं अबै । जाकर दारिद नासै सबै ॥
ताके वच सुन याने कही । वेग तात दिखलाओ सही ॥ ३० ॥
धन लोभी प्राणी जग माहिं । दुरजन पास ठगायो जाहिं ॥
विष्णु मित्र दंडी तिह बार । याको लेय गयो निज लार ॥३१॥
भू भ्रत यह वह कूप दिखाय । इक तूंबो ईस करमें दाय ॥
छींके में बैठाय उतार । रस्सी पकड़ गयो जहां बार ॥ ३२ ॥
तहां एकथो बहु दुख लीन । ताने याकूं मने सु कीन ॥
चारुदत्त पूछी तू कौन । क्यों यहां पड़ो कहां तुझ भौन ॥३३॥

दोहा

कूप विषयको मनुष्य तब, बोले वच तिह ठाम ।
उज्जैनी नगरी रहूं, धनदत्त वाणिक नाम ॥ ३४ ॥
सो हम सिंगल द्वीपको, गये करन व्योहार ॥
आवत मो प्रोहण फटो, मैं बच आयो पार ॥३५॥
इस परिव्राजक दुष्टने, एही लोभ दिखाय ।
तूंको देकर कूपमें, दियो मोय उतराय ॥३६॥
तब मैं तूंबो रस भरो, लीनों याने खींच ।
दूजी बर मोहि काढ़ते, काट दियो अध बीच ॥३७॥
सो मैं अन्धे कूप में, पड़ो महा दुख लीन ।
रस पीवत काया गली, होहि प्राण अबछीन ॥३८॥

काव्य

ऐसें सुनकर चारुदत्त इम गिरा सुनाई ।
क्यों रस भरा तूंबा इम अबै देसी नहि भाई ॥

तब वाने इमि कही अबै जो रस नहिं देगो।
फेंकूंगो पाखान पड़ो यहां दुःख सहेगो ॥ ३९ ॥
ऐसे सुनकर चारु दत्त कीनी चतुराई।
तूंबो रसको भरो तास को दियो खिंडाई ॥
सो उन खैंचो बेग फेर रस्सी लटकाई।
चारु दत्त पाखान तास में दिये बंधाई ॥ ४० ॥

दोहा

आप कूप में जतन ते, तिष्ठो चिंता वान।
परिब्राजक रस्सा तबै, काढ़ो जुत पाखान ॥ ४१ ॥
जात भयो निज धाम को, ले रस बहु सुखदाय।
कूप विषय के पुरख ते, चारु दत्त बतलाय ॥ ४२ ॥

पद्धडी

हो भ्रात अबै मोको बताय। कोई भी जीवनको है उपाय॥
जो मोहि बतावे तू अबार। तो मैं तोहि देहूं धर्म सार। ४३।
इमि कहकर शुभ नवकार मंत्र। सुर शिवदायक दीनो तुरंत॥
सन्यास तनी बिधको बताय। ताने गह लीनी चित लगाय।४४।
तब चारुदत्तें इम कहंत। तुम पुरुष बिचक्षण बुद्धिवंत।
यां रस पीवन इक गोह आत। अबतो गई आवेगी प्रभात।४५।
ताकी तुम पूंछ गहो महान। ताकर बाहर निकसो सुजान॥
ऐसी सुनकर तब चारुदत्त। गुण उज्जल चितधारी पवित्त।४६।
सो गोह पूंछ गाढ़ी गहाय। बाहर निकसो छिलगई काय॥
अटवीमें पहुंचो दुःख लीन। इच्छा पूर्वक फिर गमनकीन।४७।

चौपाई

याके तात तनो जो भाय। रुद्रदत्त तहं मिलो सो आय।
कहत भयो सुन पुत्र अबार। तुम चालो अब हमरी लार।४८।

रतन द्वीप सोहै विख्यात । तहां चलैं हम तुम मिल सात ॥
इम कहि धन लोभी अधिकाय । बकरेकी तब पीठ चढ़ाय ॥४९॥
भू मृत मारग कीनो गौन । भाल लिखो सो मेटे कौन ॥
पहुंचे यह पर्वतके भाल । बोलो रुद्रदत्त विकराल ॥ ५० ॥
अहो पुत्र तू अब सुन लेह । दोनो अजकी हनिये देह ॥
तिनकी खाल विषय इहिवार । भीतर पैठे लय कटार ॥ ५१ ॥
रतन द्वीपते पक्षी आय । पल भक्षी भेरुंड इहां आय ॥
सो हमको ले जावे सही । रतन द्वीपकी पटके मही । ५२ ।
ऐसे पापरूप बच कहे । तो पापी चारुदत्त नहिं गहे ॥
संत जननमें भीड़ जु पड़े । तो पण दुराचार तें डरे । ५३ ।
रुद्रदत्त इह दुष्ट अयान । युग बकरे के नासे प्रान ।
जे अति दुष्ट निर्दयी चित्त । क्या क्या काज करें नहिं नित्त ।५४।
मरतो अज तिन देखो जबै । चारुदत्त इह कीनो जबै ॥
ताको मंत्र दियो नवकार । मरन समाधि करायो सार । ५५ ।
धर्मी जनकी है यह रीत । पर उपकार करे यह नीत ॥
तब दोनों पैठें खां घड़ी । द्वै भेरुंड आय तिस घड़ी । ५६ ।
चोंच विषय धर चले तुरंत । अंबुध ऊपर गमन करंत ॥
और भेरुंड पहुंचे आय । इन सेती वे युद्ध कराय ॥ ५७ ॥

दोहा

रुद्रदत्त की भोंथडी, पकरी भेरुंड तुरन्त ।
सो वारिध में गिर पर्यो, खोटी योनि लहन्त । ५८ ।
पापी शुभ गति नहिं लहे, इह भाषी भगवान ।
तातें शुभ कारज करो, जो चाहो कल्यान । ५९ ।

सोरठा

चारुदत्त गुन खान, ले भेरुंड पहुंचत भयो ।
रतन द्वीप तत्काल, बरनन तुम [illegible]

लगो विदारन सोय, चारुदत्त निकसो तबै।
भागो खग इस जोय, चित्त में डर बहु धारि के ॥ ६१ ॥

दोहा

पुन्यवान जन जगत में, लहे सुःख अधिकाय।
दुख दाता दुरजन जु हैं, हितकारी हो जाय। ६२।

पायता

तिस भू भृत सीस खरे हैं। आतापन जोग धरे हैं।
ऐसे मुनि दीन दयालं। लख चारुदत्त तिह हालं ॥ ६३ ॥
तिनके चरनो ढिग आयो। बहु विधि ते सीस नवायो॥
मुनि पूरन जो सु कीने। बच चये महा हित भीने। ६४।
हे चारुदत्त गुण मण्डित। तेरे हैं कुशल अखंडित।
तिन बच सुन हर्ष सुधारो। फिर चारुदत्त उच्चारो ॥ ६५ ॥
हे मुनि में दास तुम्हारो। मोकूं किस ठौर निहारो।
तब कहत भये मुनि ज्ञानी। तुम सुनो चतुर मम बानी ॥६६
मैं अमित खगेश्वर नामा। विजियारध पै मम धामा।
इक दिन चित हर्ष उपायो। चम्पा नगरी ढिग आयो ॥६७॥
शोभायुत कदली कानन। तिस लखकर फूलो आनन।
सङ्गनार बसंत सिरी थी। ताजुत वां केल करीथी ॥ ६८ ॥
तहां धूमसिंह खग आयो। मोतिय लखि चित्त लुभायो।
अपनी विद्या परकाशी। मोहि कील दियो दुखरासी ॥ ६९ ॥
मेरी भामा हरलई जबही। गयो अम्बर माहीं तबहीं।
तबहीं मम पुन्य पसाये। तुम क्रीड़ा को तहँ आये ॥ ७० ॥

दोहा

मैंने तुझको देखकर, करी समस्या येह।
त्रियगुटिके मम पास है, ताको तू अवलेह ॥ ७१ ॥

पीस लगा मम तन विषय, तौ छोड़ूं तत्काल ।

सो तुम सबही विधि करी, हे सुन्दर गुणमाल ॥ ७२॥

चौपाई

तबही शल्य निकस मम गई । सब शरीरमें साता भई ।
जैसे गुरु की गिरा महान । सुनते असत तनी है हान ॥७३॥
फिर मैं अष्टापद गिर जाय । धूमसिहते जुद्ध कराय ।
अपनी तिय लायो छुड़वाय । फिर तुमपै आयो हरषाय ॥७४॥
मैं तुम स्तुतकर कही जु मित्त । वर मांगो जो चाहो चित्त ।
तुमने कहि कछु मांगूं नाहिं । सुखी भयो तुमदर्शन पाहि ७५.
सतपुरुषनकी है यह बान । कर उपकार न मांगे दान ।
तिस पीछे मैं गयो तुरंत । अपने धाम विषै हरषन्त ॥ ७६ ॥
दक्षिण श्रेणी में शुभ ग्राम । शिवमंदिर नगरी अभिराम ।
तामें राज कियो मैं वीर । बहुत दिनन तक साहस धीर ७७
फिर मेरे उपजी यह चित्त । है सबही संसार अनित्त ।
तब निज सुत लीने बुलवाय । नाम सिंह जस ग्रीव बराय७८
दोनोंको देकर सब राज । मैं आयो वनमें तप काज ।
जो संसार उतारो पार । ऐसी जिनवर दीक्षा धार ॥ ७९ ॥
तप बलपाई चारन ऋधि । गगन गामिनी जो परसिद्ध ।
अब तिष्ठं इस परबत बीच । ध्यान धार नाशों अघ कीच ८०

दोहा

इह वृतान्त सुन सेठ सुत, है खुशाल धीमान ।

बहु थुति मुनिवर की करी, तिष्ठो नाहीं थान ॥८१॥

ताही छिन मुनिसुत जुगम, आये वन्दन हेत ।

चारुदत्तकी सब कथा, तिनने कह जगहेत ॥८२॥

काव्य

अरु ताहीछिन मांहिं एक चरसुर तहँ आयो।
चारुदत्तके चरन कमलको शीश नवायो॥
सेठ पुत्र तब कही सुनो चरसुर गुनधारी।
नमनकियो मोहि आय कहौ यह कौन विचारी ८३
विद्यमान गुरु पास होत तुम कौनहि लायक।
तब चतुरोत्तम देव कहे सुनिये मुक्त बायक॥
मोको बकरो जान हुतो परबत पै स्वामी।
रुद्रदत्तने प्राण हने मैं दुख तहँ पामी॥ ८४॥
तुम दीनों नवकार मंत्र सन्यास करायो।
ता प्रभाव कर प्रथम स्वर्ग में सुरपद पायो॥
इस कारनते आन चरन मैं वन्दे थारे।
शुभ मारग दरशाय दियो तुम गुरू हमारे॥ ८५॥
ऐसे कहकर त्रिदश धरम अनुराग धार चित।
बस्त्राभूषन लाय चारदत को पूजो नित॥
फेर नमनकर स्वर्ग गयो वह तिसही बारी।
सुर असुरन करि पूज होय जे पर उपकारी॥ ८६॥

दोहा

तिसपीछे वे मुनि तनुज, गुरुको सीस नवाय।
बनिक पुत्रको संगले. चम्पा नगरी आय॥ ८७॥
रतनादिक बहु विधि दिये चारुदत्तको सार।
नमस्कार करके तबै, गये सुनिज आगार॥ ८८॥

चौपाई

जे प्रानी हैं पुन्य निधान। तिनको दुर्लभ कुछ नहिं जान।
सबही सुल्लभ सुखदाय। तातैं धरमकरो अधिकाय॥ ८९॥

चार प्रकार दान नित करै । श्री जिनपूजनमें चित धरै ।
व्रत शील कल्याण निमित्त । बुद्धिवान मनधारै नित्त ॥९०॥
भान सेठ शुभ जाको तात । भली सुभद्रा ताकी मात ।
तिनके सुतको आवत जान । भये खुशी पुरजन अधिकान ९१
चारुदत्त निज पुन्य बसाय । भोगे भोग महा सुखदाय ।
श्रीजिन भाषितधर्म अराधि । कियो विचार अब तजों उपाधि ९२
सुन्दर नामा सुत शुभ धार । ताको निज पद दे तिहबार ।
आपधरी दीक्षा तत्काल । धर सन्यास मरण गुणमाल ९३॥
शल्य रहित ह्वै मन वच काय । स्वर्गलोकमें बहुरि पठाय ।
नाना विधिके तहँ शुभ भोग । भोगतभये पंचेन्द्री जोग ॥९४॥
मेरु सुदर्शन आदिक धाम । तहँ यात्रा यह करै ललाम ।
अरु तीर्थंकर देव महान । समो शरनयुत ज्ञान निधान ।९५।
तिनकी बानी सुधा समान । ताको यह सुर करै सुपान ।
इत्यादिक है धर्म सुरक्त । सुखतें तिष्ठे जिनवर भक्त ॥ ९६ ॥

मत्तगयन्दसवैया

भगवत धर्म सार संतजन हिये धार ताको करो बार बार हितकारी जान के । देव इन्द्रचन्द्र नागेन्द्र खगाधीश नर सेवैं इसहीको नव भक्ति हिये ठानके ॥ महा जो पवित्र येह स्वर्ग मोक्ष सुखदेह याहीसों करो सनेह सर्व मोह हानके । सोई धर्म नित प्रति मंगलकरो सदीव ब्रह्मनेमिदत्त कही कथा अस भानके ।

दोहा

चारुदत्त वर सेठकी, कही कथा इह सार ।
भव्य जीव बांचो सुनो, करो सु पर उपकार ॥ ९८ ॥

इतिश्री आराधनासार कथाकोष विषे चारुदत्तसेठकी कथा समाप्त ।

अथ पारासर तपस्वीकी कथा प्रा० ३६

मंगलाचरण सोरठा ।

भगवन्त को सिरनाय, कहूं कथा लौकीक की ।
सुमन सुनो चितलाय, पारासर तापस तनी ॥ १ ॥

चौपाई

गजपुर नगर विषै तिस बास । गंगज भट धींवर अघरास ।
डारे जाल जु गंगा आन । सफरी पकड़ि हने तिन प्रान । २ ।
इक दिन मच्छी कूख मझार । कन्या निकसी रूप अपार ॥
तिस बपुमें दुरगंध जु आत । सत्यवती तिस नाम कहात । ३ ।
मिथ्या शास्त्र विषै जो कही । सो सब झूंठ जान यह सही ॥
इक दिन धींवर घरके हेत । चलो सुता तज नाव समेत । ४ ।
तहं तापसि पारासर आय । मारग देख दुखी तिस काय ॥
नदी पार जाने के काज । कन्या से बोलो तज लाज ॥ ५ ॥
हे सुंदरि मोहि सरिता तीर । कीजे बेग न लागे ढीर ।
तब वाने याकू बैठाय । नाव चलाई देर न लाय ॥ ६ ॥
तब कन्याको देखो अंग । पापी के तन जगो अनंग ॥
कहत भयो सुन्दर सुनि सार । मोकूं कीजे अंगीकार ॥ ७ ॥
सत्यवती बोली मत मन्द । नीच जात मैं तन दुरगन्ध ॥
मुझ स्पर्श कीजे नहि नाथ । तुमहो तापस जग विख्यात ।८।
नित्य करो गंगा असनान । तर्पन आदिक सकल विधान ॥
याते मुझ मन डर अधिकाय । पीप लगे सो कहो न जाय ।९।
तब पापी पारासर नाम । अपनी विद्या ते तिस ठाम ॥
ताके तनकी हर दुर्गन्ध । फल सादृश बपु करी सुगन्ध ।१०।
फिर नारी बोली कर जोर । जन देखत हैं चारों ओर ।
काम अंध तब धूंओ कीन । वेदी रचकर ब्याहसो लीन ।११।

काम केल कीनी तासंग । सुखी भयो बहु संग अनंग ॥
ताही दिन इक पुत्र सुभयो । व्यास नाम ताको निरमयो ॥१२॥
सूत्र जनेऊ जटा सोहन्त । भयो वादकी लिये सुकंत ॥
करी तातैं चरचा घनी । ताको जीत बुद्ध तिस हनी ॥१३॥
अन्य मती इम वर्णन करैं । जिन मत वाले चेष्टा धरैं ॥
ज्ञान नेत्र जे सम्यक वान । तिनके किम आवै सरधान ॥१४॥
जैसे मद पीकर नर कोय । विना लाज बोलत है सोय ॥
तैसे कहैं कुवादी बैन । पोषैं असत सदा दिन रैन ॥१५॥
ताको सुनकर विदुधन जेह । चित मन लाओ तजो सनेह ॥
करो सदा गुणिजनको संग । भगवत मतको गहो अभंग ॥१६॥
जिन भाषित तिन सुनो पुरान । शुद्ध पवित्र करो अधिकान ॥
इह पारासर तापसि तनी । कथा कही जिन अनमत भनी ॥१७॥

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषय पारासर तापसिकी लौकिक कथा समाप्तम् ॥

अथ सातक मुनितैं रुद्रके उत्पन्न होनेकी

कथा प्रारम्भः नं० ३७

मंगलाचरण ॥ अडिल्ल ॥

केवल ज्ञान विशाल नेत्र धारक सही ।
तिनको करूं प्रणाम सीस नाऊं मही ॥
रुद्र सत्व की तनी कथा सुखकार जी ।
बरनत हूं चित लाय सूत्र अनुसार जी ॥१॥

पद्धड़ी ।

रमणीक देश गन्धार नाम । तहं नगर महेश्वर पुन्य धाम ॥
ताको सत्यंधर है नरेश । तिस नारि सतवन्ती नाम वेश ॥२॥
तिन दोनोंके संयोग पाय । सात्यिक नामा सुत भयो आय ॥

सो राज कलामें अति प्रवीन । बिन विद्या राज थंभे नहीन ॥३॥
अब सिंधु देश एक और जान । तामें विशाल पुर है महान ॥
ताको चेटक नामा नरिन्द्र । नित भक्ति ठान सेवे जिनिंद्र ।४।
तिसके व्रत मंडित शुद्ध काय । वर नाम सुभद्रा नार थाय ॥
तिनके भई तनुजा सात आन । जिनके अव नाम करूं बखान ।५।
प्रिय कारनि नाम महा पवित्त । दूजी मृगावती शुद्ध चित्त ॥
अरु तृतीय शुभ प्रभा जान लेहु । चौथी प्रभावती सुगुन गेहु ।६।
है सती चेलना जग विख्यात । षष्ठी जेष्टा परियन सुहात ॥
सप्तमी चंदना शीलवन्त । तिस महिमा वरनन नहीं अन्त ।७।

दोहा

इस अन्तर श्रेणिक तनुज, अभय कुमार बुधेश ।
नासक मारग चेलना, लेय गयो निज देश ॥ ८ ॥
जेष्टा भूषण लोभ तें, आई उलटी ताम ।
दुखी होय निज चित्तमें, तिष्ठी अपने धाम ॥ ९ ॥

चौपाई

नाम यशस्वती अर्जिका पाय । जेष्टा दीक्षा लीनी जाय ॥
अब सात्यकी भूप सुन जेह । जेष्टामें ताको अति नेह ॥१०॥
दीक्षाके पहले इस साथ । हुती सगाई कीजो बात ॥
अब सुन लीनी भूपति पुत्र । वाके दीक्षा लई पवित्र ॥ ११ ॥
तब यहभी चित होय उदास । गयो समाध मुनीश्वर पास ॥
तिनके चरन कमल नम सार । दीक्षा इन लीनी तत्कार ॥ १२ ॥

दोहा

इक दिन वीर जिनेश के, वन्दन चले महान ।
यशस्वती व्रतकादि सब, जावें थी हित ठान ॥१३॥
पथ में अटवी के विषय, बिना समय भई वृष्टि ।
जहँ इक काल गुफा विषय, सात्वक मुनि तहँ तिष्ट॥१४॥

चौपाई

अब जेष्ठाजी आजी जोय। चरणातैं अति व्याकुल होय ॥
काल गुफा में गई तुरन्त। इन जानों स्थान इकन्त ॥ १५ ॥
अपनी इच्छातैं जिन धार। निज साड़ीको लय उतार ॥
जभी निचोरन ताको जबै। मुनि सात्यकने देखी तबै ॥ १६ ॥
पाप उदै आयो तिस घोर। मन विह्वल ताको भयो जोर ॥
तिस तन रूपी वन्ही पाय। शील रतन इन दियो जलाय ॥ १७ ॥
हाय हाय इह कष्ट महान। काम अंध क्या क्या नहिं ठान ॥
तब यशस्वती व्रतका सार। याकी चेष्टा सकल निहार ॥ १८ ॥
तबही इसको ले निज लार। गई चेलनाके आगार ॥
याको तहां बिठावत भई। गरभ तनी बातें सब कही ॥ १९ ॥
तबै चेलना बहु दुःख पाय। याको राखी धाम छिपाय ॥
जे सम्यक दृष्टी अधिकान। परके दोष छिपावें जान ॥ २० ॥
जेष्ठा के बीते नव मास। तबै पुत्रको भयो प्रकास ॥
नृप श्रेणिक मन मांहि विचार। उपग्रहन गुण जगमें सार ॥ २१ ॥
प्रकट कियो पुरमें गुण गेह। भयो चेलनाके सुत येह ॥
बालक तज भगिनीके भौन। जेष्ठा कानन कीनों गौन ॥ २२ ॥
कितने दिन पीछे यह बाल। वृद्ध होत मतभर विकराल ॥
मूल कटुक जातरु को होय। ताके फल मीठे किमि लोय ॥ २३ ॥
रुद्र भाव इह बहु विधि धरे। पर पुत्रन को ताड़न करे।
धारो रोस चेलना मात। रुद्र नाम इस कियो विख्यात ॥ २४ ॥
फेर कियो इन और अन्याय। चेलन अरूपधर पुम कहाय ॥
यह पापी पर्त उपजाय। हमको दुख दीनों इह आय ॥ २५ ॥

दोहा

ऐसी सुनकर रुद्र तब, मन में कियो विचार।
यह कारन कछु और है, सो करनो निरधार ॥ २६ ॥

भूप निकट तब जाय कर, हठतें पूछन कीन ।
कौन हमारो तात है, सो भापो परवीन ॥ २७ ॥
नर नायक बिरतान्त सब, याको कहो सुनाय ।
इह सुनके ताही समय, जान तात अरु माय ॥ २८ ॥

काव्य

पिता पास तब जाय लई दीक्षा सुखकारी ।
ग्यारह अंग दश पूर्व तनैं पहुंचो पढ़ पारी ॥
अति तप के परभाव महा विद्या तहं आई ।
पांच शतक परमान सात सौ लख सुखदाई । २९ ।
हुई रुद्र को सिद्धि लोभ वश भयो अयानो ।
कीनी अंगीकार देख शिध को ललचानो ॥
लोभ जगत में है प्रत्यक्ष दुख दायक भाई ।
सो कैसे सुख देय बेद मांही इमगाई । ३० ।
विद्या जुत गोकर्ण नाम परवत पै आयो ।
तहँ तिष्ठो धर ध्यान अतापन जोग लगायो ॥
इसको तात बिख्यात सात्वक मुनि सुखदाई ।
ता बन्दन के हेत भव्य आवें समुदाई । ३१ ।
तिहको लख इह रुद्र भयानक रूप बनायो ।
सिंह ब्याघ्र तन धार त्रास उनको उपजायो ॥
इह सुनके बिरतान्त सात्वकी मुनि उच्चारे ।
अहो कष्ट दातार वृथा चेष्टा मत धारे । ३२ ।

दोहा

अहो कुबुद्धी नार वश, करि है तू तप हान ।
ऐसे गुरु ने बच कहे, तोउ तजी नहिं बान । ३३ ।
वाही बिध सब जननको, देकर कष्ट डरात ।
पापी जन के चित्त में, गुरु बच नाहिं समात । ३४ ।

चौपाई

तिस पीछे यह रुद्र अयान । नाष्टापद गिरि तिष्ठो आन ॥
आतापन तहं जोग लगाय । कौतुक चित्त धरे अधिकाय ।३५।
अब हेमाचल दक्षिण श्रेणि । मेघ निबद्ध नगर सुख देन ॥
मेघनि चमपुर दूजो जान । मेघन नाद नगर पहिचान ।३६।
तीनों नगरी को भूपाल । नाम कनकरथ है असिराल ॥
मनोरमा रानी तिस गेह । जुग सुत उपजे सुंदर देह ॥ ३७ ॥
पहिलो देवदार शुभ नाम । विद्युत जित दूजो अभिराम ॥
मह विद्या अरु रूप सुभाग । ताकर मंडित यह बड़ भाग ।३८।
इक दिन राय कनकरथ आप । जानो सब संसार अताप ॥
देवदार सुतको निजराज । हर्ष सहित देकर महराज ॥ ३९ ॥
आप गयो गणधर मुनि पास । जिन दीक्षा लीनी सुखरास ।
भवि जीवनको तारनहार । ध्यानधरो आतम हितकार ४० ॥
देवदार खगराज करात । अब ताको जो है लघु भ्रात ।
ताने बल पायो अधिकार । बड़े भ्रातको दियो निकार ॥४१॥
सो इह मानभंगको पाय । चलकर अष्टापद गिर आय ।
जिस कुटुम्ब में होत कलेश । ताको सुख व्यापत नांहिलेश ४२
याकर कौन कौन नहिं नष्ट । होत भये पायो बहु कष्ट ।
तिसकी कन्या आठ मनोग । रूप सम्पदा कर अति जोग ४३
मंजन हेत गई तत्काल । वे आठों कन्या गुणमाल ।
वस्त्राभूषण तट पै धार । पैठी नग्न तड़ाग मझार ॥ ४४ ॥
तिनको देख्यो रुद्र अयान । कामअंध हुवो अधिकान ।
अपनी विद्या को परकाश । उनके वस्त्र मंगाये पास ॥ ४५॥
तब वे कन्या कर अस्नान । बाहर पट नहिं देखे आन ।
अति व्याकुल चित विस्मय लई । इस मुनितैं तब पूछत भई ४६

हो मुनि पट भूषण इंहि ठांय। हमरे किसने लिये चुराय।
शीघ्र बताओ हमको अबै। दुःखित नगन काय हम सबै ४७

दोहा

पाप उदयतें आपदा पड़े जनन पै आय।
तामें लज्जा ना रहे सबही देय गमाय॥ ४८॥
तबै रुद्र ऐसे कही, पट भूषण दूं सार।
मोकूं सुन्दर या समय, करे जु अंगीकार॥ ४९॥

पद्धड़ी

तब कन्या बोली सुन मुनिन्द्र। हमरे हैं तात बड़े नरिन्द्र।
वे तुमको नहिं देवें जु तूठ। तो वचन हमारो होय झूठ ५०॥
जो देवैगो तुमको नरेश। तो हम इच्छें तुमको महेश।
तब याने वस्त्राभरणसार। सबको दीने ताही सुवार॥ ५१॥
सो कन्या आई गृह मँझार। निज तात प्रती सबही उचार।
सुन देवदार खग बैन येह। जानी वे विद्या मुनि सुगेह ५२॥
तबहीं कारजमें जे महान। ताढिग भेजे अपने प्रधान।
सो कहत भये सुनिये दयाल। सो राज हमारो है विशाल ५३
इस नरपति को लघु भ्रात सोय। ताको हनके दिलवाय दोय।
तो हम सब कन्या देय ब्याह। तुझ संग माहिं करिके उछाह ५४

दोहा

ऐसे बच सुन मुनि कहो, सरब करूं मैं काज।
कामी जन जे पापजुत, तिनको कैसी लाज॥ ५५॥

चौपाई

वे विद्याधर इस बच मान। आन भूपतें सबै बखान।
जाको भिष्ट होतहै राज। कौन कौन सो करत न काज।५६।
शान्तीतन अष्टापद छाड़। विद्यावल पहुँचो वैताड़।
विद्युत जित खगको इन मार। ताको राजलये तत्कार॥५७॥

देवद्वार को कियो तुरन्त । नगर तीनको राज महन्त ।
महादेव फिर नाहीं हरी । कन्या आठों नृपकी वरी ॥ ५८ ॥
और खगनकी सुता अपार । व्याहत भयो हर्ष चित धार ।
याको वीरज अति बलवान । तीव्र काम नल पातल जान ५६
जातिपकैं इह सेवन करे । ताके प्राण ततक्षण हरे ।
तनुजा बहु भूपति की मरी । तापीछे इक गौभ वरी ॥६०॥
ताको भोगन भयो अभंग । रास्तन लिसे जवे अरधंग ॥
इन पापी ने बहुत नरेश । पीड़ित कीने तिनके देश ॥ ६१ ॥
जे दुरात्मा जग के बीच । शान्त अर्थ होवे नहिं नीच ॥
अब जो पारवती को पिता । अपने चितमें है दुखजुता ॥६२॥

दोहा

निज पुत्रीजुत रुद्रको, मारनको चित ठान ।
तब ऐसी चिन्ता भई, क्योंकर हनिये प्रान ॥६३॥
इम उपाय चितमें धरो, सेवत इह जब काम ।
तब त्रिया इस तन तजे, तिष्ठ औरे ठाम ॥ ६४ ॥

सोरठा

भूपति ऐस जान, सेवन काम लगो इमे ।
मारो त्रियजुत आन, रुद्र गौरजा को तबे ॥ ६५ ॥
जगमें पापी जेह, तिन के मित्र जु हैं सही ।
ते भी तजसे नेह, दुखदाई हो जात हैं ॥ ६६ ॥

पद्धरी

तब याकी विद्या सारी, निज स्वामी मरन विचारी ।
तब कोप कियो अधिकाई, बहु व्याधि प्रजा पर लाई ॥६७॥
सब दुखी भये अति भारी, जितने तहँ नर और नारी ॥
तब काहू रूप बनाई, मैं काहूं कहो सो भाई ॥ ६८ ॥

उस रुद्र तने लिङ्ग केरी, पूजा कीजे इक वेरी ।
जो शांति होय अधिकाई, वो चमा करैं हितदाई ॥६९॥
तब नगरी के जन सारे, कछु समझैं नाहिं विचारे ।
जानें इह देव सही है, तब सेवा बहुत गही है ॥ ७० ॥
लिंग पूजो तिसही ठांही, भई यहू चाल जग मांही ।
अब आचारज उच्चारें, तुम सुनो भविक हित धारें ॥७१॥

काव्य

देव इन्द्र खगधीश नमें तिन चरन आनकर ।
दोष रहित भगवन्त तिनों को मान देव वर ॥
अरु कुदेव सब जान जगत में राग द्वेष जुत ।
तिनको मिथ्या मान करो मत तुम कबही थुत ॥ ७२ ॥

छप्पय ।

सो भगवत जैवन्त प्रवर्तो भू के मांही ।
तीन भुवन के नाथ सदा पूजो हरषाई ॥
बहु निरमल गुण युक्त ज्ञान केवल शशि शोभित ।
सम्पूरन सुख रूप हरे संताप सु दुरगत ॥
सो ऐसे जिन चन्द्र मुझ, शांति अर्थ बरतो सदा ।
कवि नमन करे सिर नायके, दीजे मोहे सुख मुदा ।७३।

दोहा

कथा सात्वक मुनि तनी, तथा रुद्र की जान ।
पूरन कीनी अब सुनो, कर सम्यक शरधान ।७४।

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषय सात्यक मुनि कर
उत्पत्ति रुद्रकी कथा समाप्तम् ॥ ३१ ॥

अथ लौकिकब्रह्माउत्पन्नकथा प्रा० ३८

मंगलाचरण कवित्त ॥

तीन जगत पूजित आदीश्वर भये आदि ब्रह्मा अरिहन्त ।

तिनको नमकर कथा उचाहूं ऐसी मूढ़ लोक भापन्त ॥ देव पुत्र इक थाग्रा हूवो तिन विचार कीनो इह मन्त । इन्द्रादिक के पदको जीतों है नव में उत्कृष्ट महन्त ॥ १ ॥

एमें चिंतवन कर अटवी में दीरघ सुजपर ध्यान लगाय । चार हजार वरस अवनी पर पांव धिना तिष्ठो लवलाय ॥ अति दीरघ तप कीनो याने पवनतनो जुअहार कराय । तास महा तप ते मघवाको आसन कम्पो अति भयदाय ॥ २ ॥

चौपाई

इन्द्रादिक तब चिन्ता ठान । हमरो राज लेय इह आन ।
तातें अब कछु करे उगाय । जाकर तप याको डिग जाद ॥ ३ ॥
तबे सचीपति तिल तिल रूप । लब सुरयनको लियो अनूप ।
नारी एक रची निहधार । तिलोतमा धर रूप अपार ॥ ४ ॥
बहु गंधर्व किये तिस संग । गावें सुरजुत राग अभंग ।
सो चल आई ब्रह्मा पास । हाव भाव जुत नृत्य प्रकास ॥५॥
तब ब्रह्मा निज नैन उघार । देखी एक जु सुन्दर नार ।
तामें रक्त भयो बहु भाय । कामअंध देखी तिस काय ॥ ६ ॥
तब वह देवी जानन भई । कामशरपर वेधो सही ।
बाईं ओर सो कीनों नाच । तब ब्रह्मा रि तमें इम राच ॥७॥
तप हजार बरस को छोड़ । बाईं ओर कियो मुख मोर ।
ऐसे सब तप कियो विनाश । चतुरानन कीनों परकाश ॥ ८॥
तब वह गगन माहिं नाचन्त । जब वह चारों ओर फिरंत ।
गर्दभ मुख ताको निरधार । होत भयो अनिमी भयकार ॥९॥
सो वह नृत्य करन्ती वास । याको सब तप खोय हुलास ।
गई सुरगमें सुरपति पास । नमिकर सुर विलसन परकाश ॥१०॥

कहत भई स्वामी परवीन । तुम यहँ तिष्ठो सुखमें लीन ।
कामअंध ब्रह्मा अधिकाय । मैं तिस कीनी मुर्छित काय ॥११॥
इमि सुन सुनाशीर तब कही । तू ह्यांहीं क्यों नाहीं रही ।
देवी कह्यो वृद्धि उस गात । तातें मोहिं रुचो नहिं नाथ १२॥
तिस पीछे मघवा बुधवान । दया भाव निज चितमें आन ।
जबै उरबशी दई पठाय । सो पहुँची ब्रह्मा ढिग जाय ॥१३॥
पद स्पर्श कर कियो सचेत । उठत भयो सो हर्ष समेत ।
लेयगयो निज घर तिहबार । भोग भोगवे बहु परकार ॥ १४ ॥
जगमाहीं चतुरानन कहे । मूरख जन तिस भेद न लहे ।
देव स्वरूप जो जानत नांह । मदवाले वत झूठ कहाह १५ ॥

दोहा

देखो चतुर विचार चित, इन्द्रादिक पद छीन ।
समरथ ब्रह्मा बापुरो, कहो कौन है दीन ॥ १६ ॥
कहाँ अपसरा सुरगकी, कहां मनुष परजाय ।
अहो भोग कैसे बने, तासंग चित हरषाय ॥ १७ ॥
जो कमलासन लोकमें, देव कहावत सोय ।
तासों ऐसे दुठ करम, कहो कौन विधि होय ॥१८॥

सोरठा

यातें जान अलीक, मिथ्यातीके वचन सब ।
करो सुधीजन ठीक, स्वाद बाद नयतें अबै ॥ १९ ॥

पद्धडी

श्रीजिनवरके मतमें बखान । विश्वसृग पंच प्रकार मान ।
इकतो तिष्ठे हैं सिद्धधाम । दूजे जानो आतम सुराम ॥२०॥
अरु ज्ञानरूप तीजे निहार । दातार धर्म चौथो विचार ।
चारित धारक पंचम अनूप । ऐही ब्रह्माको है स्वरूप ॥ २१ ॥

अरु तीनभवन मांही नजान । यह राग रहित है दीप्यमान ।
जे राग दोष जुत भोगलीन । यह कैसे पूजन योग दीन ॥२२॥
भोलो कालो करुणै दयाल । केवल पद धारे अति विशाल ।
अरु धरम रूप धारे सुकेत । सो तिनको ध्यावो सुःख हेत ॥२३॥
ऐसे श्रीआदि जिनेन्द्र चंद । वृष ईश्वर नायक सुगुण वृन्द ।
वे स्वर्ग मोक्ष के देनहार । तिनको सिर नाऊं वार वार ॥२४॥

दोहा

इन्द्र चन्द्र तिन को नमें, ऐसे दीन दयाल ।
इस भवदधि में शांति के, अर्थ होय गुणमाल । २५ ।
तिन को ज्ञान महान अति, लोका लोक निहार ।
भव्य कमल को भानु सम, संसारा वुधि तार । २६ ।

इति श्री आराधना सार कथा कोष विषय लौकिक ब्राह्मण की कथा समाप्तम्

अथ दोय भ्रात परिग्रहतैं भयभीत भये

तिनकी कथा प्रारम्भः नं० ३९

मङ्गलाचरण । अडिल्ल

निर्गन्थन के स्वामी गणधर देव जी ।
तिन पति श्री अरहन्त चराचर वेय जी ॥
जिनको नमिकर कहूं कथा हितकार जी ।
परिग्रह ते युग भ्रात महा भय धार जी । १ ।

जोगी रासा

देश महारम्यतिक दशारण्य एका रथपुर तहँ सारा ।
तामें धनदत्त सेठ वसत है धनदत्ता तिस नारी ॥
धनदेव धन मित्र युगल सुत तिनके उपजे भाई ।
धन मित्रा पुत्री गुण मंडित परियन को सुखदाई । २ ।
धनदत्त सेठ मौत तब पाई पीछे दारिद आयो ।

पाप उदै दोनू भ्राता अब बहु विध दुख तिन पायो ॥
फिर कौशांबी नगरी मांही मातुल पै तब जाई ।
अश्रुपात जुत नैन किये तन पिता मरन जो सुनाई ।३।

दोहा

बुद्धिवान मामा तबै, सब सुन के बिरतन्त ।
बहु धीरज दे बसुरतन, इन्हें दिये दुतिवन्त ॥ ४ ॥

चौपाई

बंधू पन तिनही को सार । वे ही नर गम्भीर उदार ॥
दयावान हैं जग में तेह । अर्थी बांछा पूरें जेह ॥ ५ ॥
तब इह रतन लेय हरषाय । अपने घरको गमन कराय ॥
पथमें लोभ ब्यापियो आन । आपसमें मारन चित ठान ॥६॥
पीछे चलकर नगरी तीर । आकर तिष्ठे दोनों बीर ॥
अपनी अपनी बात प्रकाश । पश्चाताप किये दुख रास ॥७॥
तबही रतन लेयके सार । वेत्रवती सरिता में डार ॥
जबै बारि चरपलको जान । निगले रतन महा दुतिवान ।८।
फिर ए आये अपने धाम । दुखकर तिष्टत आठों जाम ॥
इस अन्तर धींवर के जाल । वे मच्छी आई तत्काल ॥ ९ ॥
तिनकी मणि इन माता पास । आवत भई सहित परकाश ॥
धनदत्ता मणि लोभ जु धार । पुत्र सुताको घात बिचार ।१०।
फिर निज निंदाकर तत्काल । पुत्री कर सौंपे वे लाल ।
जब इन रतन हस्तमें लीन । भ्रात मात मारन चित कीन ।११।
सब पापनको मूल जो लोभ । कष्ट देय उपजावे छोभ ॥
फिर वो कन्या चित भै खाय । पश्चाताप कियो बहु भाय ।१२।
कोड़ो कष्टनको दातार । वे मणि लेकर तिसही बार ॥
भ्रातनको सौंपी आन । उन लीनी वेही मणि जान ॥१३॥

फोड़ नदी में इत बहाय । फेर अथिर संसार लखाय ॥
अपने चितमें धर वैराग । दुख दाता परिग्रहको त्याग ॥१४॥
भगनी मालाको ले लार । दमधर मुनि भेंटे तिह बार ॥
सुरग मोक्ष दाता मुनि चंद । तिनको नमत भयो गुणवृंद ।१५।
देव इन्द्रकर पूजित सदा । सो दीक्षा लीनी है मुदा ॥
आप तिरे पर तारन हार । येह जुग मुनि बहु विध तप धार ॥१६॥

दोहा

यह संसार तनी लखो, सबै अवस्था वीर ।
सुख दाता प्रभु मत गहो, दुख धारो तज धीर ॥ १७ ॥
लोभ पिशाच जगत विषै, देवे दुख अधिकाय ।
पाप मूल सब को ठगे, भव में भ्रमन कराय ॥ १८ ॥
ऐसे लख मन वचन ते, त्यागो लोभ तुरन्त ।
हितकारी भगवत धरम, ताहि गहो बुधिवन्त । १९ ।
संग दोष को दुख महा, सो परनो यों गाय ।
भव्य जीव लखके तजो, लोभ महा दुख दाय ॥२०॥

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषय परिग्रहतैं भय भीत भए ताकी कथा समाप्तम् ॥ ३९ ॥

सेठ धनमित्र और धनदत्तको धनपाकर

चोर भय हुवा ताकी कथा नं० ४०

मंगलाचरण ॥ चौपाई ॥

केवल ज्ञान धारी अरिहन्त । परमातम गुण धरे अनन्त ॥
तिनको नमकर वरनूं सही । धन पाकर जिन चिन्ता गही ।१।

चाल मेघकुमार की देशी ।

कौशांबी नगरी भली जी सेठ तहां धनमित्र ।
अरु धनदत्त को आद दे जी पढ़े विहार निमत्त ॥

रे भाई उद्यम मन में धार ॥ २ ॥
राज ग्रही पथके विषय जी अटवी अति विकराल ।
तामें चोरन लूटयो जी सब वाणिक तत्काल ।
रे भाई पुन्य बिना किम होय ॥ ३ ॥
पुन्य बिना जगके विषयजी जेनर हैं श्रीमान ।
उद्यम बहु बिधि के करे जी तो भी होवे हान ॥
रे भाई भाल लिखो सो होय ॥ ४ ॥
तिस पीछे चोरन करो जी रैन विषय आहार ।
तामें विष खाकर मरो जी बिन जाने तस कार ।
रे भाई भाल लिखी सोई होई ॥ ५ ॥
दुष्ट तनी किरया जिती जी तिसको है धिक्कार ।
कष्ट करे बहुं भांत के जी तो भी फल नलगार ।
रेभाई पापी दुःख लखाय ॥ ६ ॥
उनमें तस्कर एक थो जी सागरदत्त धीमान ।
सेठ तनुज पहिले तजो जी निश भोजन अघखान ।
रे भाई एक नेम सुख खान ॥७॥
उन भोजन नांही कियो जी बचो सोई बुधवान ।
सब तस्कर देखे मरेजी तितने होत बिहान ।
रेभाई एक नेम सुख दाय ॥ ८ ॥
तबही इस संसारते जी है उदास अधिकाय ।
परिग्रह तज संयम लियो जी जग जनको हितदाय ।
रेभाई त्यागहिते सुख होय ॥ ९ ॥

छप्पय ।

सो सागरदत्त मुनी गुणो निध है सुखकारी ।
सत्पुरुषन को सदा करावे मंगल भारी ॥

जिन प्रभु भावित एक भरत पायो अधिकाई ।
फिर संसार स्वरूप लख्यो ताने दुःख दाई ॥
चपलावत जीतव्य धन, सो छिनमें नासे सही ।
इह ज्ञान भये आचर्ने गुन, जिन दीक्षा ताने गही ॥१०॥

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषय यमदूतो चोरी को भव दुःखा सारी कथा समाप्तम् ।

अथ कुसंग दोष कथा नं० ४१

मंगलाचरण ॥ सवैया तेईसा ॥

तीनहु लोकनमें जिनके पद श्री अरिहन्त जिनेश्वर स्वामी ।
भारत मान गही मुनि नाथ कही जिन नाथ गुरु अन्तर जामी ॥
गुरु निर ग्रन्थ दया व्रतवंत दिखाय सुपंथ करे शिव गामी ।
भक्ति सुठान धरो इन ध्यान करो परनाम यही जग नामी ॥१॥

दोहा ।

कथा संगके दोष की, वरनत हूं हितकार ।
जैसे श्री जिनवर कही, तैसे सुन चित धार ॥२॥

चौपाई ।

मणिवत नाम देश सुख गेह । तामधि मणिवत नगर बसेह ।
ताको मणिवतहि भूपाल । पृथ्वी मति नारी गुण माल ॥ ३ ॥
तिनके सुत उपजो मणिचंद्र । सूरवीर त्रियाको मन्द्र ॥
सो भूपति निज पुन्य बलाय । सुखसे राज करे अधिकाय ॥४॥
धरम करम में लीन नरेश । पात्र दान नित करे विशेष ॥
जिन पूजन अरु पर उपकार । करतो तिष्ठो निज आगार ॥५॥
एक दिना नृप तिय गुनि भरी । पतिके केश समारत खरी ॥
तिसमें श्वेत अलक इक पाय । सो नरेन्द्रको दियो दिखाय ॥६॥
तिसको मणिवत देख तुरन्त । उर वैरागपन लाहि अत्यन्त ॥

जैनतत्वमें धर अनुराग । मन बच काय भाय वैराग ॥ ७ ॥
बुद्धिवान सुतको दे राज । आप किये तब ऐते काज ॥
पहिले जिनको कर अभिषेक। पूजा कीनी वहुरि विशेष ॥ ८॥
यथा जोग बहु दीनों दान । अर्थीजन के पोषे आन ॥
बिनय वन्त फिर गुरु ढिग जाय। दीक्षा लीनी वहु हितदाय ॥९॥
एक दिना मणिव्रत योगिन्द । शुद्धातम धारी गुणवृन्द ॥
भगवत चरन कमलको ध्यान। करतो जिन कल्पो धीमान ।१०।
बिहरत आये ईर्जा भास । उज्जैनी नगरी के पास ।
तहां भयानक हुतो मसान । रात्रि विषय तिष्ठे तिह थान ॥११॥
धरो मडासन ध्यान मुनिंद। ध्यावें परमातम सुख कन्द ॥
करम शांति करनेके हेत । सहे परीषह वे जग सेत ॥ १२॥

दोहा

ताही छिन योगी सुइक, आयो तिसही थान ।
वैतालीको साधने, पाप करम दुखखान ॥ १३ ॥
दो सिर और उठावकर, लाये अति भैवन्त ।
तीजो मुनि मस्तक तनों, चूल्हो किये तुरन्त । १४ ।

अडिल्ल

नै वेद करनेको भाजन उन धरो ।
नीचे बाली अगनि जु ऊपर पै भरो ॥
वन्ही जाज्वल थकी मुनी शिर नस जरी ।
चटकत भई तुरन्त जबै हांडी परी । १५ ।
तब जोगी भयधार भगो ततकार जी ।
श्रीमुनि मेरु समान ध्यान चित धारजी ॥
होत प्रभात लखो काहू जनने तबै ।
जिनदत्त सेठ प्रती सब आन चयो जबै ॥ १६ ॥

दोहा

गये सेठ जब तुरतहीं, भुमि मसान मँभार।
मुनि सत्तम देखे दगध, चितमें दुख यह धार ॥१७॥
हाहाकर बहु सेठजी, आनन भयो उदास।
महाजननते गुरनको, लायो निज आवास ॥१८॥

चौपाई

मुनिकी शांति अर्थ बहु भाय। पूछी भेषज वैद बुलाय।
बोलो वैद सुनो धीमान। सोम सर्म भटके घर जान ॥ १९ ॥
लक्ष पाक को तेल अनूप। दग्ध शांति करनेको रूप।
ऐसे सुन जिनदत्त गुणावन्त। विप्रधामहीं पहुँचे तुरंत ॥२०॥
तुंकारी तिसकी वरनार। तासों मांगो तेल सुसार।
तब वह कहत भई सुन सेठ। घट बहु धरे अटारी हेठ २१॥
तामेंते इक घट लेजाय। अपने काज माहिं सो लाय।
जगमें ऐते दानी जेह। कल्पवृक्ष की सदृश तेह ॥ २२ ॥
घट लेचलो सेठ तिह वार। निकसतही फूटो तत्कार।
फिर इक घट मांगो वा तीर। बोली और लेजावो वीर ॥२३॥
सत्पुरुषनको चित्त उदार। वारिधि तें गम्भीर अपार।
दूजो कलश जुकरम वसाय। फूटन भयो पथिकामें आय २४॥
फेर गयो साही के पास। कुंभ मांगियो होय उदास।
जब वह कहन भई सुन साह। कुंभ और ले जुन उत्साह २५
तब इन लियो क्रमश इक और। वोभी फूटगयो तिस ठौर।
इस विध फूटे कुंभ अनेक। तब वह बोली सहित विवेक २६
अहो सेठ चितभय नहिं धरो। और कलश ले कारज करो।
ऐसे सुन वानिक पति जबै। मनमें गुण विचारी तबै ॥ २७ ॥
आगे तृषा कहत पावहि। ऐसी तो हम देखी नाहिं ॥

इम विचार कर पुलकित गात । पूछो सुन तुंकारी मात ।२८।
मैं अपराध कियो अधिकान । तो भी क्रोध नहीं तुम आन ॥
सो क्या कारन देहु बताय । तब तुंकारी कहे सुनाय ॥२९॥

दोहा

अहो सुबुद्धी क्रोध को, मैं फल पायो जोर ।
तातै सरब कथा अबै, सुनो तात इह ठोर ॥ ३० ॥

पद्धडी

इक आनंद नामापुर विशाल । शिव शर्म तहां इक दुज दयाल ।
धनवान राजकर मान सोय । कमल श्री ताकी नार जोय ।३१।
शिव भूत आदि वसु पुत्र जान । नौमी तनुजा मैं भई आन ॥
लावण्यरूप सौभाग्य धाम । भद्रा मेरो राखो सुनाम ।३२।
मैं मान क्रोध धारो प्रचंड । तू कहे तिसे द्यो अधिक दंड ॥
ऐसो कारन मुझ तात हेर । नगरीमें घोषन दई फेर ॥ ३३ ॥
मुझ तनुजाको इस नगर मांह । तू कहि के कोई बोलो जु नाह ।
तबते तुंकारी नाम येह । सारे प्रकटो पुर गेह गेह ।३४।
जो क्रोध मान धारे अपार । तिनके सुख ना दुखही निहार ।
तहां शोमशर्म इक विप्र आय । मुझ पिता थकी ऐसे बताय ।३५।

दोहा

तुं कारी कह के कभी, मैं बोलूंगो नाह ।
ऐसे कह कुल क्रम थकी, लीनी मोको ब्याह ॥ ३६ ॥
फिर उज्जैनी लाइयो, बहु बिभूत जुत मोह ।
संपत कर निज गेह में, तिष्ठी आनंद होय ॥ ३७ ॥

चौपाई

एक दिना मेरो भरतार । शोमशर्म प्राणन आधार ॥
नट कौतुक देखनको गयो । अर्द्ध रात्रिको आवत भयो ।३८।

घर बाहर तिन करी पुकार । [illegible]

तबमें कोय कियो अधिकार । [illegible]

मौनधार तिष्ठी रिसवन्त । [illegible]

फेर पुकारो इह विध वैन । [illegible]

तुको शब्द सुनो मैं कान । [illegible]

मैं मूरखनी खोल कपाट । [illegible]

बाहर चोर मिले दुखकार । [illegible]

विजैसेन इक हुतो किरात । [illegible]

सो लायो पल्ली में दीन । [illegible]

तबही वन देवी तिह ठाम । [illegible]

दुरत भये सो हिरदे बीच । [illegible]

तब ताने मुझ कर सिहार । [illegible]

ताकर तें भी पुन्य मनाव । [illegible]

सो वह पापी आनि अज्ञान । [illegible]

दोहा

सो पापी मुझको कर, सौंपी तिनके हाथ ।
जे मानुष के रुधिरते, [illegible]
कमयाने के कारनें, मुझ तन [illegible]
शोषित करो कष्ट, बहुत [illegible]
कहां मेरुजी कांपनें, कहा वहुत नाहिं [illegible]
हम से पापी जननको, [illegible] ॥२८॥

छन्द

इस भांत उजैन मनो पावन [illegible]
तासे दिस वन देव कहे तिन [illegible] आई ।
[illegible]

पुन्य उदय मांहि देख भूप कह लायो निजघर ॥४९॥
सोमशर्म मम नाथ तासको सौंपी आई।
वेही बांध पसार कष्ट में होय सहाई।
रक्त कढ़नते सेत भयो तन कृस अधिकारी।
लक्षपात को तैल वैद मम पीड़ निवारी। ५०।
तिस पीछे मुनि नाथ पकी सुनके जिन वानी।
तीन जगत सुखदाय शुद्ध सम्यक उर आनी।
तातें सेठ सुजान क्रोध में करो न भाई।
यह वृन अंगीकार कियो कोड़ो सुखदाई। ५१।
तातें इक घट और तात लेजावो अबही।
श्री मुनिके तन लाय पीड़ नासो उन सबही ॥
तब यह श्रेणी नमस्कार कर घट लेआयो।
करके जतन अपार मुनों के तनमें लायो ॥५२॥

सोरठा

बहुत दिनन तक येह, मर्दन मुनि तन पै कियो।
तब भई निर्मल देह, तप उपजावन सुख करन ५३ ॥
पीछे सेठ सुजान, भक्ति करी मुनि नाथकी।
तब तिष्ठे तिसथान, बरषा पूरी करनको ॥ ५४ ॥

चौपाई

इस अन्तर इक दिन वो सेठ। रतनकुंभ इक जिन ग्रह हेठ।
मुनि देखत गाड़ो तत्कार। सुतको भय निज चितमें धार ५५
तब वह कुमरदत्त पापिष्ट। सप्त व्यसन नित सेवे नष्ट।
अघ पंडित वह पुत्र अयान। छिपकर तात क्रिया सब ज्ञान५६
तब उन ह्वांते कुंभ उखाड़। महल चौकमें दीनो गाड़।
जब यह श्री गुरु चारितवन्त। यहसब कारज लखो तुरन्त ५७॥

तापण धरो मध्यदश सुभाय । सुथिर मेरुसम ध्यान लगाय ।
होतभयो पूरन चौमास । तब सेठको तजो अवास ॥ ५८ ॥
कियो विहार पृथककर जबै । नगर बाह्य तिष्ठे गुरु तबै ।
फेर सेठ वह कलश न पेष । चितमें दुःखित भयो विशेष ५९॥
तब इहविध मन करो विचार । मुनि विन कोय न जाननहार ।
सो घट जिमने लियो चुराय । यों देखेंगे मोह बनाय ॥ ६० ॥
ऐसे निश्चयकर चित माहिं । आवत भयो मुनीके पाहिं ।
कहतभयो दोऊ कर जोर । तुम बिन चितलागे नहिं मोर ६१
तातें अब तुम दीन दयाल । नगरी में चालो गुणमाल ।
ऐसे मायाचारी बैन । कहकर लायो मुनि सुखदैन ॥ ६२ ॥
कहत भयो वह सेठ तुरन्त । कोई कथा कहो भगवन्त ।
मुनि बोले सुन वाणकपती । तुमहो श्रावक बहु शुधमती ६३
बहुत दिननके श्रावक सार । वृद्धकाय सब जाननहार ।
तातें जो कुछ कहने जोग । सोई भाषो कथा मनोग ॥ ६४ ॥

दोहा

ऐसी सुन जिनदत्त सेठ, अपनो अर्थ सुलीन ।
कथा कही नाही समय, सुनो भाव परवीन ॥ ६५ ॥

चौपाई

नगर पदम रथ नृप वसु पाल । दूत एक भेजो दर हाल ॥
कछु कारजकी लिखके बात । जहँ जित शत्रु अयोध्यानाथ ।६६।
मारगमें श्री अटवी विख्यात । तहँ पहुंचो निरपातुर गात ॥
जल पायो नहिं मूर्छा लीन । तरु तल लेटो दुखमें भीन ।६७।
तब कोइ मरकट पहुंचो आन । कंठागत देखे उन प्रान ॥
जबही जाय तड़ाग मंझार । अपने तन को लायो वार । ६८ ।
आकर उस तन पर निज डाल । छिड़क सचेतन कियो तत्काल ॥

फिर इस आगे गमन सु करा । दिखलायो यह सर जल भरो।६९॥
जब वह पापी दूत अज्ञान । इस बंदर के हन के प्रान ॥
ताकी खाल काढ़ जल भरो । फिर मारगको गमन सुकरो ।७०।

दोहा

हे स्वामी उस दूत को, बंदर मारन जोग ।
थो अक नाहीं तुम कहो, मुनि बोले नहिं जोग ॥७१॥
इमि कह कर वे शिव धनी, भाषी कथा अनूप ।
निरदोषक सूचक पनों, तामें गरभित रूप । ७२ ।

पायता

कोशांबी नगरी मांही । शिव शर्म भूप तिह ठांही ॥
कपिला नामा तिस नारी । रहे पुत्र विना दुख भारी । ७३ ।
एके दिन द्विज परबीना । अटवी में गमन सु कीना ॥
तहँ नकुल तनो शिशु पायो । ताको निज घरमें लायो ।७४।
निज तियते बच इम भाषे । याको सुत सम तुम राखो ॥
ऐसे कह ताकर मांही । सो सौंप दियो हरषाई ॥ ७५ ॥
जो मोह अंध अधिकाने । सो क्या क्या काज न ठाने ॥
अब कपिला बहु हित लायो । घरको सब काज सिखायो ॥७६॥
इह न्योल शकति अनुसारे । जहँ भेजे तहँ पग धारे ।
इह विधि कछु काल गंवायो । तब कपिलाने सुत जायो ।७७।
एके दिन द्विजकी नारी । सुत सुवायो खाट मंझारी ।
नौलो राखो रखवारी । चावल छड़ने गइ नारी । ७८ ।
ताही छिन अहि इक आयो । ताने सो बालक खायो ।
तब नकुल क्रोध अति धारो । तिस विषधरको तब मारो ।७९।
आननके श्रोणित लग्गो । कपिला ढिग गयो सु भागो ॥
सो देखत चित्त बिचारो । याने मेरो सुत मारो ॥ ८० ॥

तब मूसल लेकर भारी । मारो न्योला तत्कारी ॥
फिर घर आकर यहि देखो । मनमें तब कियो परेखो ॥८१॥

दोहा ।

मूढ़ जनन की जो क्रिया, ताको है धिक्कार ।
कह्यो सेठ उस नकुल को, मारन जोग विचार ॥८२॥
जैसे सेठ कहतो भयो, जोग नहीं थी देव ।
ऐसे कहु अपनी कथा, कहन लगो फिर एव ॥८३॥

पद्धरी

बानारस नगरी में निहार । भूपति जित शत्रु महा उदार ॥
ताके वैद्य सु धनदत्त नाम । धनदत्ता ताके गेह भाम । ८४ ।
धन मित्र पुत्र धन चन्द्र जान । नहिं वैद्यकको पढ़ियो पुरान ।
कोई दिन पीछे वैद्य येह । सो मरन भयो इन तात जेह ।८५।
नृपने मूरख इनको लखाय । और काहूको कियो वैद्य राय ॥
इनकी आजीविका हर लीन । तब होन भये हठ दुःख लीन ।८६
फिर विद्या पढ़ने मित्र धरन्त । चम्पा नगरी पहुंचे तुरंत ॥
शिवभूत वैद्यको नमन ठान । वैद्यक पुरान पढ़ियो महान ॥८७॥
है विद्यायुत चाले कुमार । पथ में अटवी दीरघ निहार ॥
तामें दृग पीड़ित सिंह पाय । लखकर रोचो निज ध्यान आय ।८८।

दोहा

लघु भ्राता भेषज लखे, करे परीक्षा काज ।
बड़े भ्राताने वरजियो, तौ पण कियो इलाज ॥८९॥
जड़ी रखके नेत्र में, लायो अंजन योग ।
भागी छिन पीड़ा गई, उठो सु हर्षित होय ॥९०॥

सोरठा

भागन भगो तत्काल, तिसी समय मृगेन्द्र को ।
हो बुधि हीनदयाल, कहो सिंहको जोरसो ॥९१॥

ऐसे सुन मुनि चन्द्र, कहत भयो सुन सेठजी ।
योना जोग मृगेन्द्र, कहूं कथा मैं तुम सुनो ॥६२॥

काव्य ।

चम्पा नगरी विषै बसत दुज सोमशर्म वर ।
सोमल्या इक नार सोम शर्मा दूजी घर ॥
सोमिल्या के पुत्र भयो इक बहु सुखदाई ।
भद्र नाम इक बृषभ रहे ता नगरी मांही ॥६३॥
गेह गेहमें फिरत ग्रास तृण नित प्रति चरतो ।
शान्त चित्त नित रहे कभी बाधा नहिं करतो ॥
दूजी द्विज तिय बांझ पापको बीज सु बोया ।
सौक तनो सुत मार बैल के सींग पिरोया ॥६४॥
कहत भई दुठ चित्त पुत्र इन मारो अबही ।
दुज घाती यह वृषभ भयो नगरी में सबही ।
तब सब पुरके मांहि ग्रास याको न खुलावे ।
क्षुदावन्त यह बैल कहीं पैसन नहिं पावे ॥६५॥
तित ही एक जिनदत्त सेठ की है बर नारी ।
दोष लगो परपुरुष तनों ताको अति भारी ।
अपने आतम शुद्ध करन को धैर्य धार चित ।
लोह मयी इक पिंड अगन में लाल कियो अति ।६६।
देखें सब पुर लोग तहां वह वृषभ जु आयो ।
अपने दशनन मांहि पिंड तत्काल उठायो ।
तब सब जन इम कहो बृषभ निर्दोष यही है ।
यह शुद्धातम चित्त जनन ने एमचई है ॥६७॥

दोहा ।

इस प्रकार मुनिवर कही, सुनो सेठ मन लाय ।
बिन जान्यो मूरख सकल, दोष दिये अधिकाय ।६८।

निर अपराधी धेनु सुत, ताको भोजन दान ।
दूजो जोग उन जननको, कहो सेठ बुधिवान ॥९९॥

गीताछन्द

तब सेठ जिनदत्त इम उचारी सुनो मुनि नायक यही ।
गंगा किनारे गर्त में गज पुत्र ऐक परो सही ॥
जब विप्रभूत निहार तापस ताहि बेग निकारियो ।
पानी विषे न्हाकर तुरत ही पोष कर तिस पालियो ॥१००॥
सो भयो दीरघ काय आनिहो सुनो श्रेणिक रायजी ।
ता तापसी में छीन गज वह लियो आप मंगाय जी ॥
अंकुश तनी जब घात देखी तोड़ बंधन भागियो ।
तबही नृपति चर पकड़ने को तास पीछे लागियो ॥१॥
सो यह करिन्द्र ततछ चलकर तापसी को घर लियो ।
ताने बहुत सम्बोध कर उन जननको फिर सौंपियो ।
तब इह दुरातम नीच हस्ती तापसी मारो सही ।
कहो नाथ उनको जोगसी यह जौन किरिया गज गही ॥२॥

दोहा

तब मुनिवर कहने भये, नहीं जोग थी वीर ।
कथा एक अब हम कहें, सो अब सुनिये धीर ॥ ३ ॥

सोरठा

गजपुर नगर मझार, विश्व सेन भूपति तनो ।
बाग एक सहकार, पूरब दिश की ओरही ॥ ४ ॥
चील गयो सुन धाय, बैठी तरुके ऊपरे ।
सर्प तनो विष पाय, इक फल पकियो सो सही ॥५॥
तब वनपालक देख, भेंट कियो भूपति तनी ।
जिना लाल निम पेख, अधिक सनेह स्वनो भयो ॥ ६ ॥

सो फल दियो तुरन्त, रानीको नर नाथ ने।
खायो फल विषवन्त, तबै प्राण तजती भई ॥ ७ ॥
राजा बहु रिसधार, सबै बाग कटवाइयो।
देखो सेठ विचार, वाको क्या इह जोग थी ॥ ८ ॥

दोहा

कहो सेठ नहिं जोगथी, वा राजाको येह।
एक कथा अब मैं कहूं सो सुनिये गुणगेह ॥ ९ ॥

चौपाई

काहू अटवीमें जन कोय। देख सिंहको भागो सोय।
एक बिटप पल्लीको सार। ताऊपर चढ़ियो तिहबार ॥ १० ॥
पंचानन तब गयो तुरन्त। तब पथ लीनो चित हर्षन्त।
राजाके जन लेने कार। ढूंढत आये तिसही बार ॥ ११ ॥
तब यह बोलो मो संग चलो। तुमको तरु दिखलाऊं भलो।
यह कहि वृक्ष दिखायो आन। जाकर इसके बचे पिरान १२॥
तब राजाके चाकर येह। छाया तरु तिन काटो तेह।
सज्जन सम वह बिटप मनोग। कटवावन उसको थो जोग १३
कहो मुनीश्वर चित्त विचार। सब चरित्र तुम जानन हार।
मुनि बोले उन जोग न कीन। अब इककथा सुनो परवीन १४

चाल सुन भाईरे की

कोसांबी नगरी विषे सुन भाईरे, हैं गंधर्व अनीक भूप सुन भाईरे, तहां सुनार इक रहत है सुन भाईरे। अंगार देव तिस नाम और सुन भाईरे ॥ १५ ॥

रतन उजालत है सही सुन भाईरे, भूप दई मणि एक सार सुन भाईरे, मुकट अग्रकी जानिये सुन भाईरे, लायो निज गृह मांहिं हर्षजुत भाईरे ॥ १६ ॥

नाही छिन जगदग्नि मुनी सुन भाईरे, आत चरना काज पाप रूप भाईरे, भक्ति नमन यानकरी, सुन भाईरे, ... वा जहि मणि हजानत भाईरे ॥ १७ ॥

मुनि मुखसे तिष्ठत भये, सुन भाईरे, आय गयो तिस पास कोई मणि भाईरे, सो मणि रूप अनूपथी सुनभाईरे, निगलो क्रौंच विहंग शीघ्र सुन भाईरे ॥ १८ ॥

तब मुनि बोले नाह जानकर भाईरे, दया अंग धारे गुरु अधिकाईरे, मणि नहिं देखो आय मौन भई भाईरे, स्वर्नकार इम चयो नाश सुनभाईरे ॥ २० ॥

दोहा

हे मुनि वेग बतायदो, राजा की मणि सोय ।
नहीं हमारो कुटम्ब सब, तत्क्षण नाश जु होय ॥२१॥
इहविध कही सुनारने, तो पण दया निधान ।
मौनधार मुनिवर तबै, तिष्ठे ताही थान ॥ २२ ॥

छप्पय

तबै परचण्ड रिस धार सुनारने इन्हीको मनविषय चोर जाना ।
बांधके गंभते मार बहुविधि दई और दुर्वचन मुखने बखाना ॥
हाय धिक्कार इस मूढ़पनको सही मुनीका भेद नहिं उर आना
सबै आचार विचार जाने नहीं द्रव्यको विरक मन करे हाना

सोरठा

मुनि मारन उमगाय, काष्ठ खंड फेंकत भयो ।
लगी क्रौंच गल मांह । सो मणि उगली मुखनही २४
मानो मुनि जस येह, प्रगट भयो ताही समय ।
स्वर्णकार लख तेह, लज्जा जुत मन दुख धरो ॥२५॥
हाहाकार निरधार, मुनिके चरनन नित भयो ।
निन्दा करी अपार, अपनी बहुविधि मुख कही ॥२६॥

दोहा

कहे मुनी सुन सेठजी, जैसे वै मुनि चन्द ।
जानत मणि न बताइयो, दया हेत गुणवृन्द ॥ २७ ॥
तैसे में तुम कलशको, जानतहूं विरतन्त ।
तो पण नाहिं बताय हूं, करो जो तुझ मन सन्त २८

अडिल्ल

तबै सेठ सुत छिपकर सब इह सुन लियो ।
कुंभ रतनको लाय पिता ढिग धर दियो ॥
फेर कहे इम बैन सुनो तुम तात जी ।
श्री मुनिवर को क्यों उपसर्ग करात जी ॥ २९ ॥
तिस लख सेठ जिनदत्त महा लज्जा गही ।
कुबेर दत्त भी मन पछतायो बहु सही ॥
मेरु समाने धीर तपोनिधि वे मुनी ।
पिता पुत्र सिर नाय बहुत सुख थुत भनी । ३० ।
उनही के चरनाम्बुज ढिग युग ता घरी ।
जग ते होय उदास सुजिन दीक्षा धरी ॥
स्वे परके बैतारक तप नाना करें ।
कर मनको परजारत अघ सब ही हरें । ३१ ।

सवैयो

तीनों मुनि नाथ नित भक्ति कर बन्दे हुये शान्ति अर्थ हूजे हमें सदा सुख दायजी । जिन चंद्र भाषो ज्ञान तास के समुद्र मान सम कर तन शील बेला अधिकाई जी । नित देव इन्द्र कर पूजत पदारविन्द भविवृन्द तारनें की कीरत बढ़ाई जी । सोई दया के निधान कीजिये सबै कल्याण पातिक हमारे हानि हूजिये सहाई जी । ३२ ।

गीता

श्री मल्ल भूषण गुरु हमारे को मंगल नित नये ।
गुण निधि मगहन लोग जग में कर्म चारि तिनने जये ॥
शोभायमान जो तिलकवत श्री मूल संघ महान है ।
श्री कुंद कुंद सु वंश मांही भये ए बुधिवान हैं ॥ ३३ ॥

दोहा

विद्यानन्द महान गुरु, तिन पद कमल समान ।
विकसावन को भानु सम, रत्न त्रय जुत ज्ञान । ३४ ।

सोरठा

तिन के शिष्य सुजान. ब्रह्म नेमिदत्त नाम है ।
तिन कीनों व्याख्यान. निरंजन वानी के विषय । ३५ ।
तिनही के अनुसार, शिष्य गिरधारी लाल के ।
नेमी चंद हितधार, अर्थ बताय दियो हमें ॥ ३६ ॥
छंद ग्रंथ तब कीन, अपनी तुछ बुध ने यही ।
सुनो भविक परवीन, बख्तावर अरु रतन ने ॥ ३७ ॥

इति श्री आराधनासार कथा कोष विषय भट्टारक श्री मल्ल भूषण के शिष्य ब्रह्मनेमिदत्त विरचितायां परिग्रह ममत्व अधिकार ता विषय मक्खन कुमारी कथा समाप्तम्

अथ लोभ अधिकार कथा नं० ४२

मंगलाचरण ॥ दोहा

देव धर्म गुरु तीन इह, हैं मंगल दातार ।
मन्दिर तीनहीं नमों, दीजे बुद्ध जु सार ॥ १ ॥

सोरठा

नमूं देव अरिहन्त, सुख दाता त्रय जगपती ।
सुनो कथा बुध वन्त, कहूं लोभ अधिकार की । २ ।

दोहा

कहे मुनी सुन सेठजी, जैसे वै मुनि चन्द ।
जानत मणि न बताइयो, दया हेत गुणवृन्द ॥ २७ ॥
तैसे मैं तुम कलशको, जानतहूं विरतन्त ।
तो पण नाहिं बताय हूं, करो जो तुम मन सन्त २८

अडिल्ल

तबै सेठ सुत छिपकर सब इह सुन लियो ।
कुंभ रतनको लाय पिता ढिग धर दियो ॥
फेर कहे इम बैन सुनो तुम तात जी ।
श्री मुनिवर को क्यों उपसर्ग करात जी ॥ २९ ॥
तिस लख सेठ जिनदत्त महा लज्जा गही ।
कुबेर दत्त भी मन पछतायो बहु सही ॥
मेरु समाने धीर तपोनिधि वे मुनी ।
पिता पुत्र सिर नाय बहुत मुख थुत भनी । ३० ।
उनही के चरनाम्बुज ढिग युग ता धरी ।
जग ते होय उदास सुजिन दीक्षा धरी ॥
स्वे परके बैतारक तप नाना करें ।
कर मनको परजारत अघ सब ही हरें । ३१ ।

सवैया

तीनों मुनि नाथ नित भक्ति कर बन्दे हुवे शान्ति अर्थ हूजे हमें सदा सुख दायजी । जिन चंद्र भाषो ज्ञान तास के समुद्र मान सम कर तन शील बेला अधिकाई जी । नित देव इन्द्र कर पूजत पदारबिन्द भविवृन्द तारनें की कीरत बढ़ाई जी । सोई दया के निधान कीजिये सबै कल्याण पातिक हमारे हानि हूजिये सहाई जी । ३२ ।

गीता

श्री मल्ल भूषण गुरु हमारे करो मंगल नित नये ।
गुण निध सराहन जोग जग में करम अरि तिननें जये ॥
शोभायमान जो तिलकवत श्री मूल संघ महान हैं ।
श्री कुंद कुंद सु वंश मांही भये ए बुधिवान हैं ॥ ३३ ॥

दोहा

विद्यानन्द महान गुरु, तिन पट कमल समान ।
विकसावन को भानु सम, रत्न त्रय जुत जान । ३४ ।

सोरठा

तिन के शिष्य सुजान, ब्रह्म नेमिदत नाम है ।
तिन कीनों व्याख्यान, निरजन बानी के विषय । ३५ ।
तिनही के अनुसार, शिष्य गिरधारी लाल के ।
नेमी चंद हितधार, अर्थ बताय दियो हमें ॥ ३६ ॥
छंद गूंथ तब कीन, अपनी तुछ बुध ते यही ।
सुनो भविक परवीन, बखतावर अरु रतन ने ॥ ३७ ॥

इति श्री आराधनासार कथा कोष विषय भट्टारक श्री मल्ल भूषण
के शिष्य ब्रह्मनेमिदत्त विरचितायां परिग्रह भयका अधिकार
ता विषय मलिवत लुंकारी कथा समाप्तम्

अथ लोभ अधिकार कथा नं० ४२

मंगलाचरण ॥ दोहा

देव धर्म गुरु तीन इह, हैं मंगल दातार ।
सन्धि तीसरी वर्णउं, दीजे बुद्ध जु सार ॥ १ ॥

सोरठा

नमूं देव अरिहन्त, सुख दाता त्रय जगपती ।
सुनो कथा बुध वन्त, कहूं लोभ अधिकार की । २ ।

चौपाई

कंपिला नगरी इक बसे । रतन प्रभू नरपति तहँ लसे ॥
विद्युत प्रभा नारी तिस धाम । रूप स्वभाग सहित बर भाम ।३।
तिसही नगरी में धीमान । जिन चरनाम्बुज भ्रमर समान ॥
राज मान पंडित अधिकाय । श्रावक जिनदत सेठ रहाय । ४ ।
बसत बनिक इक ताही ठौर । नाम पिनाक गंध तहँ और ॥
कोट बतीस द्रव्यको धरे । लोभ थकी खल भोजन करे ॥५॥
इह मति हीन द्रव्यको पाय । पाप उदै भोगे नहिं खाय ॥
इस किरपणाके गेह मंझार । नाम सुंदरी नार निहार ॥ ६ ॥
तिनके सुत उपजो बिगुदत्त। लोभ सहित गृह तिष्टत नित्त ॥
इस अंतर राजा ने ताल । खुद वायो इक अधिक बिशाल ।७।
तामें एक मंजूषा खरी । स्वर्ण शलाका सत ते भरी ॥
थी वह बहुत कालकी गड़ी । खोदत काहू जन ढिगपड़ी ॥८॥
सो मजूर तब लई उठाय । लेकर निजग्रह पहुंचो आय ॥
पंक लिप्त नहिं जानी सार । तामें ते इक लई निकार ॥ ९ ॥
श्री जिनदत्त सेठ के पास । लोह मोल में बेची तास ॥
फेर सेठ कंचन मइ जान । पाप थकी तिस कांपे प्रान । १० ।

दोहा

तिसी सलाका की सबै, जिन प्रतिमा बनवाय ।
परतिष्ठा कीनी भली, तीन जगत हित दाय ॥ ११ ॥
सम्यक दृष्टी पुरुष जे, धरमातम बुध वन्त ।
वे ऐसे कारज करें, जासे करम नसन्त ॥ १२ ॥

पायता

फिर वही मजूर जुं आयो इक और सलाका लायो ।
जिनदत्त पास तत्कारी, तब सेठ सु एम बिचारी । १३ ।

यह परधन है दुखदाई। तृष्णा व्रत भंग कराई॥
तातें इनने नहिं लीनी। तबही तिस फेर जु दीनी॥ १४॥
जबही मजूर को धायो। पिन्याक गंध पे आयो।
ताने कंचन लख लीनो। लोहे को मोल जु दीनो॥ १५॥
फिर तासे गिरा उचारी। बाकी ले आवो सारी।
यह सुनी सेठ की वानी। दूजे दिन एक जु आनी॥ १६॥

दोहा

इह विध याके हाथ सब, दई शलाका जोय।
दिन अठाणवें तक लई, एक एक कर सोय॥१७॥
धन लोभी इह वनिक पति, सुतको लियो बुलाय।
तासों भेद शलाक को, इन सब दियो बताय॥१८॥
पिप्पल नामा ग्राम में, आप गयो वह साह।
भगिनी की तनुजा तनो, हुतो तहां जो व्याह॥१९॥
एक शलाका ले गयो, पाप उदयते येह।
भगनी पतिके देनको, नौते मांही तेह॥२०॥

चौपाई

विष्णुदत्तको तब इन दई। ताने वह शलाका नहिं लई।
राजाके चर थे तहँ सोय। या करते लीनी तिन दोय॥ २१॥
ताकर भू खोदन उस गाय। तामें नृपकी छाप लखाय।
लिखे जु अक्षर थे इह रीत। सो शलाक सुवरनकी पीत॥२२॥
ऐसे लखकर जन भयधार। दिखलाई नृपको निह वार।
तब नरेश मनमें हरषाय। लीनों वही मजूर बुलाय॥ २३॥
तासों पूछन कीनी तबै। और बताओ बाकी सबै।
जब वह कहत भयो सुन नाथ। इक बेची जिनदत्तके हाथ॥२४॥
अरु पिन्याक गंधको दई। लोह तनो में जानी सही।

तब नरिन्द्र जिनदत्त जो सेठ। ताको बुलवायो निज हेठ।२५।
तासो इह बिधि नृपने चई। अहो शलाका तुमने लई॥
सेठ तबै सबही बिरतान्त। कहत भयो तजके निज भ्रांत।२६।
पीछे श्री जिन बिम्ब मनोग। नृपको दिखलायो पुनि जोग।
देख नृपति मन भयो अनंद। जानो जिनदत है गुन वृंद।२७।
वस्त्राभूषण देय अनूप। सेठ बिदा कीनों तब भूप॥
फिर पिन्याक गंधको गेह। धन जुत लूट लियो नृप तेह।२८।
सब कुटुम्ब काराग्रह थान। डार दियो दे कष्ट महान।
देखो करि तृष्णा अधिकान। ले पर द्रव्य करी निज हान।२९।

दोहा

पीछे इह उस ग्रामते, आवे थो निज गेह।
पथ में सब बातें सुनी, नृपने कीनों जेह॥३०॥

कबिता

तब पिन्याक गंध बानक पति मनमें कीनों येम बिचार।
ए दोनों पगहैं दुखदायक इनही ने खोयो घर बार॥
इनही करके ग्राम गयो थो ऐसे मनमें क्रोध सुधार।
पाहन ते पग खंडनकर खर पहुंचो षष्ठम नर्क मझार॥३१॥

दोहा

लब्धक नाम विला विषै, उपजो लोभ वसाय।
छेदन भेदन आदि दुख, सहे कौन बरनाय॥३२॥

सोरठा

युत बिवेक धीमान, न्यायवन्त इस लोभ को।
जानत जो दुखदान, जो चाहो कल्याण को॥३३॥

सवैया तेईसा।

सो भगवन्त सदा जैवन्त महा गुण बारिध है सुखदाई।

इन्द्र सु आन करे थुति गान नमें पद पंकज सीस नवाई ॥
तल दिखलावन दीपक सार गिरा तिनकी उज्जल अधिकाई।
दोष समस्त नसाय दिये भव वारज वृन्दनको विगसाई ॥३४॥

दोहा

ऐसो श्री भगवान हैं, तिनको करूं प्रणाम ।
वो मंगल मुझ दास को, जपूं नाम वसु जाम ॥३५॥

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषय विन्यास गंधकी कथा समाप्तम् नं०४२

अथ लुब्धकसेठकी कथा प्रारम्भः नं० ४३

मंगलाचरण ॥ जोगी रासा ॥

तीन जगत गुरु केवल मंडित ऐसे श्री जिन स्वामी ।
तिनकी भक्ति धरूं हिरदे में चरण करूं प्रणामामी ॥
लोभ तने अधिकार माहि की कथा कहूं चित लाई ।
लुब्धक सेठ भयो धन लोभी ताने दुर्गति पाई ॥ १ ॥

चौपाई ।

अंग देश चम्पापुर सार । नाम अभै वाहन भूपार ।
पुंडरीका ताके वर भाम । वारिज नैनी दुति अभिराम । २ ।
प्राणों से प्यारी है जोय । तिनके घर उपजे सुत दोय ।
गरुड़दत्त अरु नाग जु दत्त । मात पिताको प्यारे नित्त । ३ ।
तिसही नगरी मांहि वसाय । लुब्धक सेठ महाजन थाय ।
पाप उदय धन लोभ अपार । नाम नाग वश्वा तिस नार ।४।

दोहा

याके गृह में द्रव्य बहु, तब इन कीनो येम ।
पक्ष पक्षनी के जुगल, बन वाये धर प्रेम ॥ ५ ॥
हय गय के जोड़े किये, ऊंट ऊंटनी युक्त ।
भैंसा महिषी पशु सकल, पूंछ सींग संयुक्त । ६ ।

चौपाई

ए सब सुवरनके बन वाय । तिनमें मूंगे रतन जड़ाय ॥
पीछे एक वृषभ करवाय । तामे सघन दियो लगवाय ।७।
तिसके जोड़े हेत अयान । धन ढूंढ़नको कियो पयान ॥
करम जोग ते वर्षा घोर । भई सप्त दिन की तिह ठौर ।८।
सो इह लुब्धक अति ही नीच । जावे नित गंगाके बीच ॥
बहुत कष्ट ते लावे दार । गट्ठे धर बेचे बाजार ॥ ६ ॥
जे पुरातमा तृष्णावन्त । तिनके लोभ तनों नहिं अन्त ॥
कभी शान्तता धरे न चित्त । यह निश्चयकर जानो मित्त ।१०।
एक दिना रानी बड़ भाग । महल शिखर तिष्ठ जुत राग ॥
ताने देखो लुब्धक येह । सिरपे काष्ट धरे अति तेह ॥ ११ ॥
श्रमकर सहित लखी तिस काय । राजासे रानी बतलाय ॥
हो स्वामिन तुमरे पुर माहि । यह कोई दुखिया अधिकाहि ।१२।
दारिद जुत है कष्ट समेत । सिर पर बोझ स्वास अतिलेत ।
याको कछु धन देकर आज । तृप्त करो अबही महाराज ।१३।
दयावन्त अर जे गुणवन्त । दान देनकी बुद्धि धरन्त ॥
तिस रानी के वच सुन तबै । करुना नृप मन आनी जबै ।१४।
तिस बाणिकको लियो बुलाय। आप नृपति वच कहे सुनाय ॥
जितनो धन तू चाहे बीर । तितनोले जाओ नहिं ढीर । १५ ।

दोहा

ऐसे नर नायक कही, सुनी सेठ तिह बार ।
कहत भयो मम घर विषय, एक बैल है सार । १६ ।
वा जोड़ी देखन विषय, मेरे चित में चाव ।
ताकर नृप यह दुख सहूं, धन को करूं उपाव ॥१७॥
तब नरिन्द्र कहतो भयो, हमरे बैल अनेक ।
तामें ते जो तुझ रुचे, सो ले जाओ एक । १८ ।

काव्य

भूपति के सब वृषभ देख बार सेठ उचारे।
अहो देव मम बैल तुल्य कोऊ नहिं थारे ॥
राय कहे सुन भ्रात धेनु सुत तेरे कैसो।
हम कूं देय दिखाय देयगे तोकूं वैसो ॥ १६ ॥
तब ही लुब्धक सेठ भूप को निज गृह लायो।
सुवरण को इक वृषभ बेग ही आन दिखायो ॥
देखत ही आश्चर्य वान हूवो नर नायक।
तेरे बैल समान नहीं भाषे इम बायक । २० ।

सोरठा

सेठानी हरषात, रतन थाल भर लाइयो।
दीनों पति के हाथ, कहो भेट नृप की करो। २१।
ताही छिन वह थार, निज कर लीनों सेठने।
अहिफण के आकार, होत भई अंगुरी मने ॥ २२ ॥

दोहा

पाप उदय ते जीव इह, किंचित दान न देय।
जो कदाचि प्रेरक मिले, तौ भी मन न [illegible] ॥ २३ ॥

पायता

तब राजा चित्त विचारी। इह [illegible]।
फण हस्त नाम उच्चारो। फिर निज गृह [illegible] ॥२४॥
बहु तृष्णा सेठ पगो है। इह [illegible] है।
तिस पाप उदय अति आया। इह [illegible]।
जो दूजो बैल बनाऊं। तौ [illegible]।
यह सोच गमन तब कीना। [illegible]
सिंहल द्वीपादिक धाया। [illegible]
फिर आवे यो निज [illegible]

दोहा

तब याको प्रोहन फटो, उदधि विषय मझधार ।
बहुत कष्ट सह कर यही, मरत भयो तिह बार ॥ २८ ॥
निज दौलत भंडार में, भयो सर्प सो येह ।
पुत्रादिक को द्रव्य यो, करै लेन नहिं देह ॥ २९ ॥

पद्धडी

दीरघ सुतयाको गरुड़ दत्त । तिसने बहु क्रोधधरो सु चित्त ॥
इस अहिको जब मारो तुरंत । इन आरत ध्यान कियो अत्यंत ।३०।
मर चौथे नर्क गयो अज्ञान । बहु पाप उदै लियो शुभ्र थान ॥
अब देखो चतुर विचार येह । जिन धर्म बिना बहुदुख सहेय ।३१।
जन लोभ ठगो करे पाप घोर । भवदधि में पावत कष्ट जोर ।
यातें जे संत दयाल चित्त । हिरदेमें धर मग होय वित्त ३२॥
छोड़ो दुखको जो देनहार । यह क्रोध लोभ दीजे सुटार ।
उज्वल कीजे मनबचन काय । याहीतें बहुविध सुख लहाय ३३

सोरठा

अपनी शक्ति समान, पूजा दान सु नित करो ।
धरो जिनेश्वर ध्यान, यही शांति कारक सदा ॥ ३४ ॥

इति श्रीआराधनासारकथाकोष विषय लुब्धकसेठकी कथा समाप्तम् नं० ४३।

अथ बशिष्ठतापसीकीकथा प्रा० ४४

अथ मंगलाचरण सोरठा ।

गणाधीश जिनदेव, दोष अष्ट दश रहित हैं ।
तिनको नमि बहु भेव, कहूं चरित्र बशिष्ठको ॥ १ ॥

चौपाई

मथुरा नगर बसे बहु भाय । उग्रसेन तामें नर राय ।
चितमें बास करन्त नार रेवती बहु गुणवन्त ॥ २ ॥

तिसही नगर विषय बड़ भाग । जिन पदाब्जमें अलिसम राज ।
ऐसे श्रीजिनदत्त महान । वसत सेठ अतिही धीमान ॥ ३ ॥
दासी एक रहे तिस धाम । प्रियगुलता है ताको नाम ।
इस अन्तर तापस इक आय । नाम वशिष्ठ तपे अधिकाय ४॥
जमनामें नित करे स्नान । पंचागन साधे अज्ञान ।
नगरीके मूरख जन जेह । भक्तिवान है पूंजत तेह ॥ ५ ॥
पुरनारी जावें जल हेत । नमें प्रदक्षण ताको देत ।
प्रियगुलता दासीको जवै । सखियोंने समझाई तवै ॥ ६ ॥
तो पण जैनी सेठ प्रसंग । नहीं नवायो याने अंग ।
तब याको गहके सब नार । तापसके पग दीनी डार ॥ ७ ॥
बोली चेरी तवै निशंक । धीमर सम इह तापस रंक ।
याके वच सुनके तापसी । क्रोध अनिलता उरमें धसी ॥ ८ ॥
वह दासी बहु हंस कर तास । चलीगई अपनी आवास ।
वह तापस उठके तिसकाल । राजसभा पहुँचो दरहाल ॥ ९ ॥
कहत भयो सुनिये महाराज । जिनदत सेठ दुखायो आज ।
लीनो नृपने सेठ बुलाय । ताको पूछो वैन सुनाय ॥ १० ॥
भय वर्जित यह सम्यक वन्त । कहत भयो सुन अवनी कंत ।
जो मैं याको कीर कहाय । तो ऐसेंही है नर राय ॥ ११ ॥
फिर तापस राजासे कही । याने नहिं इस दासी कही ।
तब नरेश इस वचकी हास । कर चेरी बुलवाई पास ॥ १२ ॥
देखतही तापस अज्ञान । क्रोध सहित इम वचन वखान ।
रे रगडे मैं द्विजको पूत । पवन भषूं अरु हूं अवधूत ॥ १३ ॥
ते पापन ऐसे इम कही । यह धीवर है निश्चय सही ।
तवै चेटका निरभय होय । कहत भई सुन तजकर कोय ॥१४॥
धीवर सफरी मारत मान । तू जलचरके मरत पिसान ।

तो में वामें अन्तर कौन । याते गहलीजे अब मौन ॥ १५ ॥
फिर भड़वाई जटा प्रचण्ड । तामें निकरे मछली खण्ड ।
भूपति जिनमत लखो विशाल। इस तापसको दियो निकाल १६
मान भंग ते बहु दुखलीन । मथुरा तज इन गमन सुकीन ।
आगे और सुनो व्याख्यान । यह अज्ञान महादुख खान १७॥

दोहा

गंगा गंधवती नदी, भयो जहां संयोग ।
तहँ तापसि यह जायकर, धरत भयो बहु योग ॥१८

काव्य

सो केते एक दिनन विषय गुरु वीर भद्रवर ।
आये तिसही थान पांच सत संग मुनीश्वर ॥
तामें ते एक ऋषी कहे सुनिये मुनि नायक ।
ये तापसि तपघोर करत इम भाषे वायक ॥ १९ ॥
ताके बच सुन सूर तबै बोले हित दाई ।
जे अज्ञानी दयाहीन तिन तप क्या भाई ॥
तापस येह बच सुने बहुत चितमें दुख पायो ।
कहतभयो अज्ञान कौन बिध मोहि बतायो ॥२०॥
तब आचरज कहे ज्ञान जो तू हिये धारे ।
मरकर उपजे कौन ठौर वो गुरू तुम्हारे ॥
बोलो तापस गुरू सदा तप करने हारे ।
जब आई उन मीच तबै वे सुरग सिधारे ॥ २१ ॥

दोहा

इम तापसकी सुन गिरा, बीरभद्र भगवन्त ।
तान नेत्र कहते भये, अब सुन तू विरतन्त ॥ २२ ॥
तेरे गुरु सुरलोक मैं, नहीं गये तू जान ।
उपजो इह इस काठ में, भस्म होत यह थान ॥२३॥

चौपाई।

तब तापस मन क्रोध सुआन। द्वार विदारो तिसही थान।
तामें अहि निकसो तत्कार। मूरखकी चेष्टा धिक्कार ॥२४॥
सो वशिष्ठ लख फणपति जबै। शीघ्र गर्वको छोड़ो तबै॥
श्री जिन भाषत सुन वच कान। भयो दिगम्बर श्रद्धा वान।२५॥
एक दिना मथुरा ढिग आय। गोवर्धन गिरिपै तिष्ठाय॥
मास उपासी येह मुनि चन्द। सहे परीषह बहु गुण वृन्द।२६।
तप बलते विद्या तिस पास। आन करो ऐसे अरदास॥
जो आज्ञा दो दीन दयाल। हम दासी करि हैं तत्काल॥२७॥
लोभ पिशाच ठगो मुनि एह। करत भयो विद्या सुन लेह॥
अबतो जावो निज आवास। याद करूं जब आवो पास।२८।
इस अन्तर नृप घोषन दई। भो पुरजन सब सुनियो सही।
ये वशिष्ठ मुनिवर गुण धार। ताको मैं दूंगो आहार॥ २९॥
और इन्हें देवे नहिं कोय। ऐसे आज्ञा दीनी सोय।
मूरख करै जो भक्ति अपार। सो भी कष्ट तनो दातार।३०।
अब मुनिवर पूरन कर ध्यान। चर्याको तब कियो पयान।
तादिन नृपको पट बंध करी। थम्भ उखार भगो नेह घरी।३१॥
ताकर चिन्ता भूपति धार। भूल गयो देनो आहार॥
क्षुधावन्त मुनि भिरमण कियो। पुरजनने भोजन नहिं दियो।३२।
भयो अलाभ तबै मुनि जान। वनमें आय धरो फिर ध्यान॥
दूजी बेर पारना दिना। करम योग इक कारज बना॥ ३३॥
पुरमें दौं लागी अधिकाय। ताकर भूपति व्याकुल थाय॥
भूल गयो भोजनको काल। मुनि वनमें पहुंचे तत्काल॥३४॥
तीजी बार पारने काज। नगरी में आये मुनि राज॥
तिनके अन्तराय परभाय। जरा सिंधुको दूत जु आय ॥३५॥

ताकर उग्रसेन भूपार। मूरख व्याकुल थो तिह बार।
जिनकी ज्ञान रहितहैं बुद्धि। तिनके कारज होय न सिद्धि॥३६॥
बहु उपवासन कर तन क्षीन। उलटे फेर गमन सू कीन॥
पुर बाहर चिन व्याकुल होय। मूर्छा खाय पड़ो भू सोय॥३७॥
वृद्ध पुरुष इक लख तिह घरी। क्रोध थकी बानी उच्चरी।
आप अहार देय नहिं राय। औरन को भी मने कराय।३८।
ताते मुनि तप निध गुण खान। राजाने इह मारे जान॥
ऐसे सुन ऋषि वाको बैन। क्रोध अनिल व्यापो दुख दैन।३६।
बर्द्धमान पर्वत पै जाय। वे देवी सब लई बुलाय।
कहत भयो एहहै नृप नीच। ताकी कीजे अब तुम मीच।४०।
वो देवी बोली तिह बार। जिन लिंगी मुनिवर हो सार।
ऐसो तुमको कहनो नाह। यामें पाप लगे अधिकाह॥ ४१॥
तब मूरख बुद्धी रिसवन्त। ऐसे सुन फिर बचन भनन्त।
जन्मान्तर मुनि आज्ञा एह। पालनकीजे निःसन्देह॥ ४२॥
इम सुनकर विद्या इम कही। परभवमें हम मारें सही।
फिर विचार मुनि दुखमें लीन। नृपने अन्तराय मुझ कीन ४३॥
सहित निदान छोड़ निज प्राण। गर्भ रेवती उपजे आन।
पापरूप यह क्रोध प्रचण्ड। शुभ कारज को करे जुखंड।४४।

दोहा

अब इह रानी रेवती, भई छीन तन सोय।
लख भूपति पूछत भयो, क्यों तुम वपु कृष होय।४५।
तब नारी कहती भई, सुनिये नाथ दयाल।
मेरे मनमें दोहलो, उपजो अति बिकराल॥ ४६॥

सोरठा

फिर नृप पूछो येम, कौन दोहलो चित बसे।
हरानी धर प्रेम, तुम बांछा पूरन करूं॥ ४७॥

तब बोली यो नार. इह वांछा मुझ चित वसे ।
तुमरो हृदय विदार,पान करूं श्रोणित तनो ॥ ४८ ॥

दोहा

पापी पुन्नी जीव जो, आवे गरभ मझार ।
तैसे तिस माता तनो, मन होवे निरधार ॥ ४९ ॥

पद्धरी

तब नृप मनमें करके विचार । पुतलो वनवायो निज आकार ।
महा बड़रंग तामें भराय । तिस वांच्छाको पूरन कराय ॥५०॥
कितने दिन पीछे नारि जेह । कुलनाशक पुत्र जनो सुयेह ।
जैसे वनके वांसनि मझार । वन्ही उपजे वन भस्मकार ॥५१॥
शिशु मुख देखन आयो नरेश । पेख्यो भृकुटी जुत क्रूर भेश ।
तिस वालकको अति दुष्ट जान । नृप उग्रसेन तब येम ठान५२
निज नाम तनी मुद्रा धरन्त । अरु तन सुकम्बल ले तुरन्त ।
काशीकी मंजूषा मंगाय । तामें इन युत वालक धराय ॥५३॥

दोहा

जमना सरिता जाय कर, दीनो तिसे वहाय ।
दुष्टानस जे जीव हैं, किस को प्यारे थाय ॥ ५४ ॥

काव्य

इस अन्तर कौशांबी नगरी मांही जानो ।
गंगा भट मद कार रहे तहां एक अयानो ॥
ताके गेह मझार नाम राजोदरि नारी ।
जमना पै जल लेन गई सिर पे धर झारी ॥ ५५ ॥
ताने लखी मंजूष खोल देखी तिह भारी ।
निरखा जीवन वाल तेव मन साता धारी ॥
कंस नाम तिस धार फेर निज घर ले आई ।

पालै आठों जाम तैसे जाने सुख दाई ॥ ५६ ॥
अष्ट बरस को कंस भयो विकराल चित्त अत।
पति पुत्रन से लड़े कलह उपजावत यह नित ॥
पापी जन जे होय कहो काको सुख दाई।
मात तात अरु भ्रात सबन को नहिं सुहाई। ५७।
रुद्ध चित्त इस जान कलाली काढ़ दियो तब।
सो सौरीपुर मांहि गयो बसुदेव पास जब॥
शिष्य होय कर शस्त्र शास्त्र विद्या भन लीनी।
यांही अवसर विषय कथा एक कहो नवीनी ॥ ५८ ॥

चौपाई

इस अंतर नृप सिंह रथ जान। जरासिंधुको अरि बलवान ॥
दुष्ट चित वश होवे नहीं। चक्री सब सुभटन से कही ॥ ५९॥
कोइ सूरमा पकड़े तास। गह कर लावे मेरे पास ॥
जीवं जसा तासुकी सुता। अपनी परनाऊं गुण जुता ॥६०॥
सब सूरनमें सो सिरताज। मन बंच्छित पावे सो राज ॥
ऐसे बच कह कर नर राय। पुर मांही घोषणा दिलबाय ॥६१॥
यह घोषण सुनके बसुदेव। बड़े भ्रातकी आज्ञा लेव ॥
पोदनपुर को चले तुरंत। साथ लई सेना बलवंत ॥ ६२ ॥
पुर बाहर डेरे करवाय। आप होय कर सारथि बाह ॥
छिपकर नगरी में परवेश। करत भयो बसु देव नरेश ॥६३॥
ताकी गय शालामें जाय। हरको मूत्र गजन हूं प्याय ॥
फेर करो बहु बिधि संग्राम। ततच्छण जीत लियो तिह ठाम ।६४।
कंस सारथी थो जिहबार। दे आज्ञा बसुदेव कुमार ॥
अपने करते तू बुद्धिवन्त। इस बैरी को बांध तुरन्त ॥ ६५ ॥
तबै कंस चित क्रोध सुठान। बांध लियो सिंहरथ बलवान॥

अगन तनोहै तस सुभाय । वायु लगे अजुले अधिकाय ॥६६॥
तब वसुदेव जरासिंधु पास । आन करी ऐसी अरदास ॥
यह हर रथ लीजे महाराज । आप चरन ढिग आयो आज ।६७॥
लख चक्री मन भयो खुशाल । कहत भयो इम वचन रसाल ॥
हो भट मेरी तनुजा सार । ताको तू कर अंगीकार ॥६८॥
जौन देशको तुझ अनुराग । ताको राज करो वड़ भाग ।
तब बसुदेव कही तिह ठोर । हो स्वामी सुन विनती मोर ।६६।
मैं नहिं बांधो है महाराज । कंस किये ये सबही काज ।
जो चित तुमरे में भूपाल । सो दीजे याको तत्काल ॥७०॥

दोहा

जरासिंधु याको तबै, पूछो कुल अहवंस ।
सुभटनमें सिरताज इह, वोलो इह विधि कंस ॥७१॥

चौपाई ।

मैं सेवक तुमरो नरराय । जान कलाली मेरी माय ।
प्रति हरने इस लच्छरा देख । चत्री तनुज सु याको पेख ।
अवनीपर जे भूप उदार । तिनकी बुद्धि दिये अधिकार ।
तब कलाली लई बुलाय । पूछो इह सुत तेरो थाय
मंजूष दीनी नृप हाथ । इसको पुत्र जानिये नाथ ।
ऐसे सुन चक्री तिह वार । खोल मंजूष कियो निरधार
उग्रसैनकी मुद्रा देख । प्रति केशव हरखियो विशेख ।
राज कुली तव याह लखाय । जीव जसा दई परनाय
फेर कंस दुट जुत उन्माद । पूरव वैर कियो तिन
उग्रसेन को देश महान । चक्रवर्त्ति से मांगो आन
ताने दीनो हरषित चित्त । सो यह चालो युद्ध निमित्त
कर संग्राम पिता को जीत । डारो पिंजरे अस तज नीत

नगरीके दरवाजे बीच । लटकायो ताले जड़ नीच ।
कांजीजुतको दोष अहार । खानेको नित दे दुखकार । ७८ ।
आप राज भोगे बहु भाय । चितमें क्रूरपनो अधिकाय ।
जे दुर्बुद्धी पुत्र अयान । या जगमें कुलनाशक जान ॥७९॥
या अन्तर अति मुक्तकनाम। भ्रात कंसके लघु अभिराम ।
यह संसारचरित्र निहार । श्री जिन दीक्षा लीनी सार ॥८०॥

दोहा।

तिस पीछे इस कंसने, बहु बिधि प्रीति जनाय ।
श्रीबसुदेवकुमार को, लीनो निकट बुलाय ॥ ८१ ॥
निज उपकारी जान के, अथवा गुरू निहार ।
भक्ति धार सन्मान कर, राखो निज आगार ॥ ८२ ॥
अब नगरी मृतकावती, देवसैन महाराज ।
धनदेवी ताके तिया, कुरुवंशन सिरताज ॥ ८३ ॥
ताके पुत्री देवकी उपजी सुन्दर काय ।
सो बसुदेवकुमार संग, दीनो कंस जु ब्याह ॥ ८४ ॥

पद्धड़ी

इस अन्तर इक दिनके मँझार रजुशिला भई बसुदेव नार ।
तब कंस भाम ताको जु देख । सो उत्सव कीनों अति विशेष ८५
ताही दिन अति मुक्तक मुनिंद्र । चर्या निमित्त आये योगिंद्र ।
जीवन जसा मुनिको लखाय । जोबन मदते इम बच कहाय८६
भो देवर नृत्य करो अवार । निज भगनीके ये पट निहार ।
मुनि बोले हे मुग्धे अयान । मोहि नृत्य करन नहिं जोगजान८७
तब येह पापन बहु हास कीन । मुनिवरको मारग रोक लीन ।
अत्यन्त दुखी जब होय साध । इम बचन कहे मतकर उपाध८८
देवकी पुत्र होवे महान । ताकर तुझ पतिको काल जान ।

तब कंसनार कर रिस प्रचण्ड । तिस पटके कीने युगम खंड ८९
फिर जती कहे सुन नीच नार । तैं पटके खंड किये अबार ।
याते वो पुरुषोतम सुवाल । तुझ तात तनो भी जान काल ९०

दोहा ।

इम सुन चक्रीकी सुता, ह्वै कर दुखित अपार ।
शीघ्रगई निज धामको, जहां हुतो भरतार ॥ ९१ ॥
अज्ञानी जन हासकर, करें पापको पुष्ट ।
ताको फल पीछे लहैं, दुखदाई अति नष्ट ॥९२॥

पामछन्द

एक कंस तिया अकुलाई । नैननमें नीर सुलाई ।
तब भूप कहे सुन नारी । चित व्याकुलता किम धारी ॥९३॥
सो मुनिवर के वच सारे । नृप आगे नार उचारे ।
यह सुनकर कंस अज्ञानी । जीवनकी आशा ठानी ॥९४॥
कर दुष्ट बुद्धि अधिकाई । वसुदेव पास तव जाई ।
नमकर इम गिरा उचारी । मेरो वर देहु अवारी ॥ ९५ ॥
वसुदेव याद जबकीना । संग्राम विषय वरदीना ।
यादवपति तवै सुनाई । मांगो सो पावो भाई ॥ ९६ ॥
तव कंस कहो इम टेरी । देवकी बहन जू मेरी ॥
ताके प्रसूत दिन आवे । जब मुझ घर सुत उपजावे ॥ ९७ ॥
ऐसो वर मांगो याने । ह्वै खुशी दियो तव ताने ॥
सत्पुरुष वचन निज पाले । दुख होवे तो उन टाले ॥ ९८ ॥

दोहा

प्राणन ते सुत अधिक हैं, सुत ते अधिके प्रान ।
सो दशरथ दोनों तजे, एक वचन परमान ॥ ९९ ॥
यह सुत कानके देवकी, जानी सारी बात ।
ह्वै उदास पति पै गई, कहत भई यह भात । १०० ।

भो स्वामी या जगत में, पुत्र मरन दुख जोर।
तातें आज्ञा दीजिये, करूं तपस्या घोर ॥ १ ॥

सवैया इकतीसा

तब वसुदेव निज नार युक्त होय कर, गये उस बन मांहि जहां मुनि चन्द हैं। आम्र को बिटप सार ताके तले निहार, ज्ञान नेत्र धारें तिष्ठ आनन्द के कंद हैं। भक्ति ठानी यदुपति सीस को नवाय तब, करी थुति येम तुम त्यागो जग धंद हैं। मेरे सुत कौन होय जरासिंधु नासकार, तास को बताओ जातें होय आनंद हैं ॥ २ ॥

दोहा

तब मुनि निज भगनी प्रतें, ऐसे बैन उचार।
इस तरुवर सहकार की, तुम पकड़ो यक डार ॥ ३ ॥

कवित्त

तब वसुदेव नारने पकड़ी तिस तरु की इक सुन्दर डार।
तीन युगम फल ऊपर लागे एक पड़ा सो भूम मझार ॥
अष्टम फल यक पक्क मनोहर सो ऊपरको गयो निहार।
ऐसे देख निमित्त मुनीश्वर ज्ञान धार इम बचन उचार ॥ ४ ॥

सोरठा

अहो भव्य सुन धीर, तीन युगम सुत शिव लहे।
एक होय बल बीर, जरासिंधु नासक सही ॥ ५ ॥
अष्टम पुत्र महान, तुमरो होवेगो भलो।
अष्ट करम को भान, शिव सुन्दर छिन में वरे ॥ ६ ॥

चौपाई

ऐसे बच सुन आनंद कार। चित्त विषय इन कियो बिचार ॥
मुनि बच निश्चय होवें सही। ऐसी सरधा हिरदे गही ॥ ७ ॥

फिर नमकार आये निज गेह । जिनवर धर्म करे जुत नेह ।
इस अंतर देवक की सुता । कंस धाम तिष्ठी गुण जुता ॥ ८ ॥
तहां जने जुग सुत पुनवान । तबै देव आसन कम्पान ॥
अवधि विचार आय इस धाम । लिये उठाय युगल अभिराम ।९।
भद्दलपुर नगरी में जाय । श्री श्रुत दृष्ट सेठ तहां थाय ॥
अलका नाम तास के नार । ताके मृतक भये दो बार ।१०।
तिनको निरजर लिये उठाय । वसुदेव सुत तहँ पधराय ॥
मृतक युगम सुत लाये तेह । धर दीने पर सूतक गेह । ११ ।
पुन्यवान जे जगत मंझार । तिन रक्षा सुरकरें अपार ॥
ताते हितकारी जिन धर्म । करो जो याते पावो सर्म ॥ १२ ॥
पुन्य नाम जिसको है मीत । श्री जिन पूजन करो पुनीत ॥
वरत आदि मंडित मुनि चंद । तिनको दान देन सुखकंद ।१३।
दुष्ट चित्त फिर कंस अयान । मृतक बाल शिल पटके आन ॥
जे जन पापी हैं दुख कार । तिनकी चेष्टाको धिकार ॥ १४ ॥
इस अन्तर जु देवकी सोय । पुत्र जने ताने फिर दोय ॥
वाही भांति करी सुर आय । रक्षा बहु विधि चित हरषाय ।१५।
फेर युगल तीजो शुभ गात । उपजावो सु देवकी मात ॥
सुर ताही विध लेय तुरंत । अलका को सौंपे गुणवंत ॥१७ ॥
वाके मृतक पुत्र इहां आन । कंस देख सिलपर पटकान ॥
ऐसे भद्दलपुर के मांहि । छहों बाल यह केलि कगांहि ।१७।
गुण उज्जल शिवगामी येह । सेठ सिठानी धारें नेह ॥
वृद्धि होत सुखसे तिस गेह । आगे और कथा सुन लेह ।१८।

दोहा

ता पीछे अब देवकी, सतवां सो सुत सार ।
जनत भई भादों तनी, निस अष्टम अंधियार ॥ १९ ॥

शत्रु दलनको अति बली, नवमो हरि पुनवान ।
ताही छिन बसुदेव ने, सिसु ले कियो पयान । २० ।

सोरठा

बर्षत झड़ बहु मेव, ता मांही लेकर चले ।
छत्र लेय बलदेव, बालक पै छाया करी ॥ २१ ॥
नारायण पुनि सार, देव वृषभ बन आइयो ।
दीपक लीने बार, सींग विषय धरके चलो ॥ २२ ॥

अड़िल्ल

गोपुर नगरी तने जड़े देखत भये । बासुदेव के चरन लगत ही खुल गयो । आगे जमना नदी बहे असराल ही । डूबत पद के गई उतर तत्काल ही ॥ २३ ॥

पहुंचे सरिता पार देव के मठ गये । देवी की मूरत पीछे छिपते भये । ताही छिन इन पुन्य जोग कर इम भई । नंद ग्वाल की नार यशोधा है सही ॥ २४ ॥

दोहा

सो इस देवी की सदा, सेव करत हरषाय ।
चंदन अक्षत पुष्प ते, पुत्र अर्थ नित आय ॥ २५ ॥
सो ताने तिस रात्रि में, सुता जनी इक सार ।
तबै यशोधा देखकर, क्रोध कियो अधिकार । २६ ।

पद्धड़ी

तिस पुत्री को ले नार कंत । देवी के मठ आये तुरंत ।
मूरत आगे कन्या धराय । ऐसी विधके फिर वच कहाय ।२७।
हे देव सुता तुमरी सु एह । याको पालन तुमही करेह ।
इम कह कर पुत्री मेल दीन । फिर मंदर बाहर गमन कीन ।२८।
तब बुद्धिवान बसुदेव राय । तिसकी तनुजा लीनी उठाय ।

अपने सुतको रख देत पास। बाहर आकर इम वच प्रकास ।२९।
हे यशुदे तुमे बाल चंद। देवी ने यह दीनों मुकंद ॥
सो लखकर लीनों अंक बीच। निज घर सुत लाई जुत मरीच।३०।
इस लोक विषय जे पुन्यवान। तिनके चरित्र सब अतुल जान।
अब वसूदेव बलदेव जेह। सुभटोत्तम आये आप गेह ॥ ३१ ॥

दोहा

पुत्री को परसूत थल, है देवकी हात ।
अब दुष्टातम कंस सुन, आयो शीघ्र रिसात । ३२ ।
पहुंचो सूतक थान में, देखी तनुजा येह ।
तबै नाश कामल दई, भई सु चिपटी देह । ३३ ।

चौपाई ।

अब गोकुल में कृष्ण कुमार । वृद्ध होत लीलाकर सार ॥
कंस धाममें है उत्पात । भंग नक्षत्र भये अधिकात । ३४ ।
पड़त दामिनी नभते आय । इह लख कंस महां भय पाय ॥
तब निमित्तको जाननहार । शकुन शर्म नामा बुध धार । ३५ ।
तासों पूछो नृपति बुलाय । इह उत्पात होत क्यों भाय ।
तब बोलो सुनिये तुम देव । इनको फल भापत हूं एव । ३६ ।
गोकुल में तुम अरि परचंड । वृद्धि होत है अति बलवंड ।
सो तुमको मारेगो सही । यामें मिथ्या रंचक नहीं ॥ ३७ ॥
इम सुनके निमतीको नाद । पहिली विद्या कीनी याद ।
सो आई ततक्षण ता पास । कंस तबै तिनते इम भास ॥३८॥
हो देवी मो अरि जिम थान । ताके शीघ्र हनो तुम प्रान ।
ऐसो सुन वे सुरी अयान । हरि मारनको उद्यम ठान ॥ ३९॥
प्रथम पूतना गई तुरन्त । निज स्तनन कीने विष वन्त ।
तबै कान्हको प्यावों जाय । ताने कुच खैंचे अधिकाय । ४० ।

मरन समान होय भग गई। काल सुरी जब आवत भई।
खगको रूप चोंच विकराल। मारनको धाई तत्काल ॥ ४१ ॥
जब मुरलीधर मारी मुष्ट। भागत भई पाप दुख पुष्ट।
यमलार्जुन देवी तीसरी। ऊखल ले आई रिस भरी ॥ ४२ ॥
गरुड़पती ने मारी जबै। वह भी भागी दुख ले तबै।
चौथी साकट विद्या आन। चरन घातते भगी अयान ॥४३॥
वृषा नाम देवी विकराल। क्रोध वन्त आई मनु काल।
मोहन ने गल तोड़ो तास। सोभी भागी लेकर त्रास ॥४४॥
षष्ठी विद्या अश्वा नाम। गल पकड़त भागी निज धाम।
सप्तम विद्या मेघेश्वरी। सात वर्ष तक वर्षा करी। ४५।

दोहा

तब गोवर्धन कर विषय, लियो मुरार उठाय।
ताको बस कछु ना चलो, सोभी गई पलाय ।४६।
काली नाम महा सुरी, अहिको रूप बनाय।
ताको जयकर कंजले, बाहर निकसे आय ।४७।

काव्य

आठों देवी हार कंसके पास गई तब।
कहत भई सुन कंस तास पै हम हारी सब ॥
इम कह आठों सुरी गई लज्जित है कर लख।
पीछे मोहन आय हने चानूर आदि मल ॥४८॥
फिर पापी इह कंस तास को वेग पछाड़ो।
दीनी बहु विध त्रास भूमिमें हनकर डारो।
गुण उज्वल नृप उग्रसेन छोड़ो तत्कारी।
दीनों ताको राज तबै मथुरा को भारी ॥४९॥

दोहा

फेर अर्द्ध चक्रेशते, हरि कीनों संग्राम ।
ताको हन त्रिय खंड पति, होत भये अभिराम ।५०।
श्री हरि वंश पुरानमें, इह सवही व्याख्यान ।
भिन्न भिन्न कर जानलो, अहो भव्य वुधिवान ।५१।

सवैया

इस लोक मांहि धर्मसे परान दुःखजे, खोटे कर्मके समूह ठाने हरपायके । तातें जे सुमन सार जगको लखो असार, पावो भव दधि पार करम नसाय के । सुर शिव दैनहार जिन धर्म हिये धार, कभी न विसारो तुम मन वच कायके ॥ राग द्वेष के वसाय कौन कौन नष्ट नांह, भये अधिकाय भव्य जानो चित लाय के ॥ ५२ ।

दोहा

इह वशिष्ट तापसि तनी, कथा कही मैं वीर ।
सुनकर कोह निवारियो, क्षमा गहो जन धीर ॥५३॥

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषय वशिष्ट तापसीकी कथा समाप्त नं० ४४

अथ लक्ष्मीमतीकीकथा प्रारम्भः नं० ४५

मंगलाचरण । सवैया तेईसा ।

लोक अलोक प्रकाशक ज्ञान धरे अरिहन्त सवै सुखदाई ।
मंगल रूप विराजत हैं नित पूजत इन्द्र नरिन्द्र सु आई ॥
सीस नवाय करूं परणाम धरूं तुम ध्यान जु होय सहाई ।
मान कथा वरनूं हितकार सवै भ्रम टार सुनो भव्य भाई । १ ।

ढाल एला पुत्र की ।

मागध देश जो सोहनो, लक्ष्मी नामक ग्राम ।
सोमदेव तहँ द्विज रहे, ताके श्री मति भाम ।
मान महा त्रिय रूप है । २ ।

रूप सुभाग धरे तिया, जोबन मद अधिकाय।
कुलको गर्ब करे महा, अवला क्रूर सुभाय।
मान महा विष रूप है। ३।
सोमदेव धरमात्मा, बिप्र शिरोमणि सार।
धर्म नेह नित चित बसे, एकै दिवस मझार।
मान महा बिष रूप है॥ ४।
पख उपवासी महा मुनी, तप रतनन के धाम।
बिप्र गेह आवत भये, समाध गुप्त ऋषि नाम।
मान महा विष रूप है। ५॥
तिनकी भक्ति हिये धरी, सोमदेव वड़ भाग।
पड़ गाहे ताही समय, थापे जुत अनुराग।
मान महा बिष रूप है। ६।
फिर निज तियतें इम कही, सुन प्यारी चित लाय।
गुण मंडित ये साधवी, तू भोजन करवाय।
मान महा विष रूप है। ७।
इम कहकर मन दुखलयो, भयो महा कोइकार।
राजाने बुलवाइयो, तहां गयो तत्कार॥
मान महा बिष रूपहै॥ ८॥
मूरखनी नारी तबै, दियो नहीं आहार।
आसन पर बैठी रही, आनन मुकर निहार॥
मान महा बिष रूप है॥ ९॥
गर्भकरो अघकारनी, मुख दुरबचन उचार॥
कर गिलानि मुख देहकी, भेड़े जुगम किवाड़।
मान महा बिष रूप है॥ १०॥
घरमें बैठी पापिनी, बांधे कर्म अयान।

अहो महा एह कष्ट है, या सम पाप न आन ॥
मान महा विष रूप है ॥ ११ ॥

चारित मंड तबै गुरू, सब आतम हितकार ।
शान्त चित्त समता लिये, वनको कियो विहार ॥
मान महा विष रूप है ॥ १२ ॥

अहो बात इह युक्त है, पापातम जो जीव ।
तिस घर सम्पति आपके, जिम फिरजाय सदीव ॥
मान महा विषरूप है ॥ १३ ॥

मुनि निंदा करने थकी, अथवा मान पसाय ।
सप्तम दिन द्विजनी लयो कोढ़ उदम्बर काय ॥
मान महा विष रूप है ॥ १४ ॥

मुनि निंदा एक जग विषै, शांत हेत नहिं होय ।
रोग शोक दुख कारनी, तिने थकी सुखकोय ॥
मान महा विष रूप है ॥ १५ ॥

पुरजन लख दुर्गंध को, सहने समरथ नाहिं ।
कोढ सहत वो पापनी, काढ़ दई छिन मांहि ॥
मान महा विषरूप है । १६ ।

जाय तबै बनके विषै, अगन कियो परवेश ।
आरत ते तज प्रानको, गधी भई उस देश ॥
मान महा विषरूप है ॥ १७ ॥

दोहा

रजक धाम में जनम लहि, मिलो दूध तिस नाह ।
तब मरकर सूरी भई, तिसी ग्राम के मांहि ॥ १८ ॥

फिर तन तज कूकर तनी, पाई जुग परजाय ।
दावानल में भस्म ह्वै, मरी महा दुख पाय ॥ १९ ॥

काव्य

हालाहल विष जगत मांह दीखे दुखदाई ।
सो तो भक्षण श्रेष्ठ मरन इकबार लहाई ।
शील शिखर मुनिराय तनी जे निंदा वाने ।
जन्म जन्म दुख लहे पापतें शुभ गति भाने ॥ २० ॥

चौपाई

सो कूकरनी तजिके प्रान । संविपाक निरजरा ठान ।
कच्छ नाम नगरी के तीर । नदी नर्मदा बहे गंभीर ॥ २१ ॥
ताके तट भई धींवर सुता । काड़ा नाम महादुख युता ।
तन दुर्गंध रोग की खान । किधौं पापकी मूरत जान ॥ २२ ॥
देखो मुनि निंन्दा परभाय । दुजनी भई धींवरी आय ।
जनम जनम दुख लहो अत्यन्त । ताते जात गर्व तज सन्त ॥२३॥
धींवर की अब तनुजा एह । नित प्रति नाव चलावत तेह ।
एक दिना गुरु दीनदयाल । ज्ञाननेत्र धारे गुण माल ॥२४॥
दुहनी तट देखे धरि ध्यान । कीरसुता नमि बोली बान ।
हे प्रभु मैंने तुमको सही । पहिले भी देखे हैं कहीं ॥ २५ ॥
यह सुनके मुनि शिव तिय कन्त । पूरबलों भाषो विरतन्त ।
अहो बालके तू दुज सुता । लक्ष्मी ग्राम विषै मदजुता ॥ २६ ॥
सोमदेव दुजकी थी नार । लक्ष्मीमती नाम तू धार ।
हे मुग्धे मुझ निन्दा कीन । ताते पायो कोट मलीन ॥ २७ ॥
अग्नि भस्म ह्वै गधी जो भई । मर सूरीकी काया लई ।
फिर दो बार भई कूकरी । धींवरसुता भई वपु सरी । २८ ॥
ऐसे गुरुके बचन संभाल । जाती सुमरन पायो बाल ।
मुनि के चरणकमल शिरनाय । कहतभई बहुविधि दुखदाय ।२९।
हो मुनि मैं कर पाप प्रचण्ड । जौन जौन मैं पायो दण्ड ।

अब रक्षा कीजे योगिन्द्र । जाते दुखको मिटै प्रबंद । ३० ।
नवै समाधि गुप्त मुनिराय । याको भगवत धर्म सुनाय ।
देव इन्द्र कर पूजित सदा । क्षुल्लक व्रत धारे है मुदा । ३१ ।
शक्ति समान करो तप घोर । मरके स्वर्ग गई अघ तोर ।
इस अन्तर कुण्डनपुर सार । भीषम नामा नृपति उदार । ३२ ।
नारी यशस्वती तिसके गेह । भूपतिको तासों अति नेह ।
सो इह नाम थकी चय थाल । भई सुता बहु रूप रसाल ॥३३॥
नाम रुक्मणी है सुखकार । वासदेव कीनी पट नार ॥
पुन्य थकी कन्या को लहे । आचारच ऐसे वच कहे ॥ ३४ ॥

छप्पय

जिन मत सेवत लहे भले कुल मांहि जनम जश ।
ज्ञान शास्त्र को लहें होन सम्पति जाके वश ॥
विदुषन संगत करे बंध शुभ गति को ठाने ।
फेर लहै शिव धाम वसू अरि को सो हाने ॥
इम जान सकल अभिमानको, तजो वेगही भविक जन ।
जिन मतकी श्रद्धा करो, ताते पाओ सुजस धन ॥३५॥

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषय लक्ष्मी मतीकी कथा समाप्तम् ॥४५॥

मायाशल्यपुष्पदत्ताकीकथा प्रारम्भः४६

मंगलाचरण ॥ सोरठा ॥

तीन जगत पति सार, श्री अरिहन्त जिनेश जी ।
कोड़ो सुख दातार, तिनको ध्याऊं भाल निज ।१।
कहूं कथा अब येह, माया शल्य निवारनी ।
सुनो भव्य चित देह, ताते सब कल्याण है ।२।

चौपाई ।

अजतावर्त नगर अति शुद्ध । पुष्प चूल भूपति नहैं दुन्द्ध ॥

नार पुष्पदत्ता तिस गेह। सदा सुहागन सुन्दर देह ॥ ३ ॥
एक दिना राजा धीमान। जती अमर गुरु भेटे आन।
तिनके निकट सुनो जिन धर्म। जो सुर शिवके देवे सर्म। ४।
मन बच काय करी त्रिय शुद्ध। संयम लीनो निर्मल बुद्धि।
अब इह पुष्पदत्ता नृप भाम। जाय ब्राह्मला आर्जा ठाम।५।
होत भई आर्या तिह घरी। शारीरक मूर्च्छा परि हरी।
कुल ऐश्वर्य गर्भ इस चित्त। धर्म तत्व तें उलटी नित्त। ६।
और अर्जका जे तप धाम। तिनको इह नहिं करे प्रनाम॥
मूरख जनजे चेष्टा धार। ताको है बहु विधि धिक्कार ॥७॥
फेर पुष्पदत्ता इम कीन। तन सुगंध लाई मति हीन॥
तबै ब्राह्मला आर्जा कही। ताको इह विध जोग जु नहीं।८।
तावच सुन माया जुत येह। बोली है सुगन्ध मुझ देह॥
जिनके नहीं धर्म मन मांहि। ते समझाये समझे नांहि॥ ९॥

दोहा

ऐसे माया शल्प धर, व्रतका त्यागी काय।
पाप उदयतें जन्म लहो, चम्पापुर में आय ॥१०॥
सागरदत्त जु सेठ के, दासी भई मलीन।
पूत मुखी तिस नाम है, उपजी दुखिया दीन ।११।

काव्य

अब श्री गुरु इम कहे सबै पंडित सुन लीजे।
यह संसार चरित्र जान माया तज दीजे॥
कैसी है यह सल्य भवो दधि बेल समानी।
दुख उपजावन हार, जानकर त्यागो प्रानी ॥१२॥
पशू जन्मको देत शुद्ध कुल नाशन वन्हीं।
लक्ष्मी यश अरु रूप बड़ाई शुभ गत भन्नी॥

ऐसे लख जिन धरम करम में सावधान जे ।
माया मन ते दूर करो जो चाहो सुख ते ॥१३॥

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषय माया शल्य पुष्पदन्ता ने करी ताकी कथा समाप्तम् ४६

अथ मारीच चरित्र प्रारम्भः नं० ४७

मंगलाचरण ॥ सोरठा ॥

सुख रूपी जे धान, तिन उपजावन मेघ सम ।
ऐसे श्री भगवान, हरप सहित जिन पद नमूं ।१।
पूरब श्रुत अनुसार, कहूं चरित्र मारीच को ।
सुनो भव्य चित धार, मिथ्याको अधिकार अब ।२।

दोहा

प्रथम भरथ चक्री भये, नगर अयोध्या बीच।
तिनके भव्यातम तनुज, आरज भये मरीच ॥३॥
इन्द्र चन्द्र नागिन्द्र कर, अर्चित पर अर्विन्द ।
ऐसे श्री वृपभेष वर, गए कानन तज फन्द ॥४॥

चौपाई

एक दिना यह भरथ नरिन्द्र । समोशर्न में सुन आनन्द ॥
प्रभुसे प्रश्न कियो सिरनाय । अहो नाथ मोहि देहु बताय ।५।
तुमसे तीर्थंकर ते ईश । और अबै होवे जगदीश ॥
तिनमें होनहार जन सोय । है कि नहीं इस थानक कोय ॥ ६ ॥
तब जिन केवल नैन विशाल । कहत भये वच सुन गुणमाल ॥
एह मरीच गुण उज्वलसोय । तुम सुत अंत जिनेश्वर होय ॥७॥
यह वच सुनकर षट खंड पती । हर्षित चित्त भयो शुभ मती ॥
अरु मरीच भी सुनये वान । उर अज्ञान क्यो तिस आन ।८।
सम्यक त्याग कुलङ्गी भयो । पर ब्राजक मत मांहि जु गयो ॥

घोर बीर यह है संसार । तामें भ्रमन कियो बहु बार ॥ ९ ॥
जन अज्ञान प्रमाद बसाय । नाना गातेमें दुःख लहाय ॥
तातें भव्य जीवजे साध । धर्म काज में तजो प्रमाद ॥ १० ॥
फिर ये मोह तने परभाय । बहुत काल भरमों दुखपाय ॥
मंद कषाय भई फिर चित्त । जैन धर्म को गहो पवित्त ॥ ११ ॥
नंद नाम उपजो नरपाल । जिन दीच्छा लेकर तत्काल ॥
षोडष भावन भाय मुनिंद । तीर्थंकर परकत कर वंद ॥१२॥
स्वर्ग सोलवें उपजे इन्द्र । भोग तहां नाना सुख वृन्द ॥
फिर चैकर पृथ्वी तल बीच । शुद्धातम वो जीव मरीच ॥१३॥

दोहा

कुन्डनपुर नगरी विषय, श्री सिद्धार्थ नरिन्द्र ।
प्रिये कारनी मात के, उपजे बीर जिनिन्द्र । १४ ।
तीन लोक पूजत चरन, तीर्थंकर महाराज ।
बाल पने दीच्छा लई, तजके सकल समाज ॥ १५ ॥

पद्धड़ी छन्द

फिर घात कर्म को बास ठान। केवल पद पायो अति महान।
सब देव इन्द्र नागिन्द्र चंद । इनके पद पूजें धर अनंद ॥१६॥
भव्यनको सुर शिव समंदाय। ऐसो मारग दीनों दिखाय ॥
फिर सब अघातिया कर्म नास । शिवपुरमें कीनों आप बास ।१७।
अब भव्य जीव चित मांह सार। जिनबच सरधान कियो अपार।
जयवंत प्रवर्त्तो बर्द्धमान । नित प्रति देवे अद्भुत कल्यान ॥१८॥

काव्य

जगनाथन कर पूज ज्ञान बारध अरिघाता ।
ऐसे श्री अतिबीर भव्य जन के हैं त्राता ॥
तिनकी भक्ति महान देव नर सुर खग के सुख ।

अनुक्रम तें शिव होत नाश सब ही कलेश दुख ॥
इह विधि श्री आदीसने, भरत नृपति सेती कही ।
श्री जिन वचन महान हैं, ताहीं विध होती भई ॥१६॥

इति श्री आराधना सार कथा कोष विषय मरीच की कथा समाप्तम् नं० ४७

घ्राणदोष गंध मित्रकी कथा नं० ४८

मङ्गलाचरण । सोरठा

तीन जगत हितकार, गुण वारिध श्री जिन नमूं ।
गंध मित्र की सार, कथा कहूं घ्राणाक्ष की ॥ १ ॥

गीता छन्द

नगरी अयोध्या में सुबुद्धि विजै सेन नरिन्द्र जी ।
ताके विजैमती नार सुन्दर पुत्र हो सुख कन्द जी ॥
जै सेन दूजो गंध मित्र सु नाम तिसको जानिये ।
लघु सुमुन आदिक गंध लम्पट अलि समान प्रमानिये ।२।
एके दिना नर नाथ ने वैराग मांही चित धरो ।
जै सेन को निज पद दियो अनपेष ताही छिन कियो ॥
लघु पुत्र को युवराज पद में थापियो तत्काल जी ।
जा आप सागर सैन मुनि ढिग सर्व संग प्रहार जी ॥३॥

चौपाई

गंध मित्र तृष्णा की रास । बड़े भ्रात को दियो निकास ॥
अहो राज लक्ष्मी इह जान । पाप तनी जननी पहिचान ।४।
जिसमें हैं आसक्त अज्ञान । बंधु वर्ग के नासे प्रान ॥
इस अंतर जै सेन नरेश । राज भ्रष्ट हे तजो स्वदेश ॥ ५ ॥
अपने मनमें करे उपाय । किह विधि नास होय लघु भाय ॥
अब इह गंध मित्र नर राय । सरजू सरितामें नित जाय। ६ ।
सब नारन जुत केल करात । नासा इन्द्री वश अधिकात ॥

बहु प्रकारसे सुमन सुगंध । तिनमें लीन रहे मद अंध ॥ ७ ॥
यह वृतान्त सुनके जै सेन । भ्रात हनन इच्छा दिन रैन ॥
हालाहल के पुष्प मंगाय । तिस तटनी में दिये बहाय । ८ ।
यह मूढ़ातम मदमें भूल । सूंघत भयो वेविष के फूल ॥
लीन भयो घ्राणेन्द्री बीच । मरके नरक गयो वह नीच ॥ ९ ॥
जे अक्षनके बश हैं जीव । तिनको नास जो होय सदीस ।
एकेन्द्री बश राजकुमार । मरके शुभ्र लहो दुख भार ॥ १० ॥

दोहा

तातें भव सुन लीजिये, मन बच काय लगाय ।
जे बस पांचों अक्ष के, तिन दुठ को बरनाय ॥ ११ ॥
ऐसे लख कर सुधी जन, जिन मत गहो तुरंत ।
सर्व भोग को छोड़ कर, ध्यावो श्री अरिहन्त ॥ १२ ॥

इति श्री आराधनासार कथा कोष विषय घ्राणदोष गन्धमित्रकी कथा समाप्तः

अथ कर्णेन्द्री विषयमें गंधर्व सेन्याकी

कथा प्रारम्भः नम्बर ४९

मङ्गलाचरण । छप्पय ॥

सर्व सुख दातार जिनेश्वर चरण कमल वर ।
तिनको हियमें धार जजूं मैं नमस्कार कर ॥
गंधर्व सेना नाम भई मूरखनी नारी ।
ताको चरित सुजान सुनो बरनूं हितकारी ॥
शुभ नगरी पाटल पुत्र में, गंधर्वदत्त नृप गुण युता ।
है गंधर्वदत्ता नार तिस, गंधर्वसेना तिस सुता । १ ।

चौपाई

कैसी है नृप तनुजा येह । गंधर्व विद्या जानत तेह ।
गर्व सहित परतिज्ञा धार । जो तुम जीते गान मंझार ॥

सोई मेरो होवे कंत । ऐसे निश्चय कर मदमन्त ।
जे आवे चत्री इस पास । जीत लेय तिन करे निरास ॥ ३ ॥
येही वार्त्ता सुन पंचाल । बुद्धिवान पाठक तत्काल ।
शिष्य पांच सौ लेकर संग । पोदनपुर ते चलो अभंग ॥ ४ ॥
पाटल पुत्र तने उद्यान । वाद हेत आयो सुख मान ॥
तरु अशोक तहँ एक निहार । ता तल शिष्यन प्रति उच्चार ५॥
जो कोई आवे इस थान । मेरो भेद कहो बुधवान ॥
इम कह सोय रह्यो तिहि ठौर । केई शिष्य चले पुर ओर ॥ ६ ॥
कौतुक मन माहीं धारन्त । नगर बजार गली पेखन्त ।
सुन नृप सुता चित्त हरपाय । उपाध्याय के ढिग तब आय ।७॥
शिष्यन ते पूछो तिस नाम । निद्रावन्त लखो तिस ठाम ।
बीन समोह धरो चहुं ओर । राल वहे ताके मुख जोर ॥ ८ ॥
ऐसे लख तिय करी गिलान । पूज अशोक गई निज थान ।
पाटक उठकर पेखत भयो । तरु अशोक किसने पूजियो ॥ ९ ॥
तब शिष्य बोले सुन महाराज । राजसुता आई थी आज ।
बोले गुरु चित में दुखपाय । क्या विरूप उन मोह लखाय । १०।
इम कहि नृपको नमियो आन । कन्या ढिग लीनो अस्थान ।
रही रात्रि पिछली पंचाल । बीन बजाई अधिक रसाल ॥११॥
सातों सुर गर्भित जुत सार । श्रवण सुनत मोही नर नार ।
ताको अद्भुत सुन के गान । राजसुता विहवल अधिकान ।११।
सारंगवत चाली तत्कार । शीघ्रगमन ते कछु न निहार ।
महल शिखर तें पड़ी तुरन्त । महाकष्ट तें मौत लहन्त । १२ ।
भ्रमण कियो भव अटवी बीच । नाना जन्म धरे बहु नीच ।
देखो गंधर्व सेना येह । कर्णेन्द्रिय वश होकर तेह । १४ ।
मृगनयनी दुखते तज काय । भ्रमण कियो जगमें अधिकाय ।

इह लख भविजन तजो तुरन्त । पांचों अच्छनके सुत सन्त ।
करमबन्ध को कारज जान । दुख उपजावन बेलि समान ।
इम विचारकर जिनवर धर्म । हिरदे धारो तज सब भर्म ॥१६॥

इति श्री आराधनासार कथा कोष विषय कर्णेन्द्री विषय में गंधर्व सेना की कथा समाप्तम्

रसना इन्द्री विषयाशक्त भीम नृपति की

कथा प्रारम्भः नं० ५०

मङ्गलाचरण । अडिल्ल

केवल नैन बिशाल धरे भगवन्त जी ।
तिनको नमकर कथा कहूं रसवन्त जी ।
रसना बस है भीम नृपति वेदन लही ।
सुनकर भवि जन मन वैराग धरें सही । १ ।

पायता

कपिला नगरी जानो नृप भीम महा अघ खानो ।
सो खोटी मतको धारी, सोम श्रीता के नारी ॥२॥
तिन भीमदास सुत जायो, फिर नन्दीश्वर व्रत आयो ।
कुल क्रमते जो चल आई, नृप घोषणा एम दिखाई ।३।
सुनलो पुरके सब लोई, करो जीव घात मत कोई ।
अरु आप मांस मंगवावे, रसना लंपट नित खावे ।४।
इन दिनमें पल मिलो नांही, नृप खाये बिन न रहाही ।
जो करे रसोई याकी, ता सेती नृप इम भाषी ॥ ५ ॥
पल बेग लाय तू भाई , तब इह ससान में जाई ।
तहँते शिशु मृतक सुलायो, नृपको बनाय खिलवायो ।६।
पल को राजा कर भच्चण, सुख पायो बिधि अच्चण ।
फिर वाते बैन उचारी, इह मिष्ट मांस

नु कितते लायो भाई, सो मोको देहु बताई ॥
जब अभय दान उन लीना, सब भेद तुरत कह दीना ।८।
तब नृपति चयो सुन लीजे, निन मांस यही मोहि दीजे ।
जब सूपकार अन्याई, लाडू बांटे अधिकाई ॥ ६ ॥
जो बालक रहे पिछारी, ताकों मारे अघकारी ।
राजाको नित्य खवावै, कोई नर भेद न पावै ॥ १० ॥

दोहा।

पापी की संगति थकी, पाप रूप बुधि होय ।
जैसे नृप अघकार थो, सूपकार तिम जोय ।११।

काव्य।

तब नगरी के लोग पाप इनको पहचानो ।
मंत्रिन के ढिग आय तिनों को भेद बखानो ॥
न्यायवान पर धान जनन को दुख सुन सारो ।
भीमदास नृप तनुज शुद्ध आतम अधिकारो ॥ १२ ॥
ताको थापो राज विषय उत्सव कर भारी ।
सो यह भूप महान हुवो परजा हितकारी ।
नगरी जन मिल सर्व सहित मन्त्री अधिकारी ।
सूप कार युत भीम देशतें कियो निकारी ॥१३॥

दोहा

पापी जनके सर्व ही, प्रजा पुत्र अरु मित्र ।
मंत्री आदिक बंधु जन, होवे निश्चय शत्रु ।१४।

छन्द चाल।

तब भीम गयो वन मांही । निस क्षुधा लगी अधिकाही ॥
तब सूपकार को मारो । निज भूख तनो दुख टारो ॥ १५ ॥
फिर पापी इह भरमायो । मेखल नगरी में आयो ॥
वसुदेव राय ने मारो । यह अधर्मी नरक सिधारो ॥ १६ ॥

सोरठा।

धरम बुद्धि तज नीच, करम अरी के वश भये।
ते भव अम्बुध बीच, डूबत नाना दुख सहे ॥१७॥
ताते बुध जन सार, जैन धरम नित प्रति भजो।
श्रेष्ठ सुःख दातार, शुभ कारज दूजो नहीं ॥ १८ ॥

इति श्री आराधनासार कथा कोष विषय मांस दोषमें भीम नृपति की कथा समाप्तम् नं० ५०

अथ नागदत्ता स्त्री ने शीलपाला

ताकी कथा प्रारम्भः नं० ५१

मंगलाचरण। मरहा छंद

तीन जगत के पति सब पूजत ऐसे श्री अरिहन्त।
तिनके चरन कमल जुत नम के कहूं कथा रसवन्त॥
भई नागदत्ता इक नारी, तिस को चरित महन्त।
सुन चित धारो शील सुपारो टारो अघ सब सन्त। १।

पद्धडी

यक देश अमीर महा विशाल। ता मधि नासिक नगरी रसाल।
तहँ बनक जु सागरदत रहाय। अहिदत्ता नारी तासु थाय ॥२॥
तिनके सुत सुंदर श्री कुमार। श्री श्रेणा तनुजा एक सार॥
तब अहिदत्ता सो नार जांन। नंद नाम ग्वाल सेरत अयान।३।
इक दिन इसके बचते गुवाल। दुख तनमें कह रहो घर कुचाल।
जब सब गोकुल को संग लेय। गयो आप चरावन सेठ येह।४।
रात्रि पाछलीके मझार। सागरदत बनमें नींद धार॥
जाय गोप तहँ पापवन्त। काननमें सेठ हनो तुरन्त। ५।

दोहा

पर नारी लोभी पुरुष, गिने न काज अकाज।
तिनको जीवन बिफल है, धारत चित नहिं लाज ॥६॥

चौपाई ।

अब यह नंद नाम गोपाल । अहिदत्ता जुत रहे खुशाल ॥
दुराचार सेवे नित सोय । घरमें तिष्ठे हर्षित होय ॥ ७ ॥
श्री कुमार यह देख चरित्त । लज्जा जुत चिंता दुख चित्त ॥
याकी माता सुतको देख । जानी मो चरित्त यह पेख ॥ ८ ॥
तबै पापनी बहु रिस धार । नंद ग्वाल ते येम उचार ॥
तू अब श्री कुमारको मार । जब सुखते तिष्ठ आगार ॥ ९ ॥
तब गोविन्द पापमें लीन । रोग तनो मिस करो मलीन ॥
पड़ा रहा सब तजके काम । पिछली रैन रही एक जाम ।१०।
गोकुल सबले श्री कुमार । कानन गमन करन चित धार ।
तब याकी भगनी ने कही । भो भ्राता तुम सुनिये सही । ११ ।
जैसे तात हमारो मरो । सो इलाज तुमरो भी करो ॥
ग्वाल हाथ ते तुमरी मात । करवावेगी तुमरी घात ॥ १२ ॥
ताते जतन करो बर बीर । साव धामन तुम रहियो धीर ॥
ऐसे सुन भगिनी के बैन । जात भयो बनमें तिस रैन । १३ ।
तहां काठको दीरघ खंड । ताको अपने पटते मंड ॥
आप छियो तरु पीछे जाय । करमें खंड लई मैं दाय ॥ १४ ॥
जब हां आयो पापी ग्वाल । इन असते मारो तत्काल ॥
फिर प्रभात गोकुल संग लीन । निज घर आयो यह परवीन ।१५।
गोदोहन के समै मंझार । सुतते पूछो पापन नार ।
अहो तनुज तुम हूंदन काज । मैंने ग्वाल खंदायो आज ॥१६॥
सो वो रहो बैठ केहि ठौर । तब सुत बोलो बचन कठोर ॥
इस असते तुम पूछो मात । मैं नहिं जानत ताकी बात ।१७।

दोहा

तब अहिदत्ता पापनी, श्रोणित जुत असि देख ।
क्रोध धार मूसल तनी, सुतके दई विशेष ॥ १८ ॥

तब दोनो भ्राता बहन, क्रोध बहुत मन ठान।
तिसही मूसल ते तबै, हने मात के प्रान ॥ १९ ॥

काव्य

सो दुष्टातम मरी दुःख लह नर्क सिधारी।
पापी पाप प्रसाद हनो जावे तत्कारी ॥
दुराचार को धिक धिक तिस बुद्धि अयानी।
कर के पाप प्रचंड लहे दुरगति अज्ञानी ॥ २० ॥

छप्पय

ताते भवि जन सुनो शीलमार्ग बहु सुख दाता।
बरनों श्री जिनदेव जगत जन को दुख घाता ॥
चित प्रसन्न करतार धरम की सिद्धि लहावो।
ताको पालन करो जास ते सुरशिव पावो ॥
सब देव इन्द्र जाकी सदा, स्तुति करें सु आयनित।
दुख पापक नासक सुजल, सुख दाता जानो पवित।२१।

इति श्री आराधनासार कथा कोष विषय नागदत्ता की कथा समाप्तम्

दीपायन मुनि की कथा प्रारम्भः नं. ५२

मंगलाचरण। कवित्त

कोड़ो सुख को देनहार बर तीन जगत पूजत भगवान।
तिनके चरन कमल को अर्चूं बहु बिधि भक्ति हियेमें ठान॥
पूरव आचारज जिम भाषो तिन अनुसार करूं व्याख्यान।
दीपायन मुनिको चरित्र सब सुनो भवीजन देकर कान। १।

चौपाई

एक देश द्वारकापुरी। जिस लख नाक लोक दुत दुरी॥
... तहँ जनमें आय। ताते पुर पवित्र अधिकाय ॥ २ ॥
... बल नारायन सार। राज करत तिष्ठे सुख कार ॥

एक दिना यह दोनो भ्रात । श्री नेमीश्वर जग विख्यात । ३ ।
तिनके बंदनको अवनीश । पहुंचे उज्जयंत गिरि सीस ॥
समोशरन में कियो पयान । बन्दे पद जिनके सुख ठान । ४ ।
अष्ट प्रकार द्रव्य सुच लीन । परम भक्ति धर पूजा कीन ॥
अस्तुत करी विविध परकार । फेर सुनी बानी मन धार । ५ ।
हरषत ह्वै कर तब बलदेव । करी बीनती प्रभु से एव ॥
हे जगबंधु अहो जगदीश । केवल चखु धारी तुम ईश । ६ ।
करुणा सागर जगपति जान । लोक अलोक प्रकाशक भान ॥
यह सुख दायक सम्पत सार । बासुदेव के उदै मंझार । ७ ।
कितने काल रहेगी नाथ । ऐसे प्रश्न करो नम नाथ ॥
तब प्रभु बानी खिरी गहीर । बासुदेव जो तेरी बीर । ८ ।
ताकी संपत सर्व निधान । द्वादश वर्ष अवधि तिस जान ॥
पीछे विनस सर्व हो जाय । जादो मतते नास लहाय ॥ ९ ॥
दीपायन मातुल जो तोह । ताकर भस्म नगर यह होय ।
तुमरे करकी छुरी कराल । ताकर वासुदेव को काल । १० ।
जरद कुमार हाथ तें सही । कोसम्भी बनमें जिम कही ।
यह सुनके हल मूसल पती । मद मद्रा सामग्री जिती ॥ ११ ॥

दोहा

नगर मांहते ढूंढ कर, सब लीनी मंगवाय ।
उज्जयन्त के कुंज में, दीनी वेग गिराय ॥ १२ ॥
दीपायन प्रभु वचन सुन, भयो जती दर हाल ।
द्रव्य लिंग पूरब दिशा गमन कियो तत्काल ।१३।

सोरठा

मूरख जन जग नीच, बहु उपाय को करत हैं ।
प्रभु वच मेटन नीच, तो पण होय न अन्यथा ॥१४॥

गीता छन्द।

बल भद्र तब निज कर छुरक घिस उदधिमें डारी सही।
सो बारचर ने कर्म बसते पड़तही निगली वही॥
वो छुरी परायन नाम धींवर पाय कर हरषाईयो।
तिन देय जरद कूमार को उन बान बीच लगाईयो॥ १५॥

काव्य

बारे बरस वितीत जान दीपायन आयो।
अधिक मास जो भयो तासको चितनहि लायो॥
उज्जयन्त गिर निकट जोग आतापन दीना।
होनहार हो जोय अवनि पर मिटे कभी ना।१६।
ताही दिन के विषय पाप प्रेरत कुमार सब।
भू मृत पैं कर केल गमन कीनों ग्रह को तब।
तृशावन्त जब भये तबै सरके ढिग आये।
मद मिश्रित जल पाय बहुरि स्नान कराये।१७।
नष्ट चेतना भये नैन मधि लाली आई।
घूमन लगे कुमार सबै सुध तन बिसराई।
पहिले श्री बलभद्र देख दीपायन मुनि को।
आड़ो इक पाखान कियो ऋषि हेत जतनको।
तिस पत्थरकी बाड़ देख यह कुंवर मदोमत।
लेकर बहु पाखान मुनी तन कियो अछादित।१८।
अहो बड़ो है खेद पाप कारन यह बारन।
माता बहन नहीं गिनत हियेकी सुध बुध टारन।१९।

पद्धरी छन्द।

यह सब वृतान्त सुन जुगम वीर। जबही आये मुनि निकट धीर।
कंठागत इस ऋषि को निहार। बहु छमा कराई बार बार।२०॥

तब यह दीपायन क्रोधवन्त। युग उंगली ऊरध कर तुरन्त।
फिर कुत्सित बुद्धी त्याग प्रान। भवनालय सुर उपजो सु आन।२१।
पूरव भवको सब चरित्र जान। अगनेश्वर चितमें क्रोध ठान।
मुरलीधर अरु बलदेव ढार। पुर भस्म करो कीनी जु छार।२२।
ताते भो भविजन शांति हेत। तज क्रोध क्षमा धारो सचेत।
द्वारावति को जलती लखाय। युग भ्रात तबै बहु दुःख पाय।२३।
तन मात्र परिग्रह साथ लीन। जलदी बाहर निकसे प्रवीन।
सो पहुंचे अति कानन मंझार। अघ उदै सर्व सम्पति निहार।२४।
जन पुन्य उदै ते सुख लहाय। फिर पाप उदैते दुःख पाय॥
ताते बुधजन तज पाप येह। वृष में तुम धारो नितसनेह।२५।

दोहा

पूजा श्री जिनराज की, पात्र दान उपवास।
शीलादिक पालो सदा, यही धर्म जिन भास।२६।

चौपाई।

इस अन्तर अब जरद कुमार। भीलरूप वनमें अघकार॥
ताने सायक ते तत्काल। मुर मर्दनको कीनों काल॥ २७॥
फिर यह जरद कुमार तुरंत। दक्षिन मथुरा गमन करन्त॥
अब उलटे कर आये राम। देखो मृतक हरी गुण धाम॥२८॥
ताके तनको लियो उठाय। कांधे धरकर गमन कराय॥
ऐसे बीत गये षट मास। एक देव आयो इन पास॥ २९॥
सिद्धारथ भ्राता चर येह। पूरब भवको धार सनेह॥
ताने सम्बोधे बल देव। चरित दिखायो नाना भेव॥ ३०॥
तब यह हली शुद्ध बड़ भाग। भ्राता को छोड़ो अनुराग।
चंदन अगर जेयकर सार। दग्धाक्रिया कीनी तिह बार।३१।
आप चित्तमें धर बैराग। जैन तत्व विदुषन बड़ भाग।

फेर बिप्रने करो बिचार । चांडाली भोगन नहिं सार ॥
काष्ठ थकी बारुनि उपजंत । पीवन में नहिं दोष महंत । ११ ।
फिर प्राश्चित लेकर शुद्ध होय । यामें शंशय नाहीं कोय ॥
तबै मूढ़धी चितमें ठान । गुड़ आदिक ते इह उपजान ॥१२॥
पीवत भयो बुद्धि नस गई । खोल कोपीन फेंक तिन दई ॥
जिम पिशाच कर गिर सत खोय । त्यों यह नाचो लज्जा खोय ।१३।
दुष्ट संग कुल नाशन हेत । दुखदाई बुध त्यागो चेत ॥
फेर क्षुधा लागी अधिकाय । पाप उदै मति भिष्ट लहाय ।१४।
शीघ्र मांस को भक्षण करो । काम अगन कर तन इस जरो ॥
तबै कुबुद्धी बिप्र अजोग । चंडाली संग कीनो भोग ॥
देखो मूरख तनो बिचार । लख मद एको कारन सार ॥
ताको पीकर भयौ मलीन । फेर मांस को भक्षण कीन । १६ ।
चंडाली संग रमियो दुष्ट । ऐसे लख कर पंडित सुष्ट ॥
कारन सुधकी बुध तज देय । मीठे पयते बिष उपजेय ॥१७॥
ताके भक्षत नासे प्रान । कारन में न पगो बुधिवान ॥
देखो ब्राह्मन नित स्नान । करतो बिश्नु तनो हिय ध्यान ।१८।
वेद वेदांग करे उच्चार । मद को कारन शुद्ध निहार ॥
अपनी बुद्धि करी तिन नष्ट । मद कारन जानो उत्कृष्ट ॥१९॥

दोहा

ो बुध जन हिय विषै, द्रव्य तजे निज भाय ।
जहर रूप है परनवै, अन्य वस्तु को पाय ॥ २० ॥
। लख जिनवर कथित, सेवो ज्ञान महान ।
ताकर सुर शिव मिलत हैं, करैं सबै कल्याण ॥ २१ ॥

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषय मद्दोष विषय पाद नाम बिप्रकी कथा समाप्तम् नं० ५३

अथसागरचक्रवर्तिकीकथाप्रारम्भः५४

मंगलाचरण ॥ चाल अहो जगत गुरुकी ॥

सुरनाथन कर पूजनीक प्रभु गण धीशवर ।
ऐसे श्री अरिहन्त देवको नमस्कार कर ॥
बरनों सागर चरित्र सुनो भवि चित्त लगाई ।
दूजे इह चक्रेश भये जिन शिव तिय पाई । १ ।
जम्बूद्वीप विख्यात पूर्व विदेह मझारी ।
सीता सरिता जान पश्चिम भाग हजारी ।
देश वत्सकावती तहां अति सुन्दर जानो ।
पृथवी नगर पवित्र राय जैसेन महानो ॥२॥
जैसेना पटनार रूप गुण धारे भारी ।
तिनके जुग सुत आय, भये सुन्दर अधिकारी ।
प्रथम नाम रतसेन दुतिय धृतसेन कहायो ।
करम जोग रतसेन कालने आय जु खायो ॥३॥
तब याको जो तात महा निरमल बुधि धारी ।
कियो पुत्र को शोक फेर मन ज्ञान विचारी ।
राज विषय धृतसैन पुत्र को थापो तबही ।
आप जाय जिन धाम करी बहु पूजा जबही ।४।
नाम महारत जान और मैथुन भूपाला ।
इत्यादिक संग लेय गये वनमें तत्काला ॥
मुनी जसोधर पास जाय इन दीक्षा लीनी ।
सोखी कायकषाय सवै इन्द्री जय लीनी ॥५॥
फेर धरो सन्यास सबै तन ममता त्यागी ।
अच्युत स्वर्ग मंझार भये सुर अति बड़ भागी ॥

फेर विप्रने करो विचार । चांडाली भोगन नहिं सार ॥
काष्ठ थकी बारुनि उपजंत । पीवन में नहिं दोष महंत । ११ ।
फिर प्राश्चित लेकर शुद्ध होय । यामें शंशय नाहीं कोय ॥
तबै मूढ़धी चितमें ठान । गुड़ आदिक ते इह उपजान ॥१२॥
पीवत भयो बुद्धि नस गई । खोल कोपीन फेंक तिन दई ॥
जिम पिशाच कर गिर सत खोय । त्यों यह नाचो लज्जा खोय ।१३।
दुष्ट संग कुल नाशन हेत । दुखदाई बुध त्यागो चेत ॥
फेर क्षुधा लागी अधिकाय । पाप उदै मति भिष्ट लहाय ।१४।
शीघ्र मांस को भक्षण करो । काम अगन कर तन इस जरो ॥
तबै कुबुद्धी विप्र अजोग । चंडाली संग कीनो भोग ॥
देखो मूरख तनो बिचार । लख मद एको कारन सार ॥
ताको पीकर भयो मलीन । फेर मांस को भक्षण कीन ।१६।
चंडाली संग रमियो दुष्ट । ऐसे लख कर पंडित सुष्ट ॥
कारन सुधकी बुध तज देय । मीठे पयते बिष उपजेय ॥१७॥
ताके भक्षत नासे प्रान । कारन में न पगो बुधिवान ॥
देखो ब्राह्मन नित स्नान । करतो विश्नु तनो हिय ध्यान ।१८।
वेद वेदांग करे उच्चार । मद को कारन शुद्ध निहार ॥
अपनी बुद्धि करी तिन नष्ट । मद कारन जानो उत्कृष्ट ॥१९॥

दोहा

देखो बुध जन हिय विषै, द्रव्य तजे निज भाय ।
जहर रूप है परनवै, अन्य वस्तु को पाय ॥ २० ॥
ऐसो लख जिनवर कथित, सेवो ज्ञान महान ।
ताकर सुर शिव मिलत हैं, करें सबै कल्याण ॥ २१ ॥

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषय मद्दोष विषय पाद नाम बिप्रकी कथा समाप्तम् नं० ५३

अथसागरचक्रवर्तिकीकथाप्रारम्भः५४

मंगलाचरण ॥ चाल अहो जगत गुरुकी ॥

सुरनाथन कर पूजनीक प्रभु गण धीशवर ।
ऐसे श्री अरिहन्त देवको नमस्कार कर ॥
बरनों सागर चरित्र सुनो भवि चित्त लगाई ।
दूजे इह चक्रेश भये जिन शिव तिय पाई ।१।
जम्बूद्वीप विख्यात पूर्व बिदेह मझारी ।
सीता सरिता जान पश्चिम भाग हजारी ।
देश वत्सकावती तहां अति सुन्दर जानो ।
पृथवी नगर पवित्र राय जैसेन महानो ॥२॥
जैसेना पटनार रूप गुण धारे भारी ।
तिनके जुग सुत आय, भये सुन्दर अधिकारी ।
प्रथम नाम रतसेन दुतिय धृतसेन कहायो ।
करम जोग रतसेन कालने आय जु खायो ॥३॥
तब याको जो तात महा निरमल बुधि धारी ।
कियो पुत्र को शोक फेर मन ज्ञान बिचारी ।
राज विषय धृतसैन पुत्र को थापो तबही ।
आप जाय जिन धाम करी बहु पूजा जबही ।४।
नाम महारत जान और मैथुन भूपाला ।
इत्यादिक संग लेय गये बनमें तत्काला ॥
मुनी जसोधर पास जाय इन दीक्षा लीनी ।
सीखी कायकषाय सबै इन्द्री जय लीनी ॥५॥
फेर धरो सन्यास सबै तन ममता त्यागी ।
अच्युत स्वर्ग मंझार भये सुर अति बड़ भागी ।

नाम महाबलदेव सार बसु रिद्ध लहाई।
नाम महा ऋतुराय भये सुर जाय तहांही ॥६॥
जिन चरनाम्बुज भृंग नाम मणि केत वरो है।
जुगल अमर हरषाय बचन तहँ एम करो है ॥
हम दोनों में कोय प्रथम नर देही पावे।
ताको दूजो देव बोध तप ग्रहन करावे ॥७॥

सोरठा।

धरम राग जुत देव, बचन बंध होते भये।
बाइस सागर येव, अच्युत के सुख भोगियो ॥८॥
पुन्य रहो कछु शेष, तबै महाबल सुर च्यो।
उपजो कौशल देश, नगरी साकेता विषय ॥९॥

दोहा

भूप समुद्र बिजे तहां, राज करे बलवन्त।
सुबला नामा नार तसु पति प्यारी गुणवन्त ॥१०॥
तिन दोनों के पुन्य तें, सो सुर सुत उपजाय।
सगर नाम षट खंडपति, सज्जन जन सुखदाय ॥११॥

चौपाई

सत्तर लख पूरबकी आय। साढ़े चार शतक धनु काय ॥
हाटिक वर्ण शरीर रसाल। लावन रूप धरे गुणमाल ॥ १२ ॥
क्रमकर जोबनवन्त सु भयो। पुन्य उदय चक्री पद लहो ॥
षटखंड अवनी को भूपाल। नार छानवें सहस रसाल ॥१३॥
मुकट बन्ध सेवें नर ईश। ते सब जान सहस बत्तीस ॥
यादिक इन बिभव अपार। कहते कबि पावें नहिं पार ॥१४॥
व्रत भगति हियेमें धरे। नाना बिधिके भोग सु करे ॥
पुत्र भये तिस साठ हजार। महा भव्य ये सकल कुमार ॥१५॥

देखो पुन्य कथा थकी इह जीव । नाना सम्पति लहत सदीव ।
ताते बुधजन यह मन धरो । जिन भाषित शुभ पुन्य सुकरो १६
इस अवसरमें इक बन सिद्ध । तामें तिष्ठे मुनि जुत रिद्ध ।
नाम चतुरमुख दीनदयाल । तिन पायो केवल विध टाल १७॥
जिन पूजनको सुर समुदाय । इन्द्रनजुत आये हरषाय ।
तिनमें वह मणिकेतु सुजान । चक्री को महाबलचर मान १८॥
हर्ष सहित भाषे बच एव । अहो सुनो चक्रेश्वर देव ।
हम तुम दोनों अचुत मझार । प्रीति सहित इम कियो करार१६
जो पावे मानुष परजाय । दूजे देव सम्बोधे आय ।
ताते तुमने दीरघ राज । भोगो बहुविधि पुन्य समाज ॥२०॥
अब दुख दाता भोग मलीन । छोड़ो वेग अहो परवीन ।
भगवत भाषित जग हितकार । सो तप कीजे अंगीकार २१ ॥
सावधान अब होय नरिन्द । शिव श्रीतें कर प्रीत अमंद ।
ऐसे सुर दीने उपदेश । इसे सुनन को मोह विशेष ॥ २२ ॥
ताकर यह नहिं भयो विरक्त । जानी सुर यह भोगा शक्त ।
ऐसे मन में निर्जर आन । जात भयो अपने स्थान ॥ २३ ॥
काल लब्ध बिन काज न होय । बहु उपदेश देहु जो कोय ।
ताते काल लब्ध बलवन्त । यह निश्चयकर जानो सन्त २४॥
इस अन्तर यक दिन मणिकेतु । चक्रीके सम्बोधन हेतु ।
चारन मुनिको रूप बनाय । तप व्रत करके सोहे काय ॥२५॥
सगरतने चैताले बीच । आये यह मुनि सहित मरीच ।
भक्ति सहित जिन बिम्ब अगाधि । निष्ट दिव्य तस्यानन नाविदइ
सगर आन देखे मुनिचन्द । तरुण देह दुति धरे अमंद ।
तब अचरज युत है चक्रीश । पूछो मुनिको नमकर शीश २६
हो मुनिन्द यौवन युत देह । तप लक्ष्मी किम धारी तेह ।
गुह्यातम चारन इम कह्यो । हो पृथ्वीपति सुन अब यहीं ...

दोहा

इस अवनीमें देखिये, जोबन चपला जेम ।
तन अत्यन्त अपवित्र है, भोग सर्पवत् तेम ॥ २९ ॥
तातैं दुस्तर भव उदधि, मोही जन भैदाय ।
भगवत तप नवका चढ़ो, तिरन तनी मोहे चाह ३०

पद्धड़ी

इत्यादिक शुभ बच मुनि उचार । चक्री सम्बोधन देत सार ।
तब चक्रधार सब समझ बूझ । पण मोह थकी कछुनाहिं सूझ३१
पुत्रनको चित में अति सनेह । पड़रही फास गलबीच येह ।
ताकर मुर्छा त्यागी न जाय । तब अमर विचार सुइमकराय ३२
संसार निकट याको न जान । मन खेद पाय सुरकर पयान ।
इस अन्तर इक दिनके मँझार । विष्ठर तिष्ठे चक्रेश सार ३३ ॥
तब सारे सुत आये तुरन्त । नम भक्तधार इम बच भनन्त ।
भो तात अवनि में परम धीर । क्षत्री के सुतजे सूरबीर ३४ ॥
तिनको यह धर्म कहो पुरान । ह्वै पिता साध जो अर महान ।
ताको बसकर लावे उदार । नातर निरफल तरु सम निहार ३५
यातैं हमपर होकर दयाल । कोई आज्ञा दीजे अवनिपाल ।
जाकर सफलित हमजन्म होय । सोई अब भाषो काज कोय ३६

दोहा

इम सुन षट्खंड पति कही, मीठे बचन अगाध ।
हो पुत्रो इस अवनि पै, मोको कौन असाध ॥ ३७ ॥
तातैं यह आज्ञा तुम्हे भोगो लक्ष अपार ।
यह सुन के वे तनुज सब, तिष्ठे मौन सुधार ॥३८॥

चौपाई

ता तने बच नाहिं उलंग । सब उठगये तबै इक संग ।

इस अन्तर औरे दिन विषै। सुभटोत्तम नमकर बच अखे ३९
अहो देव कोई काज महन्त। जो न बताओगे श्रीकन्त।
तो हम भोजन पान न करें। इम परतिज्ञा सब हम धरें ४०॥
ऐसे सुनकर के भूधीश। मन विचार बच चये गरीश॥
हो पुत्रो मेरे सुखकार। धरम काज बरते इक सार ॥ ४१ ॥

सवैया इकतीसा

अष्टापद शीश पै बहत्तर जिनेश धाम, श्रीयमान भरथ कराये हरषायके। कंचन रतन मई सोहत जिनेश बिम्ब तिन को जतन तुम करो अब जायके। परबत चारों ओरखाति का बनाओ जोर। गंग को प्रवाह डारो तिस मांही लायके॥ ऐसी आज्ञा दई तात सुत भए हर्ष गात, चर्णों में नमाय मात गए सुख पायके॥ ४२॥

दोहा

दंड रतन कर के खिनी, खाई परम अभंग।
श्री कैलाश पहाड़ के, फेरी चहुंदिश गंग॥ ४३॥

काव्य

ताही छिन वो बुद्धि मान मणि केतु अमर वर।
संबोधन चक्रेश सहित आयो अवनी पर॥
देखो सकल कुमार तवै सुर माया धारी।
नागरूप कर भस्म किये सब ताही वारी॥ ४४॥

दोहा

कोई स्थानक विषै, बुध सत्तम जे मित्त।
हित कारन उर जान के, करे तवै जो अहित्त॥ ४४॥

काव्य

फेर सबै जन सचिव सुनो कुमरन को मरनो।
दुख सहने असमर्थ चक्र धरसैनहि बरनो॥

चितवै जब शशिकेतु अवनिपति खबर न जानी ।
मूवे सकल कुमार कोई इम कहे न बानी ॥ ४६ ॥
आप बिप्र तन वृद्धरूप कीनों तब निरजर ।
आयो नरपत पास शोक जुत व्याकुल मन कर ॥
कहत भयो चक्रेश प्रते तुम भू के रक्षण ॥
मेरे जुग सुत दुष्ट काल ने कीने भक्षण ॥ ४७ ॥
वे मेरे वर पुत्र जीव से प्यारे जानो ।
हे प्रभु देहु छुड़ाय नहीं मम प्राण पयानो ॥
ऐसे करी पुकार वृद्ध ब्राह्मण तिह बारी ।
पृथ्वी पति सुन एम कछू हंस गिरा उचारी ॥ ४८ ॥

दोहा

अहो बिप्र क्या मूढ़ तू, लखे न चित्त मंझार ।
या पृथ्वी तल के विषय, सब भक्षे इह काल ॥ ४९ ॥
निर बाधक यह सिद्ध हैं, औरन दूजो काय ।
समबरती को नित जयो, यह तू निश्चय जोय ॥ ५० ॥

चौपाई

अरु तेरी चित बांच्छा एह । काल निवारी निःसन्देह ॥
तो तू जिन दीक्षा धर धीर । निज आतमको हित कर बीर । ५१ ।
तब दुज कहे सुनो महाराज । आप महीपति सब सिरताज ॥
बचन कहे सो सतमें जोय । कालपूर किस कर नहिं होय ।५२।
मैं तुझसे कुछ भाषूं एव । चितमें मत धरयो नहिं देव ॥
प्राण हरणाये जम दुख कार । साठ सहस जिन भषे कुमार ।५३।
के बचन सुनंत । चक्री मूर्छित भये तुरन्त ॥
कोई दुख बच कह हेत । सुनके को नहिं होत अचेत ।५४।

सोरठा

सज्जन जन आय, कर सीतो उपचार को ।
चेत कियो नर राय, उठत भयो ताही समै ॥ ५५ ॥

जैसे जीव अनाद, मूर्च्छा जुत जग में भ्रमें ।
गुरु बच अमृत स्वाद, कर के हेत सचेत जू ॥ ५६ ॥

पायता

तब ही चक्रेश्वर जानो, संसार अथिर सब मानो ।
मन बचन काय शुध कीनों, वैराग विषे चित दीनो ॥ ५७ ॥
सब मोह पिशाच उड़ायो, भागीरथ को बुलवायो ।
निज राज दियो बड़ भागी, ममता सब ही की त्यागी ।५८।
दृढ़ धरम केवली स्वामी, सब ही के अन्तर यामी ।
तिन चरन कंज ढिग धारी, दीक्षा भव नासन हारी ॥ ५९ ॥
ताही छिन वह सुर धायो, अष्टापद गिरि ढिग आयो ।
मूर्च्छित सचेत सब कीने, बच कहे हर्ष में भीने ॥ ६० ॥

दोहा

अहो पुत्र तुमरी मृतक, सुन चक्री दुख पाय ।
राज लक्ष को छोड़कर, बन में गमन कराय ॥ ६१ ॥
मैं तुम कुल को विप्र हूं, चिन्ता जुत मुझ प्रान ।
ढूंढत ढूंढत आइयो, पाये तुम इस थान ॥ ६२ ॥
ऐसे याके वचन सुन, साठ सहस सुकुमार ।
तिनी केवली ढिग गये, लीनों संयम भार ॥ ६३ ॥

चौपाई ।

श्री कर जुत भागीरथ राय । तबै सभी मुनिको सिरनाय ॥
भगवत भाषित सुन उपदेश । श्रावकके वृत कहे विशेष ।६४।
अब माणकेतु प्रगठ सुर येह । सगर आदि मुनि तप दृढ़ जेह ॥
तिनको नमन कियो हरषाय । विनय सहित फिर वचन कहाय ६५
मैं सेवक जो कियो अपराध । क्षमा करो तुम सबही साध ॥
भक्ति सहित इम विनती कीन । सब वृतान्त भाषो परवीन ॥६६॥

ऐसे मुनि सुन दीन दयाल । कहत भये सुन सुर गुणमाल ॥
तैने तो कीनो उपकार । तू हमरो है मित्र उदार ॥ ६७ ॥
धरम सनेही जो बुधिवंत । तिनही ते इह काज बनंत ॥
तातें इसमें रंचन दोष । तुम गुण रतन तने हो कोष ॥ ६८ ॥
तुम जिन चरन कमल अलिसार। हमको शिव सुख कारन हार ॥
ऐसे बच सुन सुर रसवंत । सब ऋषिगणको नमि बहुभंत ।६९।
काज सिद्ध करके अभिराम । फेर गयो सो अपने धाम ॥
इस अंतर वे सबही साध । जिनवर भाषित तप अपराध ।७०।

दोहा

जाय सिखर सम्मेद गिर, शुक्ल ध्यान को ध्याय ।
मोक्ष अंगना पति भये, अष्टम छितमें जाय ।७१।
अब भागीरथ इम सुनी, सब मुनि शिवपुर पाय ।
है विरक्त संसार ते, तब इम कियो उपाय ॥७२॥
बरदत सुतको राज दे, फेर करो जिन न्हौंन ।
अष्टापद गिरि पै गयो, ताही छिन गुण भौन ॥७३॥

सवैया इकतीसा

तहँ शिव गुप्त नाम गुरु के निकट जाय, नयो चरनार बिन्द भक्ति धर उनको । तप लक्ष ग्रहण कीन आतम में चित्त दीन ज्ञान रस चाख लीन गहो पद मुनि को । गंगा के सुतट जाय आसन पदम लाय, तिष्ठत सुमेर सम नास मोह तिनको । तब हिये भक्ति ठान सकल सुरेश आन, क्षीरो दधि बार घट लाये कर धुनको ॥ ७४ ॥

दोहा

श्री भागीरथ मुनि तने, चरन कमल जुग सार ।
सुरपति आन प्रक्षालियो, कोड़ो सुख दातार ॥७५॥

चौपाई ।

सो उस जलको अति परवाह । बहकर गंग मिलो सो आय ॥
तबते गंगा भागीरथी । प्रकटी जगत मांह सो अती ॥ ७६ ॥
ताही गंगा तट मुनिराजी । श्री भागीरथ धर्म जहाज ।
तपकर जन्म मृत्यु जय लीन । शिवपुर मांही गमन सु कीन ।७७।
अब श्री सगर केवली जेह । जैवन्ते नित वरतो तेह ॥
केवल ज्ञान नेत्र धारन्त । सब सुरेश नित चरन नमन्त ।७८।
मोक्ष आंगनाके भरतार । परम तत्वके जाननहार ॥
ऐसेही सारे मुनिचन्द । नित प्रति सुख मोहि देह अमंद ।७९।

दोहा ।

द्वितिय चक्रधारी तनी, यही कथा रस लीन ।
बखतावर अरु रतनने, भाषा में कह दीन ॥८०॥

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषय सगर चक्रवर्ति की
कथा समाप्तम् नं० ५४ ।

अथ मृगध्वजकी कथा प्रारम्भः नं० ५५

मंगलाचरण ॥ चौपाई ॥

तीन लोक पति पूजत आन । ऐसे श्री अरिहन्त महान ॥
तिनको भक्तिसहित सिरनाय । मृगध्वज चरित कहूं अवगाय १

पद्धडी

रमणीक अयोध्यापुर विशाल । ताको श्रीमंधर अवनिपाल ।
ताके जित सेना विसद नार । तिनके मृगध्वज हूवो कुमार २
ताही पुरमें यह अभय दान । इक महिष प्रसिद्ध फिरे सो आन ।
एकै दिन पुस्कर वन मंझार । फिरतो सुछंद भप तिण उदार ३
इस अन्तर मृगध्वज हरष युक्त । परधान सेठको पुत्र भुक्त ।
तिन क्रीड़ित देखो महिष तेह । पलमें आशक्त कुमार येह ४

निज चाकरते इम बच कहाय । पिछ्लोपद याको खंड लाय ।
ताको पचायकर सुभ्भ खुवाय । वो सेवक ताही विध कराय ५॥

दोहा

तब वह दुःखित माहिष अति, तीन चरनते धाय ।
राजाके पदके निकट, पड़ो धरनि में जाय ॥ ६ ॥

चौपाई

तब सीमंधर नरपत्ति सार । जैन धरमको धारन हार ।
पर उपकारी परम दयाल । मरतो भैंसो लख तत्काल ॥७॥
ताको दिलवायो सन्यास । नमोकार शुभ मंत्र प्रकास ।
ता प्रभावते महिष तुरंत । प्रथम सुरग सुर भयो महन्त ॥८॥
पर उपकारी गुणकी खान । ते जगमांही बिरले जान ।
चन्द्रभान अरु सुर तरु बार । उपकारी इत्यादि निहार ॥९॥
निश्चयकर श्री जिनवर धर्म । हितकारी नित देवे सर्म ।
अब नरनायक सुन विरतन्त । चित में रोस धार अत्यन्त ।१०।
सिद्धारथ मंत्री प्रति कही । तीनोंको अब मारो सही ।
यही बारता सुनकर वेह । मंत्री सेठराय सुत जेह ॥ ११ ॥
दत्त मुनीश्वरके ढिग जाय । दीक्षा लीनी मन बच काय ।
अब यह मृगध्वज जो मुनिचन्द । जैन तत्व ज्ञायक तपवृन्द १२
शुकल ध्यानकर करमविनाश । केवल भानु कियो परकाश ।
तीनलोक पूजे जिस चर्न । भये भवोदधि तारन तर्न ॥१३॥
देखो पाप करत पर चंड । सो भी जीव होय गुणमन्ड ।
तीन जगत अरचें करचाव । सो सब जान धरम परभाव १४
तो वात ठीक कर मान । जैन धर्म तें को अधिकान ।
मृगध्वज केवल धार । नित आराधे थके उदार ॥१५॥
तुमरे मंगल बिस्तरो । शिव लक्ष्मीकी प्रापति करो ॥

कैसे हैं वे दयानिधान । केवल चखुधारी भगवान ॥ १६ ॥
जेते हैंगे भविजन सन्त । तिनको जगते पार करन्त ॥
देव इन्द्रकर पूजित नित्त । हितकारी वे महा पवित्त ॥ १७ ॥
सुख यश ज्ञान तने दातार । कविके दुख कीजे निरवार ॥
इह मृगध्वजकी कथा जु भई । पूबी चारजजी जिम कही ॥१८॥

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषय मृगध्वज राजपुत्र की कथा समाप्तम् नम्बर ५५ ।

अथ परसरामकी कथाप्रारम्भः नं० ५६

मंगलाचरण ॥ अडिल्ल ॥

भव दधि तारक गणाधीश अर्हन्त जी ।
तिन के चरन सरोज नमो बहु भन्त जी ॥
अचरजकारी पर्सराम को चरित जी ।
ताहि कहूं अब सुनो भव्य धर चित्त जी ॥ १ ॥

गीता छन्द

नगरी अयोध्या परम सुन्दर तासुको है भूपती ।
तिस नाम कारतवीर्य जानो परम मूरख दुरमती ॥
तिस गेहमें परमावती तिस प्राण प्यारी लसत है ।
तिस नगरके ढिग तापसों की एक पल्ली वसत है ॥ २ ॥
तिन मांहि है जमदग्नि तापस रेणुका तिय जानिये ।
तिनके तनुज दो भये सुन्दर अति वली परमानिये ॥
इक स्वेतराम महेन्द्र दूजो वालवय क्रीड़ा करे ।
अरु रेणुका का भ्रात वरदत मुनि महा तपको करे ॥३॥

दोहा ।

इनकी पल्ली के निकट, तरु तल तिष्ठे आय ।
देख रेणुका भक्ति कर, चरनन में सिर नाय ॥ ४ ॥

चौपाई

अब वे श्री बरदत मुनिचंद । भाषत भये वचन गुण बृन्द ॥
अहो बहन सुन चित्त लगाय। सम्यक् करत महा सुखदाय।५।
तीन जगत कर पूज पवित्त । दुरगति नासन जानो चित्त ।
सुर शिव बृत्त तनो है बीज। याते भव भिरमन है छीज। ६।
देव हिये धर श्री अर्हन्त । गणाधीशवर वे भगवन्त ॥
राज दोषकर बरजित सदा। केवल मंडित शोभित मुदा ॥७॥
सुर नर नमें हरष धर पर्म। तिनकर भाषो उत्तम धर्म ॥
सोई दोनो लोक मझार। सुखदाता है दश परकार ॥ ७ ॥
इंद्र फनेंद्र चन्द्र ध्यावन्त । तीन जगत परसिद्ध महन्त ॥
अरु वोही गुरु दीन दयाल । संयम शील सहित गुणमाल ।८।
तिनही ज्ञान ध्यानमें रक्त । परिग्रह त्यागी श्री जिन भक्त॥
हे भगनी मूरख मन तोह । तुम तप भव कारन जुत कोह ।१०।
सम्यक् ही सुख कारन जान। यही धरम ऐसे पहिचान ॥
गुणमंदिर मुनि पात्र पवित्र । तिनको दान दीजिये नित्त।११।
सुखकारी जिन पूजन करे । शील पाल शुभ प्रोषध धरे ॥
एही धरम जान बड़ भाग । याही में तू कर अनुराग ॥ १२ ॥
तबै रेणुका सुन जिन धर्म । भ्राताने भाषो जो पर्म ॥
ताको धारो हर्ष समेत । सम्यक् रतन गहो सुख हेत ॥ १३ ॥

दोहा

सती शिरोमणि तासमें, कीनो आतम शुद्ध ।
मिथ्याभाव निवार के, धारी निर्मल बुद्धि ॥ १४ ॥

काव्य

सम्यक् सहित देख कर बरदत मुनिवर ।
मैं राग हिय धार दई दो विद्या हित कर ॥

परसी नाम एक महा ऋद्ध बहु सुख की दाई ।
दूजी काम सु धेन दई भगनी के ताई ॥ १५ ॥
तिस पीछे वे धीर जैन तत्वन के लायक ।
इस को बहु सम्बोध गये बन को मुनि नायक ॥
अबै रेणुका जिन पदाब्ज सेवत भृंगीवत ।
सम्यक् मंडित धर्म नेह जुत तिष्ठे घर नित ॥ १६ ॥
इस अन्तर इक दिना कार्तवीरज नृप बन में ।
आये गहन गईन्द हर्ष बहु धारे मन में ॥
ताही छिन यह नार रेणुका भोजन कीनो ॥
कामधेनु परभाय सहित रस पित को दीनो ॥ १७ ॥

दोहा

ऐसे लख भूपाल तब, भोजन भक्तो आप ।
लोभ धार निज मन विषै, फेर कियो इम पाप ॥ १८ ॥
युद्ध ठान तापस हनो, ताही बन के बीच ।
कामधेनु को ले गयो, जबरी ते वह नीच ॥ १९ ॥

सोरठा

दुष्ट जीव अधिकाय, अहिवत जानो जगत में ।
पोषितभी दुखदाय, ततक्षण नासे प्राण को ॥ २० ॥

चौपाई ।

अबै रेणुका सुत सुखदाय । संध्याको पल्ली में आय ।
माता दुःखित देखी जबै । अरुवा मुखते वच सुन सबै २१ ॥
श्वेतराम शुभटोत्तम येह । जननीते फरसी को लेह ।
लघुभ्राता भी लीनो संग । साकेतापुर गयो अभंग ॥ २२ ॥
कार्तिवीर्य को ताही जाम । मारत भयो जु कर संग्राम ।
सो इह कुश्चित धी भूपाल । घोरनर्क पहुँचो तत्काल ॥२३॥

पापी जनकी गति यह होय । यामें संशय नाहीं कोय ।
यह पापन तृष्णा दुखकार । ताको है बहु विधि धिक्कार २४॥
तिसमें है आशक्त सुजीव । कर अन्याय सहे कष्ट अतीव ।
देखो इस अन्याय पसाय । राजादिक भी नाश लहाय ॥२५॥
जैसे वात वहै परचण्ड । तामें गेंद उड़ें बल मंड ।
तहां सुसाकी कौन चलाय । निश्चय करके नाश लहाय २६॥
जब इह पर्सराम तिह थान । निज विद्याफल लहे अधिकान ।
कौशल्या में कीनों राज । भयो विख्यात नृपन सिरताज २७॥
पुन्य प्रसाद होय शुभ मति । सूर बीर पंडित श्रीपति ।
इह विधि भविजन हियमें चेत जिन भाषित पुनकर शुभहेत २८॥

सोरठा ।

परसराम नरपाल, प्रकट भयो अवनी विषै ।
ताकी कथा रसाल, अवसर पा बर्णन करी ॥ २६ ॥

इति श्रीआराधनासार कथाकोषविषय परसरामकी कथा समाप्तम् नं० ५६ ।

अथ सुखमाल की कथा प्रा० ५७

मंगलाचरण सवैया ।

श्रीजिन स्वामतनो शुभनाम लिये अभिराम सदा सुखदाई ।
संपति दायक पाप पलायक संकट बीच जुहोत सहाई ॥ ताहि
जजो सब और तजो सुभ जो बसुजाम नमों सिर नाई । हर्ष
थकी सुकमाल चरित्र कहूं भवि जीव सुनो चितलाई ॥१॥

चौपाई

कौसाबी नगरी सुखदाय । तहँ अतिबल नृपराज कराय ।
सोमसर्म प्रोहत है तास । नारि कास्यपी ताहि अवास ॥ २ ॥
ताके गृह उपजे जुत पूत । अगन भूत अरु बायजु भूत ।
बालक बयमें धर परमाद । विद्या कछु नहिं कीनी याद ॥३॥

पुन्य विना मुखपंकज वीच। नहीं भारती करे मरीच ॥
अब जो सोमशर्म परवीन। काल भई अहिने डस लीन ॥४॥
तब नरिन्द्र दुज के सुत देख। मूरख बुद्धी जान विशेख ॥
कुल क्रमते जो आयो चलो। सो वह पद इनको नहिं मिलो ॥५॥
मूरख दान मान नहिं नरे। सो सोश्रुषा ताकी करे ॥
अब यह द्विजके सुत दुख पाय। मान भंगकर लज्जित काय ॥६॥
तब इन यहांते कियो पयान। राज गृहीमें पहुंचे आन ॥
सूरज मित्र चचा के पास। नमकर सब विरतान्त प्रकास ॥७॥
जब तिनने इनको ग्रह रत्त। दीनी विद्या कीने दत्त ॥
तब दोनों पढ़ ह्वै परवीन। निज घर आये विद्या लीन ॥८॥
जब ये नृप ढिग जाय तुरंत। अपनो गुण दिखलाय महन्त।
पिता तनो पद लीनों सार। सुखसे तिष्ठत निज आगार ॥९॥

दोहा

सरस्वती प्रसादतें, इस वसुंधरा मांहि।
क्या क्या सिद्ध न होत है, सबही सुख लहांहि ॥१०॥

पद्धड़ी छन्द

इस अन्तर राज ग्रही मंझार। द्विज तिष्ठ सूरज मित्र सार॥
ताको सौंपी इक छाप भूप। याने कर में धारी अनूप ॥ ११ ॥
संध्या तरपन करते महान। जल अर्घ लेय कर देत भान॥
सो गिरी मुद्रिका कर्म भाय। सर मध्य जलजमें पड़ी आय ॥१२॥
तब खाली अंगुरी विप्र देख। भै भीत सो चितमें ह्वै विशेख ॥
जब गयो सुधर्माचार्य पास। वे अवधि ज्ञान जुत सुगुणरास ॥१३॥
तिनको नमके दुज प्रश्न कीन। मेरी मुद्रा खोई प्रवीन ॥
भो दया उदधि मुनिराज आप। किम हाथ लगे मोह भूपछाप १४

दोहा

तब श्री गुरु उत्तर दियो, सुनले द्विज बुधवन्त।
तुझ तडाग के कंज में, वो मुद्री तिष्टन्त ॥१५॥
ये बच सुनि भूदेव तब, है कर चित्त खुस्याल।
प्रातकाल उस कमलतें, मुद्रा लई निकाल ॥१६॥

चौपाई।

फेर गयो श्री मुनिवर पास। नमकर यह कीनी अरदास॥
भो योगिन्द्र बुद्धि धन खान। यह विद्या मोह देहु महान ॥१७॥
जातें प्रश्न बनाऊं सार। मुझ पै कीजे यह उपकार॥
तब मुनि बोले दीनदयाल। यह विद्या जो परम रसाल ॥१८॥
जिन दीक्षा लीये बिन ऋद्ध। पृथवी तलपर होय न सिद्ध।
जब ये केवल विद्या हेत। दीक्षा लीनी भव दधि सेत ॥ १६ ॥
बारम्बार कहे इम बान। मोको विद्या दो भगवान॥
तब गुरु जिन भाषत जो ग्रन्थ। याह पढ़ाये किरपा पंथ ।२०।
पढ़कर सूरज मित्र मुनिन्द। चित में धरत भये आनन्द।
गुरु बच दीप तने उद्योत। मिथ्या अंध नास लह जोत ॥२१॥
धरम तत्वको जानो भेद। लोभ तनो तिन मूल उछेद।
जाको ऐसे श्री गुरु मिलें। ताके कारज क्यों नहिं फलें ॥२२॥
कैसे गुरु जग जन हितकार। श्रेष्ट पंथ दरसावन हार॥
अब गुरु आज्ञा ले बुधवान। जिन कल्पी भये साधु महान २३
फिर यह सूरज मित्र दयाल। करत बिहार जन्तु रिछपाल॥
आये कोसांबी जिन वेश। अगन भूत गृह कियो प्रवेश ॥२४॥

दोहा

ताने नावधा भक्ति कर, पड़ गाहे मुनि चन्द।
अन्यदान देतो भयो, जो जगमें सुख कन्द ॥२५॥

छप्पय

वायुभूत लघु भ्रात तनुज ने बहु समझायो।
तो पण मुनिको नमों नाह चित क्रोध उपायो॥
निंदा रूपी बार बार इन भाषे वायक।
शान्ति मूर्ति धर क्षमा गमन कीनों मुनि नायक॥
अब होनहार दुरगति जिसे, सो समझायो भी सही।
शुभ धर्म काज को छोड़कर, मूढ़ पाप रत है वही।२६।

जोगी रासा।

इस अन्तर सो पवित्र आतमा अगन भूत दुज राई।
सूरज मित्र मुनिके संग चालो पोंहचो बन हरषाई॥
केती दूर जायकर तिष्ठे गुरु उपदेश बतायो।
मन वच काय भयो वैरागी आतम में चित लायो॥२७॥
नगन दिगम्बर मुद्रा धारी। निज परको हितकारी।
शत्रु मित्र तृण कंचन समझो गृह ममता परिहारी॥
अगन भूत की नारी तबही सब वृतान्त सुन लीना।
सोमदत्त चित्तमें अति दुख कर रुदन करो है दीना॥२८॥
देवर पास जाय इह भाषी तू पापी अधिकाई॥
बहु विधि मुनिकी निंदा कीनी वंदन नाह कराई।
तो निमित्त ते मेरे पति ने वन में दीक्षा धारी।
ऐसे भावज वच सुन घोरी क्रोध अगन पर जारी॥२९॥
कटुक वचन भावज को भाषे महा दुष्ट तेह वारी॥
नगन मलीन पास तू जाती इम कह लात जु मारी॥
फोड़ो कूट गई वच सुनकर बोली अबला बानी।
जन्मान्तर में तुझ पग खाऊं ऐसे कहो निदानी॥३०॥

दोहा

मूरख जन जे जगत में, तिनको है धिक्कार ।
क्रोध थकी शुभ काज हन, परभव देय बिगार ॥ ३१ ॥

चौपाई

अब यह वायु भूत पापिष्ठ । मुनि निंदा इम करी गरिष्ठ ॥
ताकर सप्तम छिन दुखपाय । कुष्ठ उदम्बर जुत भई काय ॥ ३२ ॥
तीन जगत मुनि पूजत जेह । धर्म मार्ग उपदेशक तेह ॥
तिनकी निंदा करे अयान । ते बहु बिध दुख क्यों न लहान ।३३।
अब यह कुष्टी दुष्ट निदान । कष्ट थकी छोड़े निज प्रान ॥
कोसांबी नगरी तट धाम । गधी भई दुःखित बसु जाम ।३४।
तहां ते मर तिस नगरी तीर । भई सूकरी मलिन शरीर ॥
फिर मर चंपापुर तत्काल । हुई कूकरी घर चंडाल ॥ ३५ ॥
बहुरि मरी निज पाप बसाय । तिसही मातंगी गृह आय ॥
तनुजा भई चक्षु कर हीन । तन दुर्गंध महा दुख लीन । ३६ ।
जम्बू तरु तल दुखित गात । औंधी पड़ी फलन कूं खात ॥
करम जोगकर बुद्ध निधान । अगनभूत मुनि निकसे आन ।३७।
तिसे देखकर दीन दयाल । गुरुसे पूछो न्याय सु भाल ॥
अहो बिचारी दीन जु एह । महा कष्टकर मंडित देह ॥ ३८ ॥
हे स्वामी अवनी के विषै । केह प्रकार यह जीवत दिखे ॥
तब श्री सूरज मित्र मुनिन्द । ज्ञान नेत्र धारत गुण वृन्द ॥३९॥
कहत भए सुन बचन अबार । वायु भूत लघु भ्रात तुम्हार ॥
धर्म कर्म ते रहित बिवेक । मेरी निंदा करी अनेक ॥ ४० ॥
ताके पाप थकी लह कुष्ट । मरकर गधी भई दुख पुष्ट ॥
फिर सूकर कूकर गति लई । अब अंधी चंडाली भई ॥ ४१ ॥
ऐसे गुरुके बचन संभाल । अगन भूत ऋषि परम दयाल ॥

मातंगी ढिग जाय तुरन्त । पंच अनुवृत दिये महन्त ॥ ४२ ॥
सुखदाता श्रावकको धर्म । ताको ग्रहन करायो पर्म ॥
अब चांडाली वृत पालंत । कछूक काल बीतो इह भंत ॥४३॥

दोहा

अब मर चम्पापुर विषै, नाग सर्म द्विज गेह ।
नाग श्री तिस नाम है, कन्या उपजी येह ॥ ४४ ॥
एक दिना अहि पूजने, नाग बनी में जाय ।
सेठ सुता मुन्नी सुता, बहु कन्या संग थाय ॥ ४५ ॥

अडिल्ल

तहँ इस नाग श्री के पुन्य प्रभाव जी । सूरज मित्र और अगन भूत मुनिरायजी ॥ आये करत बिहार तिसी बन में सही शुद्ध भाव धर कन्या तिन पद को नई ॥ ४६ ॥
तब लघु मुनि इस देख हर्ष चित में धरो । पूरबले संबंध थकी बहु हित करो ॥ जब श्री गुरु ते पूछो इम उच्चार के। भयो नेह केहि काज इसे जो निहार के ॥ ४७ ॥

दोहा

तब श्री सूरज मित्र जी, पूरबलो बिरतन्त ।
अगन भूत प्रति सब कहो, सुन तिन बोध लहंत ॥४८॥
नाग श्री को ता समें, पंच अनुवृत सार ।
सम्यक् जुत देते भये, तिन किये अंगीकार ॥ ४९ ॥
फेर कहो सुन वालके, तेरो तात अयान ।
छुड़वावे जो व्रतन को, तो दीजो हम आन ॥ ५० ॥

सोरठा

अहो जो मुनि निरग्रन्थ, पर उपकारी होत हैं ।
दिखलावें शुभ पंथ, सत्य बात यह जग विषै ॥ ५१ ॥

चौपाई

तब यह नागश्री हरषाय । भक्ति सहित नमकर मुनि पाय ॥
हर्षित चाली अपने गेह । तात प्रती सब भाषे तेह ॥ ५२ ॥
सुनकर विप्र कही ए सुता । हमरो कुल उज्जल गुण युता ॥
तातैं मुनि भाषत व्रत त्याग । बिश्नु धर्म में कर अनुराग ।५३।
ऐसे सुन नाग श्री कही । उनही को सौंपूं व्रत सही ॥
तब यह द्विज धर क्रोध महान । तिस कर गहचालो मुनिथान ।५४।
पथमें चलत चलत इम पेख । सूली ढिग इक जनको देख ॥
ताको बांधो थो कुतवार । कोलाहल बाजे अधिकार ॥ ५५ ॥
ऐसे लख कन्या गुणवंत । तात प्रती पूछो इह भंत ॥
अहो पिता इस जनको अवै । कष्ट देय क्यों मार सवै ॥ ५६ ॥
बोलत भयो विप्र इम बैन । बणिक पुत्र थो एक बरसेन ॥
तानें अपनो धन समुदाय । धरो धरोहर या ढिग आय । ५७।
फिर मांगो ताने इस पास । तब याने मारो दे त्रास ॥
तातैं राजा के चर येह । सूली पै हन हैं इस देह ॥ ५८ ॥
ऐसी सुन नाग श्रीबात । कहत भई अब सुनिये तात ।
येही व्रत मोकूं ऋषि चन्द । दिलवायो है आनन्दकन्द ॥ ५९॥
ताको किम छुड़वावत आप । सुनकर फिर बोलो तिसबाप ।
हे पुत्री यहतो व्रत राख । बाकी और छोड़ इम भाख ॥६० ॥
तवही आगे कियो पयान । कारन और मिलो इक आन ।
एक मनुष बांधो इह देख । जन कोलाहल करत विशेख ६१॥
पूछत भई तात ते येम । कहो पिता कारन है केम ।
कहे विप्र इस नारद नाम । बनक कुबुद्धी अघको धाम ॥६२॥
सदा झूठ बोले अधिकाय । ठगा करे नित जन समुदाय ।
पाप उदै आयो इस आज । झूठो जान गहो नरराज ॥६३॥

क्रोधवान ह्वै क्रूर नृप दत्त । इह बिधि हुक्म दियो तत्कत्त ।
रसनाकर पद याके छेद । ताते जन मारत देखेत ॥ ६४ ॥

दोहा

नाग श्रीनिज तात तें, बोली वच तब येम ।
सत्य वरत मोको दियो, तुम छुड़वावत केम ॥६५॥
जब प्रोहत कहतो भयो, यह भी व्रत रखलेय ।
शेष वृत उस नगनकी, उलटे चलकर देय ॥ ६६ ॥
यह विधि चलते पथ विषै, मिले जो कारन आय ।
चारों लोभ कुशीलके, देखे दंडत काय ॥ ६७ ॥

सोरठा ।

नागश्री यह पेख, कारन सब पूछत भई ।
उत्तर तात विशेष, देत भयो पथके विषै ॥ ६८ ॥
फेर कहे द्विज राय, यह सब वृत तेरे रहो ।
पण वाके ढिग जाय । वचन तर्जनाके कहे ॥६९॥

अडिल्ल

फिर काहू के बालकको व्रत देनही ।
इम कहकर जुत सुता गयो जहँ मुनि सही ।
अहो सत्य यह दुर्जन जानतन्यायही ।
तों पण सज्जन विषै राग नहिं लायही ॥ ७० ॥
तब यह विप्र अयान क्रोधजुत चखुकरे ।
दूर तिष्ठकर कटुक वचन इम उच्चरे ॥
अरे नगन मुझ सुता देय वृत तैं ठगी ।
जादू कीनो केम, जो तुझ माहीं पगी ॥ ७१ ॥

दोहा

ऐसे वच सुन विप्र के, सूरजमित्र मुनिंद ।
कहत भये ये कन्यका, हमरी है गुणवृन्द ॥ ७२ ॥

तेरी पुत्री है नहीं, अहो सुनो दुजराय ।
इम कह नाग श्री प्रते, कहो सुता इत आय ॥७३॥

चौपाई

श्री भट्टारक के बच सार । सुनकर कन्या ताही वार ।
आय निकट बैठी गुणवन्त । तब बामन इम बचन भनन्त ७४।
देखो देखो यह अन्याय । कहतो कहतो पुरमें जाय ।
शशि बाहन नरपति के द्वार । बहुविधि कीनी विप्रपुकार ।७५।
अहो नाथ मुनि नगन मलीन । मेरी सुता छीन तिस लीन ।
ताके बच सुन नृप जन और । धरो हियेमें विस्मय जोर ।७६।
तब पुरजन जुत है नरधीश । आवत भये जहां मुनि ईश ।
भेटे ऋषि पदकमल महान । कौतुकजुत तिष्ठे तिस थान ।७७।
जब बामन बोलो दुख जुता । मेरी सुता जुमेरी सुता ।
भट्टारक जब येम बखान । चौदा विद्या दई महान ॥ ७८ ॥
हम नैया यक हैं नरपाल । ताते हमरी सुता रसाल ।
इम सुनकर बोलो अवनीस । भो स्वामिन सुनिये जगदीस ।७९।
जो तुमने इस विद्या दई । सो परकाश कराओ सही ।
तब वे श्रीमुनि भानु समान । बचन किरन करके तेहथान ।८०।
जग जन मूढ़ मोह तम युक्त । दूर करत बोले इम उक्त ।
सब जन देखतहैं तिहकाल । करत भये इम दीनदयाल ॥८१॥

दोहा

कन्या के सिर कर धरो, बोले मधुरी बान ।
वायु भूत मैंने तुझे, जो दियो विद्या दान ॥ ८२ ॥
ताको कर उच्चार अब; निज विद्या परकाश ।
सुनकर पूरबजन्म जो, पढ़ी हुती जो भाश ॥ ८३ ॥

चाल मेघकुमारकी देशी

इम सुनके राजा तबै जी, और नगर के लोग ।

चितमें अम्बरज धर नमे जी, मुनिपद कंज मनोग ।
सयाने भेद सुननके भाव ॥८४ ॥
अहो मुनीश्वर जगपतीजी, करुणा आकर सार ।
अपनो संबन्ध सब कहोजी, यह कीजे उपकार ॥
मुनीश्वर तुम तारक संसार ॥ ८५ ॥
ज्ञान नेत्र धारक गुरूजी, भाषे वचन महान ।
वायु भूतके भवतने जी, पूरव जनम वखान ॥
ऋषीवर सबके संशय टार ॥८६॥
जब याके सब भव सुने जी, नृप पुरजन हित धार ।
बिस्मय चित्त भये तबै जी लख संसार असार ॥
सयाने चित्त बैराग उपाय ।८७।
चन्द्र वाहन नर नाथ ने जी, राज सुतन के संग ।
जिन दीक्षाको आदरी जी, भये दिगम्बर अंग ॥
सयाने अति बैराग सुधार ॥८८॥
नाग शर्म ताही घरी जी, जिन भाषित सुन धर्म ।
मुनि पदधर अच्युत विषय जी, देव भयो लह सर्म ।
सयाने श्री जिन धरम प्रसाद ॥८९॥
नग श्री दुजकी सुताजी, आरज के वृत ठान ।
तपकर षोड़ष स्वर्ग में जी, भयो अमर मृधिवान ।
सयाने या सम लक्षन कोय ॥९०॥

कवित्त ।

अबै अगन मंदिर पर्वत पर श्री गुरु सूरज मित्र मुनिन्द ।
अगन भूत जुत जाय तासपर करम नाश कीने जग चन्द ॥
केवल ज्ञान पाय भवि बोधे दरसायो शिव मग सुख कंद ।
कोर कर्म हनि शिवपुर तिष्ठे जग जीवनकर नित प्रति वंद ।९२।

सोरठा।

तीन लोक रिछपाल, वे दोनूं जिन केवली।
हम तुमको तत्काल, शिव सम्पत के अर्थ हो ॥९३॥

चौपाई।

इस अन्तर आवन्ती देश। उज्जैनी नगरी तहँ वेश॥
तामें पंच परम गुण भक्त। इन्द्रदत्त बाणक गुण युक्त ॥९४॥
रूप सौभाग्य धरेवर भाम। तास गेहमें गुणवति नाम॥
ता ललना के गर्भ मझार। नाग सर्भचर जो सुर सार॥९५॥
षोडष माक थकी चय आय। याके सुत उपजो सुखदाय।
नाम सुरिन्द्रदत्त बुधिवान। बालक वै बहु सुगुण निधान ॥९६॥
इस अन्तर अब ताही ठौर। सेठ सुभद्र रहै इक और॥
ताके तनुजा सुन्दर काय। नाम यशोभद्रा तिस थाय ॥९७॥
ताको परनत भये सुजान। सेठ सुरिद्रदत्त विध ठान॥
सो येह दम्पति पुन्य संयोग। नाना बिधिके भोगत भोग॥९८॥
श्री जिन चन्द्र कथित जो धर्म। तामें तत्पर है यह पर्म।
सुखसे तिष्ठत है निज थान। आगे और सुनों व्याख्यान॥९९॥

दोहा।

एक दिना इस सेठ तिय, देखे श्री मुनिराय।
अवध ज्ञान धारक सुधी, तिने नमी सिर नाय।१००।
बिनती कर पूछत भई, मेरे कोई बाल।
ह्वै है अक नांही कहो, हे गुरु दीन दयाल॥१॥

सोरठा।

तब मुनि भाषे बैन, हे पुत्री तुझ तनुज वर।
होवेगो सुख दैन, भव्यो नम निश्चय थकी॥२॥
और तेरो भरतार, बालक को मुख कंज लख।
निज दीक्षा को धार, ताही छिन बन जायगो॥३॥

दोहा।

अरु जो तेरो पुत्रवर, मुनि पद कंज निहार।
भोग छोड़ कानन विषय, जावेगो तत्काल ॥ ४ ॥

चौपाई।

इस अन्तर नाभ श्री जीव। स्वर्ग तने सुख भोगे सदीव ॥
चैकर गुण निधि महा पवित्र। भयो यशोभद्रा को पुत्र ॥५॥
तव सब परियन के समुदाय। बहु विधि के कीने उत्साय॥
नाम धरो सुखमाल कुमार। सब जन मोहन रूप अपार ॥६॥
इस अन्तर श्रेष्ठी गुणवान। नाम सुरिन्द्रदत्त तिस जान ॥
सो लख सुतको आनन्द चंद। अपनो पद दीनों सुख वृन्द॥७॥
जग हितकारी दीक्षा सार। लेत भयो सो ताही वार ॥
तिस पीछे सुखमाल कुमार। पुन्य उदै जोवन तन धार ॥ ८॥
बत्तिस कन्या रूप निधान। उत्तम कुलमें ते उपजान ॥
लावन मंढत जुत सौ भाग। तिनको परनी धर अनुराग ॥९॥
तिन जुत नाना भोग करन्त। महल विषय सुखसों तिष्ठन्त।
इस अन्तर अब सुनो बखान। करमन की गतिहै बलवान ॥१०॥

दोहा

माता श्रीसुखमालकी, सुतके मोह विशेष।
मुनि जनको निज द्वारमें, करन न देह प्रवेश ॥११॥

काव्य

इस अन्तर उज्जैनपुरी इक बानक आयो।
बेचनको तिह ठाम रतन कंठल शुभ लायो ॥
प्रद्योतन नरनाथ पास दिखलायो तबही।
बहुत मोलको जान फेर दीनों नृप तबही ॥१२॥
फिर लायो वह पुरुष, यशोभद्रा के धामा।

तिनने लियो तुरन्त दिये मुंह मांगे दामा ।
ताके बत्तिस टूक किये निज मन हर्षाई ।
सब बहुवनको तबै, पादका कर पहिनाई ॥१३॥
एक दिना यक चील पादका चोंच विषै धर ।
मांस जान ले उड़ी फेर डारी वेश्या घर ॥
गणिका करमें धार भूप पै कियो पयानो ।
सब वृत्तान्तको जान नृपतिमन अचरज आनो ॥१४॥
तबै सुबुद्धीराय चित्तमें येम विचारी ।
कैसो है सुखमाल कुमर देखूं येह वारी ।
अभिप्राय शुभ धार सेठ के धाम सुआये ।
तबै सेठ तिय आव भगत करके बैठाये ॥१५॥

दोहा

नृप ढिग सुत तिष्ठाय के, सेठानी हरषाय ।
कियो आरतो तासमैं, थारी दीप धराय ॥१६॥
तब यह नृप सुखमाल के, लख आसूं जुत नैन ।
दीपक हार प्रकाशतें, व्याकुल चित नहिं चैन ॥१७॥

चौपाई

फिर भोजन करतो लखराय । यकयक तन्दुल चुनचुन खाय ।
तब नरेश ह्वै अचरजवन्त । सेठानी प्रति सब बिरतन्त ॥१८॥
पूछो ताने दियो बताय । सुनके भूपति येम कहाय ।
अहो सेठपति पुन्य विशाल, तुमहो आवन्ती सुखमाल ॥१९॥
फिर यह श्रीजुत भूप समेत । गये बापिका क्रीड़ा हेत ।
रतन मुद्रका सहित मरीच । पड़ी कुमरकी जलके बीच २०॥
ाभी मन नहिं भयो उदास । धरो दुगुन आनन परकाश ।
ांतवान आभूषण धरें । वाही विधि शुभ क्रीड़ा करें ॥२१॥

ऐसे लख प्रद्योतन राय । चितमें बहुविधि विस्मय पाय ।
पुन्यतनी सामग्री येह । ताको भोगत निस्सन्देह ॥ २२ ॥

दोहा ।

इसके पूरब पुन्यकी, बहु प्रस्तुत उच्चार ।
जलत चित्त है नरपती गयो सो निज आगार ॥२३॥

सवैया इकतीसा

अहो धन धान धार सम्पत तने भडार पुत्र मित्र औ कलित्र रूप अधिकाइये । नानाविधि भूषण अनूप वस्त्र भागवन्त बांधव सुहितकारी जगमें लहाइये ॥ महल अनेक खड़े भूप सन्मान करें हय गय आदिक सवारी जस गाइये । और तीन लोकमाहिं जेती हैंगी सार वस्तु पुन्यरूपी वट सारी सेती सब पाइये ॥ २४ ॥

जातें बुधिवान जीव चित्तमें लखो सदीव दुख पाई खोटे पथ तत्क्षण भानियो । सुर शिव लक्ष्त बीज जिन वर भाषो पुन्य ताको परकाश निज उर माहिं आनिये । सोई शुभ ज्ञान येह तासमें लगायो नेह जिनवर भक्तिपूज दान तिन ठानिये । शील ब्रत पालन उपवास पंच पाप त्याग इत्यादिक जग बीच पुन्य परमानिये ॥ २५ ॥

पद्धडी छन्द

इस अन्तर श्रीसुखमाल येह । सुख भोगत तिष्ठे आप गेह ।
अब इनके मातुल जगत वन्द । गणधरनामा जो हैं मुनिन्द २६
जिन तत्व लखन पंडित दयाल । आचारजपद धारें विशाल ।
सुखमाल तनी तिस आप जान । तिष्ठे सुआय इसके उद्यान २७
धर जोग विराजे भै निवार । स्वाध्याय तनों करते उचार ।
सुन शब्द यशोभद्रा तुरन्त । इम द्वारपालप्रति वच भनन्त २८

पूरन इन जोग जबै निहार । तबही यहँ से दीजो निकार ॥
इस अंतरवे ऋषिराज चंद । पूरनकर जोग त्रिया प्रबंध ॥२६॥

दोहा

फिर ऊरध पर गुप्त को, ऊंचे सुर व्याख्यान ।
करन लगे वे जगपती, परम दया की खान ॥ ३० ॥
तामें अच्युत स्वर्ग की, देव आय अरु काय ।
सुख संपत बरनी सबै, सुनी कुंवर चितलाय ॥ ३१ ॥

सोरठा

जाती सुमरन पाय, गयो निकट ऋषिराज के ।
चरनाम्बुज सिर नाय, भक्ति सहित तिष्ठत भयो ॥ ३२॥
बोले दीन दयाल, अहो बच्छ सुन लीजिये ।
तीन दिना में काल, तेरो है निश्चय थकी ॥ ३३ ॥

चौपाई

अब जामें तेरो हित होय । अहो सुबुद्धी कीजे सोय ॥
ऐसे गुरुके बचन रिसाल । सुनके धीरबीर सुख माल ॥३४॥
गुण उज्जल शुधकर त्रिय जोग । तबही दीक्षा लई मनोग ॥
सल्य रहित तज जगकी आश। प्रायोगमन धरो सन्यास ।३५।
अबवो अगन भूतकी नार । नाम सोमदत्ता दुखकार ॥
कर निदान जगमें भिरमांह । फिर उज्जैनीके बन मांह। ३६।
भई स्यालनी जुत सुत चार । पाप उदै याके अधिकार ॥
पूरब बैर थकी तेह थान । आय लगी मुनि पदको खान।३७।
अहो कष्ट हमको अधिकाय । यह निदान अघदेत अघाय॥
तें भविजन तजो तुरंत । जो तुम चाहो शिवको पंथ ॥३८॥
। सुखमाल मुनी पवित्त । मेरु समान करो दृढ़ चित्त ॥
त्रु मित्रमें धर समुदाय । सही परीषह येह अधिकाय ॥३९॥

तीजे दिन तजके निज प्रान । उपजे अच्युत सुरग विमान॥
तहं नाना विधि ऋद्धि लहाय। सो मोपै किम वरनी जाय।४०।

दोहा

देखो भविजन चित्त धर, कहँ मन वंछित भोग ।
कहां स्यालनी कृत भये, बहोत कठिन यह जोग ॥४१॥
सत्पुरुषन को चरित जो, अचरज कारी जान ।
ऐसे ही सुख भोगवे, फिर निज करत कल्यान ॥ ४२ ॥

काव्य

अब यह अमर सुजान स्वर्ग अच्युत के मांही ।
जिन चरनन को भ्रमर भयो तिष्ठे निज ठाही ॥
सदा काल प्रभु भक्त धार भोगत निज सम्पत ।
धर्म हिये धारन्त पापतें नित प्रति कम्पत ॥ ४३ ॥
जिस थानक मुनिराय तजी काया पवित्र अति ।
कोलाहल तिह ठाम कियो अमर न चित हरपति ॥
तब संसारी दुष्ट जीव तहँ धाम बनायो ।
महा काल तिस नाम कुतीरथ जग प्रगटायो ॥ ४४ ॥
पुन्य ताही स्थान सुरन बहु भक्ति आन उर ।
गंधत जल की करी वृष्टि ताही अवनी पर ॥
तब ते सरिता गंधवती प्रकटी उत्तम अति ।
महा पुरुष जहँ धाम धरतसो क्यों नहिं तीरथ ॥ ४५ ॥

छोम मालती

देखो यह श्री मान सेठ वर भोगत भोग सदा सुखदाय ।
फेर मुनीश्वरके वच सुनकर जानी अपनी किंचित आय॥
सब संपति तिय नेह तजो तिन भगवत भाषित तप चितलाय।
महा घोर उपसर्ग पशूकृत सह कर पाई निर्जर काय ॥ ४६ ॥

दोहा ।

ऐसे श्री सुख माल मुनि, निर्मल बुध धारन्त ।
सत्पुरुषन समुदाय को, कीजे शांत अत्यन्त ॥ ४७ ॥

सोरठा

श्री सुखमाल चरित्त, कीनो बर्णन तुच्छ धी ।
सुनो सुमनधर चित्त, बखतावर रतना कहे ॥ ४८ ॥

इति श्री आराधनासार कथा कोष विषय सुखमाल चरित्र वर्णन समाप्तम्

सुकौशल मुनि जी की कथा प्रारंभः नं. ५८

मङ्गलाचरण । छप्पय

तीन जगत में हैं पवित्र अरिहन्त देव बर ।
सर्व भुवन उत्कृष्ट भारती मात कलुष हर ॥
और गुरू निरग्रंथ अष्ट विंशत गुणधारी ।
तिनके चरण सरोज नमन कर कहूं अबारी ॥
शुभ कथा सु कौशल मुनि तनी, सुनो भव्य आनंद धर ।
ताके प्रसाद सुख बिस्तरें, बिघन सघन जावें सुटर ॥१॥

सोरठा

नगर अयोध्या जान, प्रजा पाल भूपति तहां ।
गुण उज्वल अधिकान, साहस धारी अति चतुर ॥ २ ॥
ताके सेठ निहार, सिद्धारथ नामा बिमल ।
धन धान्यादिक सार, श्री जुत यह बानक पती ॥ ३ ॥
तिय बतिस तिस धाम, लावनरूप सौभाग्य जुत ।
सबै पुत्र बिन बाम, कर्म उदै ते सेठ के ॥ ४ ॥
सुत बिन नहिं सो हन्त, अबला इस ही जगत में ।
जो पणरूप अत्यन्त, बिफल लता सम जानिये ॥ ५ ॥

तिन नारनके माहिं, जयावती नामा सुघड़ ।
प्राणन ते अधिकाय, सेठतनी वह वल्लभा ॥ ६ ॥

छन्द चाल

सो पुत्रहेत बहु भेवा । नित करे जच्छकी सेवा ।
सब कोई कारण पायो, इन पुन्य उदै अति आयो ॥७॥
ज्ञानी मुनि पूछे आई । तब श्रीगुरु गिरा सुनाई ।
हे पुत्री कुत्सित देवा । तुम तजो तासकी सेवा ॥ ८ ॥
जिन धर्म विषै चित धारो । जाते जावे दुख थारो ।
तेरे दिन सप्तम माहीं । रहे गर्भ महा सुखदाई ॥ ९ ॥
सुनके श्री गुरुकी वानी । तिय चित्त विषै हुलसानी ।
जिन धर्म विषै मत धारी । पूजा कुदेव की टारी ॥ १० ॥
जाकी वांछा चित होई । अरु मिले कदाचित सोई ।
तो क्यों नहिं जन सुख पावे । निश्चय करके हरषावे ॥११॥

चौपाई ।

इस अन्तर कितने दिन बीच । तिन सुत जायो सहित मरीच ।
नाम सुकोशल रूप अगाद । पायो जैन धर्म परसाद ॥ १२ ॥
तब सिद्धारथ सेठ उदार । सुत मुख पंज देख ततकार ॥
नाम जयंधर गुरु ढिग जाय । दीक्षा लीनी मन वच काय ।१३।
तबै जयावति है रिसवन्त । कियो विचार चित्त इह भन्त ॥
देखो बालक सुत जुत मोह । छोड़ गयो बालक पति सोह ।१४।
अथवा उनको जोगन एह । सुभपति को दीक्षा दी तेह ।
याते ऋषि पर कोप प्रचंड । ऐसी आज्ञा दई अखंड ॥ १५ ॥
अहो हमारी पोल मझार । पैठन नाहिं पावे अनगार ।
द्वारपाल सुनके निज धरी । सेठानी आज्ञा सिर धरी ॥ १६ ॥

कवित्त

अहो खेद हमको है दीरघ जे कुबुद्ध प्रानी गुण हीन ।
मोह वसाय छोड़ शुभ वृषको काज अकाज हिये नहिं चीन ।
ऐसे जन्म अन्ध के करमें चिंता मणा आवे दुन लीन ।
ताको फेंक देय बिन जाने तैसे इस मत भई मलीन ॥ १७ ॥

अडिल्ल ॥

इस अन्तर सेठ सुकौशल जी सही ।
जोवन वन्त कुमार भये तन दुत गही ॥
बत्तिस कन्या गुण उज्जल अधिकाय जी ।
ब्याही उत्तम कुल की चित हरषाय जी ॥ १८ ॥
नाना बिधि के भोग करत तिन जुत सदा ।
सुख से तिष्ठत धाम विषै नित ही सुदा ॥
ये प्रानी सब पूरब पुन्य प्रभावतें ।
नाना सम्पत सुख लहे मन भावतें ॥ १९ ॥

सवैया इकतीसा

एके दिन माय धाय नारी जुत आप सेठ । मोह के शिखर पर शोभा को निरखते । तिसही समय मंझार बिहरत अनागार, सिद्धारथ नाम आये भूम को लखत ते ॥ तब निज मात सेती पूछो हरषाय तिन, कौन येह दीखत हैं आतम में रत ते । जबै चित्त क्रोध धार बोली जयावती नार, फिर तसु कोई रंक खोय निज पति ते ॥ २० ॥

दोहा

इम माता को बचन सुन, कही सुकौशल येम ।
शुभ लच्छण यातन विषै, रंक बतावो केम ॥ २१ ॥

चौपाई

ताही समय सुनंदा भाय । सेठानी प्रति येम कहाय ॥

तुमको निंद नीक वच येह। कहते जोग नहीं सुन लेह ॥२२॥
हे मुग्धे तेरो भरतार। थो गुण उज्जल सेठ उदार॥
सुन जयावती होय अधीर। कहत भई चुपकी रहो वीर ॥२३॥
नेत्र समस्या कीनी जबै। धाय मौन गह तिष्ठी तबै॥
दुष्ट तियामन धर्म न गहे। जैसे वन्ही शीत न लहे॥ २४॥
जबै सुकोशल जी निज नैन। माता धाय तनी लख सैन॥
बार बार चित कियो विचार। जननी मोहि ठगो निरधार॥२५॥
ताही समै रसोईदार। कहत भयो भोजन है त्यार॥
अहो नाथजी मन के काज। चालिये देर होत महाराज ॥२६॥
अभ्याने सब नार समेत। विनती कीनी भोजन हेत॥
तब इह सुधी कहे सुन मात। इसी दिगंबर कीजो बात॥२७॥
सांच कहो तो भोजन करूं। नातरु अन्य सबै परिहरूं॥
जबै सुनंदा धात्री सार। पूरव सब विरतन्त उचार ॥ २८॥

दोहा

सुनकर सेठ तुरन्तही, मन वैराग्य उपाय।
गयो तिन्हीं मुनिके निकट, चरनकमल सिरनाय ॥२९॥
भगवत भाषित वृष सुनो, गुरु मुखते सुखकार।
तास रूपको जानकर, तन धन अथिर निहार ॥३०॥

पद्धड़ी

तबही इनकी बत्तीस नार। दुःखित चित आई वनमझार।
तिनमाहिं सुभद्रा गर्भवन्त। निजउदर विषै बालक धरन्त ३१॥
तिस देख सुकोशलजी महान। उस उदरतिलक कर इम बखान।
जो बालक इसके होय जोग। सो मम पदवी पावै मनोग ३२
अब सोच त्यागकर मोह नाश। दीक्षा लीनी निज तात पास।
धर रूप दिगम्बर तपन काय। बहु मेह परीषह शुद्ध पाय ३३॥

जे महा सुबुद्धी धर्म वन्त । जिन पूरब पुन्य कियो महन्त ।
अपने हितमें निज सावधान । तिनको किम दुष्ट ठगे अयान ३४

दोहा

इस अन्तर इस मातको, भयो सुपुत्र वियोग ।
तिसही आरतमें मरी, करके बहु बिध सोग ॥३५॥

चौपाई

मगध देश मों भिल्ल पहार । तापर पाप उदै तन छार ।
भई ब्याघरी अति बिकराल । तिष्ठ संग लिये तृय बाल ॥३६॥
देखो जयावती यह बाम । जिनवर को मत तज अभिगाम ।
मोह पसाय नीच गतिलही । पसुपर जाय दुःखकी मही ३७॥
अब इह पिता पुत्र मुनिचंद । गुण मंडित बिचरे सुखकंद ।
कर्म जोग तिस भूभृत पास । तिष्ठ जोग धार चौमास ॥३८॥
तीन भवन में इह उत्कृष्ट । जग हितकारी तिन बच मिष्ठ ।
पूर्ण योगकर धर्म जहाज । कियो बिहार गोचरी काज ३६॥
अब वह ब्याघ्री आनन फार । इन सन्मुख आई ललकार ।
लख ताको जिन आगम भास । दोनो मुनि धारो सन्यास ४०
सो वो बाघन अधम अलीन । युग मुनिको तन भक्षणकीन ।
ऋषि समाधिजुत तजके प्रान । सरबारथ सिध लहो बिमान ४१॥
होनहार शिव तियके कंत । आवागमन रहित भगवन्त ।
सो हम तुमको वे जुग साध । दोशिव लक्ष्मी अव्या बाध ४२॥
फिर वह केहरिनी अघरास । भखो सुकौशल तनको मांस ।
करमें लच्छण सुन्दर देख । जाती सुमरन भयो बिशेष ॥४३॥
पूरब भव सब आये याद । पुत्र हतो मेरो इह साध ॥
छोड़ दई ततृच्छण तिस काय । बहु बिधि पश्चाताप कराय ॥४४॥
हाय हाय इह कष्ट अपार । मैं पापन मूरख अविचार ॥

भगवत भाषित मतको छोड़। भ्रमन कियो जगमें नहिं ओर।४५।
मेरे सम कोई दुष्टन आन। हने पुत्र अस पतिके प्रान॥
ऐसे निज निंदा कर सोय। फेर सन्यास धरो शुध होय।४६।
शुभ भावनते तज निज काय। प्रथम स्वर्ग में उपजो जाय॥
देखो अचरजकारी बात। कहां मुनिन की कीनी घात॥४७॥
कहां सुरग के सुख विलसन्त। यह जिन मतको अगम सुपंथ।
तातैं भविजन सुर शिवदाय। जैनधर्म ध्यावो शुध भाय॥४८॥

छप्पय

अतिशै कर वर ज्ञान भान प्रगटावन भू भृत।
ऐसो श्रीयुत मूल संघमें प्रगटे रविवत॥
मेरे गुरू महान मल्ल भूषण सुखदाई।
भगवत भाषित सप्त भंग वानी जिन पाई॥
सो भई उदधिकी लहर सम, एकान्त पक्ष मल नासनी।
अतिशय कर सम्यक रतन, ताकी सदा प्रकाशनी॥४९॥
क्रोध रूप जल जन्तु सकलको नाश कियो तिन।
शोभित जिनवर वाक सुधाको पान करो जिन॥
श्री भगवान मयंक तनो मत वृद्ध करो है।
तप धृत समकित युक्त सकल अघताप हरो है॥
देदीप्यमान पुन रूप जो, खरची ताकर सहित है।
श्री जुत ऐसे गुरु मुझ तने, ब्रह्म नेमीदत कहत हैं।५०।

सोरठा

पूरन कथा जु यह, श्री सुकौशल मुनि तनी।
सुनो भव्य धर नेह, तुच्छ बुद्धि वर्णन करी॥५१॥

सवैया तेईसा।

यह अधिकार भयो सुखकार कहो मत द्वार सुभव्य निहारो।

जे महा सुबुद्धी धर्म वन्त । जिन पूरब पुन्य कियो महन्त ।
अपने हितमें निज सावधान । तिनको किम दुष्ट ठगे अयान ३४

दोहा

इस अन्तर इस मातको, भयो सुपुत्र वियोग ।
तिसही आरतमें मरी, करके बहु बिध सोग ॥३५॥

चौपाई

मगध देश मों झिल्ल पहार । तापर पाप उदै तन छार ।
भई ब्याघरी अति बिकराल । तिष्ठ संग लिये तृय बाल ॥३६॥
देखो जयावती यह बाम । जिनवर को मत तज अभिगाम ।
मोह पसाय नीच गतिलही । पसुपर जाय दुःखकी मही ३७॥
अब इह पिता पुत्र मुनिचंद । गुण मंडित बिचरे सुखकंद ।
कर्म जोग तिस भूभृत पास । तिष्ठ जोग धार चौमास ॥३८॥
तीन भवन में इह उत्कृष्ट । जग हितकारी तिन बच मिष्ठ ।
पूर्ण योगकर धर्म जहाज । कियो बिहार गोचरी काज ३९॥
अब वह ब्याघ्री आनन फार । इन सन्मुख आई ललकार ।
लख ताको जिन आगम भास । दोनो मुनि धारो सन्यास ४०
सो वो बाघन अधम अलीन । युग मुनिको तन भक्षणकीन ।
ऋषि समाधिजुत तजके प्रान । सरबारथ सिध लहो बिमान ४१॥
होनहार शिव तियके कंत । आवागमन रहित भगवन्त ।
सो हम तुमको वे जुग साध । दोशिव लक्ष्मी अव्या बाध ४२॥
फिर वह केहरिनी अघरास । भखो सुकोशल तनको मांस ।
करमें लक्षण सुन्दर देख । जाती सुमरन भयो विशेष ॥४३॥
पूरब भव सब आये याद । पुत्र हतो मेरो इह साध ॥
छोड़ दई ततक्षण तिस काय । बहु विधि पश्चाताप कराय ॥४४॥
हाय हाय इह कष्ट अपार । मैं पापन मूरख अविचार ॥

भगवत भाषित मनको छोड़। भ्रमन कियो जगमें नहिं ओर।४५।
मेरे सम कोई दुष्टन आन। हने पुत्र अस पतिके प्रान ॥
ऐसे निज निंदा कर सोय। फेर सन्यास धरो शुध होय।४६।
शुभ भावनते तज निज काय। प्रथम स्वर्ग में उपजो जाय॥
देखो अचरजकारी बात। कहां मुनिन की कीनी घात॥४७॥
कहां सुरग के सुख विलसन्त। यह जिन मतको अगम सुपंथ।
तातें भविजन सुर शिवदाय। जैनधर्म ध्यावो शुध भाय॥४८॥

छप्पय

अतिशै कर वर ज्ञान भान प्रगटावन भू भृत।
ऐसो श्रीयुत मूल संघमें प्रगटे रविवत॥
मेरे गुरु महान मल्ल भूषण सुखदाई।
भगवत भाषित मत्त भंग वानी जिन पाई॥
सो भई उदधिकी लहर सम, एकान्त पक्ष मल नासनी।
अतिशय कर सम्यक रतन, ताकी सदा प्रकाशनी॥४९॥
क्रोध रूप जल जन्तु सकलको नाश कियो तिन।
शोभित जिनवर वाक सुधाको पान करो जिन॥
श्री भगवान मयंक तनो मत वृद्ध करो है।
तप वृत समकित युक्त सकल अघताप हरो है॥
दैदीप्यमान पुन रूप जो, खरची ताकर सहित है।
श्री जुत ऐसे गुरु मुझ तने, ब्रह्म नेमीदत्त कहत हैं।५०।

सोरठा

पूरन कथा जु एह, श्री सुकौशल मुनि तनी।
सुनो भव्य धर नेह, तुच्छ बुद्धि वर्णन करी॥५१॥

सवैया तेईसा।

यह अधिकार भयो सुखकार कहो मन धार सुभव्य निहारो।

ग्रंथ महान विषय लखके शुभ अर्थ जु नेमी चंद उचारो ॥
ता अनुराग रची रचना हम छन्द बनाय सबै श्रम टारो ।
जे कबिसार सो लेहु सुधार यही उपकार करो जु हमारो ॥५२॥

सोरठा

सार सुधातम जान, इस तीजे अधिकार को ।
मत अनुसार बखान, कीनों बखतावर रतन ॥५३॥

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषय सुकौशलजीकी कथा सम्पूर्णम्

अथ गजकुमारकृष्णाकेपुत्रकीकथा ५९

मंगलाचरण । गीता छंद

निज गुणनकर परसिद्ध निरमल देव श्री अरिहन्त जी ।
तिनके चरन अंबुज हिये धर नमतहूं बहु भन्तजी ॥
त्रिय जगतमें परसिद्ध हैं श्री गज कुमार तनी कथा ।
ताको कहूं सब सुजन सुनिये संस्कृत विषै यथा ॥ १ ॥

चौपाई ।

पुरी द्वारका है जुत ऋद्धि । श्री को धाम जगत परसिद्ध ॥
नेमीश्वरके जनम पसाय । है पवित्र नगरी अधिकाय ॥ २ ॥
ताको राज करे शुभ मती । नारायण त्रिय खंडको पती ॥
गंधर्व सेना ताकी भाम । गज कुमार सुत मानो काम ॥ ३ ॥
कैसो है यह कुंवर महान । शुभटनमें अग्रेश्वर जान ॥
निज प्रताप रवि किरन प्रसिद्ध । अरिमन रूप लता भइ दग्ध ।४।
इस अंतर पौदनपुर नाथ । अपराजित बलवंत विख्याथ ॥
हरिकी आज्ञा मानत नाहि । दुष्ट बुद्धि गर्भित अधिकाहि ।५।
तब मुकंदपुर घोषन दीन । जो कोई शुभटेश्वर परवीन ॥
अपराजितको पकड़ तुरंत । मोढिग लावे सो बलवन्त ॥ ६ ॥
तासौं प्रीत करूं हित जोय । मन वांछित पावे बरसोय ॥

गज कुमार तब सुन यह बात। पिता पास आयो हरषात ॥७॥
नमस्कार आज्ञाले सुकुमार। पोदनपुर पहुंचो ततकार ॥
युद्ध करो तासों अधिकाय। जीवत पकड़ लियो वह राय। ८।
शीघ्र लाय दामोदर पास। सौंपत भयो तिसे गुण रास ॥
जो असाध्य वैरी नृप भोन। भले सुभट विन जीते कौन ॥ ९॥

दोहा

तब ही श्री पति के निकट, कुंवर करी अरदास ।
अब मेरो वर दीजिये, अहो तात सुख रास ॥ १० ॥
जो मन भावे सो करूं, सुनिये नांहिं पुकार ।
जबै हरी ने वर दियो, हर्षित भयो कुमार ॥ ११ ॥

पद्धडी

अब कुंवर काम लंपट अपार। लज्जा तज निजपुर मझार ॥
है रूपवंत पर नारि जेह। तिनको हटसे भोगत जु एह ॥१२॥
इस काम क्रियाको है धिक्कार। इह पाप तनों कारन विचार ॥
जिसके प्रभावकर जगत जीव। लज्जा भय तज सेवें सदीव ॥१३॥

दोहा

पांसुल नामा वनकपति, सुरति नाम तिस नार ।
रूप अधिक तिस देखके, मोहित भयो कुमार ॥ १४ ॥
सेठ तबै इन देखके, क्रोध अनिल प्रज्वलानि ।
नेत्र हीन सम घर विषै, तिष्टे मन दुख ठान ॥ १५ ॥

सोरठा।

राजपुत्रको येह, मनें करन समरथ नहीं ।
बैठो अपने गेह, सब चरित्र देखत रहे ॥ १६ ॥

नाराच

इस अन्तर एक दिना ज्ञान केवल कर मंडित ।

तीन जगतमें है प्रकाश तिस जोत अखंडित ॥
देव इन्द्र कर पूजनीक नेमीश्वर आये ।
द्वारापुरके निकट भव्य जन सुन हरषाये ॥ १७ ॥
वासुदेव बलदेव बहुत भूपति संग लेकर ।
जिन पद पूजन हेत चले हियेधर आनंद वर ।
तहां जायकर स्वर्ग मोक्षदायक जिन देखे ॥
अष्ट द्रव्य अतिसार लेय पद जजे विशेखे ॥ १८ ॥

दोहा

फिर प्रभुकी स्तुत करी, सबने बारम्बार ।
नमस्कार करके तबै, तिष्ठे ध्यान सुधार ॥ १९ ॥
तबही जिन बानी खिरी, कोड़ो सुःख दयाल ।
अनागार सागरको, भाषो धर्म रिसाल ॥ २० ॥
ताको सुनकर सुखित है, फिर स्तुतकर बंद ।
जिनवर भाषित धर्मसुन, को नहिं होत अनंद २१॥

चौपाई

अब यह गजकुमार सुन धर्म । मन बच काय तजो जग भर्म ।
किये पापकी निंदा ठान । मन आनो बैराग महान ॥ २२ ॥
भव वारिधिकी नाशनहार । भगवत दीक्षा ले तेहिबार ।
तपनिधि इकल बिहारी भये । उर्जयन्त कानन में गये ॥२३॥
धर समाध तिष्ठे जगचंद । निश्चल मेरु समान मुनिन्द ।
अब वह पांशुल सेठ अयान । गिरपै इनको तिष्ठे जान ॥२४॥
पहिलो बैर कियो सब याद । आयो शीघ्र जहां यह साध ।
उस पापी ने तिसही घरी । मुनि शरीरको पीड़ा करी ॥२५॥
लोह मई कीले परचण्ड । संध संध प्रति जड़े अखंड ।
पाप पुंज कर युक्त मलीन । अपने धाम गमन तब कीन २६॥

तब श्रीयोगीश्वर सुकुमार । जैन तत्वके जानन हार ।
सही वेदना तृणवत जान । कर समाधि छोड़े निज प्रान २७॥
नाक लोकमें कीनो गौन । तहँ तिष्टे वे सुखके भौन ।
सत्पुरुषन को परम चरित्र । अचरजकारी है सुनि मित्र ॥२८॥
कहां वेदना को समुदाय । कहां समाधि विषै चितलाय ।
सोई वे मुनिचंद दयाल । शान्त अर्थ हूजे गुणमाल ॥ २९ ॥
कैसे हैं वे तप निधि देव । प्रभुके धर्म तनो सुनि भेव ।
दीक्षा लेकर भये मुनिंद । संयम व्रत पालो गुणवृन्द ॥ ३० ॥
जैसे संस्कृतमें कही । तेह प्रकार भाषा वरनई ।
यामें दोष न कवि को जान । देख लीजियेचतुर सुजान ॥३१॥

इति श्रीआराधनासार कथाकोष विषय गजकुमारके चरित्र की
कथा समाप्तम् नं० ५९

अथ पणकमुनिकी कथा प्रा० ६०

मंगलाचरण ॥ दोहा ॥

पूजनीक पंडितन कर, सुखदाता अरिहन्त ।
तिनके चरण सरोजको, नमकर कथ उचरन्त ॥१॥
पणक मुनीश्वरकी कथा, जग जनको हितकार ।
अब संक्षेप थकी कहूं, सुनके भवि हिय धार ॥२॥

पद्धरी

रमणीक पणीश्वर पुरथ सन्त । तहां प्रजापाल भूपति लसंत ।
ताके सागरदत्त सेठ एक । पणिका सेठानीजुत विवेक ॥ ३ ॥
तिन दोनोंके आतम पवित्त । सुतभयो पणक मानि स्वच्छचित्त ।
सो महासुबुद्धी भागवन्त । शुभ पथ चलन्त अघने हनन्त ॥४॥
इक दिन यह वुधधारी कुमार । श्रीवीर समोश्रुतके मझार ।

बंदनके हेत कियो पयान । रचना देखी दैदीप्यमान ॥ ५ ॥
मणिजड़त सुतोरण अतिविशाल । शुभमानस थम्भदिपै रशाल ।
बहु सोज सहत आनन्दकार । रतननके कूप लखे अपार ॥६॥
फिर गंधकुटी रचना अनंद । त्रिय पीठ सहित विष्टर दिपंत ।
तापर अलिप्त तिष्ठे जिनेश । जिमि पूरण शशि शोभा विशेश ७
त्रियेछत्र शीषपरजुत मरीच । तिनसम आभा नहिं जगत वीच ।
शुभ उज्ज्वल चौसठ चमर सार । ढोरत जच्छादिक भक्तिधार॥८॥
नभते होवे बर सुमन वृष्टि । सुर दुंदुभि वाजे अति गरिष्ट ।
मघवादिक जजें पदारविन्द । ऐसे श्रीबीर जिनेन्द्र चंद ॥ ९ ॥

दोहा

तरु अशोक सब शोक हर, तिष्ठे जिनवर पास ।
कांति अधिकको कह सके, कोड़ो भानु प्रकाश ॥१०॥
मिथ्या ध्वान्त बिनाशिनी, ऐसी गिरा महान ।
खिरत प्रभू आनन थकी, सुर दुंदुभी समान ॥११॥

चौपाई ।

नगन दिगम्बर जे मुनि चंद । सभा विषै तिष्ठे सुखकंद ।
भव जीवनकर स्तुति जोग । चौंतिश अतिशय लसत मनोग १२।
तीन भवनमें उत्तम देव । नंत चतुष्टे गुण बहु भेव ।
मुक्तिश्री के वल्लभ सार । ऐसे प्रभुको पणक निहार ॥१३॥
भक्ति सहित परदच्छण तीन । देकर नमस्कार फिर कीन ।
बहु विधि स्तुत पूजा करी । बानी सुनी महा रस भरी ॥१४॥
अपनी आयु तुच्छ इह जान । सेठ तनुज मुन भये महान ।
जिन कल्पी हूवे तत्कार । ईर्जा पथजुत कियो बिहार ॥ १५ ॥
तीरथ यात्रा करने हेत । गंगा तट पहुँचे जगसेत ।
नौका चढ़त भयो शिव मगी । मँझधारामें डूबन लगी ॥१६॥

तब इह शुक्लध्यान चितधार। सकल करमको कर निरवार।
केवल पाय मोक्षयुत हुये। आवागमन रहित वे भये ॥ १७ ॥
वेई पगाक मुनीश्वर जेह। मेरु शिखर सम निश्चल देह।
कर्म अरी नाशक भगवन्त। मो शिव सम्पति देहु तुरन्त १८॥

दोहा।

देखो सागरदत्तको, पगाक नाम सुत येह।
वर्धमानको देख कर, अल्प आयू लख जेह ॥ १९ ॥
मोह परीग्रह नास कर, भये दिगम्बर अंग।
करम काट शिवपुर गये, सो सुख देहु अभंग ॥२०॥

इति श्रीआराधनासार कथाकोषविषय पगाकमुनिकी कथासमाप्तम् म० ६०

अथ भद्रबाहुजीकी कथा प्रा० ६१

मंगलाचरण ॥ गीताछंद ॥

जो जगतके प्राणीनको नित देत वर कल्याण हैं।
सुर असुर करत प्रणाम जिनको सो प्रभू भगवान हैं ॥
तिनको नमन करके कहूं श्रीभद्रबाहु चरित्रही।
सब जननको हितकार है सुनके धरो भवि चित्तही ॥ १ ॥
इस पुंडवर्धन देशमें शुभकोट सतपुर जानिये।
ताको पद्मरथ नाम भूपति बुद्धिवान प्रमानिये ॥
जिम रायके द्विज सोम शर्मा नार श्री देवी भली।
तिन जुगनके सुत उपजो श्री भद्र बाहु महाबली ॥२॥

चौपाई

सो बालक गुण उज्वल धरे। भद्र मूर्ति सब के चितहरे ॥
इक दिन नगर बाह्य उद्यान। क्रीड़ा हेत गयो बुधिवान ॥ ३ ॥
मुंजी बंधन कटि धारंत। बहुत बाल जुत मन हरषंत ॥
वट क्रीड़ा तहँ करत कुमार। तिनमें भद्र बाहु निरधार ॥ ४

निज चतुराई कर की करी। तेरे गोली ऊपर धरी॥
इस अंतर श्री वीर जिनिंद। मुक्त गये पीछे गुण वृंद॥ ५॥
श्रुत केवली पंच भवतार। चौदे पूरव जाननहार॥
तिनमें चौथे सुगुण निधान। गोवर्धन जी नाम महान॥ ६॥
ऊर्जयंत गिर बंदन काज। जावे थे वे श्री महाराज॥
सो कोटी सत्पुरुषन बीज। तिष्ठे मुनिगण सहित मरीच। ७।
भद्रबाहु जे क्रीड़ा करी। गोवर्धन जी लख तिह घरी॥
अपने मनमें कियो बिचार। यह होसी पंचम सुत धार॥८॥
यह बिध निमित ज्ञानते जान। सोमशर्म दुजके घर आन॥
कहत भये मुनि विप्र उदार। भद्रबाहु तेरो सुत सार॥ ९॥
जो तू हम को दे भूदेव। इसे पढ़ावें हम बहु भेव॥
ऐसे सुन सुतको तत्काल। कियो बिप्रने मुनिकी नाल॥१०॥
तब श्री गोवर्धन मुनिचंद। शास्त्र पढ़ाये बहु सुख कंद॥
निपुन करो बहु श्रुती मंझार। फिर भेजो दुजके आगार।११।
सो इह भद्र बाहु घर जाय। मात पिता की आज्ञा पाय॥
ग्रहको त्यागनकर बड़भाग। आकर गुरुके चरनन लाग।१२।
स्वर्ग मोक्ष सुखकी दातार। दीक्षा कीनी अंगीकार॥
द्वादशांग पढ़ भयो प्रवीन। काय कषाय करी अति छीन।१३।

दोहा

जे आतम ज्ञायक पुरुष, किम तिष्ठे ग्रह बास।
जिन अमृत रस चाखियो, भावे बिष किम तास॥१४॥

कवित्त

करि समाधि गोवर्धन स्वामी सुरग विषै पहुंचे सुखदाय।
ता पीछे अब भद्र बाहु जी शास्त्र नेत्र ते गुरुपद पाय॥
संघाधिपति वे मुनि गुण जुत बचन रूप अमृत बरसाय॥
भव्यरूप धाननको सींचत उज्जैनी पुर पहुंचे आय॥ १५॥

दोहा

ताही छिन आहारको, भद्र बाहु मुनिराय ।
नगर उज्जैनी में गये, श्रावक गेह लखाय ॥ १६ ॥
तहां बालक तिय गोद में, वचन अव्यक्त बखान ।
जाहुर मुनि जी ह्यां थकी, यह गुरु सुनकरि बान ।१७।
भद्र बाहु स्वामी तबै, तत्व लखन को भान ।
बात सत्य शिशु ने कही, इह विध चित में ठान ॥१८॥

सोरठा

बारह वर्ष प्रमान, पड़े इहां दुर्भिक्ष अति ।
अन्तराय को जान, आये निज थानक विषै ॥ १९ ॥

काव्य

संध्या काल मंझार गुरु इम गिरा सुनाई ।
अहो मुनीश्वर सर्व सुनो तुम चित्त लगाई ॥
द्वादश वर्ष प्रमाण इहां दुर्भिक्ष पड़ेगो ।
मुनि श्रावक को धर्म सबै ही नष्ट करेगो ॥ २० ॥
ताते हो तुम साध आयु मेरी तुच्छ जानो ।
तिष्ठूंगो इस ठौर नहीं मुझ होय पयानो ॥
तुम उद्यम को ठान सर्व दक्षिण दिशि जावो ।
तप नाना विधि करो सकल अघ पंक नसावो ॥२१ ॥

दोहा

ऐसे कह ताही समय, अपनो शिष्य महान ।
नाम विशाखाचार्य तिस, दश पूरब को ज्ञान ॥ २२ ॥
ताको संघको अधिपति, करत भये तत्काल ।
दक्षिण दिश जाने थकी, आज्ञा दई विशाल ॥ २३ ॥

चौपाई

चारित्रकी रक्षाके काज । सब मुनि भेज दिये परागाज ॥

वे गण दक्षण दिशमें जाय । सुखसे तिष्ठे आनंद पाय ।२४।
जे चालें गुरु बच अनुसार। तिनको होवे सुख बड़वार ॥
ता पीछे उज्जैनी पती । चंद्र गुप्त नामा शुभ मती ॥ २५ ॥
सब जतियनको लहो बियोग। तन धन अथिर लखे सब भोग॥
भद्र बाहुके चरनन पास । भयो दिगंबर गुण की रास ॥ २६ ॥
अब इह भद्रबाहु श्रुत रत्न । श्री जिन चंद्र कथित जो तत्व ॥
तिन समझनको बिदुषन सार। परम सुबुद्धी चित अविकार।२७।
उज्जैनीपुर के उद्यान । बटके बृक्ष निकट थित ठान ॥
क्षुधा तृषादि परीषह जोर । जीती तनकी ममता छोर ॥२८॥
सहित सन्यास प्रानको त्याग। उपजे स्वर्ग विषै बड़भाग ॥
वे श्री भद्र बाहु योगिन्द्र । दीजे मोह शुभ पथ सुखवृन्द ॥२९॥
सोम सर्म नभ बंश महान । तामें उपजे भानु समान ॥
जैन धर्म वारध जु रिसाल । तास बढ़ावन चन्द्र बिशाल ॥३०॥
सो सत्पुरुषनके सुख करो। पाप पंक हर मंगल बरो ॥
वे पंचम श्रुत केवल धार। करं कवीनुत बारम्बार ॥३१॥

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषय भद्रबाहुकी कथा समाप्तम् नं० ६१

अथ सेठके बत्तीस सुतनकी कथा नं० ६२

मंगलाचरण ॥ चौपाई ॥

लोकालोक प्रकाशनहार । श्री सरवज्ञ देव भरतार ।
तिनको नमकर करूं बखान । बत्तिस सेठ सुत चरित महान ।१।

दोहा

कोसांबी नगरी सुभग, तामें वाणिक ईश ।
इन्द्रदत्तको आदिले, भये सेठ बत्तीस ॥२॥
हुवे जगत बिख्यात इह, तिनके द्रव्य अगाध ।
बत्तिसही सुत ऊपजे, समुददत्त को याद ॥३॥

चौपाई

गुण मंडित ये सकल कुमार। सम्यक रतन धरे अविकार।
जिन पदाम्बुज सेवनको भृंग। सबै मित्रता धरे अभंग ॥४॥
इस अन्तर त्रिय जग पूजन्त। केवल चखुधारी भगवन्त।
तिनकी स्तुति निर्जर करें। बहु विधि भक्ति हिये में धरें ॥५॥
ऐसे प्रभुके दर्शन पाय। सबै सेठ सुत चित हरषाय॥
बहु विधि थुति जिनकी विस्तरी धर्म स्वरूप सुनो तिह घरी ॥६॥
फिर यह भव्य सराहन जोग। सुनके प्रभुके वचन मनोग।
अपनी आयु तुच्छ सब जान। भव नाशक दीक्षाको ठान ॥७॥
जैन तत्वके जाननहार। सहें परीषह समता धार॥
इक दिन जमना सरिता तीर। सबै साधु तिष्ठे वर वीर ॥८॥
प्रायोगमन धार सन्यास। तनते निस्प्रेही गुण रास॥
तबही वृष्टि भई विकराल। नदी प्रवाह चढ़ो तत्काल ॥ ९॥

दोहा

सबै साध ताही समै, पड़े भंवर के मद्ध।
कर समाधि तन त्यागकर, देव भये जुत ऋद्ध ॥१०॥
सत्पुरुषन के चित्त जे, निश्चल मेरु समान।
कष्ट विषै अति सूरमा, करे न संयम हान ॥११॥

सोरठा

अब ए बत्तिस देव, स्वर्ग सुःख भोगन भये।
जिन पदाब्जकी सेव, करते तिष्ठ आप यत्न ॥१२॥

कवित्त

सो भगवन्त सदा जयवन्त चरित्र उदार धरे अधिकाई।
दुष्ट करें उपसर्ग महान तजें नहिं ध्यान गहे थिरताई॥
सुःख निवास हनी जग फांस दिये भव वारिधि मध्य निराई।

सार महा त्रियलोक विषै जिनके पदको कवि शीश निवाई १३

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषय द्वै त्रिशंत सेष्टी पुत्र की कथा समाप्तम् नं० ६२ ॥

अथ धर्मघोषमुनिकीकथाप्रा० नं० ६३

मंगलाचरण ॥ सोरठा ॥

धर्म तनो उपदेश, देनहार त्रिय जगपती ।
तिन पद नमि कहुं वेश, धरम घोष मुनिकी कथा ।१।

गीता छन्द

चम्पापुर में एक दिन श्री धर्म घोष महा मुनी ।
मासोप बासी पारनो कर बन बिषै चाले गुनी ॥
तहँ करम जोग सुपंथ भूले तृषा कर पीड़ित भये ।
लख हरत तृषा चहुं ओर वे ऋषि नदी गंगा तट गये ।२।
बर वृक्ष नीचे तिष्ठ के चित्त समाधान विषै धरो ।
ऐसे तपो निधि देखके गंगा सुरी जब इम करो ॥
एक सुरन घट भरि बारि निर्मल लायके मुनि पास जी ।
बहु नमनकर बच इम कहे जल पीजिये गुण रास जी ।३।

दोहा ।

तब मुनिवर ऐसे कही, सुनिये सुरी मनोग ।
यह जल हमको या समैं, पीवन नांहीं जोग ।४।

चौपाई ।

जब देवी चाली तत्कार । गई सु पूर्व बिदेह मझार ॥
केवल ज्ञानीको सिर नाय । करी बीनती चित हरषाय ॥५॥
हे स्वामिन मेरो जल जेह । मुनिवर पीयो क्यों नहिं तेह ।
इसको कारन भाषो तेह । तब त्रिभवन पति बोले येह । ६ ।
मुग्धे सुर करतें कदा । मुनि अहार नहिं ले सर्वदा ॥

इम सुनि गंगा देवी तवै। श्री गुरु निकट आन कर जवै ।७।
दशों दिशामें करी सुगंध। जल वरषायो जुत हिम गंध।
समाधान ह्वै कर मुनि चंद। शुकल ध्यान ध्यायो गुणवृन्द ८॥
केवल लक्ष्मी पाय मनोग। मोक्ष गये सवहनके जोग।
सो स्वामी हमको तुम अवै। निरमल सुख सम्पति दो सवै ९
कैसे हैं ते श्रीभगवान। केवल नैन धरें अधिकान।
जे भविजन हैं कमल समान। तिन विकसावनको वर भान१०

दोहा

कर रेखावत सव लखे, लोक अलोक दयाल।
देव इन्द्र चित भक्तिधर, आन नवावत भाल ॥११॥
मिथ्यातम नासक सुरवि मन वंछित दातार।
चिंतामणि सम जगत में, भविजनको हितकार ॥१२॥
धर्म घोष मुनिकी कथा, कही ग्रंथ अनुसार।
पढ़ो सुनो सव प्रीतकर, नितप्रति मंगलकार ॥ १३ ॥

इति श्रीआराधनासारकथाकोष विषय धर्मघोषमुनिकीकथा समाप्तम् ६३

अथ श्रीयदत्तमुनिकी कथा प्रा० ६४

मंगलाचरण ॥ कवित्त ॥

केवल ज्ञानमई वर सम्पत ताके स्वामी श्रीअरिहन्त। तिन के चरन कमलको नमकर कहूं कथा अव सुनिये सन्त॥ श्रीय-दत्त नामा शुभ मुनिवर सुर कृत जय उपसर्ग महन्त। सकल करम हनि ताही छिनमें शिव तियके वे भये सुकंत ॥ १ ॥

चौपाई

ये लावर्धन नगर वसन्त। नृप चित शत्रु अग्निको अन्त।
एलानाम भामिनी तास। पुत्र भयो श्रीदत्त गुणरास ॥ २ ॥

इस अन्तर कोशलपुर जान । नाम अंसुमत भूपति मान ।
अंसुमती ताकी है सुता । सहित सुभाग रूप गुण युता ॥ ३ ॥
ताहि स्वयम्बरमें श्रीदत्त । परनत भयो सुहर्षित चित्त ।
कीर एक तिय लाई संग । तासों राखत प्रीत अभंग ॥ ४ ॥
श्रीयदत्त नारीजुत होय । गृह मधि जूवा खेलत सोय ।
सो वो शुक चतुराई धार । श्रीयदत्त जीतो तिस बार ॥ ५ ॥
लीक एक काढ़े तिहवार दो काढ़े तियजीत मझार ।
तब श्रीदतकर क्रोध प्रचंड । उस शुकके कीनों दोखंड ॥ ६ ॥
सो बहु कष्ट थकी तज काय । पाई व्यन्तरकी परजाय ।
एकदिना श्रीदत बड़भाग । महल शिखर तिष्ठे जुतराग ॥७॥
मेघ पटल को विलय लखाय । ह्वै विरक्त इम भावन भाय ।
बिना शोक इह है संसार । सबै बस्तु चपलावन हार ॥ ८ ॥
भोग भुयंगमके पण जेम । यह तन जल बुद बुदहै तेम ॥
इन बस्तुनमें मूढ़ अयान । प्रीत करतहै सब निज जान ॥९॥

दोहा ।

ऐसे सब संसार को, बहु बिधि अथिर बिचार ।
जिन दीक्षा लेतो भयो, मुक्त युक्त दातार ॥१०॥
इकल बिहारी होय कर, बिहरत नाना देश ।
भव्यन को सम्बोधते, दे जिन धरम बिशेश ॥११॥

सोरठा ॥

निज नगरी के तीर, शीत काल परचंड में ।
आये नगन शरीर, तिष्ठे कायोत्सर्ग धर ॥२२॥

काव्य

सोवो शुक को जीव भयो व्यंतर दुखदाई ।
मुनिवर ध्यानालीन देख तब कुमति उपाई ॥

पूरव वैर चितार पवन परचंड चलाई।
शीतल जलकी वृष्टि करी ऋषि पै अधिकाई ॥१३॥
तब वे श्री मुनिचंद चित्त में समता आनी।
शत्रु मित्र सम जान क्षमा हिरदे में ठानी ॥
असुर कियो उपसर्ग सहो धरके समाधि वर।
निश्चल मेरु समान, अवनिपर खड़े ध्यान धर ॥१४॥

दोहा।

शुकल तनें परभावतें, केवल ज्ञान उपाय।
सकल करम को, नाशके, अविनाशी पद पाय ॥१५॥

चौपाई

सो जित शत्रु पुत्र श्री मान। सहकर के उपसर्ग महान॥
केवल ज्ञान उपाय तुरन्त। मोक्ष गये वे श्री भगवन्त ॥१६॥
सो श्रीदत्त जिनेश्वर नित्त। मुझको दीजे भक्ति पवित्त॥
एही वर मांगत हूं सार। औरन वांछित कछि चित धार ॥१७॥

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषय श्रीदत्त मुनि की कथा समाप्तम् नम्बर ६४॥

अथवृषभसेनमुनिकीकथाप्रा०नं०६५

मंगलाचरण ॥ गीता छन्द ॥

उत्कृष्ट आनन्दकर सुमंडित अतुल महिमा धरत हैं।
त्रिय जगत कर पूजित सदा सुर असुर नित थुति करत हैं॥
सो देव नित अरिहन्त जी तिन को नमन करि के अबै।
शुभ वृषभ सेन चरित्र बरनूं सुनो पावन जन सबै॥ १॥

चौपाई

पुरी उजैनी अद्भुत बसे। राय प्रद्योत नाम में लसे॥
गुण उज्जल इक दिन बड़भाग। गज पकड़नको धर अनुराग ॥२॥

मदोमत्त पठ बंध गयंद । ता ऊपर चढ़ चलो नारिन्द ॥
कर्म भायते वह सुंडाल । नृपको लेय भगो तत्काल ॥ ३ ॥
बहु दुःखित मन भयो नरेश । जानी दूर रहो मम देश ॥
इक तरुकी तब गह कर डार । लूंब रहो भूपति तिह बार ।४।
ह्वै स्वछंद बिचरो गजराज । वृक्ष थकी उतरो महाराज ॥
सुंदर ग्राम नाम तिस षेट । तहां बसत जिन पाल सु सेठ ॥५॥
ताको कूप बनो अभिराम । ताढिग नृप कीनो विसराम ॥
सेठ सुता जिनदत्ता नाम । जल भरबे आई गुणदाम ॥ ६ ॥
नर नायक ने ताके पास । मांगो पानी बचन प्रकास ॥
जिनदत्ता इनको अवलोय । जानो महा पुरुष इह कोय ।७।
आदरते जल पाय तुरंत । फिर घर आई चित हरषंत ॥
अपने तात पास तिह घरी । यह वृतान्त सब ही उच्चरी ।८।

दोहा

सुनते ही सो बनिक पति, नृप ढिग गयो तुरन्त ।
बहु आदर करके तबै, गृह लायो हरषन्त ॥ ९ ॥

सोरठा

सुख से कर स्नान, भोजन करवावत भयो ।
सेठ भक्ति बहु ठान, तब नरेश तिष्ठो तहां ॥ १० ॥

काव्य

किंचित दान जो देत कोई अवसर के मांही ।
कोड़ो सुख दातार होत है संशय नांही ॥
जैसे वर्षत मेघ मांहि बर बीज जु बोवत ।
सहस गुणो फल तास तनो निश्चयकर होवत ॥ ११ ॥

चौपाई

नृपके चर ढूंढत आय । ह्यां लख इनको बहु हरषाय ॥

नाना विधि करके उत्साह। जिनदत्ता नृप तबही व्याह ॥१२॥
पटरानी पद दियो तुरंत। तासुन नाना भोग करन्त ॥
सुखसों तिष्ठत दंपत येह। बहु विधि लीला ठानत तेह।१३।
कितने एक दिन बीते ताम। गर्भ धरो जिनदत्ता भाम ॥
देखो पश्चिम रैन मंझार। एक वृषभ सुंदर आकार ॥ १४ ॥
बहुरि पुत्रको जन्म महान। होत भयो वर सर्व निधान ॥
तब अवनीपति उत्सव करो। वृषभ सेन तिस नाम जु धरो।१५।
अरु याही के जन्म मझार। जिनवरको अभिषेक उदार ॥
अर्चन आदिक बहु विध करी। दान बहुत दीनो तिह घरी।१६।
ऐसे शुभ किरिया नित धार। अष्ट वर्ष को भयो कुमार ॥
जब नरेश सुख पाय अपार। पुत्र प्रती इम वचन उचार ॥१७॥

दोहा

हे उत्तम इम राज को, ग्रहन करो बड़भाग।
मैं जिन भाषित तप करूं, निज आतम चित पाग।१८।

छन्द चाल

तब सुत बोलो इम बानी। हे तात सुनो तुम ज्ञानी।
इस राज विषै सुखको है। परलोक सिद्ध नहिं होहै १९॥
जब भूप कहै सुन प्यारे। शिव मिले न बिन तपधारे।
तिसको साधन सुन भाई। श्रीजिन तप दियो बताई २०
सुतकहै तात सुनलीजे। जो ऐसो निश्चय कीजे।
तो राज महा दुखदाई। हम किहिविधि ग्रहनकराई २१
मैं नेम कियो दृढ़ धारी। चालूंगा तुमरी लारी।
ऐसे विध गिरा उचारी। भूपति सुनके निम धारी ॥२२॥

दोहा

तिह अवसर गुरु पास ले, दीनो ताको राज।
पुत्र सहित दीक्षित भये, सब समाज को त्याग २३ ॥

चौपाई

जब श्रीवृषभ सैनमुनिचंद । जिन भाषित तपकर गुणवृन्द ।
जग उत्तम निज कल्पी साध । होत भये ये बुद्धि अगाध २४
कोसांबी नगरी ढिग आय । परबतपै इक शिला लखाय ।
जेठ मास ग्रीषम परचंड । आतापन धर जोग अखंड ॥२५॥
लघुवे साध महा गम्भीर । तिष्ठे ध्यान धार बरवीर ।
इनको जोग देख भवि जीव । जिन मतमें रतभये अतीव २६

कोषमालती छन्द

एक दिना ए श्रीमुनि नायक जैन तत्वके जानन हार ।
चारित युक्त चले अहार को ईर्यापथ शोधित अविकार ॥
इनको नगरी में जातो लख बोध दास पापी अधिकार ।
ईर्षा करके तास शिला को लालकरी वन्ही पर जार ॥२७॥
साधोंका परभाव जो सुन्दर दुरजन जनको नाह सुहाय ।
जैसे भानु प्रकाश बिषै सुख उल्लूको उलटो दुखदाय ॥
कर अहार तप मंडित स्वामी आये सिलको तप्त लखाय ।
परतिज्ञा पालनके कारण धर समाधि तापर तिष्ठाय ॥ २८ ॥

दोहा

जैसे अगन प्रचंड अति, लागे तृणके बीच ।
त्यों निज काया जरत लखि, क्षमा सलिलतें सींच २९॥

कवित्त

मन बच काय शुद्ध अति कीने शुक्ल ध्यान ध्यायो सुनि चंद । ताही छिनमें केवल उपजो तीनलोक पूजत सुखवृन्द ॥ फेर सुबुद्धी शिवपुर पहुँचे होत भये तहँ आनंदकंद । मेरु शिखरते निश्चल जानो सत्पुरुषनको चरित अमन्द ॥ ३० ॥

ऐसो चित्त महा थिर जिनको तिस आगे सब

गिरि तुल्य जान। और गंभीरपने को सागर दीखत है जलबिंदु समान। ऐसे श्रीशोभायमान ते वृषभसेन केवल भगवान। ते अपने गुणरूपी लक्ष्मी हमको दीजे दया निधान॥ ३१॥

सोरठा

वृषभसेन मुनिचंद, बालपने में शिव वरी।
दीजे बुद्धि अमंद, हाथ जोड़ कवि बीनवे॥ ३२॥

इति श्रीआराधनासारकथाकोष विषय वृषभसेनमुनिकीकथा समाप्तम् ६५

अथ कार्तिकेय मुनिकीकथा प्रा० ६६

मंगलाचरण॥ अडिल्ल॥

केवल ज्ञान विशाल नेत्र धारन्त जी, है पवित्र सुखकार श्री अरिहन्तजी, ताहि नमनकर कार्तिकेय मुनिकी कथा, भाषत हूं मैं अबै कही आगम यथा॥ १॥

पद्धरी

कार्तिक नामा इक पुर महान। अगनिमित्र नामा भूपाल जान।
रानी तिस वीरमती मनोग। इक सुताभई तिन कारण जोग २॥
कृत्तिका नामा बहु रूपवन्त। तिस आनन लखकरन लजंत।
इक दिन नंदीश्वर पर्व जाय। कन्या प्रोषध संयुक्त थाय ३॥
श्रीजिनको पूजन कर पवित्र। घर लई आसिका हर्ष चित्त।
सो दई तातको कर संस्कार। सुत पायी चित्त विचार सार ४॥
सारी जोबनयुत देह सार। इन लोभी चित निर्देनार।
पर दुष्टात्म कामी मलीन। तिनने ही इक दिन प्रश्न कीन ५

दोहा

हे त्रियो सुन गारमें, उपजो रत्न मनोग।
सो तुम भाषो या नहीं किसके भोगन जोग॥६॥

तब मूरख दुज इम कही, सुनिये अवनी पाल।
तिंसा रतन की प्रीतियुत, तुम भोगो तत्काल ॥७॥

चौपाई।

तापीछे इह पापी राय। एक मुनिवरसे पूछो जाय।
उन भाषी सुनिये राजान। कन्या बिन सब अपनो जान ८॥
तिनके वच सुन कामी येह। मानो बज्र हती तिस देह।
पापी जनको हितके बैन। बुरे लगें बहु विधि दुखदैन ॥९॥
तब धर मुनि पै रिस विकराल। अपने देशते दियो निकाल।
जबरी ते परनी निज सुता। कृतका नाम रूप गुणजुता।१०॥
जे पापी कामी अधिकाय। तिनके धरम लाज नहिं पाय॥
अथवा सुध बुध नाही जोय। जाको दुरगति होनी होय ॥११॥
इस अन्तर केते दिन गये। कार्तिकेय सुत इनके भये॥
बीरमती पुत्री शुभ अंग। होत भई बररूप अभंग ॥ १२ ॥
अब रोहेड़ नगर इक जान। ताको भूप क्रौंच बलवान॥
ताने परनी अनभित सुता। बीरमती नामा गुण युता ॥१३॥
तासंग नाना भोग करन्त। सुखसे निज गृहमें तिष्ठन्त।
अब यह कार्तिकेय बुधधार। भयो चतुर्दश बर्ष मंझार।१४।

दोहा।

एक दिना क्रीडा करत, देखत भयो जु एह।
नमि अमृत को आदिदे, सरब राज सुत जेह ॥१५॥
तिनके मातुल भेजियो, पट भूषण बहु भन्त।
तिने देख निज माततें, कार्तिकेय पूछन्त ॥१६॥

चौपाई।

हे माता मम माम महन्त। हमें कभी नहिं कुछ भेजन्त॥
सो क्या कारन है कह माय। तिन सुन रुदन्न कियो अधिकाय १७

अहो पुत्र क्या भाषों तोह । होनहार सोई विधि होय ॥
यह पापी तुम तात अयान । सोई जनक सु ऐगे जान ॥१८॥
कार्तिकेय सुनके यह वात । कहत भयो सुन लीजे मात ॥
क्या काहूने मने न कीन । जो इन कारज कियो मलीन ॥१९॥
तव वह वोली सुन सुतसार । श्री मुनि वर जो वारम्वार ॥
तव यह पापातम रिसधार । ऋषिको दीनो देश निकार ॥२०॥
फेर पुत्र पूछो निज माय । कैसे हैं वे श्री मुनि राय ॥
कहत भई गुण मंडित साध । नगन अंग सब रहित उपाध ॥२१॥
तत्व शास्त्रनको पंडित जेह । नायक धर्म तने है तेह ॥
मोर पत्तुका करमें धरें । दया युक्त शुभ मग पग धरें ॥ २२ ॥
हाथ कमंडल गहैं महन्त । सो मुनि दूर देश तिष्ठन्त ॥
ऐसे सुनि माता की वात । तन धन जोबन अथिर जान ।२३।
घर तज चलो तबै वड़भाग । पहुंचे गुरु ढिग जुत अनुराग ॥
वड़ी भक्तिसे नमो तुरन्त । दीक्षा लीनी चित हरषन्त ॥२४॥
सप्त तत्व जानन को दक्ष । होत भये ये जग परतक्ष ॥
नाना विधि तप करत महन्त । द्वादश भावनको सुमरन्त ॥२५॥

दोहा

इस अन्तर इन मात जो, नाम कृत्तिका जान ।
मरकर व्यंतरनी भई, देवी रूप निधान ॥२६॥

चौपाई ।

अब यह कार्तिकेय मुनि चंद । तप विधि विहरत धारि आनंद ।
आये पुर रोहेड़ सुथान । गुण उज्जल अघ करे विनाश ॥२७॥
मासन जेट भये कल्यान । चर्याको पुर कियो पयान ॥
तासु भगी इन भगिनी जेह । महल शिखर तिष्ठी थी तेह ।२८॥
वीरमती जानी निज तात । यह मेरो भ्राता है भ्रात ॥

गोद थकी पद मस्तक ढार। आई भक्ति सहित तत्कार ॥२६॥
कहत भई सुन भ्राता सन्त। तेरे अर्थ नमन बहु अन्त॥
ऐसो कह मुनिके पद दोय। गहकर पड़त भई अब सोय॥३०॥
एक तो दीरघ भ्राता एह। दूजे अनागार गुण गेह॥
युग कारन ये भये मनोग। अहो प्रीत उपजानही जोग।३१।
ऐसे क्रौंच लखी निज नार। तबही श्री ऋषिपै रिसधार॥
पापी इनको ताड़ो अंग। तब मुनि मूर्च्छा लही अभंग॥३२॥
मिथ्यामत में पापी जीव। मोह राग वश भये अतीव॥
जैन धर्मते धरे न प्रीत। क्या क्या नहिं ठाने बिपरीत।३३।

सवैया इकतीसा।

तब इन मात जीव व्यन्तरनी देवी सोय, आई ततृक्षण निज सुत को निहार के। पड़े ऋषि चन्द देख धरके मयूर रूप, लिये जबही उठाय भक्ति उर धार के। शीतल जिनेश धाम लाय मुनि राज जी को, दिये तिष्ठाय शुद्ध अवनि बिचार के। तहां यह साधु ताह छिन धरके समाधि, स्वर्ग लोक गए सब प्रातिक निवार के॥ ३४॥

दोहा

तब बहु सुर तहां आयके, किये सु जै जैकार।
कार्तिकेय तीरथ प्रकट, भयो सु अवनि मंझार।३५।
बहन भ्रात के मिलनते, भयो प्रगट वो पर्व।
जेठ अमावस के दिना, जग जन जानत सर्व॥३६॥

चौपाई।

श्री शोभायमान जिन चंद। तिनकर कथित शास्त्र शुभ बृन्द।
सब संशयको नाशनहार। सुरग मोक्ष सुखको दातार॥३७॥
ताको बुधजन सेवो सदा। एक छिनक भूलो नहिं कदा॥

अब वे श्रीयमान भगवान। हमें सास्वते सुख दो दान ।२८।
जिनकी वानी उदय स्वरूप । तत्व दिखावन दीप अनूप ॥
देवनकर पूजित सो मात । जाको नित ध्यावें मुनि नाथ ।२९।

दोहा

सोई माता सरस्वती, जिन मुख भई प्रकाश ।
सो मेरे हिरदे बसो, कवि की यह अरदास ॥ ३० ॥

इति श्री आराधनासार कथा कोष विषय कार्तिकेय मुनि की कथा समाप्तम्

अभय घोष मुनि की कथा प्रा० ६७

मङ्गलाचरण । काव्य

अमर ईश कर पूजनीक हैं गणपति नायक ।
ऐसे श्री अरिहन्त जगत जन को सुख दायक ॥
तिनको नमकर कहूं कथा अद्भुत रस मंडित ।
अभय घोष मुनि तनी सुनो सबही भवि पंडित ॥ १ ॥

चाल मेघ कुमार की

काकंदी नगरी भली जी, अभय घोष भूपार । अभैमती ताके तिया जी, नृप के प्रान अधार ॥ रे भाई दुखदाई अज्ञान ।
एक दिना पृथ्वी पती जी, गयो लखन उद्यान । तहँ धीवर एक कूर्म के जी, चतुपद बन्धन ठान ॥ रे भाई दुखदाई अज्ञान
लकड़ी में लटकाय के जी, कंधे धर कर जान । ताको नरपति देख के जी, पाप उदय हरषात ॥ रे भाई दुखदाई अज्ञान ॥ २ ॥
तब ही चक्र फिरायके जी, छेदे चारों चर्न । पापी जन परमाद्ने जी, हने जीव बस कर्न ॥ रे भाई दुखदाई अज्ञान ॥
कछुवा मर सह कष्ट को जी, इस ही नृप के ... । ...

बेग सुत ऊपजो जी, अद्भुत सुन्दर काय ॥ रे भाई दुखदाई अज्ञान ॥ ६ ॥

एक दिना पृथ्वीपती जी, अभय घोष बड़भाग । एह ग्रसत शशि देख के जी, चित्त धरो बैराग ॥ रे भाई तन धन लखो असार ॥ ७ ॥

मैं पापी दुष्टातमा जी, जैन तत्व प्रतिकूल । मोहरूप तम कर ग्रसोजी, ताकर मतराहे भूल ॥ रे भाई इह संसार असार।

नैन अंधवत मैं भयो जी, हित अनहित नहिं चीन्ह। किह बिध भव अम्बुध तिर जी, इम बिचार बहु कीन ॥ नृपति ने तन धन ममत निवार ॥ ६ ॥

दोहा

फिर मन में निश्चय कियो, जिन भाषत तप सार ॥
जग में यह उत्कृष्ट है, करो सो अङ्गीकार ॥ १० ॥

चौपाई

काल अनादि थकी मम संग। अष्ट कर्म दुठ लगे अभंग ॥
तिन्हें जीतकर शिव तिय हाथ। ताको गहि सुख लहो सनाथ ।११।
ऐसे चतुरातम नरपाल । कर बिचार मन में तत्काल ॥
चंड बेग सुत लियो बुलाय। ताको राज दियो हरषाय ॥१२॥
आप गये श्रीगुरु के पास । नमस्कार कर थुति परकाश ॥
कैसो है गुरु भवदधि सेत । जन्म जरामृत नासन हेत ॥१३॥
तिन ढिग अत्तन दंडन काज। दीक्षा तुरत लही महाराज ॥
नाना बिधि तप करते सार । जिन कल्पी ह्वै करो विहार।१४।
भ्रमते भ्रमते दया निधान । आये काकंदी अस्थान ॥
तिष्ठे वीरासन धर धीर । सब जग पीहर गुण गम्भीर ॥१५॥
अब इनको सुत नृप तहं आय। चंड बेग पापी अधिकाय ॥
पूरब वेर थकी ह्वै वक्र । करमें तीक्षण लेकर चक्र ॥ १६ ॥

मुनि के कर पद कीने खंड । सहन परीषह करी प्रचंड ॥
अहो मूर्ख दुर्बुद्धी अज्ञान । धर्म हीन क्या पाप न जान । १७ ।

काव्य

तासौं छिन मुनि अभयघोष धर ध्यान शुकल वर ।
केवल ज्ञान उपाय नाश कीने जु कर्म अर ॥
अविनाशी शिव धाम तहां छिन माहिं सिधारे ।
सुर असुरन कर पूजनीक भये शिव तिय प्यारे ॥ १८ ॥
देखो जिनकी शक्ति महा आश्चर्य धरत अति ।
कहां भयानक कष्ट कहां शुभ ध्यान थिर रति ॥
कहां मोक्ष स्थान परम पावन सुखदाई ।
ताको पाय तुरन्त तहां वसु आदि लहाई ॥ १९ ॥

कवित्त

ऐसो श्री अभयघोष मुनि नायक मोहादिक हनकर तत्काल ।
सकल परीषह जीत शीघ्र ही अविनाशी सुख लहो विशाल ॥
ऐसे गुणयुत सत्पुरुषनकर सेव्यमान हैं तीनों काल ।
तिनको कवि शिर नाय नमत हैं सोई सुखदो मोहि दयाल ॥ २० ॥

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषै अभयघोष मुनि की
कथा समाप्तम् ॥ ५७ ॥

अथ विद्युच्चोर की कथा प्रा० नं० ५८

मंगलाचरण ॥ सवैया तेईसा ॥

सज्जन जो सुखदायक हैं जिन लोक विपद उन्हकूं नसैं ।
सो अरिहन्त जिनेश्वर के पद पद्म नमूं उर धार जुसैं ॥
विद्युत चोर महा अपराध करो जिमि मुक्ति भए वरैं ।
ता अनुसार कहूं सुखकार सुनो भवि चित्त धरे हरषैं ॥ १ ॥

पद्धड़ी

एक मिथुला नगरी अति विशाल। नृप नाम बामरथ बुधरिसाल
जम दंड नाम तल रक्ष जान। विद्युत तस्कर ताही सुथान ॥२॥
सो सर्व कलामें निपुन जेह। चोरी में अतिही दक्ष तेह।
दिनमें तो तिष्ठे कष्ट युक्त। केवल थानक माया संयुक्त ॥ ३ ॥
अरु रात्रि विषे शुभ रूप धार। चोरी कर भोगत भोग सार।
इक दिन यह विद्युत चोर जाय। नृपहार निशा मांही चुराय।४।
परभात समैं नृप क्रोध लाय। यमदंड प्रती इम बच सुनाय।
कोई तस्कर निशिके मझार। मम ढिग आयो बर रूप धार।५।
मैं मोहो तिसकी क्रान्ति देख। वो हार लेय भागो विशेख ॥
सो चोर सहित मम हार जेह। दिन सप्त मांहि लावो सु तेह।६।

दोहा।

नातरु तुम निग्रह करूं, इम भाषी भूपाल।
इम सुनकर तब नमन कर, चलत भयो कुतवाल।७।
जगत थकी ढूंढ़त भयो, सारे नगर मंझार।
कहीं न पायो चोर वो, षट दिन गये निहार ॥८॥

चौपाई

सप्तम दिन सूने स्थान। पोढ़ो तस्कर देखो आन ॥
पकड़ लियो तबही कुतवाल। राय निकट पहुंचो दर हाल।९।
कहत भयो सुनिये महाराज। पापी चोर लीजिये आज।
तब विद्युत भाषी नम माथ। मैं तो चोर नहीं हूं नाथ ॥१०॥
फिर कुतवाल कही सिर नाय। यही चोर निश्चय दुखदाय।
सभा लोग बोले तह वार। हे नरपति सुनिये चित धार ॥११॥
इस कुतवार मिलो नहिं चोर। रंक पकड़ लायो है और।
नाहक इसको मारत आज। अपनी मृत्यु बचावन काज।१२।

ताके भाग कोड़वे जान । यह दुख नाहीं हैं राजान ।
ऐसे हम निज चित में धार । सहे दुःख वत्तीस प्रकार ॥२३॥
तब हर्षित बच भये नरिन्द्र । तुम बर मांगो हे गुणवृन्द ।
विद्युत जब बच कहे अखंड । मेरो मित्र जो यह जमदंड २४॥
ताको निरभय कीजे आज । येही बर मांगू महाराज ।
पूछे नृप है अचरज वन्त । तेरो मित्र इह है किह भन्त ॥२५॥
सो बड़ पारक है सुन धीर । दक्षण दिशिमें देश अभीर ।
बेना नाम नदी तट जान । बेना तट पुर एक महान ॥ २६ ॥
है जित शत्रु तासको स्वाम । जयावती नामा तिस भाम ।
तिनके सुत विद्युतचर नाम । उपजत भयो सुमैं अभिराम २७
तिसही नगरी में जमपास । कोतवार है बुद्धि निवास ।
जमना नाम तिया तिस गेह । सुत जमदंड भयो सो येह २८
आगे और सुनो गुण रास । हम ए पढ़े एक गुरु पास ।
मैंने सीखो चोर पुरान । इन कुतवाली विद्या जान ॥ २९ ॥

दोहा ।

तहं इस सेती मैं कही, गर्भवन्त इम बात ।
जहँ कुतवारी तू करे, मैं चोरूं तहँ भ्रात ॥ ३० ॥
ऐसे सुन जमदंडने, कही गिरा तब येम ।
ऐसेही तुम कीजियो, यामें चहिये केम ॥ ३१ ॥

काव्य

तापीछे मुझ तात राज मोहि देकर भारी ।
करके निरमल चित्त जैन दीक्षा उन धारी ॥
तल रक्षक जब पास आपने सुतको तबही ।
निज पद देकर बुद्धिवान भयो मुनिवर जबहीं॥३२॥
फेर यही जमदंड छोड तहँकी कुतवारी ।

तेरे भयते करी चाकरी आन तुम्हारी ॥

सो परतिज्ञा याद्रकरी मैंने सुन राजा।

आयो तुमरे देश छोड़कर सकल समाजा ॥ ३३ ॥

दोहा

जिह विध हार चुराइयो, सो सब कही विशेष।

संग लेय जमदंडको, गये सुअपने देश ॥ ३४ ॥

सवैया इकतीसा

तहां वैराग परनाम धरके उदार जैन तत्व जाननमें निपुन सुजान है। श्रीजिनके अगार जाय भूप नमकार किये अतिशेष तोष लाय के महान है। देयनिज सुत राज तजके सब समाज आतमको काज कियो कानन पयान है ॥ सब पांच राजनके पुत्र निज साथ सब भये मुनिराज तप तपत महान ॥ ३५॥

दोहा

स्वर्ग मोक्ष दातार जो, सो तप कह्यो जिनेश।

ताही विध करते भये, यह योगेन्द्र विशेष ॥ ३६ ॥

गीता छंद

अथ भव्यनको सम्बोधते, संग पांच शतक मुनिंदजी।

कामादि ते विरकत सदा नहिं धरतु मैं आनंद जी।

सो भ्रमत वे पहुंचे तहां इक ताम्रलिप्त पुरी जहां।

सब संघ एक उद्यान ठाड़ो ध्यान निज धरि तहां ॥ ३७ ॥

इनको नगर परवेश करते देख चामुण्डा सुरी।

सो आनकर कहनेभई तुम सुनो मुनिवर इस घरी ॥

जबतक हमारी पूज पूजा [illegible] नहीं।

तबतक पुरीमें जाहु [illegible] ॥ ३८ ॥

दोहा

सो ए [illegible] सो [illegible]

[illegible] ॥ ३९ ॥

नगरीके पश्चिम दिशा, कोट निकट तिष्ठाय ।
रैन समय सब शिष्यजुत, प्रतिमा ध्यान लगाय ४०॥

कड़खा छन्द

तबै चामुंड परचंड अति क्रोधकर आय मुनि निकट लिज करी माया । किये कापोतवत डंस मंसादि बहु तिनों कर लिप इन करी काया ॥ जबै विद्युत ऋषी परम बैरागजुत सहो उपसर्ग नहिं चित्त डुलाया । शुक्ल परभावते कर्म अरि नाशकै ज्ञान के बलते रवि तिन जगाया ॥ ४१ ॥

दोहा

शेष कर्मको नाशके, मोक्ष गये मुनिचंद ।
सो हम करपूजें थके, नित सुख देहु अनंद ॥ ४२ ॥

छप्पय

सो विद्युत चर नाम केवली को हम ध्यावे ।
इन्द्र नरेन्द्र खगेन्द्र अही पति सीस नवावें ॥
तिन किरीट उद्योग रतन बहु पंच प्रकारी ।
सो नख मुकट मझार रहे बहु बिध झलकारी ॥
ऐसे प्रभु शिव तिय प्रति करो, भये आवागमन निवारके ।
सो मङ्गल नित प्रति करो, कवि बिनती उरधारके ॥४३॥

इति श्री आराधनासार कथा कोष विषय विद्युत चोर की कथा समाप्तम्

गुरुदत्त मुनि की कथा प्रा० नं० ६८

मङ्गलाचरण । अडिल्ल

जे पर फुल्लित केवल लक्ष्मी धरत हैं ।
ऐसे पंच गुरों को नुत हम करत हैं ॥
तीन भवन में उत्तम मुनि गुरुदत्त जी ।
तिन को भाषूं चरित सुनो शुभ चित्त जी ॥ १ ॥

चौपाई।

हस्तनागपुर उत्तम थान। विजैदत्त भूपति बुधवान ॥
जिनधर्म में तत्पर सदा। परम विवेकी तिष्ठत मुदा ॥ २ ॥
ताके प्राणनते अधिकाय। विजिया नाम नार सुखदाय ॥
तिन दोनों के पुन्य संयोग। उपजे गुरुदत्त पुत्र मनोग। ३।
धीर वीर गंभीर उदार। लावन मंडित दुत अधिकार ॥
कितने दिन वीते इह भंत। विजैनाम भूपति गुणवंत ॥ ४ ॥
निज सुतको सब देकर राज। श्रीगुरु चर्न नमूं निज काज ॥
भयो दिगंबर मोह विनाश। द्वादश विध तप करत प्रकाश। ५।
अब इक लाट देश विख्यात। तहां द्रोणमत गिर अवदात ॥
चंद्रपुरी ताढिग शुभ वसे। चंद्रकीर्ति भूपति तहँ लसे ॥ ६ ॥
नाग चंद्र लेखा तिस भाम। भव्यमती तनुजा गुणधाम ॥
ताको गुरुदत्त नाम नरिन्द। व्याहनको जांची गुण वृन्द।७।

दोहा

चन्द्र कीर्त भूपाल तब, दई न पुत्री येह।
तब गुरुदत्त बहु क्रोध जुत, चढ्यो सेना लेह ॥ ८ ॥
चन्द्र पुरी को शीघ्र ही, जा घेरी तत्कार।
अब सुन भव्य मती तिया, याको रूप अपार ॥ ९ ॥

चौपाई

गुरुदत्त मांही धर अनुराग। कही तात सेती पग लाग ॥
अहो पिता मोको इस संग। व्याह देहु तुम सहित उमंग।१०।
चंद्र कीर्त नृपकर उत्साह। पुत्री याको दीनी व्याह ॥
तापीछे बहु जन मिल आय। गुरुदत्तसे इम वचन सुनाय।११।
अहो नाथ इस परवत माल। एक सिंह तिष्ठे विकराल ॥
सो अतिशयी है बलवान। सब जनको भयदेत महान।१२।

ताकर ऊजड़ देश नरिंद । बसत नहीं यामें जन वृन्द ॥
ऐसे सुन ताही छिन जाय। संग लिये जु सजन समुदाय।१३।
बेढ़ो कंठीरव को तबै । भाग गुफा मधि छिपियो जबै ॥
तब गुरुदत नृप काष्ठ मंगाय। गुफाद्वारमें ले अधिकाय ॥१४॥
तामें अगन दई पर जाल । मुवो सिंह लह कष्ट कराल ॥
तिसही चन्द्रपुरी के माहिं । भरत नाम इक विप्र रहाहिं ॥१५॥
तिया विश्वदेवी तिस गेह । तिनके भयो कपिल सुत येह॥
क्रूर स्वभाव धरत है सदा । शुभमति ग्रहन करत नहिं कदा।१६।
अहो जु पूरव भव अभ्यास। सोई इस भव करत प्रकाश ॥
जे मूरख जन हैं जग बीच । वेही क्रिया गहत हैं नीच।१७।

दोहा

इस अन्तर गुरुदत्त जी, भोगत भोग रसाल ।
स्वर्ण भद्र सुत तास के, उपजो बुद्धि बिशाल ॥ १८ ॥
अपने गुण कर सर्व जन, तृप्त किये अधिकाय ।
रूप सुभाग बली अतुल, उज्जल चित सुखदाय ॥ १९ ॥

पद्धड़ी

इस अंतर श्री गुरुदत्त तेह । जिन चरन कमलके भ्रमर येह॥
कितने दिन राज कियो महान। फिर मन बैराग बिषै सु ठान ।२०।
निज सुतको देकर सर्व राज। जिन दीक्षा लीनी तज समाज॥
जिन तत्वलखन में बुद्धिवंत। जिन कलपी साधु भये महंत ।२१।
अवनीपर ऋषि करते निहार। क्रमते आये शशिपुर मंझार॥
तिस कपिल खेतके बीच आन। ठाड़े श्रीमुनिवर धार ध्यान।२२।
तब विप्र कपिल पापी अयान। निज नारी प्रति इम बच बखान ॥
हो भामिनि भोजनकर तयार। तू खेत विषै लायो अबार ॥२३॥
ऐसे कहि करके दुष्ट चित्त। निज खेत विषै लख मुनि पवित्त॥
तिनको भाषी सुन नगन काय। जो भोजन ले ममनार आय २४

चौपाई

ऐसो करत कछुक दिन बेह । दूजे मेल गयो सो नेह ।
आयो मुद्र जे भारी होय । मुनि मारग जानत नहिं कोय ॥२६॥
ता पीछे यह दुजरी नार । भोजन लाई मेल मझार ।
मुनिने पूछ्यो किन मम त्यास । तब तिन मौन गह्यो अभिराम ॥२७॥
जब तिन निज घर कियो पयान । दुःखित चित निरखो अधिकान ।
अब दुख जगायो अधिकाय । क्रोध युक्त अपने घर आय ॥२८॥
नारी ने [illegible] कह्यो बैन । [illegible] न है दुख दैन ।
नगर [illegible] मेरे पास । क्यों नहिं भोजन लाई नार ॥२९॥
सो सब कह बोली सुन कंथ । मैंने तो पूछ्यो यह मन्त ।
सो [illegible] धारे मौन । तब मैं गृहको कीनो गौन ॥३०॥

दोहा

इस विध पापी [illegible] जब, कीनो कोप प्रचंड ।
मुनिवरके ढिग आयके, [illegible] ॥३१॥

सोरठा

[illegible] बात्, [illegible] नार में ।
मुनि [illegible], [illegible] ॥३२॥
[illegible] ।
[illegible] ॥३३॥

माया मिथ्या अग्र सोच नासी इन सब्हा ॥
सत्पुरुषन का संग सदा जगमें हितकारी।
देखो बिप्र अयान ऋषीको तन परजारी ॥ ३५ ॥
कहा जती पद धर्म अहो यह अचरज भारी।
याते संगति साध तनी कीजे सुखकारी ॥
कुल पवित्र यह करे बहुरि आनन्द उपजावे।
कीरतिहू सुफुराय मान फिर शुभगति पावे ॥३६॥

सवैया इकतीसा।

सोई गुरुदत्तभगवन्त जयवन्त नित इन्द्र चन्द्र आय नित बन्दे तिन पाय है। तीन जग माहिं सार सुखवेही दैनहार, शंसय तम नाशनको भानु सुखदाय है॥ निश्चल सुमेर सम मगन सुभाव माहिं, आत्मिक रस चाव भये शिवराय है॥ तेई प्रभु नित प्रती दीजे सुखसार मोह दोऊकर जोड़ कवि शीशको नवायहै३७

दोहा

प्रभा चन्द्रगुरु दीजिये, मोको सुःख दयाल।
बखतावर अरु रतन की, कीजे नित प्रति पाल ॥३८॥

इतिश्री आराधनासार कथा कोष विषे गुरुदत्तमुनिकी कथासमाप्तम् नं० ६९

अथ चिलाती पुत्रकी कथा प्रा० ७०

मङ्गलाचरण ॥ कवित्त ॥

चमत्कार कर युक्त मनोहर केवल ज्ञाननेत्र धारन्त।
नंत-चतुष्ठय मंडित सोहे छियालीस गुणजुत अरिहन्त॥
तिनके पद पंकज को नमकर अवै चिलाती सुत बिरतन्त।
कहू सुनो अब भविजन सारे ताते पातक सकल नसन्त ॥१॥

चौपाई।

राज ग्रही नगरी सुखदाय। तास विषै उप श्रेणिक राय।

॥ पद्धड़ी छन्द ॥

तब सब कुमार तज खीर पात। भागे स्वाननते अति डरात॥
श्रोणिक तब बुद्धि करी प्रकाश। बै पातल लीनी आप पास।१४।
इक पातल फेंक दई तुरन्त। सब स्वान जाय ताको भखन्त।
इतने यह भोजन करत धीर। फिर और फेंक दै तास तीर।१५।
इह बिध निज पेट भरी तुरंत। फिर बिष्ठर तिष्ठो हरषवन्त॥
भेरी तबही दीनी बजाय। याकी बुधिको सबही सराय॥ १६॥
फिर अगन लगी अतिही कराल। बिष्टर गज चमर लिये निकाल।
कैसे हैं श्रेणिक बुध उदार। तीर्थंकर पदवी होनहार ॥ १७॥
उप श्रेणिक श्री निज चित्तजान। यह राज जोग श्रेणिक प्रधान।
माया जुत नृप जब दोष दीन। इन स्वान झूंठ खाई मलीन।१८।
जब देश थकी दीनों निकाल। श्रेणिक जी चालो हरष धार॥
है पुन्यवन्त जग मांहि जोय। तिनको बाधक नहिं होत कोय।१६।

दोहा

शुभटेश्वर श्रेणिक तबै, पहुंचे द्राबिड़ देश।
कांची पुर नगरी बिषै, तिष्टत है शुभ भेष॥ २०॥

काव्य

इस अन्तर बर धर्म लीन उपश्रेणिक नरपति।
भोगत भोग महान बहुत दिन बीते हरषति।
फेर चिलाती पुत्र तास को निज पद देकर।
भये यतीश्वर आप तबै जिन दीक्षा लेकर॥ २१॥
जबै चिलाती पुत्र राज सिंहासन बैठो।
होत भयो अन्याय बिषै रत सो मत हेठो॥
अहो हाय इह कष्ट महा दीषे दुखदाई।
करे राज अन्याय अहो रक्षक को थाई॥ २२॥

चौपाई

सुन इम श्रेणिक किना मंकार। श्रेणिक आवे निज आगार॥
पुन जिनदत्त कियो निरधार। जाय मिले नृप के दरबार। २३।
राजा मोहि हैं वह आन। परजा पाले गुन अनुराग॥
सच्चो श्रेणिक जाने भेद। सो तो राज जोग नहिं खेद। २४।
तब वह भागो नगर देश। दक्षिण आयो कियो प्रवेश॥
तहां एक गढ़ धनपाव प्रसिद्ध। सेना जुत तिष्ठे ना भद्र॥ २५ ॥
तातन श्रावक निवसे नित। श्रेणिक तब लेवे सो नित॥
इसको भाव मित्र इक जान। ताको सखा और पहिचान ॥२६॥
तिसको मित्र और इक थाह। ता सुतने वच सुन इह भाह।
गजश्रेणी वे इन ही घर। कन्या एक रूप रस भरी ॥ २७ ॥
ताको तेन विचार प्रचार। सो तुम ले आवो तत्कार॥
इम सुन वह जिनदत्त पून। सुभट पान सों कर संपून ॥ २८ ॥
नगरी में पहुंचो निरधार। जहां विवाह को मंडन कार॥
तासे कन्या दई तुरंत। नाम सुभद्रा जो गुनवंत ॥ २९ ॥

दोहा

कुछ दिन तहां समय, लेके भयो प्रयान।
श्रेणिक सुन जिनदत्त घर, पेखे निज को थान। ३०।
तातन भयो तिहं समय, के पहाँ दरबार।
इस कन्या के नेहवश, सो आये निज जाय। ३१।

चौपाई

गीता छन्द

रमणीक जो बैभार पर्वत तास पै भग के गयो ।
तहां पान सौ ऋष राज जुत मुनिदत्तको भेटत भयो ॥
बहु भक्ति धर नुत करी बिनती अहो प्रभु मोको अबै।
दीजे अतुल दीक्षा तपोनिधि करूं आतम हित सबै। ३४ ।
जिन तत्व जानन हार श्री मुनि ज्ञान बारिध इम कही।
सुख देन हारी जैन दीक्षा हे सुबुद्धी ले सही ॥
निज आतमा को काज कीजे एही सार निहारिये ।
दिन आठ की तुझ आयु बाकी रही है उर धारिये ।३५।

दोहा

तबै चिलाती पुत्र यह, गुरु के बचन संभाल ।
जैन तपस्या आदरी, ताही छिन गुण माल ॥ ३६ ॥
प्रायोगमन सन्यास धर, तिष्ठो आतम लीन ।
श्रेणिक इह बिधि देख कर, नमन कियो परबीन ॥३७॥
बारम्बार सराहना, इनकी कर अधिकार ।
और मुनिन को बन्दि कर, गयो सु निज आगार ।३८।

कडखा छन्द

इसी अन्तर वही आन कर व्यन्तरी पूरबले बैर सब याद कीनें । पापनी चील को रूप धर चूंच ते मुनी के नेत्र जुग काढ़ लीनें ॥ बहुरि दिन आठ लों दीर्घ सर घावनी सर्व बपु मांहि तिन घाव दीनें । तबै मुनि राज जी आतमा लीन ह्वै करम परचंड तिन किये हीनें ॥ ३९ ।

सहित समाधतें देह को त्याग के गये सर्वार्थ सिद्धे मझारी। तहां सुख अतुल भोगत महा पुन्य तें फटक सम काय इक हस्त धारी ॥ आय ते तिस सागर तनी जिन लही भये अह

मांगे बालक दूध तास को देन न देवे।
लोभ ग्रसत जो जीव पाप पुनको नहिं वेवे ॥ ४ ॥
फिर नृप आनन सीस रोग परचंड भयो है।
तिस के नाशन हेत भेषज पक्क कियो है ॥
भाजन में धरवाय भूप तिष्ठे तब ताही।
ताही छिन मुनिचंद आये पुण्य वसाही । ५ ।
रोग महा कर युक्त जगत उत्तम बड़भागी।
तपकर छीन शरीर निज आतम अनुरागी।
ऐसे निस्प्रह साधु देख राजा जु बिचारी।
जो मम रोग शरीर सोई इनके निरधारी । ६ ।

दोहा।

इम विचार कर नृप तबै, वो औषधि सुखदाय।
मुनि को दई अहार में, नविधा भक्ति कराय ॥ ७॥

चौपाई

द्वादशवर्ष तनो वह रोग। भेषज भख तन भयो मनोग।
जैसे सम्यक जुत जे बैन। ताकर मिथ्या नाशत ऐन ॥ ८ ॥
तैसे मुनि तन निरमल भयो। रोग उपाधि सबै मिट गयो।
अब नृप पूरन करके आव। मुनि के दान तने परभाव। ९।
भरत क्षेत्र में नगर प्रधान। चामल कण्ठ नाम सुख थान।
ताको निष्टसेन भूपाल । नंदीमति रानी गुणमाल ॥ १० ॥
तिनके गुणमण्डित शुभकाय। धन्य नाम सुत उपजो आय।
अब शिशु माताकी तज अङ्क। वृद्ध होत जिमि दूंज मयंक ।११।
तीन जगत जनको हितकार। ऐसे श्री नेमीश्वर सार।
तिनके समोशर्न में जाय। चरनकमल नमियो बहु भाय। १२ ।
धरम स्वरूप सुनो धर नेह। सुर असुरनकर पूजित जेह॥

दोहा

धन्य नाम मुनिकी कथा, सुनत उदंगल जाय ।
सुख सम्पति बाढ़े सदा, नित प्रति मंगल थाय ॥२०॥

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषै धन्य मुनिकी कथा समाप्तम् नं० ७१

अथ पांच शतकमुनिकी कथा प्रा० ७२

मंगला चरण ॥ सोरठा ॥

निज कल्याणक काज, श्री जिनके पद जुग नमूं ।
पंच शतक मुनि राज, तिनको चरित बखानहूं ॥१॥

चौपाई

दक्षण दिशमें भरत जु देश । कुम्भ कार कट पत्तन वेश ।
तामें दंडक नाम नरिन्द्र । नार सु बृत्ता रूप अमंद ॥ २ ॥
तिनके बालक नाम प्रधान । पापी धर्म परायन जान ।
इस अन्तर इक दिनके मांहि । पांच शतक मुनि जुत सुखदाहि ।३।
अभिनन्दन आचारज जोग । आये करत बिहार मनोग ।
तिन ऋषि मांही खड्कहि साथ । बालक मंत्रीते कर बाद ।४।
स्याद् बाद नयकर जे लीन । तब तिस आनन भयो मलीन ।
जब मंत्री रिस धर अधिकाय । एक भांडको लियो बुलाय ।५।
तिसे मुनीको भेष बनाय । भूप तिया पै दियो पठाय ।
आप गयो राजाके पास । तासेती इम बचन प्रकाश ॥६॥
हो भूपति तुम तियते बात । देखो नगन करत हरषात ।
इम कह दिखला दियो तुरन्त । पापी मंत्री दुष्ट अत्यन्त ॥७॥

दोहा ।

फिर इह विधि कहतो, भयो सुनिये अवनी पाल ।
तुम इनके सेवक हुते, देखी इन की चाल ॥ ८ ॥

चौपाई

ऐसे सम्यक् दृष्टि नरेश । सुनत धर्म उपदेश विशेष ।
तब गुरु जानि [illegible] । [illegible] कुगति धार ॥९॥
तत्त्वार्थ श्रद्धान ज्ञान धार । मिथ्यात्व छोड़ि नवे भवपार ।
ताही अवसर सो बुधिवान । सो पाप कर निःशंक भाव ॥१०॥

छन्द ।

जे ध्यानी मुनि धीर वीर जिन धर्म के नायक ।
[illegible] प्रभु [illegible] ॥
सो है [illegible] ज्ञान [illegible] ।
[illegible] ॥
ऐसे हैं श्री जिन देवजी, [illegible] ।
[illegible] ॥

इति श्री पुण्यास्रवकथाकोषे [illegible] विद्युच्चोर मुनि की
[illegible] सम्पूर्णम् ॥७१॥

अथ चार्वाकब्राह्मणकीकथाप्रारम्भः ७३

दोहा

धन्य नाम मुनिकी कथा, सुनत उदंगल जाय ।
सुख सम्पति बाढ़े सदा, नित प्रति मंगल थाय ॥२०॥

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषै धन्य मुनिकी कथा समाप्तम् नं० ७१

अथ पांच शतकमुनिकी कथा प्रा० ७२

मंगला चरण ॥ सोरठा ॥

निज कल्याणक काज, श्री जिनके पद जुग नमूं ।
पंच शतक मुनि राज, तिनको चरित बखानहूं ॥१॥

चौपाई

दक्षण दिशमें भरत जु देश । कुम्भ कार कट पत्तन वेश ।
तामें दंडक नाम नरिन्द्र । नार सु बृत्ता रूप अमंद ॥ २ ॥
तिनके बालक नाम प्रधान । पापी धर्म परायन जान ।
इस अन्तर इक दिनके मांहि । पांच शतक मुनि जुत सुखदाहि ।३।
अभिनन्दन आचारज जोग । आये करत विहार मनोग ।
तिन ऋषि मांही खड्कहि साथ । बालक मंत्रीते कर बाद ।४।
स्याद् बाद नयकर जे लीन । तब तिस आनन भयो मलीन ।
जब मंत्री रिस धर अधिकाय । एक भांडको लियो बुलाय ।५।
तिसे मुनीको भेष बनाय । भूप तिया पै दियो पठाय ।
आप गयो राजाके पास । तासेती इम बचन प्रकाश ॥६॥
हो भूपति तुम तियते बात । देखो नगन करत हरषात ।
इम कह दिखला दियो तुरन्त । पापी मंत्री दुष्ट अत्यन्त ॥७॥

दोहा ।

फिर इह विधि कहतो, भयो सुनिये अवनी पाल ।
तुम इनके सेवक हुते, देखी इन की चाल ॥ ८ ॥

पद्धड़ी

ऐसे लखकर दंडक नरेश । मूरख मन क्रोध कियो विशेष ।
तव सव मुनि गण घानी मझार। इह पेलत भयो कुबुद्धि धार।६।
दुष्टातम दुरगति जान हार । मिथ्याकर मोहि तजे अपार ।
कोड़ो भवमें जो कष्टदाय । सो पाप करे निःसंक थाय ।१०।

छप्पय।

ते सवही मुनि धीर वीर जिन वच के ज्ञायक ।
सहके कष्ट प्रचंड बेग हुवे शिव नायक ॥
सो वे साधू महान शान्त भवकी अव कीजे ।
मोको अहो दयाल शीघ्र अष्टम श्री दीजे ॥
कैसे हैं श्री जिन केवली, मेरु शिखरवत थिर रहे ।
सव करम मैलको नाश कर, सदा सास्वते सुख गहे ११

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषै पांच शतक मुनि की
निर्वाण कथा समाप्तम् नं० ७२।

अथचाणिकब्राह्मणकीकथाप्रारम्भः ७३

मंगलाचरण ॥ काव्य ॥

अमरेशन कर पूजनीक जिन चरन कमल वर ।
ऐसे श्री अरिहंत तिनो को नमस्कार कर ॥
कहे कथा मन लाय विप्र चाणक की अवही ।
सुनिये सुमन सुजान दुरित नाशत हैं सवही ।१।

चौपाई।

पाटल पुत्र नगर इक थाह । ताको नंद नाम नर नाह ।
ताके जानो तीन प्रधान । काव सुगंध सकटा शुभ खान।२।
कपिल पुरोहित है अभिगम । नाम देविला तिसके वाम ।
प्राणोंते प्यारी अधिकार । वेद निपुण चाणिक सुत सार।३।

एक दिना राजा के पास । मंत्री काव करी अरदास ।
खंड मलेछ तने भूपाल । तुम पर चढ़ आये विकराल ॥ ४ ॥
भूपति कहे सुनो परवीन । जो उद्धित बैरी मद लीन ।
तिने द्रव्य दे करो निवार । तुम दीरघ वय धारन हार ॥ ५ ॥
ऐसे सुनकर निज बुध करी । शत्रु निवारे तिसही घरी ।
मंत्री विन बिन सै समाज । औरन हित मित नृपको राज ।६।
इस अन्तर इक दिन भूपाल । भंडारी पूछो तत्काल ।
कितनो द्रव्य तुम्हारे पास । तब तिन ऐसे बचन प्रकाश । ७ ।
हे स्वामी जो काव प्रधान । ताने द्रव्य तुम्हारे जान ।
शत्रुनको देकर अधिकाय । उलटे फेरे बुद्धि वसाय ॥ ८ ॥

दोहा ।

इम सुनि तब नृप रोस कर, सचिव काव तत्कार ।
सब कुटुम्ब जुत तासको, डारे कारा गार ॥ ९ ॥
किंचित सुख है जासु को, ऐसो अन्धो कूप ।
तामें भोजन पान तुछ, नित प्रति भेजे भूप ॥ १० ॥

सोरठा ।

राजा काके मीत, यही बात पर सिद्ध है ।
अहो बड़ी बिपरीत, लखे न काज अकाज को ॥११॥

पद्धड़ी

तुछ भोजन लख कर काव येह । अपने कुटम्बसूं कहत तेह ।
नृप नाश करे परिवार युक्त । सोई जन यह भुंजे सु भुक्त ।१२।
तब सबही जन ऐसे बखान । तुमही इस लायक हो महान ।
इम सुनके काव सु बुद्धिवन्त । तिस कूप विषै भोजन करन्त ।१३।
ऐसी बिधि बीते वर्ष तीन । इस सब कुटुम्ब नेमीच लीन ।
इस अन्तर फेर मलेछ राय । फिर कर चढ़ आये मद उपाय १४

तब नृपति ब्रा र पहिली संभाल। इस मंत्री को लीनों निकाल।
फिर सचिव सु पद दीनो तुरंत। याने वे फेरे अरि महन्त ॥१५॥

दोहा।

अब इह मंत्री काव जो, चित में धर बहु रोप।
राय वंश नाशन निमित, फिरे रैन अरु द्योस ॥ १६ ॥
किसी सहाई को लखत, अगन जेम प्रजुलात।
इम विचार नित प्रति करत, पै कछु नाहि बसात ॥१७॥

चौपाई।

एक दिना अटवी में जाय। तहँ इक चाणिक विप्र लखाय।
ताके पाद डाभकी अनी। चुभते वेदन उपजी घनी ॥ १८ ॥
यह तावी जड़को विनसात। देखत मंत्री पूछी बात।
किह कारन तुम खेदित भ्रात। तब चाणिक बोलो इह भांत।१९।
इसने मो पद बींधों आह। तातें याके मूल नसाह।
करके छार बहाऊं जाय। तब मेरे चित साता थाय ॥ २०॥
ऐसे सुनकर काव प्रधान। कहत भयो तू सुन बुधिवान।
याको मूल शीश इक सार। तातें छिमा करो रिस टार ॥२१॥
चाणक कहे सुनो चित लाय। जो वैरी होवे दुखदाय।
शीश ग्रहन नहिं ताको करे। तो चितमें किम साता धरे।२२॥

दोहा।

ऐसे सुनकर काव तब, मन में कियो विचार।
नंद राय के वंश को, इह नाशक निरधार ॥ २३ ॥
याको अपनी लारले, आयो निज आगार।
विष्टर पै बैठाय कर, भोजन देवे सार ॥ २४ ॥

चौपाई।

एक दिना चाणिक की भाम। यशमती बोली अभिराम।

अहो नाथ कपिलाको दान । नृप देवे तौलों बुधवान ॥२५॥
तब यह कहत भयो सुन नार । मैं करहूं अब अंगीकार ।
सोवो मंत्री काव तुरन्त । भूप प्रती बोलो इह भन्त ॥२६ ॥
अहो स्वामि तुम लक्ष्मीवान । विप्रन को दो कपिला दान ।
इम सुन राय कही उच्चार । विप्र बुलावो इसही बार ॥२७॥
तब प्रोहत को पुत्र सु एह । चाणक बुलवायो जुत नेह ।
ऊंचे आसन के समुदाय । मंत्री ने तहँ दियो बठाय ॥२८ ॥
ऐसे बैठो इसे लखाय । माया जुत बच काव कहाय ।
अहो सुभट राजा इम कही । एक सिंहासन छोड़ो सही ॥२६॥
तब तिन बिष्टर छोड़ो एक । फिर दुज आये और अनेक ।
तिनके मिसकर मंत्री तबै । इक इक करके छीने सबै ॥३०॥
चाणक रहित सिंहासन भयो । तब मंत्री ऐसे बच कहो ।
हो भ्राता मैं करहूं केम । नृप ने हुकम दियो थो येम ॥ ३१॥
हृदै शून्य यह है भूपाल । अल्प बुद्धि दुठ चित्त कराल ।
महलों तुमरो आसन जेह । सो भी मांगत है नृप तेह ॥३२॥
तातें जावो अपने गेह । इम कह काढ़ो धक्का देय ।
तब चाणिक धर शेष प्रचंड । नृपति बंश नाशन चित मंड ।३३।

दोहा ।

ऐसे बचन पुकार के कहत भयो दुज सोय ।
नंदराय के राज को, जो चाहत है कोय ॥ ३४ ॥
सो आवो मम साथही, इम कह गमन कराय ।
तब इक छत्री संग इस, पीछे चालोधाय ॥ ३५ ॥

काव्य ॥

अब यह चाणक बिप्र गमन करके ततकारी ।
गयो मलेछन पास मिलो तिनते तिह बारी ॥

उन को वहु समझाय लेय कर अपनी लारी।
आकर पाटल पुत्र विषे नृप डारो मारी। ३६।
आप राज को पाय ठयो सिंहासन जवही।
वीतो काल विशेष प्रजा इन पाली सवही॥
अहो सचिव के कोप थकी याही जग मांही।
कौन कौन नर नाथ नाश को नाहिं लहाही। ३७।
इक दिन चाणिक भूप महीधर मुनिवर भेटे।
तिन मुखते जिन धर्म सुनत सब संशय मेटे॥
भयो दिगम्बर काय सुवुद्धी यह दुज तव ही।
करत तपस्या घोर परीषह जीती सव ही॥ ३८॥
पांच शतक मुनि राय शिष्य कर के इह मंडित।
विहरत अवनी मांहि धरम वरसात अखंडित॥
जैनतत्व परवीन सु दक्षिण दिश को धाये।
तहां देश वनवास क्रौंचपुर के ढिग आये॥ ३९॥

दोहा

नगरी की पश्चिम दिशा, पड़कोटे के पास।
श्री चाणिक प्रायोगमन, तिष्ठे धर सन्यास। ४०।
पांच शतक मुनिराज जी, इन की चारों ओर।
तिष्ठे ध्यान लगाय के, तन की ममता छोर॥ ४१॥

पद्धरी

इस अन्तर और सुनो वखान। नृप नंद तनो जो थो प्रधान। तिस नाम सुगंध जु पाप लीन। तिन चाणकसौं अति वैर कीन॥ ४२॥

सो क्रौंचपुरी नृप सुमत पास। मंत्री पद लह कीनो निवास॥ यह जिन मत तत्पर सुमति राय। मुनि आगम सुन चित हरष पाय। ४३।

सो गोष्ट विषै आयो तुरन्त । सब मुनिवर वन्दे हर्षवन्त। फिर पूजा अष्ट प्रकार कीन । स्तुति कीनी आनंद लीन।४४।

अपने घर जात भयो महेश । अब वो सुगन्ध पापी वि-शेष ॥ मिथ्या कर दुःखित भाव दुष्ट । सब मुनि वर पै कर कोप पुष्ट ॥ ४५ ॥

चहुं ओर उपल की अगन बाल । मुनि धीर वीर तन म-मत टाल ॥ तिष्ठे सब सुकल सु ध्यान धार। वस करम अरी कीने जु छार । ४६ ।

सोरठा

तीन जगत हितकार, सिद्ध शिरोमणि सब भये ।
आवागमन निवार, सदा सास्वते सुख लहे ॥ ४७ ॥
वे सबही ऋषिराय, हमे शर्म दो मोक्ष को ।
जिन सम और न थाय, तापे मांगो जायके । ४८ ।

दोहा

कैसे हैं वे बेकली, ज्ञान उदधि अविकार ।
सिद्ध थान तिन ने लहो, सह उपसर्ग अपार । ४९ ।
तीन भुवन पूजत सदा, ऐसो शिवपुर तेह ।
सुख अनन्द जहँ पाइये, तहँ तिष्ठे ऋषि येह ॥ ५० ॥

इति श्री आराधनासार कथा कोष विषै चाणक मुनि की कथा समाप्तम्

वृषभ सेन मुनि की कथा प्रा० ७४

मंगलाचरण अडिल्ल

श्री जिन चन्द्र महान सार त्रिभुवन धनी। और भारती माय ज्ञान वारिध मुनी ॥ तिन को नुत कर श्रेष्ठ कथा भाषूं अबै । वृषभ सेन मुनि तनी सुनो भवि जन सबै । १ ।

पद्धरी

शुभ दक्षिण दिशा मझारी । नगरी कुणाल सुखकारी ।
तहँ वैश्रवण भूपाला । सम दृष्टी बुद्धि विशाला ॥ २ ॥
नित प्रति जिनमत सेवन्तो । बहु दया धरम धारन्तो ।
ताके है रिष्ट प्रधाना । पापी मिथ्यात निधाना ॥ ३ ॥
है घात जोग इह भाई । चंदन तरु अहि लिपटाई ।
मलियागिरि सम इह राना । मंत्री दुठ सर्प समाना ॥ ४ ॥
इस अन्तर नगरी धारी । श्रीवृषभसेन हितकारी ।
आचरज संग जुआये । भविजन के भाग्य पमाये ॥ ५ ॥

दोहा

वेसरवण नर नाथ अब, मुनि गण आयो जान ।
चंदन चालो हर्ष जुत, संग समाज महान ॥ ६ ॥
भक्तिसहित उत्तम दरब, बहु विधि लेकर भूप ।
तीन प्रदच्छण देयकर, पूजन करी अनूप ॥ ७ ॥

चौपाई

फिर स्तुत बहु विधि उच्चार । नमकर तिष्ठो भूमि मझार ।
तीन जगतमें जो हित दाय । ऐसो धर्म सुनो चितलाय ॥८॥
भूपति हर्षित भयो विशेष । जैसे रंक लहे विधि वेश ।
अहो सुःख सम्पति भंडार । ऐसो श्री जिन मत सुखकार ६ ॥
ताको सुनकर भविजन जेह । क्यों नहिं हर्षित होवे तेह ।
अब यह मंत्री मदकर मांय । गयो तहां तिष्ठे मुनिराय ॥१०॥
तिनते वाद करो बहु भाय । तबही हारो लज्जा पाय ।
मान भंगते दुष्ट प्रधान । रैन समय छिपकर तहँ आन ॥११॥
सब साधुन के चारों ओर । दीनी अगिन प्रजारी जोर ।
यह उपसर्ग कियो दुख दाय । सो कविसे किम बर्नो जाय १२॥

अहो जगत में दुर्जन नीच । दोष धरत हैं साधुन बीच ।
आपी चपल तिनो पै जोय । फिर आपी मन क्रोधित होय १३॥

काव्य

तब वे श्रीमुनिचंद मेरुवत निश्चल सारे ।
तिष्ठ आतम लीन वपू ममता निरवारे ॥
शुकल ध्यान परभाव महा उपसर्ग जीत कर ।
स्वर्ग मोक्ष में गये, साधु वे सकल कर्म हर ॥१४॥
जे दुष्टातम जीव सन्तजनको दुखदाई ।
निश्चय दुर्गति लहें वेद में ऐसे गाई ॥
और सुमन जे जीव महा शुभ गति को पावें ।
धरम तने परसाद बहुत विध सर्म लहावें ॥ १५ ॥

॥ सवैया इकतीसा ॥

वेही सब मुनिराज जगमें जहाज सम, महा जो पवित्र ध्यान नगकी शरन है। सप्त तत्वको स्वरूप जाने महा बुद्धिवान, क्षमा के गहन हार जिमि यह धरनि हैं ॥ देव इन्द्र बृन्द आय पूजत पदारविन्द शुभके करनहार कलुष हरन है । सहें उपसर्ग घोर शुद्ध भाव धरें जोर, बन्दे हम नुतकर तुमरे चरन है ॥१६॥

दोहा

सुर शिव पदवीको लही, वे गुण आकर साध ।
ते सत्पुरुषन के विषै, मंगल देहु अबाध ॥ १७ ॥

इति श्रीआराधनासारकथाकोषविषै वृषभसेन मुनिकी कथा समाप्तम् नं० ७४

अथ तंदुलमच्छकी कथा प्रा० ७५

मङ्गलाचरण कवित्त ॥

केवल ज्ञान विशाल धरे चख ऐसे स्वयंभू अति परमेश ।
ताहि नमनकर सत्पुरुषन हित कहों कथा अब सुनो बुधेश ॥

मनके दोष थकी अघ उपजत ताको लच्छण जान विशेष।
तंदुल मच्छ उदधि आनन में ताको वर्णन कहिये लेश ॥१॥

चौपाई

असंख्यात वारिध के अन्त। नाम स्वयम्भू रमण महन्त।
तामें जोजन सहस्र प्रमान। पांच शतक चौड़ाई जान ॥२॥
ढाई सौ ऊंची तिस काय। ऐसो राघव मच्छ रहाय।
ताके कर्न विषे है वास। तन्दुल मच्छ नाम है जास ॥३॥
कान तनो मल भच्छण करे। रुद्र भाव नित चितमें धरे।
अब यह राघव वारिध बीच। बहु जन्तुनको खावे नीच ॥४॥
फिर निद्रा लेवे षट मास। मुख फाड़े ले दीरघ सांस।
इक इक जोजन तिनकी काय। कछुआ आदिकके समुदाय ॥५॥
याके उदर विषे धस जात। फिर आनन बाहर निकसात।
ऐसे लख यह तन्दुल मीन। पाप बुद्धि चित महा मलीन ॥६॥
अपने मनमें इम चिन्तवन्त। यह राघव मूरख बुद्धवन्त।
इसके मुखमें जन्तु अपार। आकर उलटें निकसत बार ॥७॥
तिनको भच्छण करे न मूढ़। ऐसे भाव धरे वहु गूढ़।
जो मैं ऐसी पाऊं देह। एक जीव नहिं छोडूं एह ॥८॥

दोहा

अहो महा इह कष्ट है, दुष्ट तिन जे जीव।
तिनकी चेष्टा पाप में, है दुखदाय सदीव ॥ ९ ॥

सोरठा

सो वह तन्दुल मीन, मन विकल्पते भीन नर।
पाप उदै दुखलीन, सप्तम नर्क के विषे ॥ १० ॥

छन्द

अहो पुरुष इक पाप तनो मन कारन जानो।

याते जे सत्पुरुष प्रभू वानी मन आनो ॥
ताबिन शुभ अरु अशुभ कौन विधि जानी जाई ।
याते शास्त्र महान जैन के सुनिये भाई ॥ ११ ॥
अहो भव्य तुम नित्य प्रभू बन दीपन जोहै ।
ताको चितवन करो शान्त ताते अति होहै ॥
याते मिथ्या ध्वान्त नसत है काल अलप में ।
छूटत मोह जंजाल बंध जो किये कलप में ॥१२॥

दोहा

देव इन्द्र भवि जनन कर, पूजनीक है येह ।
दुख नासे संसारको, सुर शिवको मग देह ॥ १३ ॥
इह जिन बानी रस भरी, भजिये तज परमाद ।
कंठ मालवत हिय धरो, जो सुख लहो अवाध ।

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषै स्नानदोषमें तन्दुलमच्छकी कथा समाप्तम् म० ७५

अथ सुभूमचक्रवर्तीकी कथा प्रा० ७६

मंगलाचरण ॥ सोरठा ॥

रवि शशि अहिपति इन्द्र, तिनके पद नितप्रति जजे ।
ऐसे श्रीजिनचन्द्र, तिनको नम भाषूं कथा ॥ १ ॥

अडिल्ल

पुरी ईरषा पुरी तासको नरपती । कीर्त वीर्य तिस नाम धरत है शुभ मती ॥ याके महिलासार रेवती जानिये । अष्टम चक्री पुत्र सुभूप प्रमानिये ॥ २ ॥
बिजैसेन इक नाम रसोईदार है । भोजन करने विषै चतुर अधिकार है ॥ याने इक दिन ऊष्ण खीर भोजन दियो । चक्रवर्तको हाथ दग्ध ताकर भयो ॥ ३ ॥

नरनायक धर रोश सुथार उठायके। डारो इसके शीश मरो दुख पायके ॥ भयो जुज्यंतर चार उदधिके बीचही। पूरब भव कर पाद क्रोधजुत नीचही ॥ ४ ॥

दोहा

तापसि को तव रूप धर, आयो चक्री पास।
मीठे फल अति पक्कही, देत भयो हित नास ॥ ५ ॥
तिन फलको आस्वाद कर, नरपति कही सुनाय।
हो तापसि एक फल कहां, उपजत हैं वतलाय ॥६॥

चौपाई

तव यह तापस माया धार। चक्रवर्त से एम उचार।
मेरे संग चलो महाराज। फल आराम दिखाऊं आज ॥ ७ ॥
जव चक्री चाले तिस साथ। फल लोभी निज बुद्ध नसात।
अम्बुधमें पहुँचे तिहवार। तव परघट सुख वचन उचार ॥८॥
रे रे दुष्ट महा अज्ञान। मद करतें नासे मुझ प्रान।
अव मम आगे ते दुखदाय। भाग कहां जाहिं बतलाय ॥९॥
तोको मारूंगो इह ठोर। फिर इम भाषे वचन कठोर।
जो जलमें लिखके नवकार। पगते मेटे इसही वार ॥ १० ॥
तो तोकों छोड़ूं दर हाल। नातर तुम जानो निज काल।
तव यह चक्री मूढ़ अत्यन्त। जानी प्रान बचे इह भन्त ॥११॥
ताही विधि कीनी अघरास। सप्तम नरक लहो मरवास।
अहो जगतमें मूढ़ अनेक। रसना लंपट रहित विवेक ॥ १२ ॥
तिनको है बहु विधि धिक्कार। चक्रीभी इह मतको धार।
औरनकी गिनती है कौन। पाप धर्मी पावैं दुख भौन ॥१३॥

दोहा

शोभाजुत जिनेश मत, जे हिय धारन नाहिं।
ते चक्री सम दुख लहैं, नरक दुर्गति आहिं ॥ १४ ॥

तेही जगमें धन्य हैं, जिन घच शुद्ध मनोग ।
हिरदे में नितप्रति धरे, वेही पूजन जोग ॥ १५ ॥

चौपाई

जे भविजन या जगमें सार । ते सम्यक हिये धरो उदार ।
कैसो है इह रतन सुढार । तीनलोकमें है हितकार ॥ १६ ॥
भव बारिधके दुख नासन्त । इन्द्रादिक कर पूज महन्त ।
नाना बिधि सुखको है हेत । गुण आकर सुर शिवको देत १७
श्रीजिनेन्द्र आनन ते कही । इस सम्यक की महिमा यही ।
तातें आश्रय याको करो । जाते शिव लक्ष्मीको बरो ॥ १८ ॥

दोहा

बसुगुणजुत ध्यावो सदा, पच्चिस दोष निवार ।
जाते सब कल्याण है, भय नाशे तत्कार ॥ १९ ॥

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषै सु भूमि चक्री की
कथा समाप्तम् न० ७६ ॥

अथशुभ नामराजाकी कथा नं० ७७

मंगलाचरण ॥ गीता छन्द ॥

त्रय जगत की हितकार परमानन्द दायक जान के ।
ऐसे जिनेन्द्र सुचन्द्र के पद नमूं भक्ति जु ठान के ॥ १ ॥
बैराग दाता जो कथा बरनो अबै चित लाय के ।
शुभ नाम राजा की कथा बरनूं अबै चित लाय के ॥ २ ॥

चाल ।

मिथुला नगरी इक जो है । शुभ नाम नृपति तहँ सो है ।
ताके मनोरमा नारी । सो प्राणों ते अति प्यारी ॥ ३ ॥
गुण आकर सुत तिन धामा । उपजो सुदेव रति नामा ।
इक दिन ता नगरी मांही । गुरु ज्ञान युक्त अधिकाही ॥ ४ ॥

तिन नाम देव गुरु पाये । बहु संग सहित तहँ आये ।
तब नरपति गुन कर धायो । बहु भव्यनको संग लायो ॥५॥
जग पूज पदों के पाई । वन्दे बहु चित हरषाई ।
फिर धर्म सुनो सुख दाता । जो तीन लोक विख्याता ॥६॥
फिर विनती नृप उच्चारी । तुम ज्ञान नेत्र के धारी ।
तन त्याग कहां जाऊं गो । कैसी गति को पाऊं गो ॥ ७ ॥

दोहा ॥

तबै विचक्षण देव गुरु, आचारज उच्चार ।
हे राजन भिष्टा विषे, कीट होय निर्धार ॥ ८ ॥
जे मुनिवर तप के धनी, ज्ञान नेत्र धारन्त ।
तिन के चित में भय कदा, होत नहीं सुन सन्त ॥६॥

चौपाई ।

हे राजन जिम निश्चै होइ । एते कारन मिल है तोहि ।
जब तू नगरी मांही वड़े । भिष्टा आनन मांही पड़े ॥ ६ ॥
छत्र भंग होवे तत्कार । ए लक्षण जानो निरधार ।
सप्तम दिन चपलाते मरे । तब तू कीट तनो वपु धरे ॥१०॥
इम सुनकर चालो भूपाल । अस्व तने खुरते तत्काल ।
भिष्टा मुख में पड़ी तु आय । छत्र भंग भयो पौन वसाय ॥११॥
अहो पाप जिसके उद्योत । कौन कौन कारन नहिं होत ।
सब ही अशुभ होत दिनरात । याते धर्म करो अवदात । १२ ।
अब इह राजा सुत बुलवाय । ऐसे वचन कहे समझाय ॥
मैं जहुं सप्तम दिनमें मीच । उपजुंगो भिष्टा के बीच ॥ १३ ॥
पांच वर्ण को कीट निहार । देखत ही तू दीजो मार ॥
ऐसे कह मरने ते डरो । मोह सहित फिर तन धरो ॥ १४ ॥
गंगा सरितामें तन जाय । [illegible] [illegible] वेठो भय पाय ॥
सप्त दिन सप्तम पहुंचो आन । [illegible] हुवे ते याके जान । [illegible]

दोहा

दीरघ मच्छ सु आयकर, दई मंजूष उछाल ।
ताही छिन अम्बर थकी, बिजली पड़ी कराल । १६ ।
नृप मर भिष्टा घर विषै, उपजो कीट तुरन्त ।
गयो देवरत मारने, वो भागो भय वन्त । १७ ।

चौपाई

भिष्टा मांही छिपियो जाय । प्यारी लागी वो पर जाय ॥
अहो कर्म जैसो रस देह । तैसो प्रानी भोगत येह ॥ १८ ॥
जबै देवरत सुन विरतन्त । होत भयो जगते भयवन्त ॥
जैन धरम को कर सरधान । फिर बैराग विषै चित दान । १६ ।
भयो मुनीश्वर यह बुधिवंत । पाई शुभ गति करम दहंत ॥
देखो जगको चरित अपार । पिता कीट सुत शुभ गति धार ।२०।
सो जिनदेव करो कल्याण । इन्द्रन करवे पूज महान ॥
जे जन चरन कमलके दास । तिनको सुर शिव देह अवास ।२१।
अरु जिनके बच हैं जग सार । पाप उदधि ते तारन हार ।
जे भवि नित प्रति हिरदे धरें । तिनके सकल उदंगल टरें । २२ ।

इति श्री आराधनासार कथा कोष विषय सुभ राजा की कथा समाप्तम्

अथ सुदृष्टि की कथा प्रारम्भः नं० ७८

मङ्गलाचरण ॥ सोरठा

तीन जगत पति आय, तिन की पूजन नित करे ।
ऐसे श्री जिनराय, तिन पद पंकज नमन कर ॥ १ ॥
कहूं कथा हितकार, नाम सुदृष्टि तनी अबै ।
रतन कला में सार, भयो बिचक्षण ये महा ॥ २ ॥

पद्धड़ी

उज्जैनी नगरी अति बसंत । नृप प्रजापाल तामें लसंत ॥

जिन चरन कमलको अलि समान। तियसती सुप्रभा रूपवान ।३

तहां ही इक बसत सु दृष्ट नाम। सो रतन कलामें निपुन मान।

ताके विमला नारी अयान। सो दुराचारनी पाप खान ॥ ४ ॥

एक वक्र शिष्य इस गेह बीच। याते आशक्त रहे सो नीच।

इक दिन सु दृष्टि निज नार संग। सो रमत भयो धर मन उमङ्ग ।५।

तब ही सो पापी वक्र आय। तिय कहन थकी इस हनी काय।

सो मर सुदृष्टि निज कर्म जोग। निज तियके गर्भ बसो मनोग ६

अपने हि वीर्य में जाय येह। सुत उपजो सुन्दर तास देह।

तुम देखो अब जग को चरित्र। इस करम तनी गतिहै विचित्र ७

दोहा।

नाना विधके रूप धर, नृत्य करत यह जीव।

जैसे नट वासांगरकर, ठानत कला अतीव ॥८॥

काव्य।

इस अन्तर अब चैत्र मास आयो सुख कारी।

नृपति गये उद्यान करी क्रीड़ा जिहवारी ॥

टूटो तिय उर हार नाम क्रीड़ा विलास जिस।

शुभ रचना कर रचो कान्ति अति फैल रही तिस ९

तब भूपति सब नगर तने सोनी बुलवायो।

वेग बनावो हार वचन इम आप सुनायो ॥

काहू सेनहि बनो हार वो है विचित्र अति।

पुन्य बिना किमलहं पुरुष चतुराई की गति ॥१०॥

दोहा।

तब विमला के पुत्र ने, देखो वोही हार।

जाड़ी सुमरन होय कर. दीनों वेग संवार ॥११॥

सोरठा ।

ज्ञान कला अरुदान, पूजादिक शुभ कर्म जे ।
प्रानी लहे जो आन, सो पूरव अभ्यास ते ॥१२॥

चौपाई ।

जवनर नायक होय खुस्याल। कहत भयो निज वचन रसाल।
रे बालक इह सुन्दर हार। रचो विचित्र सुदृष्ट सुनार॥ १३ ॥
तैंने केम बनायो येह। तब इह बालक उत्तर देह॥
हो नरनाथ सुनो मम बान। मैं सुदृष्ट चर उपजो आन ॥१४॥
सब वृतान्त कहो समझाय। सुत नरिन्द चित में इमभाय।
इह संसार असार स्वरूप। तामें दुख हैं नाना रूप ॥ १५ ॥
इम बिचार कर अवनी कन्त ! भये दिगम्बर मुनि गुण वन्त।
अरु विमला को सुत जिहघरी। मनवच काय शुद्ध तिनकरी १६
स्वर्ग मोक्ष की जो दातार। जिन दीक्षा लीनी तत्कार।
सो बिशुद्ध आतम तपलीन। विहरत अवनी में परवीन ॥१७॥
भविगण को बोधत दे धर्म। काय कषाय करी कृशपर्म॥
क्रमकर सोरी पुर ढिग बीर। उत्तर दिश जमना के तीर ॥१८॥
शुकल ध्यान कर करम प्रजाल। केवल पद पायो गुण माल।
लोक अलोक प्रकाश तुरन्त। फिर ह्वे शिव तिय के कन्त १९

दोहा ॥

सो स्वामी हमको अबै, शान्त अर्थ जगदीश।
हूजे ये बिनती करूं, चरन नवाऊं शीश ॥ २० ॥

कवित्त ॥

कैसे हैं केवल सम्पत जुत भव बारिध के तारन हार ।
करम अरी नाशकबल मंडित मोक्ष भामनी के भरतार॥
देव इन्द्र पूजित चरणाम्बुज लोका लोक लखन दससार।

ऐसे प्रभु कल्याण अर्थ हैं तुम हम को सुख देहु अपार २१

इति श्री आराधना सार कथा कोष विषै महर्षि का ... मुनि ... ... नामी कथा समाप्तम् ॥ नम्बर ७८ ॥

अथ धर्मसिंह नृप की कथा नं० ॥७९॥

... । ... इकतीसा ॥

देवन के इन्द्र चन्द्र पूजते पदार बिन्द, जजे अह मिन्द, गण मन वचकाय के । शास्त्र के समुद्र सार ज्ञान नेत्रधरन हार, वर्सन निधार बने सिवपुर जायके । ऐसे भगवान आप्त करें सब सुख प्राप्त, तिनको नमन कविकरे सिरनाय के ॥ धर्म सिंहजो नरेश ताकी कथा विशेष । कहूं हर शेष सुनो सुधी चित लायके ॥१॥

चौपाई ।

दक्षिणदिशि कोशल गिरिभाल । तहँ कोशल पुर नगर विशाल ।
वीर सेन नामें राजेन्द्र । वीर मती रानी सुख वृन्द ॥ २ ॥
तिन दोनों के कर्म संयोग । चन्द्र भूत सुत भयो मनोग ।
चन्द्र श्री तनुजा गुण गेह । रूपभाग लावन जुत देह ॥ ३ ॥
तिनने एक दिन में नृप सुना । जोवन वन्त भई दुत जुना ।
... ... अस कोशल देश । कोशल पुर तहँ नगर सुवेश ॥४॥
तामें धर्म सिंह नरराय । तासे याको भयो विवाह ।
अब इह राजन पुन्य प्रमान । पूजा दान करे अधिकान ॥५॥
सुख भोगन नाना परकार । रानी जुत तिष्टै आगार ।
एक दिना वह नृप बड़भाग । दमधर मुन के चरनन लाग ॥६॥
तिन पे सुन्यो मुन जिनधर्म । देवन कर पूजित जो पर्म ।
तब चित में वैराग उपाय । भये दिगम्बर मन वचकाय ॥ ७ ॥

दोहा ॥

अब इन तिय को भ्रात जो, चन्द्रभूत तिस नाम।
निज भगिनी दुःखित लखी, तब यह कीनो काम ॥८॥
धर्म सिंह मुनि रायको, जबरीतें घर लाय।
सौंपो अपनी बहन को, जब मन में सुखपाय॥ ६ ॥

पद्धड़ी।

तिस पीछे यह मुनि बन मंझार। दिक्षा लै कर तप तपत सार।
इस अन्तर चन्द्र सुभूत नीच। मुनिवर ने देखो बनी बीच॥१०॥
गुण आकर ऋषि तब इम बिचार। इह मम तप भंग करहै अबार।
ऐसे निश्चय कर बुधि निधान। व्रत रक्षा हेत कियो पयान॥११॥
एक गज को मृतक लखो शरीर। तामें धंस कर तिष्टो सुधीर।
सन्यास मरन कर के महान। तन त्याग लहो शुभ नाकथान॥१२॥

दोहा।

अहो भव्य जन कष्ट में, व्रत रक्षन है जोग।
जाते परभव के विषै, सुर शिव लहो मनोग १३

छप्पय।

शोभा जुत श्री धर्म सिंह मुनि वर भव तारी।
हम को मङ्गल करो बिपत नाशो दुखकारी॥
कैसे हैं वे जती धर्म के रसिया नीके।
करके तप परचंड करम अरि कीने फीके॥
है प्रसिद्ध महिमा अतुल, जिन की तीनों लोक में।
गुण रतन धार सन्यास को, जाय बसे सुरथोक में॥१४॥

इति श्री आराधनासार कथा कोष विषय धर्म सिंह मुनि की कथा समाप्तम्

अथ वृषभ सेन मुनि की कथा ७०

मंगलाचरण ॥ दोहा

तीन जगत कर पूज जे, भुक्ति मुक्ति दातार ।
ऐसे श्री अरि हन्त जी, भवि जन को हितकार ॥ १ ॥
तिन के चरन सरोज को, नम कर कथा बखान ॥
वृषभ सेन मुनि राज की, सुनिये सुमन सुजान ॥ २ ॥

चौपाई

पाटल पुत्र नगर सुनिवन्त । तामें सेठ महा धनवन्त ॥
निर्मल बुद्धी, पुन्य गनाय । वृषभ दत्त नामा सुखदाय ॥ ३ ॥
ताके वृषभ श्री वर नार । रूप शील गुण धरे अपार ॥
तिन दोनूं के कर्म संयोग । वृषभसेन सुत भयो मनोग ॥ ४ ॥
श्री जिन चन्द चरनके धार्ज । तिन सेवन को अलियह आर्ज ।
याको मातुल धनपत नाम । श्रीय कान्ता के शुभ धाम ॥ ५ ॥
तिनके रूप शील गुण जुता । नाम धनश्री है वर सुता ॥
सो बहु विधि कर के उत्साह । वृषभसेन को दीनी व्याह । ६ ।
तासंग नाना विधि के भोग । पुन्य थकी पंचेंद्री जोग ॥
भोगत तिष्ठे निज आगार । धर्म अर्थ जुत चित्त उदार ॥ ७ ॥

दोहा

एक दिना बुध वन्त यह, पूरब पुन्य पसाय ।
दमधर मुनि भेटन भई, नमो चरन हरषाय । ८ ।
श्री जिनेन्द्र भाषित सुनो, धर्म महा हितकार ।
तब ही चित वैराग धर, दीक्षा लीनी सार ॥ ९ ॥

पद्धरी

तब नाम धन श्री नाल नेह । याकी नित सेवन लगी नेह ॥
जब धनश्री ताको तन जाय । याको बन ते गृह बांध लाय ॥ १० ॥

जबरी ते व्रत खंडन कराय। तब वृषभ सेन बहु दुःख पाय।
जे मोह युक्त प्रानी अयान। ते काज अकाज न चित्त ठान ॥११॥
जैसे मदिरा को पानकार। बहु पाप क्रियामें चित्तधार ॥
अब वृषभसेन निज गेह थान। कारागृह वत तिष्ठे सुजान।१२।
फिर कितएक दिनमें यह महंत। मुनि होत भयो गुणावन्त संत।
अब माया जुत याको जु माम। फिर इनको ले आयो सुधाम।१३।

दोहा

लोह मयी संकलन तें, इनको जड़ो शरीर।
तब इह मुनि मन के विषै, एम विचारी धीर ॥ १४ ॥

सोरठा

यह पापी दुख दाय, व्रत भू भृत ते गेरहै।
ऐसो निश्चय लाय, जुत सन्यास तज प्रान को। १५।
यह मुनि सत्तम सार, पुन्य उदै सुर पद लहो।
जे सज्जन अधिकार, दुरजन पीड़ित शुभ गहें। १६।

दोहा

निर्मल बुद्धी सुमन जन, तिन को पीड़े दुष्ट।
तो भी जिन पद सेय कर, वे पावें सुख पुष्ट ॥ १७ ॥

सोरठा

ऐसे श्री मुनिराय, मातुल कृत उपसर्ग सह।
उपजे स्वर्ग सु जाय, ते हम को मंगल करो ॥ १८ ॥

इति श्री आराधनासार कथा कोष विषय वृषभसेन मुनि की कथा समाप्तम्

जैसेन नृप की कथा प्रारम्भः नं. ८१

मंगलाचरण। अडिल्ल

जे सम्पत दातार मोक्ष तिय के धनी। ऐसे श्री भगवान

तिने सुत कर धनी । श्री जैसन नगेन्द्र तनी भाषूं कथा ।
जिम पुरान बरनई सुनो भवि जन जथा ॥ १ ॥

चाल छन्द

श्रावस्ती नगरी मांहि । जैसेन नृपत ताके हैं ।
... रूप धरन्ती । बीर सेना है गुण वन्ती । २ ।
तिन के निज कर्म वसाई । सुत बीर सेन उपजाई ।
नृप को गुरु मांस अहारी । शिव गुप्त बोध अपकारी ।३।
इक मिथ्यामत कुल दाता । नहिं देत जीव को साता ।
तातें याको धिक्कारी । हम देत जु वारम्बारी ॥ ४ ॥
इक दिन तिस नगरी मांही । मुनि संघ सहित अधिकाही ।
श्री वृषभ नाम सुखदाई । आये भवि पुन्य वसाई ॥५॥

दोहा

तब नृप पुन्य उदय थकी, गयो ऋषिन के पास ।
श्री जिनेन्द्र को धरम सुन, भयो श्रावक गुणरास ॥६॥

चौपाई

अब जयसेन भूप बड़ भाग । जिनमतमें बहु धर अनुराग ।
अपने राज विषै जिन धाम । ठौर ठौर कीने अभिराम ॥७॥
तिनकर अपनी शोभित करी । जिन मतकी महिमा विस्तरी ।
तब शिव गुप्त बोध दुखदाय । भूप हननको करे उपाय ॥ ८ ॥
वा अन्तर पृथ्वी पुर बीच । सुमन नृपति पै पहुंचो नीच ।
सामनी भाषी विरतन्त । नृप जयसेन तनो जु अत्यन्त ॥९॥
तब वो बोध नृपति निह धरो । इम वच सुनि मन निन्दा करी ।
ऐक पत्र लिख दाय तुरन्त । श्रावस्ती पुर में भेजन्त ॥ १० ॥
सो जयसेन नृपत के पास । लेकर आयो ताको दास ।
तामैं एम लिखो विरतन्त । बोध धर्म शुभ गहो महन्त ।११।

वांचतही जै सेन जुराय । प्रत उत्तर यह भांत लिखाय ।
मेरे श्रद्धा जिन मत तनी । निश्चयते निश्चय है घनी ॥१२॥
पाप तने कारन मत और । सो मैंने अब दीने छोर ।
बोध धर्मको तो क्या बात । यह तो परतक्ष है अघपात ।१३।
अहो जासने जिनमत जान । सो क्यों मिथ्यामत चित ठान ।
जैसे पवन तने परसंग । मेरु शिखर नहिं डिगे अभंग ॥१४॥

दोहा

तबै सुमत मनरोस कर, जुग भट जे बलवन्त ।
तुम मारो जयसेन को, तिनते येम भषन्त ॥१५॥
सो नृप के बच सुनतही, श्रावस्ती पुर आय ।
केते एक दिन तहँ रहे, कछु नहिं चलो उपाय ॥१६॥

पद्धड़ी ॥

तब उलटे भट चाले तुरन्त । जा सुमत प्रते भाषो वृतन्त ।
हमने कीने बहु बिध उपाय । पण तिसको मार सके न राय १७
ऐसे सुन पापातम अयान । सब चाकर प्रति बच इम बखान ।
कोई है तुममें बलवन्त भाय । जै सेन नृपतिको हने जाय ॥१८
ऐसे इसके बच पाप धाम । सुन राजपुत्र सुहि मार नाम ।
सो कहत भयो सुन अवनि कन्त । मैं ताको मारूंगो तुरन्त १६
ऐसे कह अघकारी हिमार । पहुंचो श्रावस्ती पुर मंझार ।
श्री वृषभ मुनीके पास जाय । दीक्षा लीनी धर कुटिल भाय २०

दोहा ।

यह अघ पंडित गुरु निकट, तिष्ठे माया धार ।
नृपति मारने के अरथ, निस दिन करे बिचार ॥२१॥

छप्पय

इस अन्तर जै सेन भूप धर मातम सुन्दर ।

मन में धर उत्साह गयो श्री जिनवर मन्दिर ।
प्रभुपद अर्चा कीन बहुरि श्री गुरुवर भेंटे ।
अस्तुति बहु विध करी सरव अघसंचित मेटे ॥२१॥
जैन जन समुदाय किये मंदिर बाहर सब ।
आय मुनी के चरन कमल ढिग तिष्ठे इह जब ॥
विनती कर नृप जान हेत नमियों सिर नाई ।
तब वह बोधहि भेष धार धारी अन्याई ॥ २२ ॥

दोहा

इन जै सेन नरिन्द्र को, मार भगो तत्कार ।
अहो बोध पापी महा, या जग में अघकार ॥ २४ ॥

चौपाई

तबही वृषभ नाम ऋषि चंद । ऐसो कारन लख दुख वृन्द ।
होया होय सु जानन हार । मन मांही इम कियो विचार ॥२५॥
भूतल में आवैंगे येह । मुनि ने हनी नृपति की देह ।
याते दर्शन होय मलीन । ऐसे मन में निश्चय कीन ॥ २६॥
तब श्री मंदिर जी की भींत । तापै अक्षर लिखे पुनीत ।
बोधमती पापी जु हिंसार । आयो जुत मुनि भेष सुधार ॥२७॥
ताने यह जैसेन नरिन्द्र । मारो है निश्चय गुण वृन्द ।
इह विधि लिख कर श्री मुनिसार । छुरिका थाने निज उदर विदार ॥२८॥
मेरु शिखर सम निश्चल चित्त । धारो तब सन्यास पवित्र ।
सुरग विषे सुख उपजे येह । बहु विधि ऋध लहि सुंदर देह ॥२९॥
अब जय सेन तनो सुत आय । वीरसेन नामा सुखदाय ।
मृतक तात अरु मुनि को देख । मनमें दुःखित भयो विशेष ॥३०॥
देख भींत में अक्षर सार । बांचे वीरसेन नृपसार ।
सबै भेद [illegible] । [illegible] निज [illegible] ॥३१॥

दोहा।

श्री जिन भाषित धर्म में, कर निश्चै सर धान।
मुनिवर की स्तुत करत, गयो सु अपने थान ॥ ३२ ॥

गीता छन्द ॥

दुष्टातमा जिन धर्म में बहु दोष लावत हैं सही।
तौ भी सदा निर्मल रहै यह अतुल महिमा इन गही।
जिम बादरौं में भानु आवत निज प्रकाशन तजतहैं।
तिम धरम रविको अभ्र मिथ्या रोक नाहीं सकत हैं ॥३३॥
अब जिन श्री अरिहन्त तुमको सदा मंगल दो मुदा।
जिनके चरन को सकल सुरनर भक्ति कर पूजत सदा।
तिनको धरम पातक निवारन नास भव दुख करतहै।
सुर मोक्ष दाता है जगत में सकल कालुष हरत है ॥ ३४ ॥

दोहा

सोई धरम हिये धरो, अहो भव्य धीमान।
तन धन अथिर निहार के, कीजे निज कल्यान ॥३५॥

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषै वृषभ मुनि तथा जैसेन राजाकी कथा समाप्तम् नं० ८१ ॥

अथसकढालमुनिकीकथाप्रा०नं०८२

मंगलाचरण ॥ सोरठा ॥

सरम तने दातार, तीन जगत हितकार।
ऐसे जिन अविकार, तिन पद कंज नमूं अबै ॥१॥
कथा कहूंहित कार, श्री सकटाल मुनीश की।
सुनों भव्य चित धार, तातै बहु कल्याण है ॥२॥

चाल मेघकुमार की

पाटल पुत्र नगर विषै जी नन्द नाम भूपाल।

ताके सन्मुख जिन पती जी, नाम ज्ञान सुकुमाल ॥
रे भाई लिए तन मन धारन ॥ ३ ॥
दूजो त्यक परधान है जी, बर गादि नाम अयान ।
इन दोनों मय पुन किंध जो, थे रहे अधिकान ॥
रे भाई यह जग में हुशयार ॥ ४ ॥
एक दिना पुर बाहरे जी, लोट आ उद्यान ।
तामें संग नगर सभी जी, गया एक तप ध्यान ॥
रे भाई ध्यान थिरता धार ॥ ५ ॥
बैठे हैं ऋषि वृंद वे जी, जिन तत्त्व ज्ञानन्त ।
तिन के दिग जाती भये जी, गह सकल गन तुरन्त ॥
रे भाई नमन किया गिरनार ॥ ६ ॥
फिर सुन्य मार्ग, इन सुनो जी, धर्म जु दोय प्रकार ।
यामें उत्कृष्ट मुनि पद भयो जी, यह धर्मा तिर धार ।

दोहा

मुनि धूरत शकटाल यह, भिक्षा मिसकर आय।
तेरे महल बिषै प्रभू, कर के गयो अन्याय ॥ १२ ॥
अहो जगत में दुष्ट जे, दुरगत जावन हार।
क्या क्या अघ नहिं करत हैं, सब ठानें निरधार। १३।

चौपाई

नंदराय ताके सुन बैन। क्रोध युक्त कर रातें नैन॥
तबही मुनि के मारन हेत। दुष्ट सुभट भेजे जिम प्रेत।१४।
अहो मूढ़ बुद्धी नर जेह। दुरजन कर बहकाये तेह॥
भलो बुरो नहिं जानत कोय। कुत्सित काज करे मत खोय।१५।
या अंतर श्री मुनि सकटाल। भट आवत देखे जिम काल॥
मंत्री की चेष्टा सब जान। तब सन्यास मरनमत ठान।१६।
सहित समाधि तजी निज काय। स्वर्ग लोकमें उपजो जाय॥
अहो दुष्ट दुष्टाई करे। तौ भी सज्जन सुख बिस्तरे॥ १७॥
अब इह नंदराय तिह घरी। श्री मुनि बरकी प्रज्ञा करी॥
इनको जानो तब निर्दोष। चित्त चेतकर छोड़ो रोष॥ १८॥
महा पद्म मुनि के ढिग जाय। पूजे चर्न कमल चितलाय।
भली सम्पदा को दातार। श्री जिन धर्म सुनो तिहबार।१९।
निज निन्दा गर्ही नृप ठान। पूजा दान करी अधिकान॥
अहो पाप मई संगति पाय। खोटी बुधि धार अधिकाय॥२०॥
फेर गुरुको पाय संयोग। वेही नर गहें धरम मनोग॥
ताते भवि जन सुर शिव हेत। सेबो गुरु पद होय सचेत॥२१॥

काव्य

अबै ग्रंथ करतार कहैं सुन लो बुध मन कर।
सम्यक दर्शन ज्ञान चरित तप रतन पुंज वर।

सो आराधन दास वर्नी जिन सूत्र मंझारी ॥
प्रथम रची चितलाय ज्ञान वारिध के धारी ॥ २२ ॥
तिन ही के अनुसार करी गुरु प्रभा चन्द्र मम ।
उनही के परसाद कही बुध सारु अब हम ॥
मुक्ति सम्पदा हेत और यामें नहिं कारन ।
अथवा शुद्ध प्रयोग पुन्य संचय अघ टारन ॥ २३ ॥

सोरठा

कथा यही सुखकार, कहि बखतावर रतन ने ।
संस्कृत अनुसार, पंडित पढ़ो सुनो सदा ॥ २४ ॥

इति श्री आराधना सार कथा कोष विषै सुकुमाल मुनि की कथा समाप्तम्

अथ श्रद्धाधारी सत्य पुरुषन की कथा ८३

मधुमालती छन्द ॥

अति निरमल परकाश ज्ञान तिनको त्रयजगमें ।
ऐसे श्री अरिहन्त सीस नाऊं तिन पग में ॥
कहूं कथा सत्पुरुष जनन को है जो प्यारी ।
सुनो सुमन चितलाय जिन्होंने श्रद्धाधारी ॥ १ ॥

चौपाई ॥

।सोहै शुभ कुरु जांगल देश । तामें हस्त नाग पुर वेश।
विजयधर ताको है स्वाम ।,विनयवती नामा तिस भाम ॥ २.॥
तिस नरपति के सेठ महान । वृषभ सेन नामा बुधवान ।
नार वृषभ सेना सुखधाम । गुण उज्जल सुत है जिनदास ॥३॥
इस अन्तर विजयंधर राय । कामा शक्त रहे अधिकाय ।
ताके नार्ने तने परमाद । उपजी तनमें दीरघ व्याध ॥४॥
ज्यों पाप सेवन जग मांहि । शांन्त अर्थ सो होवे नांहि ।
तातें बुध जन तजिये भोग । आतम कारज करो मनोग ॥५॥

जब यह नरपति बहु दुख पाय । वैदन को दिखलायो काय ।
काहू नहिं जानो तिस भेद । ढूंडे सबै चिकित्सा वेद ॥ ६ ॥
अब इसको जो है परधान । श्रावक सिद्धारथ गुणवान ।
गयो जहां तिष्ठे मुनि [illegible] पादौषधि ऋध धर अमंद ॥ ७॥
तिनके चरन कमल [illegible] तत्काल ।
सर्व रोग को नाशन [illegible] मैं जानो दुखकार ॥ ८॥
श्रद्धादिक गुण धार नरिन्द । [illegible] आनन्द ।
सबै व्याधनासी तिहबार । जिमरवि उदै नसे अंधियार ॥ ९ ॥

दोहा ।

अहो मुनी के तप तनी, महिमा को बरनाय ।
जिनके चरनोदक थकी, नसे व्याध दुखदाय ॥१०॥

सोरठा ॥

फिर सिद्धारथ एह, वोही जल औरन दियो ।
जेंथे दःखित देह, पीकर निर्मल तनभयो ॥ ११॥

काव्य ॥

ऐसे वे मुनि राज पाद औषधि ऋध धारी ।
गुण वारिध जिन तत्व जानने में अधिकारी ।
सब जीवन हित कार देत उपदेश अतुल बर ॥
सो मुझको कल्याण अर्थ हूजे निसि बासर ॥१२॥
अहो जिनेश्वर धर्म करम में रत जे प्रानी ।
किंचित सरधा करत दुरित नासै दुखदानी ॥
देव इंद्र षट खंड पती याही ते हो हैं ॥
याकी महिमा वर्न सके ऐसो कवि को हैं ॥१३॥

दोहा ॥

किंचित श्रद्धा देत यह, करे विशेष जो कोय ।
केवल पर उद्योत धर, शिवपुर पावे सोय ॥१४॥

सोरठा ।

मोहि अल्प मति जान, कवि उर में धारत सदा ।

गुरु सुरनको कल्याण, करतो पूजो जिन मनें ॥१४॥

[illegible]

अथ आत्मनिंदा रत्नाकर की कथा नं० ८३

[illegible] छन्द ॥

सब इन्द्र चन्द्र कर वन्दत जिनके चरण सरोज विशाल ।
ऐसे श्री अरिहन्त देव जिन तिनको ना करके निज भाल ।
जाने आतम निन्दा कीनी ताहि [illegible] कथा रसाल ।
पावो फल पाले सुखकारी सो सुनियो भवि ना श्रम टाल ।

इह प्रकार के बचन सुन, ह्वै चकित चित राय।
बुद्धिमती के मुख तरफ, लखन लगो बहु भाय ॥ ९ ॥

चौपाई।

जब कन्या जानो तिह थान। यह मूरखराजा अधिकान।
कूड़ प्रछान की फिर वार। पहले तो पटदियो उघार ॥ १० ॥
दूजो कूड़ विषै चित्राम। देखन लागा नृप तिह ठान।
जब भी जानो कन्या येह। मूरख नृप है बिन संन्देह ॥ ११ ॥
यह सब कारन लख नरपाल। बुद्धिमती परनी तत्काल।
हर्षित ह्वै पटरानी करी। सब अन्ते वर में तिह धरी ॥ १२ ॥
अहो जगत में जे भवि जीव। पुण्य उदय गुण लेह अतीव।
सोई करें प्रकाश अपार। यामें जातेन भेद लगार ॥ १३ ॥
अब इन सेवा करन अनेक। आवें बहु तिय रहित बिबेक।
चलती विरयां या सिर बीच। मार धौल जावें बे नीच ॥ १४ ॥
तब इह बुद्धि मती दुख पाय। क्षीण शरीर भई अधिकाय।
अपनो दुख काहू नहिं कहे। गह कर मौन सु वैठी रहै ॥ १५ ॥

काव्य।

इस अन्तर जिन धाम सर्व पापन को हर्त्ता।
तामें चैत्य मनोग सर्व सिद्धन के कर्त्ता ॥
तिन आगे यह बुद्धिमती बहु भक्त धार उर।
अपनी निन्दा ठान वीनती तबै येम कर ॥
अहो जिनेश्वर चन्द सुरग शिव के हो दायक।
तुमरे चरन सरोज नमत त्रय जग के नायक ॥
हे भगवान महान हीन कुल मैंने पायो।
काको दीजे दोष करम यह पूर्व कमायो ॥ १७ ॥
ताते दीन दयाल शरन चरनन की लीनी।

दुःख अनन्त के नाश हेत हो वृष्टि नवीनी ॥
काम क्रोध दुर्गति और जो हैं जगत में ।
तिनको दुरित नाश नहीं तब नेह भगति में ॥१८॥

दोहा ।

इह विधि निज निंदा करत, गई सो निज आगार ।
सदा बैठ एकान्त में येही करत विचार ॥ १९ ॥
फिर नर नायक एक दिन, याते पूछो येम ।
प्यारी दुर्बल देह तन, सो भाषो धर प्रेम ॥ २० ॥

सोरठा ।

तब याने कछु नाह । उत्तर दीनो भूप को ।
बैठ रही घर मांहि, सुमरे जिन नायक सदा ॥२१॥

चौपाई ॥

इक दिन श्रीमति जिनवर गेह । गयो नृपति वंदन धर नेह ।
पीछें पटरानी तहँ जाय । विनती कीनी नारी भाय ॥२२॥
तब नरपति जिन ज्ञानी येह । याको दुखको कारन जेह ।
जयवती धरने पुर्वो नार । तिनसों कीनो यह विस्तार ॥२३॥
अतिशय करके नारी परी । पायो पट देवी फिर करी ।
ताको भव्य जो प्यारो हेत । लेवो प्रतिमा भक्ति समेत ॥२४॥
ता आगे निज निंदा करी । ताते यह सुख फल विस्तरी ।
जिनपद भक्ति सदा हितकार । नाश दुःख में उपजावन हार ॥२५॥
दुर्गति नाशन शुभ गति देत । परमपद सोच्य ह्रदेत ।
सो जे भव्य करों नरपाल । मेरे जिनेंद्र सों गुण माल ॥ २६ ॥

दोहा ।

आतम निंदा जिन करी, तिन पायो फल सार ।
ताते है सुखकर नार, करो भ्य यह परकार ॥२७॥

अथ आत्म निन्दा कथा प्रा० नं० ८५।

मङ्गलाचरण ॥ दोहा ॥

सबै दोष नाशक प्रभू, सर्म तनै दातार।
तिनको नम भाषूं कथा, निज निंदा जिनकार ॥१॥

पद्धरी ॥

नगरी साकेता के मझार। नृप दुरयोधन है न्यायधार।
श्री देवी नामा तास भाम। जुत प्रीत जु तिष्ठै आप धाम ॥२॥
ताही नगरी के बीच मान। रहे उपाध्याय सर्वोप जान।
ताके तिय बीरा नाम गेह। जोबन मंडित उनमत्त देह ॥३॥
अब विप्र तनो इक शिष्य नीच। रहि आन भूत इस गेह बीच।
तिस संग रमै पापन अयान। पति वृद्ध जान कर हने प्रान ॥४॥

दोहा।

रात्रि अंधेरी के विषै, इह पापन अति नीच।
ताकी काय उठाय के, धरी छीतरी बीच ॥ ५ ॥
लेकर चली मसान में, ताको डारन येह।
तहँ को रक्षक देव इक, रोस युक्त भयो तेह ॥ ६ ॥

चौपाई।

सहित छीतरी मस्तक तास। कील दियो अर ऐसे भाष।
होत प्रात तू घर घर जाय। सब तियते निज भेद सुनाय ॥७॥
जो तैने कीनो अघ घोर। अपनी निंदा कर कर जोर।
तब तेरे मस्तक ते येह। छूटे छीतरी निःसंदेह ॥८॥
जब याने येही बिध करी। उतर छीतरी भूं पै गिरी।
निज निंदा कर बारम्बार। भई सो निर्मल नगर मंझार ॥९॥
तैसे ही जे भवि गुण रास। निज निंदा ठानो गुरु-पास।
पाप सबों उरके अधिकाय। जाते निरमलता बहु भाय ॥१०॥

आगें ननक श्री फांस जो होय । बहु विध नन में गालन सोय ।
तार्के निरन्तर ने सुख पाय । आकुल नाम धर्यो सिरनाय ॥८१॥
ऐसे श्री जिन सूत्र उदार । ताकर पंडित श्री मुनि सार ।
तिन को निन्दन कर बहु अंत । अपने दोष प्रकाशे संत ॥८२॥
तिन गरहा कर सम्य निवार । श्री अर्हन्त नमो सुखकार ।
तातें सब आप होत विनाश । मङ्गल थापें नित प्रति तास ॥८३॥

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषै [illegible] कथा
समाप्तम् [illegible] ८५ ।

अथसोमशर्ममुनिकीकथाप्रा०नं०८६

दोहा ।

विष्णुदत्त दुज देख तिस, पकड़ लियो तिह बार ।
कहत भयो सुनलो मुनी, तुम धन लियो उधार ॥ ९ ॥
सो अब मोको दीजिये, रंचक देर न ठान ।
सुत तुम्हरे दारिद्र जुत, वे क्या देय निदान ॥ १० ॥

सोरठा ॥

जो नहिं धन तुम पास, तन अपनो अब बेचकर ।
दो मोको गुणरास । छिन विलम्ब नहिं कीजिये ॥११॥

काव्य ॥

ऐसे याके बैन सुने मुनि सत्तम जबही ।
बीरभद्र गुरु पास जाय इन भाषी सबही ॥
तब उन कहो मशान मांहि तप बेचो जाई ।
जो कोई लेवे मोल करज निज देहु चुकाई ॥१२॥
ऐसे गुरु के वचन सुनत चालो ततकारी ।
गयो मंडस्थल थान तहां इम गिरा उचारी ॥
कोई तप मुझ मोल लेहु तो बेचूं भाई ।
सुनते ही परतच्छ तहां इक देवी आई ॥१३॥
कहत भई सिर नाय अहो स्वामी सुन लीजे ।
धरम बस्तु है कौन जिसे बेचो कह दीजे ॥
तब बोले गुणवान मूल उत्तर गुण सारे ।
दश लच्छण जिन कथित धरम सो जान हमारे।१४।

दोहा ।

ऐसे सुन अमरी तबै, हरषित ह्वै सिर नाय ।
प्रगट वचन कहती भई, भक्ति हिये में लाय ॥१५॥
प्रभू धरम जग वश करन, चिन्ता मणि सम येह ।
काम धेनु अमृत तनो, सुख रूपी है मेह ॥ १६ ॥

चौपाई ।

अहो बहुत कहनेकर कौन । तीन लोकमें वृष सुख भौन ।
हे सर्वोत्तम श्री मुनिचन्द । यह जिन धर्म महा गुणबृन्द ।१७।
ताको मोल तुच्छ में जान । को समर्थ लेवे इम थान ।
अहो जबे तुम दीक्षा धरी । बाल लोंच कीने जिह घरी ।१८।
ताके लेश तनो जो मोल । देहूं मैं तुम देहु अतोल ।
ऐसो कहकर तिसही थान । रतन पुंज दे दीप्य सु मान ।१९।
देवी ने कीने तत्काल । फैली दश दिशि रश्म विशाल ।
अहो जिनेन्द्र धर्म जग सार । को महिमा तिस बरननहार ।२०।

दोहा ॥

अब परभात समै भयो, विष्णुदत्त तहँ आय ।
तप रूपी सम्पत तनो, देखो मुनि पर भाय ॥२१॥
तबही मुनिपद कमल में, नम इम विनती कीन ।
धन्य धन्य तुम धीर ऋषि, जैन तत्त्व परवीन ॥२२॥

॥ सवैया तेईसा ॥

हे जग नायक दीन दयाल सु मोह विरक्त महा तपधारी ।
मोह हनो निज करम संयोग जु सम्पत रूप महा यश पारी ।
सो अब आय नैन पर कंज कि मन भई अभिलाषा जिनधारी ।
या विधि भक्ति अनेक धरी निज निंद करी दुज राज अघारी २३

जमना सरिता के मधिजाय । जल थंभन विद्या पर भाय ।
जल पै जाय करै यह मूढ़ । मूरख भेद न जानत गूढ़ ॥
विस्मय बहु विधि चित में धरे । याकी सेवा नित प्रति करे ।
अहो मूढ़ जन जे जगवीच । मूढ़ क्रिया में रत है नीच ॥७॥

काव्य ॥

इस अन्तर वैताड़ तनी दक्षिण श्रेणी वर ।
है रथनू पुर चक्रवाल पुर अधिक मनोहर ॥
विद्युत प्रभ नर धीश तहां श्रावक व्रत मंडित ।
विद्युत वेगा नार धरे हरि भक्ति अखंडित ॥८॥
दंपति करत विनोद पुरी कोशांबी आये ।
जमना सरिता तीर गये चित में हरषाये ॥
तहां माघ के शीत विषै मिथ्या तज हरकर ।
दुःखित वो सु प्रतिष्ट लखो बैठो जल ऊपर ॥६॥

दोहा ।

ऐसे लख कर के तब, विद्युत वगा नार ।
ताकी परशंसा करी, मुखते बारम्बार ॥१०॥

पद्धड़ी ॥

तब विद्युत प्रभ खगधीश सन्त । रानी से इह विधि वच कहन्त ।
हे प्यारी तेरे पास आय । दिखलाऊं इस मूरख प्रभाय ॥११॥
इमकह जुग कर मातंग वेश । ले मलिन चाम धोवें विशेष ।
सब सलिल कियो मलीन । तबही बंधक मन रोष कीन ॥१२॥
बोलो हा कष्ट जोर । ऊपर स्नान कियो बहोर ।
जाप करन लागो तुरन्त । मूरख क्या क्या नाहीं करन्त ॥१३॥
फिर याके परखन को मलीन । सो भी जल दूषित बहुरि कीन ।
जल कोमलता छूट जाय । पै ऊपर तिष्ठो दुखित काय ॥१४॥

दोहा।

इह विध दम्पत तेन जहां, यूंही कियो बहु धार।
तब मंजन अरु जाय तज, भजो मृह दुख धार ॥ १५ ॥

चौपाई।

अब ए दम्पति बन के मांहि। क्रीड़ा महल नृत्य अधिकाय।
नभते असवारी चालन्त। इत्यादिक दिखलाय तुरन्त ॥ १६ ॥
इम लख बंधक अचरज धार। मन में इह विधि करत विचार।
देखो सुर विद्या धर जेह। ऐसी चेष्टा करत न तेह ॥ १७ ॥
जैसी इन चंडालन पास। विद्या तिष्ठत है सुखरास।
जो कदाचि मेरे पै होय। ठगा करूं मैं सब ही लोय ॥ १८ ॥
इम विचार कर इन के पास। आन करी ऐसे अरदास।
हो भ्राता तुमरो कित धाम। किह विध किया करो अभिराम ॥ १९ ॥
तुमरी चेष्टा लख बुधिवंत। मेरे आनंद भयो अत्यन्त।
ऐसे सुन बोलो चंडार। क्या तू हम जानत नहिं सार ॥ २० ॥
हमरी जात जान मातंग। गुरु पद सेवे सदा असंग।
तिन तोषित कर के पे सार। विद्या दीनी सुख करतार ॥ २१ ॥
तिस ही विद्या के परभाव। यह क्रिया कीनी अधिकाय।
तब बंधक बोलो इम बैन। मोको विद्या दो सुख दैन ॥ २२ ॥

दोहा।

तब मातंग सों इम कही, तुम उत्तम कुल सार।
बद बेद अंगन तनो, जानन हो व्यवहार ॥ २३ ॥
विद्या गुरु की भक्ति बिन, किह विध आवे धीर।
याते तुम को सिद्ध नहिं, होवे साहस धीर ॥ २४ ॥

सोरठा।

जो पर भक्ति अगाध, कर अष्टांग इह विधि करो।

जीवूं तव परसाद, तो विद्या देवे सही ॥२५॥
नव बंधक सिरनाय, ताही विध करतो भयो ।
जब दम्पत हरषाय, दे विद्या निज थल गयो ॥ २६ ॥

अडिल्ल ॥

अब इह बंधक सुन्दर विद्या पाय के । नाना क्रीड़ा कीनो चित हरषाय के । भोजन समै उलंध भूप ढिग आइयो । तिन पूछी भगवान देर कहँ लाइयो ॥ २७ ॥

तब इह अनरथ बादी लम्पट इम कही । हो नरिन्द्र मम बैन सुनो चित देस ही । बहुत काल जो मैं ने सुन्दर तपकरे । ताकर ब्रह्मा हर हरि भक्ति विषै भरे ॥ २८ ॥

आकर मेरे पास करा पूजा भली । फेर गये निज धाम चित्त धरके रली । अब मम आवन जातन होत आकास में । ताते आयो ढील धार तुम पास में ॥ २९ ॥

दोहा ।

तब धन सेन नरेश ने, कही प्रात गुरु आय ।
मोको सबै दिखाइयो निज चेष्ठा सुखदाय ॥ ३० ॥
तब बोली दिखलाय हूं, तुमको प्रात जु काल ।
इम कह भोजन कर तबै, जात भयो तत्काल ॥३१॥

चौपाई ।

` दिन नृप सभा मझार । आकर इह कपटी तिह बार ।
दक को रूप महान । दिखलावन को उद्यम ठान ॥३२॥
तितने ही दम्पति खग वेह । धर चंडाल रूप को तेह ।
आये सभ्भ विषै हरषाय । लखकर बोध यही दुख पाय ॥ ३३ ॥
कहत भयो इह जुग विकराल । कितते आये दुष्ट चँडाल ।
ऐसी गिरा जो इन उच्चरी । विद्या नष्ठ भई तिहघरी ॥ ३४ ॥

... बोलो सुन नाथ। कारन कौन भयो कहो बात।
तब उसने सारो विरतन्त। भूपतिसे भाषियो तुरन्त ॥ ३५॥
तब दम्पति नृपको शिरनाय। निज विद्या लीनी हरषाय।
लय परीक्षा इसकी जबै। अपने धाम पधारे तबै ॥ ३६ ॥
इक दिन नृप धन सेन सुगात। सभा सिंहासन पर तिष्ठात।
ताही छिन वे जुग मातंग। आये नृप ढिग पुलकित अंग ।३७॥
देखनहीं नरपति तत्काल। भक्ति सहित नायो निज भाल।
कहत भयो ह्वै हर्षित गात। तुम प्रसादते जीयूं मात ॥ ३८॥

सोरठा

तब विद्युत प्रभराय, विनय सहित इस के वचन।
सुनके चित हरषाय. अपनो रूप प्रकाशियो ॥ ३९ ॥
विद्या दीनी सार, तबही नृप धनसेन को।
गये सु निज आगार, दंपति बहु सन्तुष्ट ह्वै ॥ ४० ॥

दोहा

अहो गुरों की विनयतें, को कारज नहिं होत।
तातें गुरु के पद जजो, यही भव दधि पोत ॥ ४१ ॥
ऐसे लख धन सेन नृप. और भव्य निह वार।
विद्युत वेगा खेचरी सम्यक व्रत हिय धार ॥ ४२ ॥

काव्य

त्यहो और भी भव्य जीव निर्मल मन धारी।
निस दिन गुरु को विनय करो सुर शिव सुखकारी।
जिनकी भक्ति महान सबै कारज की कर्ता।
सोई हमारे चित्त रहो नित प्रति दुख हर्ता ॥ ४३ ॥
येही गुरु पवित्र सदा निज आतम ध्यावें।
आप तिरें भव सिन्धु और को पार लगावें ॥

देव इन्द्र पद कमल जजें तिनके हितकारी।
जिनवर नये पुरान तास में विनय उचारी ॥ ४४ ॥
तिनही के अनुसार सदा तिष्ठ मुनि नायक।
सोई विनय पवित्त धरें जैनी सुखदायक ॥
जिन के लक्ष्मी कीर्त्ति कान्त ज्ञानादिक सारे।
होवें निकट तुरन्त प्रीत नाना विस्तारे ॥ ४५ ॥

दोहा

ऐसे गुरु के चरन को, बन्दों बारम्बार।
जातें सब कल्याण है, बढ़े बुधि अधिकार ॥ ४६ ॥

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषै विनियाख्यान कथा समाप्तम् नं० ८९॥

अथअवग्रहाख्यानकथाप्रारम्भः नं० ६९

मंगलाचरण ॥ सोरठा ॥

सुखदाता अरिहन्त, तिन पद शीस नवाय के।
निज हितकार अत्यन्त, कहूं कथा उपधान की ॥ १ ॥

चाल छंद

अहिछत्तपुर में नृप जानो। बसुपाल चतुर अधिकानो।
जिन भक्ति हिये अधिकारी। गृह शोभे बसुमति नारी ॥ २ ॥
इक दिन भूपति बड़ भागी। जिन धर्म विषै धी पागी।
में उत्तम अधिकाई। दै दीप्य मान सुखदाई ॥ ३ ॥
सहस कूट जिन धामा। बनवायो अति अभिरामा।
तामें अघ नाशन हारी। शोभायमान अधिकारी ॥ ४ ॥
प्रतिमा प्रभु पारश केरी। पधराई क्रान्ति घनेरी।
भवि ताको पूजें ध्यावें। पुनि संचय पाप नशावें ॥ ५ ॥

पद्धड़ी ॥

इस अन्तर लह नृप हुकम सार। गंजो नामा जो लेप कार।

गल भर्जा गहन कना निधान। दिनमें प्रतिमाके लेप टान।६।
गोगन्त्रि रिप बोलिए जाय। गि पढ़ ने जिन परन सोग।
तब राजादिक जनको तुरन्त। पीड़ा जुत भय उपजे अत्यन्त।७।
जब ऐसे विघ्न भूपाल होय। कारन नहिं जानो जात कोय।
इक दिन यह राजा लेपकार। अपने चित माही इम विचार।८।
है देव विघ्न चरय येह। यामें जानो नाहीं सन्देह।
जब जाय मुनीश्वर चरन पास। इह विधको नेम लियो सुखास ९

दोहा

जोलों मेरा काज यह, होवे नाहि रसाल।
तोलों मांस सबै तजो, मैंने दीन दयाल ॥ १०॥

सोरठा।

यह परतिज्ञा धार, फिरके लेप लगाइयो।
तब हेरो सुख कार, लख राजा सुख पाइयो ॥११॥

चौपाई

जो यमनेम धरे नर कोय। तिनही के कारज सिध होय।
तब नृप वस्त्राभूषण सार। लेपकार को दिये अपार ॥ १२॥
बुध मनन कारज सिध हेत। सेवो ज्ञान भयोदधि सेत।
सो कैसो है ज्ञान महान। श्री जिन भाषित सर्म निधान।१३।
अतिशय सार ताको मुनिराज। तिन प्रति सेवत धर्म जहाज।
सुरनर विद्याधर शुभ चित्त। भक्ति सहित पूजत है नित्त। १४।
सर्व सिद्ध कर्ता यह जान। ताको सेवो भति मन आन॥
सोई ज्ञान श्रेष्ठ सब कान। मम हिरदे तिष्ठो गुणमान ।१५।

इति श्री ... कथा ... अपरप्रभास्याम की कथा समाप्तम

अथ बहुमान कथा प्रारम्भः नं. ६१

मंगलाचरण ॥ जोगी रासा

उज्जल केवल ज्ञान धरत वर जग जनको सुखदाई।
ऐसे श्री अरिहन्त जिनेश्वर तिनें नमूं सिरनाई ॥
कथा कहूं बहु मान तनी अब सुनो सुमन जन सारे।
तातें नित कल्याण सु बरते दुख दारिद्र परिहारे ॥ १ ॥

दोहा।

काशी देश विख्यात में, बानारसी विशाल।
तातें तिष्ठ शुद्धधी, वृषभ ध्वज भूपाल। २।
ताके पूरब पुन्य तें, बसू मती शुभ नार।
धरे रूप लावन्य अति, नृप को तासों प्यार ॥ ३ ॥

चौपाई

इस अंतर गंगा तट लसे। ग्राम पलाश नाम शुभ बसे।
तहां अशोक ग्वाल बुधवंत। ताके गोधन गेह अत्यन्त ॥ ४ ॥
सहस घड़े घृत सेती भरे। बर्ष प्रते नृप भेट सु करे ॥
गोप तनी इक नंदा नार। व्याह भई कर मन अनुसार। ५।
पुत्र रहित नारी को जोय। गोप तनो चित रुचे न सोय।
अहो रूपा शीलादिक धरे। पण सुत बिन तिय नेह न करे। ६।
फल बरजित बेल जु कोय। ताकी शोभा किह बिध होय।
से गोपर है जु उदास। पुत्र तनी राखे नित आस ॥ ७ ॥
फिर कितने इक दिनन मझार। पुत्र अर्थ सुनि ठान सुधार।
दूजी नार सु नन्दा नाम। परनत भयो तबै अभिराम। ८।
अब दोनों नारनके मांह। नित प्रति कलह रहे अधिकाइ॥
तब यह ग्वाल महा परबीन। अर्ध अर्ध घर बांट सु दीन। ६।

अब वां नंदा पहिली नार। कुंभ पात्र में घृत के तार ॥
नृपकों भेट करन के हेत। दान मान जुत पनको देत ॥१०॥

दोहा

हुती सुनन्दा कामनी, रूपादिक मद तास।
ताके गोधन को मदा, पय पवित्र सब दास ॥ ११ ॥
ताते घृत किंचित भयो, ताके गेह मंझार।
नृप के देन समै विषै, घृत मांगो तब ग्वार ॥ १२ ॥

सोरठा

जब नट गई तुरन्त, मेरे घृत घर में नहीं।
गोप भयो क्रुपवन्त, काढ़ दई इस नार को ॥ १३ ॥
नंदा सुख दातार, अपने पुन्य प्रसाद तें।
गृह मध द्रव्य अपार, ताकी मालकनी भई ॥ १४ ॥

काव्य

ऐसे ही जन और जैन कारज के मांही।
दान मान नित करो कदेही भूलो नांही ॥
शोभा जुत जिन चरन कमल सुर शिव के दायक।
अतिशय जुत वर धरम तथा तिनही के धायक ॥१५॥
अथवा गुरु पद कंज और सज्जन हित दाई।
तिनको कर सन्मान भक्ति ठानो अधिकाई ॥
ताही ते यश ज्ञान लहो अवनी के ऊपर।
अतिशय कर दे दीप्य मान सुख ठान विनय कर ॥१६॥

इति श्री आराधनासार कथा कोष विषय बहुमान कथा समाप्तम्

अथ निन्हव कथा प्रारम्भः नं. ८२

मंगलाचार। कवित

जिस भगवतके ज्ञान भान में सूक्ष्म सकल पदारथ जेह।

कर रेखावत दीखत हैं सब एक समै में निःसन्देह ॥
तिनके चरन कमलको नमिकर निन्हव कथा कहूं अब श्रेह ।
जाके पढ़ते पातिग नासे ताको सुनो भव्य धर नेह ॥ १ ॥

चौपाई

देश अवंती शोभावान । पुरी उज्जैनी ता मधि जान ॥
नृप घृत सेन तास में सार । मलियावती नाम पट नार ॥२॥
ताके चंड प्रघोतन नाम । उपजो सुन वर गुणको धाम ॥
रूप भाग लावन अधिकाय । पायो पूरब भव के दाय ॥३॥
इस अंतर शुभ दत्तन देश । बेना तठ पुर तामधि वेश ।
सोम शर्म तहँ दुज विख्यात । सोमा नारी जुत तिष्ठात । ४ ।
तिनके गुण विद्या को धाम । काल सदीव पुत्र अभिराम ॥
सो उज्जैनी नगरी आय । मिलो भूपते गुण दिखलाय । ५ ।
तब हर्षित होकर महाराज । सौंपो सुत पढ़ने के काज ।
अब यह दुज को पुत्र सुजान । याहि पढ़ावे बहु हित ठान ॥६॥
सुन्दर लिखन अठारे भाय । नृप सुत को दीने सिखलाय ।
आवै काल सदीव सुजान । है पवित्र आतम बुधि वान ॥७॥
देश मलेछ तमी लिय सार । सिखलावे यो राज कुमार ।
ताको कठिन चित्त में जोय । पढ़ी गई नहिं तापे सोय ॥८॥
तब दुज रिष जुत बचन बिख्यात । कह कर मारी याके लात ।
राजा को पुत्र अज्ञान । कहत भयो मुख ते इम बान ॥९॥

दोहा ।

गुरु लात तुमने दई, ताकर दुःखित देह ।
अहो राज जब मैं लहूं, काटूं तुम पग येह ॥१०॥
अहो बात यह युक्त है, बालक मत कर हीन ।
होत सबै जानत सही, हेया हेय न चीन्ह ॥ ११ ॥

पद्धरी ।

अब यह गुण उज्जल विप्र सार । नृप सुत को दे विद्या अपार ।
दक्षिण दिशको कीनो पयान । फिर भयो दिगम्बर बुद्धिवान ।१२।
इस अन्तर अवधृत सेन राय । निज सुत को राज दियो बुलाय ।
अरु आप महा वैराग्य धार । तप ग्रहण कियो आनन्द कार ।१३।
अब चंड प्रद्योतन राय सोय । तापे मलेच्छ की लिस कोय ।
आई पत्री उन काज अर्थ । ना बांचन कोई नहिं समर्थ ॥ १ ४
जब नरपति ले निजकर मभार । आपहि बांची हिय हर्ष धार ।
तबही निज गुरु को यादकीन । तिन निकटगयो यह अति प्रवीन

दोहा ।

युग पद की अर्चा करी, नमन कियो सिरनाय ।
भक्ति ठान हिरदे विषे, तिष्टो भूम लखाय ॥ १६ ॥
अहो श्रेष्ट गुरु को वचन, सदा भव्य हित कार ।
जैसे औषध कटुक है, करे रोग निरवार । ॥१७॥

चौपाई ।

अब श्री कालस दीन मुनिंद । जैन सूत्र जानन गुण वृंद ।
कोई भव्य स्वेत सन्दीव । ताको दीक्षा दे जगपीव ॥१८॥
फेर विहार कियो महाराज । आरज जन सम्बोधन काज ।
धर्म वृद्धि करके अधिकाय । विहरत विपुलाचल पर आय ।१९।
तहं शोभा जुत श्री महावीर । समो शरन में राजत धीर ।
सुख दाता सबके हित पाल । नंत चतुष्टय गुण जुत माल ।२०।
तिन की भक्ति वन्दना करी । काल सदीव मुनी हित धरी ।
निरमल भाव किये अधिकाय । फिर तिष्ठे मुनि कोटे जाय ॥२१॥
अब मुनि स्वेत सदीप सजान । समोशरन बाहर गिरि थान ।
आतापन नहें ध्यान लगाय । तिष्टे आलस में मन लाय ॥२२॥

ताही छिन श्रेणिक भूपाल । समोशर्नं ते निकसत काल ।
स्वेत सदीव मुनीको देख । नुत कर पूछत भयो विशेष ॥२३॥
तुमरे गुरु को है ऋषि चंद । मोहि बताओ अवगुण वृंद ।
तब उन कही श्री महावीर । मेरे गुरु हैं हे नृप धीर ॥२४॥
ऐसे बचन कहत तत्काल । स्याम शरीर भयो तम जाल ।
फिर नृप समोशरन में जाय । गोतम ऋषिते प्रश्न कराय ।२५।
कृष्ण शरीर भयो मुनि तनो । ताको कारन प्रभु अब भनो ।
जब श्री इन्द्र भूपति इम कही । हे नर धीश सुनो अब सही ।२६।
वाने मुझको नाम छिपाय । ताते स्याम भई तिस काय ।
ऐसे सुत भूपति गुण रास । आयो तबही इन मुनि पास ।२७।
भक्ति सहित शुभ बचन बखान । सम्बोधन कीनो अधिकाय ।
तब श्री स्वेत सदीव महन्त । निज निन्दा कीनी बहु भन्त ।२८।
निरमल शुकल ध्यान चित धार । चार घातिया करम निवार ।
लोका लोक प्रकाशक भान । ऐसो पायो केवल ज्ञान ॥२९॥

दोहा

तीन जगत कर पूज है, फिर पहुंचे निरवान ।
आतमीक सुख भोगवें, आवागमन सुहान ॥ ३० ॥

काव्य

अहो भव्य गुरु नाम कदेही नांहि छिपावो ।
सदा काल हिय धरो स्वर्ग शिव को जो पावो ॥
वो श्री स्वेत सदीव केवली, मुझको अब ही ।
भवसागर ते काढ़ दीजिये, शिव सुख सबही ॥ ३१ ॥
कैसे हैं वे ज्ञान सहित गुण निध सुखदायक ।
देव इन्द्र खगधीश नमें तिन चर्न सहायक ॥
भव्यन को भव पार करन को पोत समाने ।
नंत चतुष्टय युक्त दोष अष्टादश भाने ॥ ३२ ॥

दोहा

तिनके पद अरविंद को, कवि नावे निज भाल।
सबै उदंगल टार के, दीजे सुःख विशाल। २३।

इति श्री आराधनासार कथा कोष विषय निन्हवाख्यान की कथा समाप्तम्

अथ व्यंजन हीन कथा प्रारम्भः नं. ८३

मङ्गलाचरण। दोहा

श्री जिनेन्द्र के पद कमल, वन्दों शीश नवाय।
व्यंजन हीन कथा कहूं, भविजन को हित दाय॥

कवित्त

मगध देश में राज ग्रही नगरी भली। वीर सेन नरधीश कुनय नाशक वली। ताके सुन्दर नार वीर सेना कही। सिंह नाम सुत तिनके ग्रह उपजो सही॥ २॥

सोम शर्म तहं पाठक शास्त्रन को धनी। तापै सिंह कुमार पढ़त विद्या घनी। इस अन्तर इक देश सुरम्य महान है। ता मधि पोदन पुर बहु सर्भ सुथान है॥ ३॥

दोहा

ताको नरपति सिंह रथ, ता ऊपर रिपु धार।
धीरसेन भूपति चढ़ो, जा पहुंचो तत्कार॥ ४॥

चौपाई

तहां पहुंच धर्मा शुभ हेन। निज ग्रह भेजी हर्ष मैन।
ता मांही लिखियो इह भेन। यह कागज कारना बुधिवंत॥५॥

“ हन–सिंघ,ध्यापयितव्य।

भाषा–सिंह पुत्र को पढ़ावना। तब वो पढनेवाला विचार करता भया! इस शब्द में सिम्मन मिलाना इस धातु का संयोग है। ऐसा जानकर करता भया, भजाहिय लिखे निन्दा

करो। सिंह पुत्र को मत पढ़ावो, ऐसे अकार का लोप करते सन्ते उस के बांचने में भ्रम होता भया, तब सिंह पुत्र को न पढ़ाया सो आचारज कहें हैं मूर्ख की चेष्टा को धिक्कार है।१।

चौपाई।

अब वो बीर सेन नर राय। निज नगरी आयो उमगाय॥
जिस कारन नहि पढ़ो कुमार। सो सबही जानी निरधार।६।
तब नृप क्रोधधार परचंड। पढ़नहार को दीनों दंड॥
देखो आलस है दुखदाय। यातें अर्थ काज नस जाय॥७॥
जैसे भेषज गुण नहि धरे। तन बेदन कहो किह विधि हरे॥
तिम अच्छर गुण ब्यंजन हीन। पढ़त नहीं जे शुद्ध प्रवीन॥८॥

दोहा

तातें अच्छर शुद्ध कर, अथवा अर्थ बिचार।
पढ़ो सदा धीमान नर, जो चाहो सुख कार॥ ९॥

इति श्री आराधनासार कथा कोष विषै व्यंजन हीन कथा समाप्तम्

अथ अर्थ हीन कथा प्रा० नं. ९४

मंगलाचरण। काव्य

सब मंगल में पूजनीक जिन के पदाब्ज बर।
अर्चैं देव सदीव तिनों को नमस्कार कर॥
ऐसे श्री अरिहन्त देव को ध्या कर के अब।
अर्थ हीन की कथा कहूं सुनि लीजे भवि सब॥ १॥
देश विनीता विषै अयोध्या नगरी जो है।
बसूपाल भूपाल बसू मति नारी सो है॥
तिनके चतुर कुमार भयो बसु मित्र नाम तिस।
गुण उज्जल एक गर्ग नाम पाठक बर बुध जिस॥ २॥

चौपाई

इस अंतर आवन्ती देश। तामधि पुरी उजैनी बेश॥

वीरदत्त ता मांहि नरिन्द । वाम वीरदत्ता गुण वृन्द ॥ ३ ॥
याने वसु पाल नृप तनो । मान भंग अब कीनो घनो ॥
तव वसु पाल क्रोध चितधार । याके पुर पहुंचो तत्कार ॥ ४ ॥
तहँ कितने दिन करे मुकाम । कागज भेजो घर अभिराम ।
निज तिय अरु अधिकारी जेह । तिनपे लिख भेजी विध येह ।५।
संस्कृत--पुत्रो अध्याप्ययितव्यो सौ वसु मित्रोति ॥

दूजी बात यह लिखी

संस्कृत—सालिभुक्तं मसिस्पृक्तं, सर्पियुक्तं दिनं प्रती ।
गर्गोपाध्याय कस्योच्चे, दीयते भोजनाय चः ॥

याका अर्थ । चौपाई

सुत वसु मित्र पढ़ाइयो नित । गर्ग नाम पाठक जो पवित ।
ताको भोजन तंदुल घीव । लिखन हेत मिस देव सदीव ॥६॥
इम लिख हलकारनके हाथ । भेजो पत्र अयोध्या नाथ ॥
बांचनहार प्रमाद बसाय । मूरख उलटो अर्थ कराय ॥ ७ ॥

दोहा

कहत भयो यामें लिखो, पुत्र पढ़ा जो मित्त ।
पाठक को स्याही मिले, घृत तन्दुल दो नित्त ॥ ८ ॥

सोरठा

तव मूरख चर जेह, घृत चावल स्याही मिले ।
भोजन देवे तेह, घृत तन्दुल मिश्रित सदा ॥ ९ ॥

पद्धडी

तिस खानेकी समरथ न मोह । ऐसे नृप सुन चित धार कोह ।
रानीसे पूछो सब वृतन्त । उन दिखलायो कागज तुरन्त ।१२।।
तब बांधनहार लियो बुलाय । ताको दंड दीनो दुःखदाय ।
सिर मूँड गधे असवार कीन । निज देश थकी सिरकाढ़ दीन ।१३

दोहा

यातें जे साधू पुरुष, सर्व शास्त्र परवीन ।
उलटो अर्थ जु मत करो, ह्वै प्रमाद में लीन ।।१४।।

चौपाई

तातें श्री जिन भाषित बोध । करनहार कीरत परमोद ।
ताको सेवो भविजन चेत । सदा काल बहु भक्त समेत ।१५।
तातें सुख सम्पत अधिकान । अरु पावो तुम निरमल ज्ञान ।
यह विध अर्थ हीनकी कथा । बरनी कविने आगम जथा । १६ ।

इति श्री आराधनासार कथा कोष विषै अर्थ हीन की कथा समाप्तम् नं०९४

अथव्यंजनअर्थहीनकथा प्रा०नं०९५

मंगलाचरण ॥ दोहा ॥

उज्जल केवल ज्ञान जुत, नमूं देव अरिहन्त ।
व्यंजन अर्थ सु हीनकी, कहूं कथा सुन सन्त ॥ १ ॥

चाल मेघकुमार की

कुर जांगल शुभ देश में जी, गजपुर नगर उतंग ।
महा पदम नृप तासुको जी, जिन पदाब्जको भ्रंग ।
सयाने पद्म श्री तिस नार ॥ २ ॥
रूप अनूपम तासु को जी, जिन भाषित वृषकाज ।
ताको भावे चित विषै जी, नित प्रति सुगुण समाज ॥
सयाने और सुनो चितलाय ॥ ३ ॥

देश सु रम्य तिहं बसै जी, पोदनपुर सुख थान ।
सिंहनाद नृप नगरी जी, तिसका कोप सु ठान ।
ए राजा चढ़न भयो बलधार ॥ ४ ॥
ताके पुर में जाय के जी, देखो श्री जिन धाम ।
सहस्र थंभ ताहि लगे जी, सहस्र कूट जिस नाम ॥
अनुपम सुख दाता जग बीच ॥ ५ ॥
वंदन कीनो भूप ने जी, धरम राग उर धार ।
मन विचार करतो भयो जी, एसो जिन आगार ।
अनुपम सुखदाता जग सार ॥ ६ ॥
करवाऊं राजपुर विषै जी इह विधि निश्चय ठान ।
पत्री लिखकर भेजयो जी, तासैं देय बखान ।
सयाने तुम कीजो इह भांत ॥ ७ ॥
संस्कृत ॥ सहास्थम्भ सहस्रस्य कृत्वा स्वपुरे ध्रुवं ।
अर्थ । चाल । सहस्र थंभ दीरघ भलेजी, चैत्य करो इक ठौर ।
पटुनगर सब हम पढ़ो जी, नामध व्यंजन छोड़ ।
रे भाई सुनलो तुम धर भाव ॥ ८ ॥
संस्कृत ॥ स्तम्भ सहस्रकम् ।

अथ दोहा

याको अर्थ जो है यही, सहस्र कला इक थान ।
इकठ करके पढ़ु अति, कीजो नृप बुधवान ॥ ९ ॥
तब अधिकारी जनन ने, कला लिये स्थान पट्ट ।
मूरख की चेष्टा सदा, देवे बहु विधि कष्ट ॥ १० ॥

जबै छाग दिखाये आन । देखत ही अति रिप नृप ठान ।
सर्व जननके मारन काज । आज्ञा देत भयो महाराज । १२ ।
तब सबही जन इम बच भाष । अहो नाथ सुनिये अरदास ।
हमतो कारज करने हार । हमरो दोष न लख भूपार ॥१३॥
जिहि विधि बांचन हारे कही । सोई हमने कीनी सही ।
तब नरपति धर क्रोध प्रचंड । पढ़नहार को दीनों दंड ।१४ ।
अहो तत्व के जाननहार । साधु पुरुष जे जगत मंझार ।
ज्ञान ध्यान शुभ कारज मांह । रंच प्रमाद करो तुम नांह ।१५।

काव्य ।

ऐसे भविजन जेह जैनके बचन जानकर ।
भै मोहादिक करन हार कीजे प्रमाद दुर ॥
कोड़ो सुख दातार धरम कारज नित भावो ।
ज्ञान ध्यान निज यज्ञ विषै निज बुद्धि लगावो १६॥

दोहा

याही ते तुमरे सदा, होवेंगे कल्यान ।
आलस बैरी त्याग के, शुद्ध पढ़ो धीमान ॥१७॥

इति श्रीआराधनासारकथाकोषविषै व्यंजन अर्थहीनकी कथा समाप्तम्

श्रीमतधरसेनाचार्य पुष्पदंतभूतबल

महा मुनिकी हीन अधिकवर्णाके सम्बन्धमें कथा प्रारम्भः नं० ६६

मंगलाचरण । गीता छंद

जे ज्ञान केवल नेत्र धारे जगत कर पूजित सदा ।
ऐसे श्रीअरिहन्त के वर चरन बन्दौं है मुदा ॥
अब हीन अधिके वर्ण सम्बन्ध में भाषूं कथा ।
भविजनन को सुख करन हारी कही ग्रंथविषे जथा १

सोरठा

सोरठ देश मँझार, ऊर्जयन्त गिरवर भलो ।
ता मधि गुफा सुढार, नामचंद्र अति सोहनी ॥२॥
तामें इन्द्र समान, अंग तत्त्व ज्ञानन सुधी ।
आचारज गुण खान, नाम जास धरसेनजी ॥ ३ ॥
कुछक आयु निज जोय, इम विचार कीनो तबै ।
विच्छुरन शास्त्रन होय, कागज इक लिखियो जबै ४

[illegible]

अंध्र देशवेनातट पुरमें जिन यात्रा करने गुणवन्त ।
आये सकल आचारज तिनपै लिख भेजो इम भन्त ॥
द्वै मुनि पंडित अरथ निपुन अरु धनधान दिढ चित महन्त ।
शास्त्र प्रगट करनेके लायक मेरे ढिग भेजिये तुरन्त ॥ ५ ॥
ऐसे पत्र विषै लिखभेजो ब्रह्मचारि के हाथ दयाल ।
जैन धरमधर सकल आनमा सोलेकर पहुंचो तत्काल ॥
वो पत्री बांचत आचारज मन माहीं अति होय खुस्याल ।
द्वै नवीन मुनि भक्ति विषै दृढ धरमविषै रागी गुणमाल ६
पुष्पदन्त इक जान दिगम्बर दूजे भूतबली गुणनिधान ।
सर्व शास्त्र उद्धार करनको, तिन [illegible] समान ॥
तिनको भेज सबै आचारज तिन पाँचन ने पठिदे जान ।

भक्ति सहित गुरुके पद दोय। थुतिकर वन्दे हर्षित होय॥९॥
तब गुरु तीन दिना पर्यन्त। इनकी यथायोग्यकर सन्त।
तिस पीछे शुभ मंत्र प्रवीन। दियो एकको अक्षर हीन॥१०॥
दूजे को इक बढ़तो वर्न। दियो बताय परीक्षा कर्न।
फिर विद्या साधन के काज। बनमें भेजदिये महाराज॥११॥
धी आकर वे चलते भये। ऊर्जयन्त पर्वत पै गये।
तहं श्री नेम जिनेश्वर तनी। सिद्ध शिला जो शोभित घनी॥१२॥
ता ऊपर युग ऋषि मनसेत। तिष्ठे विद्या साधन हेत।
जिनके वर्ण हीनथो मंत्र। आई कांडीसुरी जयन्त॥१३॥

दोहा

अधिक वर्नजुत मंत्र जिन, जपो जुचित्त लगाय।
आई देवी दांतली, तिनपै अति हर्षाय॥१४॥
जुत विरूप देवी लखी दोनूं शिष्यन तेह।
मनमें कियो विचार हम, देवरूप नहिं येह॥१५॥

पद्धरी

तबही व्याकरण तने परभाय। हीनादिक अक्षर शुध कराय।
बहु युक्ति सहित साधन करन्त। अति देवी सिद्ध भई तुरन्त॥१६॥
जबही युग मुनि गुरु वर्णपास। आकर सब चरित कहो प्रकाश।
ऐसे सुनकर धर सेन सूर। आनन्द तने हिय धर अंकूर॥१७॥
इन जतियन को गुण पुंज जान। सिद्धान्त पढ़ाये प्रीतठान।
यह दोनों गुरुके भक्त सार। नितप्रति करते सेवा अपार॥१८॥
दढ़कर पुरान जिन धरमधीर। सिद्धांत रचे अतिही गंभीर।
जैसे इन ग्रंथ किये उधार। तैसेही जनकरो प्रीतसार॥१९॥

छप्पय

श्रीजुत ऋषिवरसेन ग्रंथ वारिध वर जो है।
अरु श्री पुष्प सुदन्त भूतबल मुनिवर सो है॥

तीन जगत हितकार सुरन कर पूजित नामी ।
मेरी बुद्धि दयाल करो जिन मतमें स्वामी ॥
शुभ सुर शिवदायक आपहो, विघन समूह निवारिये ।
कल्याणकरो सब भव्यनके, मंघ उदंगल टारिये ॥ २० ॥

इतिश्रीआराधनासार कथाकोषविषय श्रीगणधरआचार्यपुष्पदन्तभूतबल महामुनिकी कथा समाप्तम् नं० ९६ ।

अथ औषधदान वासुदेव की कथा ९७

मङ्गलाचरण ॥ काव्य ॥

सब अमर अरु इन्द्र जजें इनके पद वारज ।
ऐसे श्री अरिहन्त देव जिन तारे आरज ॥
तिन को नमकर कहूं कथा सु वृत्त ऋषि केरी ।
सुनो सबै चितलाय कटै तातें भव फेरी ॥ १ ॥

चौपाई

देश सुराष्ट्र विषै अभिराम । महा पुरी द्वारावति नाम ।
उपजे श्री हरिवंश मझार । कृष्ण नाम नारायण सार ॥२॥
तामें राज करे बड भाग । जिनमत में धारे अनुराग ।
सतभामा दिक सहस अनेक । प्रान पियारी सहित विवेक ॥ ३॥
तीन खंड के सुरनर राय । इन की सेव करें सिरनाय ।
छप्पन कोट नाम परिवार । सुख से तिष्ठे गेह मझार ॥ ४ ॥
अब श्री नेमीश्वर जिन ईस । तिष्ठे उर्जयन्त गिरि सीस ।
इस मुन के वंदन के काज । कृष्ण आदि चाले महाराज ॥५॥
मग में सु मुन तप निध साध । छीन शरीर सहित बहु व्याध ।
तिन लख सुवंद्र वर धार । धरम राग हिरदे अधिकार ॥
औषध नाम वैद्यसे पूछ । भेषज मिश्रित मोदक स्वच्छ ।
सब के घर में सो बनाय । तातें मुनि को रोग नसाय

दोहा ॥

जब अहार लेने गये, गुण उज्जल वो साध।
मोदन भच्चन थकी सबै, नासी तनकी ब्याध॥८॥
तब हर भेषज दानते, भवनाशक सुखकंद।
तीर्थंकर पिह कत तनो, कीनो उत्तम वन्ध ॥ ९ ॥

अडिल्ल ॥

महा पात्र को दान सदा ही सुखकरे। अहो बात यह जोग भक्त सबते सिरें। कौन वस्तु दुर्लभ तिन को जगके विषै। सबही सुल्लभ जान श्री गुरु इम अखै ॥१०॥

काव्य ।

इस अन्तर इक दिना ब्याध वर्जित मुन नायक।
देखे तबै मुरार हरष जुत भोषे बायक ॥
हे स्वामिन जगदीश कुशल है तुम तन मांही।
निस्नेही वे साध बचन इह भांत कहाई ॥ ११ ॥
हे राजन इह देह अशुच नाना रंग धारे।
छिन में रूप निधान छिनक दुरगंध अपारे ॥
ऐसे सुनत मुकंद चित्त में हर्ष बढ़ायो।
स्तुति करत अपार फेर अपने पुर आयो ॥ १२ ॥
हुतो वैद्य हर साथ नाम जीवक तिह बारी।
सुन के मुनि के बैन चित्त में येम विचारी ॥
मेरो गुण इन साध कछू हरि तें नहिं भाषो।
ऐसे निन्दा ठानि सल्य उर मांही राखो ॥१३॥

दोहा ।

फिर मर कर आरत थकी, नदी नर्मदा धीर।
तहँ मरकट उपजत भयो, दीरघ लहो शरीर ॥१४॥

मूरख जन मुनिवर क्रिया, रंच नहीं जानन्त ।
निन्दा करन थकी लहे, खोटी योनि अनन्त ॥१५॥

चौपाई ।

इस अन्तर अब वे ऋषि राज । वृक्षतले तिष्ठे महाराज ।
परियंकाशन ध्यान सुधार । तब उस तरुकी टूटी डार ॥१६॥
लगी हृदय मांही तत्काल । दियो विदार उरस्थल साल ।
जब ही कपि ने देखो आन । जाती सुमरन पायो ज्ञान ॥१७॥
तब सब क्रोध भाव तज दीन । वहु कपि तहां इकट्ठे कीन ।
और वृक्ष की लता अनेक । लाये मरकट सहित विवेक ॥१८॥
तिसे सशंस लपेट तुरन्त । जतन सहित काढ़ी हरपन्त ।
उस शरवर को दूर वगाया । पूरव संसकार परभाया॥ ॥१९॥
फेर औषधी लाय महान । घाव विषे लाई बुधवान ।
धर्म तिनो हियधर अनुराग । ताते पुन्य लहो वड़भाग ॥२०॥

दोहा ।

पूर्व भव अभ्यास जो, सुख कारी जन दान ।
सोई इस भव में करे, सवही की वान ॥२१॥
अवध नेत्र धारक मुनी, पुरव लो विरतन्त ।
मरकट को बतलाय के, सम्बोधियो तुरन्त ॥ २२ ॥

चाल छंद ॥

तब इह वानर बुध वन्तो । गुरु के वच सुन हरपन्तो ।
फिर जिन वृष सुर शिवदाई । तामें इन चित्त लगाई
सम्यक अणु व्रत धारे । विधते कपि हिय में धारे ।
पाले दिन ससम ताही । फिर कर सन्यास सुभ दाई
सुध भावन काया त्यागी । सुर भयो महा बड़
सो प्रथम स्वर्ग के माहीं । नाना विधि [illegible]

जो जिनमतमें चित लावे । वह क्या क्या सुख नाहिं पावे ।
देखो कपि सुरगति पाई । इस वृषते को अधिकाई ॥ २६ ॥

दोहा ।

तातै यह जिन धर्म अब जयवन्तो जग होय ।
जा प्रसाद प्रानी लहे, नर सुरके सुख सोय ॥२७॥
फिर शिव पदवी मिलत है, याही के परसाद ।
तातै भविजन जतन ते, ध्यावो तज परमाद ॥२८॥

इति श्री आराधनासार कथा कोष विषय गुणपक्षा में औषध दानाश्रित वासुदेव की कथा समाप्तम् नं० ९७

अथ हरिसेन चक्रवर्तीकीकथा प्रा०

मंगलाचरण ॥ सोरठा ॥

केवल नैन विशाल, जे भगवत धारत सदा ।
तिनैं नवाकर भाल, कहूं कथा हरिसेनकी ॥ १ ॥

चौपाई ।

अंग देश जगमें विख्यात । पुरी कंपिला तहां वसात ।
तामधि सिंहध्वज भूपार । गुण उज्वल है वप्रा नार ॥ २ ॥
तिन दोनोंके पुन्य प्रमान । सुत हरिसेन भयो बुधिवान ।
सुभटनमें अग्रेश्वर सार । सत्पुरुषन कर मान्य उदार ॥ ३ ॥
दाता भोक्ता लक्षणवन्त । इत्यादिक गुण धरे अत्यन्त ।
अब इनकी जो विप्रामाय । अरहत धर्म धरे अधिकाय ॥४॥
जिन पद अम्बुज भृंगी जेम । सेवे नितप्रति धर बहु प्रेम ।
नंदीश्वरके परव मंझार । करवावे सुत सब अधिकार ॥ ५ ॥
अब नृपकी जो दूजी भाम । मत उद्धत लक्ष्मी मतिनाम ।
मिथ्यामति गिरसत तिहघरी । भूपतिसे इम विनती करी ॥६॥
अहो नाथ इस नगरी बीच । ब्रह्माको रथ सहित मरीच ।
पहिले भ्रमनकरे सुखदाय । पीछे जिनको रथ निकसाय ॥७॥

चौपाई

जो सुक तुम देखो नर नाथ। सो मेरो हैगो वह भ्रात ॥
मोको पालो तपसिन सही। उन औरनकी संगति लही।१६।
में तो इनके सुनूं सु वैन। वो वट पारनके दिन रैन ॥
सो संसर्ग तनो परभाव। देख लियो तुम ने नर राव।१७।
इस अंतर सत मनु विख्यात। हुतो सु चम्पापुरको नाथ।
नागवती रानी तिस जान। जन्मेजय सुत उपजो आन।१८।
मदनावली सुता गुण गेह। रूपशील वर धारे तेह ॥
निज सुत को दे राज अवन्य। भयो तापसी यह सत मन्य ॥१६॥
अब जन्मेजय को इक दिना। निमती आय वचन इम भना ॥
मदनावली कन्यका जोय। चक्री के पट रानी होय ॥ २० ॥
तब राजा सुन कियो विचार। ज्ञानी बैन होत सत सार ॥
कोट कल्प जो जावे सही। तोऊ अन्यथा होवे नहीं ॥ २१ ॥
इस अंतर इक उंड्र सुदेश। तहां कलाकल नरपत वेश।
ताने सुनी वारता सोय। यह कन्या चक्री तिय होय। २२।
तबही जन्मेजय के पास। मदनावलि जांची गुण रास।
जब वाने दीनों यह नाह। सुन उन क्रोध धरो अधिकाह।२३।

दोहा

शीघ्र आय चम्पापुरी, वेढ़ लई नर राज।
काम अंध जे पुरुष हैं, कथा क्या करें न काज। २४।
तबै काल कल्प जुद्ध नित, करन लगो दुख धाम।
नागवती इम देख कर, करत भई यह काम ॥ २५ ॥
निज पुत्री को साथ ले, पथ सुरंग तत्काल।
नागवती निकसत भई, आई बनी मझार। २६।

पद्धडी

जहां तापस है सतमन्यु नाम। तासे कहके विरतांत भाम।

चौपाई

इस अंतर इक रैन मझार । बेगवती कोई खेचर नार ॥
इनको रूप देख अधिकाह । हरले चली गगनके मांह ॥ ३७ ॥
भये सचेत कुमार तुरंत । देखी उड़गन की बहुपन्त ॥
क्रोध सहित भाषे बच गाज । बांधी मुष्ठी मारन काज ॥३८॥
तब खगनी बोली कर जोर । हे स्वामिन सुन बिनती मोर॥
रूपाचल पै सुखको धाम । सूर्योदय पुर अति अभिराम ॥३९॥
ताको बुद्धिवान गुणमाल । नाम श्रीन्द्र धनु है भूपाल ।
जाके बुद्धिमती पट नार । पुत्री जै चंद्रा अविकार । ४० ।
सब पुरुषनमें काढ़त दोष । ऐसे गुण उज्जल बुध कोष ।
और शतक कन्या तिस संग । तिष्ठत हैं सब सुंदर अंग । ४१ ।
राजाको प्यारी अधिकाय । एक दिन निमती बचन सुनाय ।
होनहार चक्री की नार । यह कन्या बहु पुन्य भंडार ॥४२॥
तब मैंने तुमरो चित्राम । लिख कर दिखलायो अभिराम ।
देखतही वह विहवल भई । तातें चलकर परनो सही ॥ ४३॥
ऐसे हर्ष सहित बच भाष । लेकर चलत भई आकाश ।
पहुंची नृपति तने बर गेह । इनको लख हर्षित सब तेह ४४॥

दोहा

इनके ब्याह समै विषै, आये चम्पु संयूत ।
गंगाधर अरु महीधर, कन्या मातुल पूत ॥ ४५ ॥
तिनने कर संग्राम बहु, चौदह रतन उदार ।
नव निधिके स्वामी भये, इह हरषेन कुमार ॥ ४६ ॥

चौपाई

तिनको जय कर कन्या बरी । फिर निज ग्रहचाले तिह घरी ।
बहु बिभूत लेके निज लार । ब्याही मदनावली सुनार ॥४७॥

अंबाला नगरी में आय । जिन यात्रा कीनी अधिकाय ।
पुनी जननीकी सब आस । ब्रह्माको रथ कीनों नास ॥ ४८ ॥
निज प्रतिज्ञाके अनुसार । करवायो श्रीजिन आगार ।
जे जन देय पुन्यनिधान । तिनके शुभ बरनें अधिकान ॥४९॥

सवैया इकतीसा

सोई जिनराज जयवन्त होय सर्वकाल देव इन्द्र चन्द्र धर पूजित सदीव है । जिन भाषो वृषसार तासु धरमेश पार तोइ जग जारभये शिव निव पीव है ॥ गुणरूपी रत्न कोष रहित अठार दोष ज्याके प्रकाशवे को चन्द्र सुवर्नीय है । ऐसे महाराज को नमाऊं नाश श्रम टारन, हूजिये दयाल सुख देवे जो धर्नीय है ॥ ५० ॥

दोहा

यह चक्री हरिषेण की, कही कथा हित दान ।
सबै अमंगल नाशिनी, करन सबै कल्यान ॥ ५१ ॥

इति श्री [illegible] हरिषेणचक्रीकी कथा [illegible] ॥

अथ कृष्णनारायणकीकथा प्रा०

सो उत्तम हैं अय जग मझार। इन वर्णन कीनों बहुप्रकार ४॥
तब सभा माहिं ते देव एक। सिरनाय सुपूछो जुत विवेक।
हो स्वामिन इस भू मध्य कोय। अबभी ऐसोको पुरुष होय ५॥
जब इन्द्र कही सुर सुन सुलेव। द्वारामतिमें है बासुदेव।
गुण उज्वल नीमें हरि निहार। ते हैं गुणग्राही जगमंझार ६॥

दोहा

तबही सुरत जनाक को, आयो भूमधि सोय।
तेन परीक्षा कारने चितमें हर्षित होय ॥ ७ ॥
नेमीश्वर को बन्दने, जाते हुते मुरार।
तबही सुर माया करी, पथमें तिसही बार ॥८॥

चौपाई

मृतक स्वानको रूप बनाय। कीनों दुर्गंधित निज काय।
इसकी लख दुर्गंध अपार। हरिसेना भागी ततकार ॥ ९ ॥
तब वह सुर दूजो बपु कीन। बूढ़ो द्विज बनके गतीन।
कृष्ण पास आ इम वच भाश। यह कूकर दुर्गंध निवाश।१०।
सुनके बासुदेव इम कही। हो भूदेव देख तू सही।
याके रदन सुपंकतिवान। उज्वल सोहें फटक समान ॥ ११ ॥
ऐसे वच सुन परम रसाल। तजके सुर माया जंजाल।
परगट है चित हरषितवन्त। कहत भयो सबही विरतन्त।१२।
पूजा अस्तुति हरिकी ठान। फेर गयो अपने अस्थान।
और भव्यभी जगत मंझार। जिनवर भक्ति हियेमें धार॥१३॥

दोहा

दोष पराये छोड़ कर गुण गहलीजे नित्त।
जाते सुख सबही लहो, जरा उपजे सुन सित्त १४॥

इति श्रीआराधनासारकथाकोष विषे गुणग्रहण कथा समाप्तम् नं० ९९।

अथ मनुष्यभवपै दशदृष्टान्तकथा प्रा०

मंगलाचरण छप्पय

रहान केवल ज्ञान मंडित जिनचन्द जी। तिन पदाब्ज नमू सुख आनंदजी॥ मानुष भव अति उत्तम श्रीजिनवर कहा॥ ता ऊपर दृष्टान्त कहूं दुर्लभ महा॥१॥

गाथा

चोल्लक पासग धन्ने जूवर रयणाणि सुमिण चक्कं चा।
कुम्मं जुग परमाणू दस दिट्ठंता मणुय लम्भे ॥२॥

सोरठा ॥

चोल्लक ... पास धान. दुत्तर रतन अरु सुपन गिन।
चक्र कूर्म जुग मान. परमाणू जुत दश भये ॥३॥
पहिले सुनमन लाय. चोल्लक को दृष्टान्तही।
जाते संसय जाय. धर्म राग चित में बढ़े ॥४॥

काव्य।

तीन जगत कर बन्दनीक नेमीश्वर स्वामी।
ते पहुंचे निर्वान. कर्म हनि के बसु नामी।
तिन पीछे एक देश विनीता नामें सोहे।
नगर अयोध्यासार सुरन के मन को मोहे ॥५॥
ता मांही ब्रह्मदत्तनाम. अन्तिम चक्रेश्वर।
जाके हैं एक सहस्र अङ्ग रक्षक अधीश्वर।
... सुमित्रा जान पुत्र वसुदेव नाम जिस।
सो मूरख अविवेक जानियो ... ।
सहस्र अङ्ग के ... तिन ... ।
... ।
... ।
... ।

दोहा ।

अब इस मात सुमित्र का, तृण की कुटी मंझार ।
सुतको पाले आस जुत, जतन थकी निर्धार ॥ ८ ॥

चौपाई ॥

अबै सुमित्रा याकी माय । कमर विषै लडू बंध वाय ।
गमना गमन सिखावे येव । क्रमकर बृद्धि भयो बसुदेव ॥९॥
तब किंचित चक्री की सेव । करन लगो चित दे बह भेव ।
इस अन्तर अब षट् खँड कन्त । ताको हयले गयो तुरन्त ॥१०॥
वाजी दुष्ट चपल अधिकाय । चक्री को डालो बन माय ।
तहां क्षुदा तृषा अति लगी । मनकी सुध बुध सबही भगी ॥११॥
तब पहुंचो बसुदेव सुजाय । भोजन दे तृपतायो राय ।
अहो दियो जो औसर थान । तुच्छ भी देवे सुःख महान ॥१२॥
चक्रवर्तितब पूछन कीन । तूहै कौन कहो परवीन ।
तब शिरनाय कही इन बात । सहस्र भट्ट को सुत मैं नाथ ॥१३॥
ऐसे सुन कर याके बोल । कर कंकण तब दियो अमोल ।
फिर कर आगे अबनी पाल । नगर अयोध्या में तत्काल ॥१४॥

दोहा

कोट पोल तें इम कही, तुझ कर कंकण सार ।
जात रहो है पथ विषै, ढूंढ लाव तत्कार ॥ १५ ॥
तब इह ढूंढन तहँ गयो, जहँ ज्वारी बहु भेव ।
कंकण की तहँ बारता, करत गहो वसुदेव ॥ १६ ॥

चौपाई ॥

याको लायो चक्री पास । ताही देख नर पति वचभाष ।
हे बसु देव जो तुझ चित चाह। मांगे वेग में देह उमाह ॥१७॥
तब तिन कही सुनो भू नाथ । मैं नहिं जानूं जानेमात ।

तातैं सब निज गृह में जाय । पुनि सेव कीनों तो न्याय ॥१८॥

दोहा ।

निज जननी के पूछ कर, भोजन भखो न तेम ।
भोजन भोजन लायकी, कीजे पायस प्रेम ॥१९॥
पुण्य प्रगट भये, शुभ भोजन जिन होय ।
ताको भेद बतावहे, सो देखो भ भोय ॥२०॥

चौपाई ।

तब वसुदेव कही जिननाथ । पहले तुमहि घर में जाय ।
बहुत बनाई तुम समान । घट भूषण भोजन सन्मान ॥२१॥
पाछे इह विधि ते में स्वाय । फिर अनेक कीजे न्याय ।
चारौ विधि भोजन है नर । मुकुट बन्ध श्री-इन्द्र जिनदेह ॥२२॥
सब इन को परिजन समुदाय । नगर सेठ आदिक पहुंचाय ।
गोपां भोजन दें इह भान्त । टकवा तुम्हारे ने भूइन्त ॥२३॥

दोहा ।

ऐसो अवसर इन वस्तु को, ताको पावन जोय ।
होवे तो अनुक्रम नहीं, जिन में पावे कोय ॥२४॥
पाय पद मानुष भव विमल, नष्ट होय जिस केर ।
जिन जिनको दुर्लभ सदा, दुर्लभ्य है फेर ॥२५॥
इह विधि श्री निमन ज्ञान कर, [illegible] त्याग ।
श्री जिन नीति लिये पाये । निज भवि तुम अनुराग ॥[illegible]

इति श्री [illegible]

अथ यामक दृष्टान्त कथा प्रा० १९ ०

नगर कोटके शतक दुवार। करवाये मन हर्ष सुधार।
एक एक गोपुर मधि जान। ग्यारे ग्यारे सहस प्रमान॥२८॥
थम्भ लगाये अधिक अनूप। तामधि अस्थानक सुखरूप।
बने छानवे शोभावान। एक एक थम्भन प्रति मान॥२९॥
सब अस्थानक में हरषाय। दूतकार नित खेलें आय।
इक दिन शिवशर्मा भूदेव। सब ज्वारिन प्रति भाषी एव॥३०॥

काव्य

अहो सुनों मैं दाव एक गेरूं इह वारी।
जो होवे मम जीत जिते तुम होगे ज्वारी॥
जीतो अपनो द्रव्य मुझे देवोगे अबही।
वे बोले हम देहि देयंगे तोको सबही॥ ३१॥
तबही इह दुजराज लेय पांसे कर मांही।
डारे भूके मध्य कर्म बश जीत लहाही॥
सब को द्रव्य मंगाय लियो ताने तत्कारी।
अहो कठन इह जोग महा दीखत है भारी॥३२॥

दोहा

जो कदाचि इह बात सत, होवे तो हो जाय।
पर मानुष भव अति कठिन, नष्ट भयो न लहाय।३३।
कोड़ो ज्वारिन को दरब, जो लागे तिस हात।
ताते यह मानुष जनम, अति दुर्लभ है भ्रात॥ ३४॥

सोरठा

याते भविजन जेह, शुभ मारग में बुध धरो।
सो शुभ पथ सुन लेह, जा विधि श्री जिनने कही।३५।

चौपाई

भगवत चरन कमलकी सेव। भक्ति सहित कीनों बसु भेव।

चढ़ा अयोध्या लेने काज । संग लेयकर सकल समाज ॥४६॥
ऐसी सुन नृप परजापाल । सब जन प्रति भाषी तिह काल।
तुम सब जन इक ठौर मंझार। धान एकट्टौ करो अबार ॥४७॥
सबही जन तब सुनत प्रमान । अपनो अपनो धान सु आन।
नृप भंडार विषै तत्कार । कियो एकट्टौ संख्या धार ॥ ४८ ।
इस अन्तर मद जुत जित शत्रु । आयो कौशलपुरी पवित्र ।
ह्वै समर्थंकर हीन नरेश । उलटो फेर गयो निज देश ॥४९॥
तब परजा के लोगन आन। नृपसेती मांगो निज धान ।
जब नरनाथ कही इम बान । अपनो अपनो लेहु पिछान ।५।
अहो महान कठिन यह बात। जो कदाचि जन हर्षित गात।
दैवयोगते निज निज अन्न । काढ़े तो अचरज नहिं मन्न ५१
पण मानुष भव दुर्लभ येह । नष्ट भयो पावे नहिं तेह ।
ऐसे लखकर सज्जन जीव । धर्म विषै मन धार सदीव ॥५२॥

इति धान्यक दृष्टांत ३ समाप्तम्

अथ दूत दृष्टान्त प्रारम्भः १०३

चौपाई ॥

सत्तद्वारपुर अद्भुत बसे । पांच शतक गोपुर तिस लसे ।
इक इक दरवाजे प्रति सही । पांच पांचसौ शाला ताही ॥ ५ ॥
इक इक शालामें तज सांच । दूतकार खेलें सत पांच ।
तिनमें चपी नाम इक जान । सब ज्वारिन में है परधान ।५४।

दोहा

तानै सबकी कौड़ियां, जीत लई तत्कार ।
तब वे तज जूवा गये, दशहो दिशा मंझार ॥ ५५ ॥
कर्म जोगते फिर मिले वो ज्वारी समुदाय ।
तो अचरज नहिं लाइये, पण सुनिये चितलाय ५६॥

यह मानुष भव अति कठिन, जो कदाचि नश जाय ।
जुआ पुरुषको ना मिलै, कोटिक भवके मांहि ॥५७॥

सोरठा

और सुनो हितकार, जुवेको दृष्टान्त अब ।
ताही नगर मंझार, निरन्तर जुवारी बसे ॥ ५८ ॥

पद्धड़ी

सो पाप उदै सो जान भ्रान । सुपनेमें भी नहिं लहत आन ।
अरु जो कदाचि मनहर कार । तिनको जीते यह हितसभार ।
तिनके पगटमा घर गमन्त । फिर तिनहीको देवे तुरन्त ।
सब चलेजाय वे हर्षमान । इनके हितको वे कर पयान ॥६०॥
अरु फिरवो सर्वमें प्रचार । मिलजावें तो अचरज न लाय ।
पर इस मानुष भव अतिमहान । गयो हाथ न आवे फिर सुजान ६१

दोहा

तातें निज कल्याणके, हेत सदा यह भाव ।
सेवो भविजन जिनदेव, जो पावो शिव ठांव ॥ ६२ ॥

इति जुआ दृष्टान्त समाप्तम् ७

अथ रत्नदृष्टान्त प्रारम्भः नं० १०४

इन द्वादश चक्रेश तने वरजे चूड़ामन ।
रतन जुपृथ्वी काय, लिये देवन हर्षित तन ।
दैवयोग कर रतन शसिवे सर्व अवनि पर ।
इकठे होय तुरन्त, तोहु चित बिसमय मतधर ॥६५॥

दोहा

पण तुछ पुन्नी जीवको, मिले न नर भवफेर ।
इह दुर्लभ कर जानिये कही गुरन इस टेर ॥ ६६ ॥
तातें भगवत धरमको सेवो नित बुधवन्त ।
जाते बहु कल्याण ह्वै सुर शिव सुख विलसंत ॥६७॥

इति रत्नदृष्टांत समाप्तम्

अथ स्वप्नदृष्टान्त प्रा० १०५

दोहा

स्वप्नतनो दृष्टान्त अब, सुनो सबै चितलाय ।
यह मानुष भव अति कठिन, श्रीजिनवर दरसाय ६८॥

चाल छंद

शुभ देश अंवती जोहै, जहँ पुरी उजैनी सोहै ।
जहां काठ भार नित लावे । यक हल्लक मनुष कहावे ॥ ६९ ॥
इक दिन वो बनको धायो । बहु काष्ठ भार घर लायो ।
भयो खेद खिन्न अधिकाई । तबही तिस निद्राआई ॥ ७० ॥
तिन सुपनो येक लखायो । पद चक्रवर्त को पायो ।
पाछे तिस नार जगायो । फिर काठ अर्थ बन आयो ७१॥

दोहा

ऐसे सोवत के विषै, भयो हुतो चक्रेश ।
फेर जाग कर काठको, लेन गयो निज भेश ॥७२॥

अडिल्ल ॥

नाम स्वयम्भू रमण उदधि सबके परे । तामधि कच्छप एक सु दीरघ तन धरे । निज काया के चर्म तने परभायजी । भ्रमन करे जल के ऊपर अधिकाय जी ॥८२॥

सहस वर्ष में तन के चरम विषै कही । सूक्षम छिद्र मझार भान देखो सही । फिर कदाचि उस छिद्र उसी खग कोतही । देखन चाहे तो फिर ब्यौंत बने नहीं ॥ ८३ ॥

दोहा ॥

जो कदाचि तिस छिद्र, मैं मारतण्ड दरसाय ।
तो अचरज मानों नहीं, पण दुर्लभ यह काय ॥ ८४ ॥

इति कूर्म कथा समाप्तम् ॥

अथ युग दृष्टान्त प्रारम्भः नं. १०८

दोहा ॥

अब युग को दृष्टान्त इक, और सुनो चितलाय ।
सुमन सु हिरदे में धरो, दुर्लभ नर पर जाय ॥८५॥

चौपाई ॥

दोय लक्ष योजन परमान । ऐसो लवण समुद्र महान ।
तिस के पूरब भाग मंझार । गाड़ो को जवो चित धार ॥ ८६ ॥
तास कीलका जो छुटजाय । फिर मश्चिम के उदधि सु आय ।
कर्म जोग ते कीली एव । छिद्रविषै आये स्वय भेक ॥८७॥
तो अचरज जानो नहिं मीत । पण मानुष भव परम पुनीत ।
छूटे ते फिर मिले न एह । इम जानो भवि निः सन्देह ॥८८॥

इति जुग दृष्टांत समाप्तम् ॥

दोहा

अब आवन्ती देश में, पुरी उजैनी नाम ।
धरम पाल ताको नृपति, धरम श्री तिस भाम । २ ।
और ताहि नगरी विषै, सेठ सु सागर दत्त ।
नार सुभद्रा तास के, जिन पदाब्ज में रत्त ॥ ३ ॥

चौपाई

तिन दोनोंके पुन्य प्रभाय । नागदत्त सुत उपजो आय ।
जिन पद अम्बुजको फल येह। धरमी जनते धरे सनेह ॥ ४ ॥
सेठ तिसी नगरीमें और । नाम समुद्रदत्त तिन गौर ।
सागर दत्ता नारी तास । सुता प्रियंग श्री गुण रास । ५ ।
ताको नागदत्तने जान । परनो विध बिवाह को ठान ।
पूजादान आदि आचार । करके निज कुलके अनुसार ॥ ६ ॥

काव्य ॥

इस अन्तर इक नागसेन नामा जन कोई ।
नागदत्तकी नार तनो अभिलाषी होई ॥
दुष्टभाव कर सहित बैर चित मांहि विचारे ।
तिष्ठे अपने धाम विषय कुश्चित धी धारे ॥ ७ ॥
एक दिना यह नागदत्त पोसे कर मंडित ।
पहुंचो श्री जिन गेह धर्म रुचि धरे अखंडित ।
जहां हर्षकर युक्त ध्यान व्युत सर्ग लगायो ।
नागसेन पापिष्ट इने लख के तहँ आयो ॥ ८ ॥
निज उरको ले हार धरो इन पगतल पापी ।
कपट धार कर चोर चोर इम गिरा अलापी ।
अहो दुष्ट अघ लीन क्रोध बशजे जग मांही ।
कौन २ विपरीत काज संकट है नांही ॥ ९ ॥

अथप्रेमानुरागरक्ताख्यानकथानं० १११

मंगलाचरण ॥ दोहा ॥

दीप्त सहित जिन धीशवर, बृष नायक भगवान ।
तिनको नम भाषूं कथा, धरम राग जिन आन । १ ।

चौपाई

देश बिनीतामें सुख थान । साकेता नगरी दुतिवान ।
नृप सुवर्ण वर्मा तिस तनो । सुवरण श्री नारी रत मनो । २ ।
ताही पुरमें अति धनवन्त । जिनवर धर्म विषै रत सन्त ।
धर्म विषै रागी धीमान । नाम मित्र सेठ गुण खान ॥ ३ ॥
एक दिना जुत प्रोषधि वास । रैन समै निजही आवास ।
निर्मल मन जुत सोहे पेम । निश्चय ऊभो सुर गिर जेम ॥४॥
ताही छिनमें निर्जर कोय । लेन परीक्षा आयो सोय ।
याकी तिय अरु धनु समुदाय । हरत भयो निज ऋद्ध पशाय ५
तौभी ध्यान थकी नहिं चिगो । निज आतम के रसमें पगो ।
ऐसे इनको साहस देख । सुर चित धरके हर्ष विशेष ॥ ६ ॥
कोडो सुखकी जो दातार । करके स्तुत बारम्बार ।
सुर परकट ह्वै कर परवीन । नभगामी विद्या तिन दीन ॥७॥

दोहा

बहु स्तुतिकर स्वर्गको, गयो अगना पीव ।
इस प्रभाव को देखके, और भव्य बहु जीव ॥८॥
जैन धर्म में रत भये, तज मिथ्या दुख खान ।
कोई तो श्रीमुनि भये, केई श्रावक बुधिवान ॥९॥

छप्पय

केई सम्यक सार रतन कर हूवे मंडित ।
निश्चय ते निज तत्त्व जान वृष गहो अखंडित ।

तबही सन्यास जुग धारो । सबही ममत्व परिहारो ।
ताते भविजन सुन लीजे । सुख दुखमें धी शुभकीजे ७

अडिल्ल

इस अन्तर इक सोमशर्म दुज धाइयो । दिशाभूल तिसही बन माहीं आइयो । बहुत कष्ट ते भ्रमत गयो इन पासजी । बनजारे आपस में वृष इम भाषजी ॥८॥

दोष रहित अरिहन्तदेव केवल धनी । तिन भाषित शुभ धरम कहो दश लाच्छनी । नगन दिगम्बर परिग्रह त्यागी गुरु भले । शील विषै दृढ़ ज्ञान ध्यान तप में रले ॥ ९ ॥

अहो जीव यह निश्चय नयते जानिये । सिद्ध समान स्व रूप हिये में आनिये । भवि अभव्य जुग भेद धरे नितही सही । कर्माश्रित संसार दिशा श्रीजिन कही ॥ १० ॥

दोहा

करम रहित शिव तिय धनी, भवि होवे तत्कार ।
इह विध धरम स्वरूप शुभ, भाषें थे जिह वार ॥११॥
तिन मुखते इह धर्म विध, सुनी सबै दुजराय ।
मिथ्या मारग त्याग के, जिन शाशन चितलाय १२।

चौपाई

तबही सोमशर्म दुज येह । धरि सन्यास सुतिष्टो तेह ।
चितमें ध्यावत श्रीभगवान । इन्द्र चन्द्रकर पूजित जान ॥१३॥
बहु उपसर्ग जीत सुधभाय । प्रथम स्वर्ग में उपजो जाय ।
तहां बहु ऋद्ध लही सुखखान । अणिमा महिमा आदिक मान१४
हां सेती बहु सुर बड़भाग । जिन पद सुमरत तनको त्याग ।
नृप श्रेणिक है अभयकुमार । सुत उपजो अंतम तन धार १५
धीर वीर जगको मोहन्त । महा बुद्धि धारी गुणवन्त ।
जा सरवर दूजो नहिं कोय । ऐसी महिमा धारे सोय ॥१६॥

अब काल मेघ यकसबर राय। इन देश बहुत पीड़ितकराय।
तब लकुच बहुत मन रोष धार। ताते संग्राम कियो अपार ॥५॥
फिर भीलपतीको बांध लीन। निज पिता पास लायो प्रवीन।
तब जनक पास वर लेह येह। अन्याय करन लागो सुतेह ॥ ६ ॥

दोहा।

निज पुर की नारन तनौ, शील भंग अधिकाय।
करन लगो इह दुष्ट चित, कामी बुद्धि नसाय ॥ ७ ॥

चोपाई।

अब इसही पुरके मध जान। पुंगल नाम सेठ धनवान॥
तास तिया है चाल मराल। नाम नागधर्मा सुख माल ॥ ८ ॥
तास विषै इह राजकुमार। होत भयो आशक्त अपार।
तब पुङ्गल बानक इम देख। क्रोध अनिल चितधरो विशेष। ९।
तास सहन को समरथ नाह। घर में तिष्ठे बहु सुख बाह।
इक दिन लकुच हर्ष मन ठयो। बनमें क्रीड़ा करन सु गयो। १०।
तहँ निज पूरब पुन्य प्रभाय। श्री यतींद्र देखे सुखदाय।
तिनके ढिग पहुंचे ततकाल। चरनन मांहि नवायो भाल॥

दोहा।

उन मुख अम्बुज ते सुनो, श्री जिन भाषित धर्म।
ह्वै विराग जत शीघ्रही, दीक्षा लीनी पर्म ॥ १२ ॥
फिर बिहार करते थके, पुरी उजैनी आय।
महाकाल बनके बिषै, तिष्ठे ध्यान लगाय ॥ १३ ॥

काव्य।

तबही पुंगल सेठ इनों को आयो जानों।
क्रोधवंत ह्वै रात्रि समय तिन कियो पयानों॥
बैरा जोग ते लोह मई कीलें अति भारी।
संध संध प्रति जड़े दुष्ट चित दया न धारी ॥ १४ ॥

सोरठा

कहत भयो सो एव, निज मुखते ऐसे कहो।
नहिं अरिहन्त सुदेव, नहीं जैनवृष भू विषै॥ ६ ॥
जो भाषो इहि भांत, तो तुमको छोडूं अवै।
नातरु करहूं घात, यह निश्चय सब जानलो ॥७॥

पद्धडी

तब ऐसे सुन जिनदास आद। मस्तक कर धारे करि प्रमाद।
बहु भक्ति ठानकर इस उचार। श्रीवर्द्धमान को नमस्कार ॥८॥
अरु कहत भये रेदुष्ट देव। अपने मनमाहीं जान येव।
जे केवलरूपी ज्ञान मान। धारत हैं तेही देव मान ॥ ९ ॥
और सब मतमें उत्कृष्ट जान। त्रयजगपूजित जिनमतमहान।
ताहीछिन इह जिनदास सार। सबआगे कथाकही उचार ॥१०॥

दोहा

ब्रह्मदत्त चक्रेशने, मेटो शुभ नवकार।
ताकर पहुंचो नगर में, देखो हिये विचार ॥११॥

कवित्त

ताही छिन उत्तर वासी अनावृत्य यत्ताधिपसार। निज आसन कंपितही आयो क्रोधवान ह्वै कर तत्कार॥ काला सुर कुत्सित पापीके चक्रथकी दई मुकुट मंझार। सो भागो जबही दुःखित ह्वै वड़वानलमें धस्यो लवार ॥ १२ ॥

बहुरि सुरी लक्ष्मी तहं आई चितमें धरम राग बहु ठान। सबको पूजो अरघ देयके कीनों बहु विध आदर मान॥ जे भविजन सम्यक अधिकारी तिनके चरण कमलकी आन। को को पूजा करत नहीं है सबही ठानत भक्ति महान॥ १३ ॥

तिसही पुरमें मिथ्या मती । नागदत्त इक बानक पती ।
तिया नागदत्ता तिस गेह । रुद्रदत्त सुत सुन्दर देह ॥ ४ ॥

दोहा

एक दिना यह नागदत्त, गयो जिनदत्त के पास ।
कन्या निज सुत कारने, मांगो धर हुल्लास ॥ ५ ॥

काव्य

तब बानक जिनदत्त इसे मिथ्याती जानो ।
पुत्री दीनी नाह जबै इह कियो पयानो ॥
माया मनमें धार गयो श्रीगुरु पै जबही ।
समाध गुप्त के पास लिये श्रावक व्रत तबही ॥ ६ ॥
इम लख के जिनदत्त दई पुत्री तत्कारी ।
करके व्याह तुरन्त फेर मिथ्या बुध धारी ॥
जे पापी अघ लीन तिनोंकी कुमत न नाशे ।
अहिको दीजे दुग्ध तोऊ वह जहर प्रकाशे ॥ ७ ॥

चौपाई

अब यह रुद्रदत्त दुठ भाय । जिन नारी ते इम बतलाय ।
धर्म महेश्वर जो सुखकार । करले तूभी अंगीकार ॥ ८ ॥
ऐसे सुनतेही जिन मती । मानो देह बज्रकर हती ।
जिन पदाब्ज की भ्रमरी येह । कहत भई स्वामी सुनलेह ।९।
हितकारी श्रीजिनवर धर्म । इन्द्र चन्द्रकर पूजित पर्म ।
सुखदाता किम छोड़ो जाय । अहो नाथ समझो चितलाय १०
तुमभी मिथ्या मगको त्याग । जिनवर मग में धारो राग ।
इम आपस में निज वृष बाद । रहा करे निज कलह उपाध ११

दोहा

अहो बात यह जोग है, अन्य धर्म परभाव ।
घरमें कलह सुनित रहे, किंचित सुख नहिं थाय १२॥

तिनके चरण कमल को नई। आनन ते बहु थुति तिन चई।
अपने बन्धूवर्ग बुलाय। एक थान सब दिये बिठाय ॥ २२ ॥
चित्त विषै सुमिरो नवकार। तिष्ठी कायोत्सर्ग सुधार ॥
तबही वो वन्ही बिकराल। शान्त भई पुर में तत्काल ॥ २३ ॥

दोहा ॥

ऐसो श्री जिनमत तनों, अतिशै देख तुरन्त।
रुद्रदत्त को आदि बहु, मन में हर्ष धरन्त ॥ २४ ॥
श्री जिनेंद्र को नमन कर, श्रावक भये महान।
सम्यक की श्रद्धा करी, त्यागी मिथ्या बान ॥ २५ ॥

अडिल्ल।

अहो जिनेश्वर धर्म जगत में सार है। ताकी महिमा स्वर्ग मोक्ष दातार है। ऐसो को बुधवंत तास बरनन करे। पंगु पुरुष किमि मेरु शिखर पर पग धरे ॥ २६ ॥

सोरठा ॥

जैसे जिनमति नार, सम्यक की रक्षा करी।
तैसे विदुषन सार, शर्म हेत रक्षा करो ॥ २७ ॥

॥ छप्पय ॥

देखो वो जिन मती दृढ़ सम्यक वंती।
जिन पदाब्ज की भक्ति विषै जिन अती रमंती।
प्रभु बच के अनुसार सदा जाकी पवित्र मति।
स्वर्णरत्नकर पूजनीक भई सुर गण कर अति।
अब ऐसे भवि जन जानकर, जिनमत में निश्चै करो।
जातें जगमें पूजा लहो आवागमन सुपरहरो ॥२८॥

इति श्री आराधनासार कथा कोष विषै सम्यक्तके महातम में जिनमती की कथा समाप्तम्

सम्यक्त अङ्ग में रानी चेलना और

राजा श्रेणक की कथा

मङ्गलाचरण । गीता छंद ।

जो सकल अमरन कर सदा वर पूजनीक महान जी ।
ऐसे श्री अरिहंत जिनवर तासुको धर ध्यान जी ॥
भाषूं कथा सम्यक्त महिमा की अबै चित लायके ।
श्रेणिक नृपति तिय चेलना की सुनो भवि हरषायके ।१।

चाल अहो जगत गुरुकी ।

मागध देश विख्यात पुरी राज ग्रही जानो ।
परजा को हितकार तहां उपश्रेणिक रानो ॥
गुण मण्डित तिस भाम नाम सुप्रभा जु सो है ।
तिनके पुत्र अनेक तासु मधि श्रेणिक जो है ॥ २ ॥
धीर वीर गम्भीर महादानी सुखवंतो ।
शुभटोत्तम अति दत्त सकल जनको मोहंतो ॥
इस अंतर इक राय नाम जिस नाग धरम है ।
देश मलेच्छ अधीश रहत सब धरमकरम है ॥ ३ ॥
ताने पृथ्व बर पक्षी बाजी दुखदाई ।
उप श्रेणिक के पास दुष्ट मन भेट पठाई ॥
सो है अति परचंड चलायो चाले नांही ।
वांगें ने चालन्त यह विधि रीत गहाई ॥ ४ ॥
इक दिन ताकी पीठ चढ़े उप श्रेणिक राजा ।
सो तुरंग तत्काल [illegible] को लेकर भाजा ॥
महा वनी के बीच नृपति को लेकर डागे ।
तहां जमदंड किरात धरे जमदंत अभागे ॥ ५ ॥

विद्युत मती जु नार तास के गेह मझारी ।
तिलकवती इक सुता भई तिन के द्युतकारी ।
ताको लख नरनाथ भयो विह्वल अधिकाई ।
काम अगन तन दहो सबै शुध बुध बिसराई ॥ ६ ॥

दोहा

तब किरात पति पै गयो, उप श्रेणिक भूपाल ।
याची तनुजा तासु की, सुन्दर रूप विशाल ॥ ७ ॥
जबै भील कहतो भयो, इस सुत को दे राज ।
तो व्याहूं तुम को अबै, यह कन्या महाराज ॥ ८ ॥

चौपाई

सो नरपति आरे कर लई । ताने तबही कन्या दई ॥
फिर आये निज पुरी मझार । भये बहुत विध मंगल चार ॥ ९ ॥
तिलकवती संग भोगत भोग । फिर सुत उपजो काम संयोग ॥
शुभटोत्तम अतिही बलवान । नाम चिलाती पुत्र सु जान ॥ १० ॥
इक दिन उपश्रेणिक परवीन । मन में इम बिचार तिन कीन ॥
मेरे पुत्र बहुत सुखदाय । तिनमें कौन सुराज कराय ॥ ११ ॥
जबही निमती लियो बुलाय । तासे प्रश्न कियो हरषाय ॥
सो वह कहत भयो सुन नाथ । जो तुम करिहै इतनी बात ।१२।
बिष्ठर बैठ बजावे भेर । भोजन करे जु कूकर घेर ॥
अगन लगतही लेय निकार । बिष्ठर चमर छत्र सुंडार । १३ ।
जो इतने कारज कूं करे । सोई नृप पद निश्चय बरे ॥
ऐसे सुन निमती के बैन । उप श्रेणिक चित पायो चैन ।१४।
लैन परीक्षा हेत नरेश । ताही बिध सब करी बिशेष ॥
तिनमें श्रेणिक कहि बुधिवंत । यह सब कारज कियो तुरंत ।१५।
अहो बुद्ध कर मन अनुसार । पावे प्रानी जगत मझार ॥

चौपाई

फिर आगे देखो इक ग्राम । बोलो कवर सुनो हो माम ।
बसत कहो अक उजड़ी येह । तब तिन कछुनहिं उत्तरदेह २८
फिर आगे इक तरु तल भाय । छत्र शीष पै धरो उभाय ।
मारग में तिन लियो समेट । फिर पहुंचे सरिताके हेट २९॥

दोहा

पगमें पनहीं पहन के, उतरो ताके पार ।
मारग में निजकर विषै, लेकर चलो कुमार ॥३०॥
फिर एक नारी देख के, कहत भयो सुन माम ।
बंधी खुली बतलाय मो, यह दीखत जो भाम ॥३१॥

चौपाई

फिर आगे इक मृतक निहार । तब इन श्रेणिक बचन उचार ।
जीवत है अक मरो सो येह । उत्तरदे नाशो सन्देह ॥ ३२ ॥
आगे शाल खेत इक देख । तब फिर पूछन कियो विशेष ।
अहो पूज यामें फल सार । दियो अक देशी बोवनहार ॥३३॥
इत्यादिक यह श्रेणिक सन्त । सोमशर्म ते बचन भनन्त ।
तब तिन गहलो याको जान । मौनधार कछुनहीं बखान ३४
कांचीपुर नगरी के पास । इसे ठाड़ दुज कियो अबास ।
जब याकी तनुजा बुधवन्त । अभैमती बोली हरषन्त ॥३५॥
तीरथ करके आये तात । ये काकी अक काहू साथ ।
सोमशर्म दुज इहविध कही । मुझको आवत पथमें सही ३६॥
अद्भुत रूप धरे जन एक । मिलो बटोही रहित बिवेक ।
आयो है ममसंग सो आज । तिष्ठत है इस पुरके बाज ३७।

दोहा

तब कन्या कहती भई, वो गाहिलो केह भन्त ।
जब भाषो भूदेवने, पथको सब बिरतन्त ॥ ३८ ॥

जब नन्दा पुत्रहन तेल कर तुरत लेयकर ।
अंजो चर्म हाथ कहो न्हाकर आयो घर ॥
जवहीं चतुर कुमार सलिल में तेल मिलायो ।
ताको वपुमें लाय, बहुरि भोजनको आयो ॥१९॥
तब पंक के पंथ बुलायो वाको सबही ।
आवत भये कुमार चरन भये लिप्त जो सबही ॥
तब नार दियो वार तुरत धोवन के कारन ।
दांत लिए करेन्द्र कियो ग्रान मल टारन ॥ २० ॥
पीछे उसीं थली धोय पग गाद पधारे ॥
जब इक विद्रुम लाय धरो जिन छिद्र हजारें ।
कन्या बोली सुनो चतुर पोवो गुण यामें ।
निज चतुराई सही पोय दीनों उन तामें ॥ २१ ॥

सोरठा

तब गुणसन्ति नार, चित में अति हर्षित भई ।
श्रेणिक को तत्कार, परनो उत्सव ठान के ॥ २२ ॥
के हैं पूर्वो जीव, पैहु पद मंगल नाहिं ।
व्याप सुःख सदीव, श्रीगुरु ऐसे उच्चरें ॥ २३ ॥

चौपाई

शिवरूपी लक्ष्मीको कन्त। होनहार यह कुवर महन्त।
अहो तासकी महिमा सार। कोकवि जगमें करे उचार ॥४७॥
या अन्तर कांचीपुर ईश। वसूपाल नामा गुण धीश।
विजयहेत तिन करो पयान। मगमें देखो श्रीजिन थान ॥४८॥
एक थम्भके ऊपर सोय। अद्भुत छवि बरनै कवि कोय।
देखतही मन हरषो राय। पत्र एक तबही लिखवाय ॥ ४९ ॥
निज पुर सोमशर्म के पास। भेजो नर पर धर हुल्लास।
तामें वर्न लिखे थे येह। एक थम्भ पै श्रीजिन गेह ॥५०॥
सुखदाता सुन्दर तत्काल। करवाना तुम विप्र विशाल।
सोमशर्म पायो नहिं भेद। तब चितमें बहु उपजो खेद ॥५१॥

दोहा

अब श्रेणिक बुधवानने, देखी पत्री ताम।
सब वृतान्त को जानके, करवायो जिन धाम ॥५२॥
भलो ज्ञान चातुर्यता अद्भुत कला अपार।
पुन्य बिना नहिं पाइये, इस नरलोक मझार ॥५३॥

पद्धड़ी

फिर नरपति आयो नगर बीच। देखो जिनमंदिरजुत मरीच।
सन्तुष्टवान ह्वै के तुरन्त। बसु मित्रा तनुजा रूपवन्त ॥५४॥
श्रेणिकको दीनी जुत उछाह। तिन विध बिवाह ते लई ब्याह।
अब कथा सुनो तिहुंजोगलाय। यहविधिश्रेणिक निजराजपाय ५५
अब उप श्रेणिक नरपति सुजान। अपने चितमें बैराग आन।
निजराज चिलाती पुत्र दीन। अरु आप मुनीपद ग्रहनकीन ५६
अब राय चिलाती पुत्र जेह। बहु करनलगो अन्याय येह।
जे हैं नृपेन्द्रकेसचिव मुख्य। एह बिध लखकर चितभयोदुख्य ५७

हम ने बहुत कहो समझाय। तौ पाणीता मन एक न आय।
जैसे पुरुष भाम बासि होय। तेम कूपिका भासि है सोय। ६९।
यातें अब अवनी के राय। एक बापिका देहु पठाय॥
तिसही पीछे कूप सु तेह। तुम पर आवे निःसन्देह॥ ७०॥

दोहा

ऐसे इन की बीनती, सुन नृप मौन लहाय।
अहो सुःख पावें नहीं, जे धूरत अधिकाय॥ ७१॥
फिर चित में रिष धार के, भेजो एक गयन्द।
याकी तोल बताय दो, हो विप्रो गुण वृन्द॥

चौपाई

अभै कुमार तने परभाय। सब दुज कीनो एक उपाय॥
नवकामें गज कूं बैठान। सलिल तनो तिन करो न पान।७३।
फिर तरनी में भरे पखान। तिनको तोल चित्तमें आन॥
नृप पै लिख भेजो तत्काल। जितनो तोल हुतो सुंडाल। ७४।
फिर श्रेणिक विप्रन पै रोष। इम आज्ञा भेजी लख दोष॥
कूप जो पूरब दिशा मझार। पश्चिम में कर देहु अबार॥ ७५॥

दोहा।

तब कुमार के कहनते, उलट बसायो ग्राम।
नरपति को दिखलाइयो, पश्चिम कूप ललाम। ७६।
फिर नरपति इक मेष को, दीनों तहां पठाय।
मोटो दुबलो ह्वै नहीं, हुकम दियो इह भाय। ७७।

पद्धडी

तव सब दुज ह्वै चित में उदास। आये श्री अभै कुमार पास।
तिन कहन थकी इक बाघ लाय। ताढिग बांधो मींढो चराय।७८।
फिर नरपति ने लीनों मंगाय। बैसो ही लख कछु ना बसाय।
फिर इक आज्ञा भेजी तुरंत। घट में इक पेठो द्यो महंत। ७९।

दोहा

सब कुमार के कहन ते, पैठो कुमार मझार ।

नृत्य धरो फिर हुक्म करि, भेज दियो नृप द्वार ॥ ८० ॥

सोरठा

अब श्रेणिक नरराय, इम आज्ञा भेजत भयो ॥

बालू डोर बनाय, मो ढिग लावो वेगही ॥ ८१ ॥

कहत भयो दुजराज, आज्ञा पाय कुमार की ॥

जैसी द्यो महाराज, तिस सदृश हम भेजदें ॥ ८२ ॥

दोहा ।

नृप श्रेणिक मन रोष धर, हुकम दियो इत्यादि ॥

प्रति उत्तर इन सब दियो अभैकुमार प्रसाद ॥ ८३ ॥

चौपाई

हे नरनायक विस्मयवन्त । फिर निज चित में बहु हरषन्त ।
पत्र एक भेजो तिन पास । तामें एक विध हुकमप्रकास ॥ ८४ ॥
जो जन तुम में चतुर कहाय । ताको मो ढिग देहु पठाय ॥
पण ऐसी विध आवे सोय । रैन न होय नहीं दिन जोय ॥ ८५ ॥
नहिं मारग नहिं ऊजड मांह । पैदल बिना सवारी नांह ।
इत्यादिक सुनके सुकुमार । करो गमन संध्याकी बार ॥ ८६ ॥
मस्तक विषै छींको लटकाय । तामधि आप सुबैठो जाय ।
ऐसो एक सींक के बीच । एक ऊजड मारग में खींच ॥ ८७ ॥
यहिविध पहुंचो नृप के पास । सभा माहिं जहं रहे सवास ॥
तिनमें उभो सादा रूप । सिंहासन पै देखो भूप ॥ ८८ ॥

दोहा

नमन करो थाने नहीं, तब नृप हृदय लजाय ।

कुलको दोष सुकुल पर, दुष्ट मैं प्रगट रूपाय ॥ ८९ ॥

कांचीपुर ते नार जुत बुलवाई भूपाल ॥
अमैसती वसु मित्र का, सो आई तत्काल ॥ ९० ॥
पुत्र आदि संयुक्त यह, सुख से तिष्ठे भूप ।
इस अन्तर इक बारता, और सुनो शुभ रूप ॥ ९१ ॥

चौपाई ॥

सिंध देश में नगर विशाल । चेटक बुद्धिवान भूपाल ।
समदृष्टी जिनभक्ति धरन्त । नार सुभद्रा रूप अत्यन्त ॥ ९२ ॥
तिन दंपति के कर्म बसाय । सुता सात भई सुंदर काय ।
प्रियेकारनी पहिली जान । तिस महिमा को करे बखान ॥ ९३ ॥
ताके सुत उपजे जिनचंद । अन्तम तीर्थङ्कर गुणवृन्द ॥
दूजी मृगावती बरसती । तिस लख रति लाजत है अती ॥ ९४ ॥
तीजी भई सुभद्रा नाम । प्रभावती चौथी अभिराम ॥
पंचम नाम चेलना कही । षष्ठी जेष्ठा शुभ मत गही ॥ ९५ ॥
सती चंदना जग विख्यात । भई सप्तमी सुन्दरगात ॥
सहे बहत उपसर्ग अघोर । रक्षा करी शील की जोर ॥ ९६ ॥
अब यह चेटक नाम नरेश । सब तनुजा में मोह विशेष ॥
यातें इनके शुभ चित्राम । करवाये नृपके अभिराम ॥ ९७ ॥

दोहा ॥

सातों के पट लायके, चित्रकार बुधवन्त ।
दीने नृप के कर विषै, लखकर यह हरषन्त ॥ ९८ ॥

काव्य ॥

सुता चेतना तनो पट्ट नृप कर जब लीनों ।
ताकी जंघा बीच एक तिल तिनने चीन्हों ॥
देखतही रिसवंत भयो तब चित्रकार पर ।
ताने जुग कर बैन तबै भाषे इम नुतकर ॥ ९९ ॥

चहो देर गग कर्न [illegible] लेखन जो थाहीं ।
नाहीं विंदु मनोगपड़ी ना पटके मांहीं ॥
ताको मेटन कर्म नाथ मेने कर्द बार्ग ।
फिर याही आपड़ी नर्ने में एम विचारी ॥ १०० ॥

दोहा ॥

ऐसो लच्छन तासके, होवे जंघा चीन ।
यह निश्चय करके प्रभू, गंने दीनों सीच ॥ १०१ ॥
इम वह पट भूषण विविध, दीने नृप हरखाय ।
सतपुरुषन को हरष जो, कभी न निष्फल जाय ॥ २ ॥

चौपाई ।

इस अन्तर उठ नृप उदार । श्रीजुत तिंउ निज आगार ।
नितप्रति श्रीजिनवर के गेह । पूजा करे सहित बहु नेह ॥३॥
तिसही बालक को विश्राम । सती चेलनाको अभिराम ।
फैलावन देखनके काज । सदा हर्षजुत यह महाराज ॥ ४ ॥
इक दिन यह चेटक भूपाल । बहुत वस्तु लेकर निज लार ।
काहू कारन किये पयान । आये राजग्रह उद्यान ॥ ५ ॥
तहं करके स्नान मनोग । फिर पट पहिरे उत्तम जोग ।
भू में जिनपद फैलाय । प्रभुकी पूजन कीनी राय ॥ ७ ॥
इह विधि करतो श्रेणिक देख । मनमें विस्मय करो विशेष ।
ताके निकट जो थी लोग । तिनसे वचन कहे नृप जोग ॥ ८॥
[illegible] इह कारन कौन [illegible] नृप [illegible] ।
तब तिन [illegible] उत्तर भाष । [illegible] ॥ ८ ॥
[illegible] ताके [illegible] । [illegible] है इह [illegible] ।
[illegible] । [illegible] ॥ ९ ॥
[illegible] । [illegible] ।
[illegible] । इह विधि जानो [illegible] ॥१०॥

दोहा

ऐसे सुन श्रेणिक तबै, जुग कन्याको रूप।
तिनमें है आशक्त मन, मंत्रिनप्रति कहो भूप ॥ ११ ॥
सब प्रधान जातेभये, अभयकुमार के पास।
नमस्कार करके तबै, इम कीनी अरदास ॥१२॥

सोरठा

हे कुमार जुग कन्या सार। चेटक नृपको रूप अपार।
तुमरे तात याचनाकीन। मन बिरोधते तिन नहिं दीन १३॥
इह तो कारज करन तुरन्त। सो अब क्या कीजे बुधवन्त।
ऐसे सुनके कुवर सुजान। सचिवन प्रति बच एम बखान१४॥
तुम चिन्ता मत करो पुनीत। मैं करहूं यह कारज मीत।
इम कह पिता तनों वर रूप। आप लिखो पट मांहि अनूप १५
सार्थ वाहको रूप बनाय। पहुंचो पुरी बिशाला जाय।
तहँ उपाय कर वह चित्रास। कन्याप्रति दिखलायो तास १६॥
देखतहीं वे मोहित भई। मनकी शुध बुध सब तज दई।
तब सुरंगपथ अभयकुमार। लेकर चलतभये तत्कार ॥१७॥
तबै चेलना कपट समेत। जेष्ठा भेजी भूषण हेत।
आप हर्षते याकी साथ। आई जहं श्रेणिक नर नाथ ॥१८॥

दोहा

ताने बहु उत्साहते, परनी यह गुण गेह।
सब अन्ते वरके विषै, भई शिरोमणि येह ॥ १९ ॥
विष्णु भक्ति नर नाथ है, इम जिनमतमें लीन।
मत विवाद निशदिन करत, आपसमें परवीन ॥२०॥

कवित्त

या अन्तर श्रेणिक नर नायक रानीप्रति अब येम उचार।

ये स्वामी पति देव तुम्ह हैं तासें मन वच मानों सार ।
और तुम धनदत्त कुलदीपक तासों कीजे नेग उदार ।
विनय सहित इम कही चेलना हे स्वामी मैं नाथ तुमार ॥८॥
ऐसे वचन श्रेणिक सुनाये मन में होवे हर्षाय ।
नाना विध ध्वज सहित नगर तिह कल्पवृक्ष सम शोभा लगाय ।
तबै चेलना उनतें पूछी कहा करत हौ तुम यह काम ॥
श्रेणी उत्सव ज्ञान धर्म के तत्व विष्णुधाम में [illegible] ॥

दोहा

तब इम श्रेणिक विधि कीनी उत्सव नगाय ।
चालत जिनके धर्म पथ, तातें बहु सुख पाय ॥८३॥
ऐसे वचन नृप इम कही, सुन रिनवास सुजान ।
तो मानत [illegible], यों जिनागम [illegible] ॥

सोरठा

ऐसे वचन निहार, उत्तर दीनों चेलना ।
कुमति के भरतार, यह निर्नो मन धारिये ॥ ८५ ॥

चौपाई

तहँ आतापन जोग समेत । ऋषी यशोधर भवदधि सेत ॥ ३०॥
तिन देखत चितमें रिष धार । इह मम काज विघन करतार।
मारूँ इनको अब इह थान । इम कह छोड़दिये बहु स्वान।३१।
वे कूकर अति दुखकी रास । दे पर दक्षणा बैठे पास ॥
यह लख श्रेणिक कोप समेत। छोड़े सायक जेम परेत ॥ ३२ ॥
तबै बान लागत परमान । भई सुमन माला सुख खान ॥
अहो ऋषिनको तप परभाय। कहो कौन पै बरनो जाय ॥ ३३ ॥

दोहा

ता छिन सप्तम नर्क की, तेतिस सागर आय ।
श्रेणिक की बंधती भई, दुष्ट करम परभाय ॥ ३४ ॥
तब नरनायक एम लख, तज खोटो अभिप्राय ।
मद तजके तिन चरन में, तिष्ठो सीस नवाय । ३५ ।

पद्धडी

ताही छिन मुनिको जोगसार । पूरण हूवो आनन्द कार ॥
तब पुन्य उदय श्रेणिक नरेश । तिन मुखतें धर्म सुनो विशेष ।३६।
उपशम सम्यक जब ग्रहन कीन। निज निंदाते भई आप छीन।
रहि प्रथम नरककी आय आन। जो बरस चौरासी सहस मान ३७
देखो इस सम्यकको उद्योत। तिस धारनते क्या क्या न होत॥
कहँ तेंतिस सागरको प्रमान। कहँ वर्ष चौरासी सहस मान ।३८।
फिर चित्र गुप्त मुनिवर दयाल। तिनके पदको नृप नाय भाल ॥
क्षय उप सम सम्यक युक्त होय। निज गृह तिष्ठो सब पाप खोय ।

चौपाई

ता पीछे श्री वीर जिनन्द । जिन पद कमल हरत बहु फंद॥
तिन प्रसादते पाई सार । क्षायक समकित शिव दातार ।४०।

करों तीर्थंकर पद बन्द । तीन जगत पूजत सुख कंद ॥
ताहि तीर्थंकर भगवान । होंयगे पद पंच कल्याण ॥ ८१ ॥
यह व्रत सम्यकको परभाव । देखो भवि जन चित लाय ॥
स्वर्ग मोक्षको दीन निहार । जग चिंतय फल सुखकार ॥ ८२ ॥
देव इन्द्र चक्री पद देय । दुःख समूह को नाश करेय ॥
पंडित जन कर सेवित सदा । अवर जीव सुनो नहिं कदा ।८३।
तातें गहत धर्म भगवान । ताको निश्चय सम्यक मान ।
याविधि गुरु श्री सागर मुनी । धनन कीर्ति तिस हम भनी ।८४।

अथ प्रीतंकर रात्रिं भोजन त्याग

कथा प्रारम्भः नं० ११७

मङ्गलाचरण । सोरठा

श्री जिनदेव महान, और भारती मायजी ।
गुण उज्जल गुरमान, नमस्कार कर के अबै ॥ १ ॥
कहूं कथा बिख्यात, रात्रि अहार सु त्याग की ।
जाने जन सुख पात, सोई अब सुन लीजिये ॥ २ ॥

पद्धडी

वृष हेत रैन भोजन तजंत । दोऊ लोक समारत ते महंत ।
सो कीर्ति कान्त यश शान्त पांत । बहु दीर्घ आय बर सुख लहात ३
जे भखें रैन में जन अहार । ते दारिद्री होवें अपार ।
अरु पुत्र रहित ह्वै नेत्र हीन । बहु रोग ग्रसत तन लह मलीन । ४ ।
कैसे हैं रजनी भुक्त येह । बहु कीट पतंगन जन्तु गेह ।
जे मांस तनें त्यागी प्रवीन । याको त्यागो चित पाप चीन । ५ ।

दोहा

जो श्रावक किरिया निपुन, रहे घड़ी दो भान् ।
जुग घटिका दिन चढ़ तक, तजे सबै अन पान ॥ ६ ॥

श्री मतसमन्त भद्र स्वामी ने कहा है:—

श्लोक—अन्होमुखेऽवसाने च यो द्वे द्वे घटिकें त्यजेत ।
निशा भोजन दोषज्ञो यात्यसौ पुण्यभाजनम् ॥ ७ ॥

सवैया इकतीसा

जोई भवि जीव तजें रैन को अहार पान, औषधि तम्बोल फल आदिक न खात हैं । आन बने कष्ट जोर तौ भी नहीं नेम छोर, रहें दृढ़ चित्त सोई पुन्य को लहात हैं ॥ तेई पावें

इक वर्ष मांहि षट् मास व्रत, तास तनी महिमा कहो काप कही जात हैं। सोई सम कित वन्त परम पुनीत सन्त, वोही धरमज्ञ वोही जग विख्यात हैं ॥ ८ ॥

चौपाई

अब श्री जैन सूत्र अनुसार। कहूं कथा भवि जन हितकार।
श्री मत प्रीतंकर बड़ भाग। होत भये रजनी भख त्याग। ९।
येही भरत क्षेत्र शोभन्त। तामें मागध देश दिपन्त ॥
सार सम्पदा को स्थान। जैन धर्म कर भरो महान ॥ १० ॥
तामें सुप्रतिष्ठ पुर बसे। नृप जैसेन तास में लसे ॥
परजा पाले धर अनुराग। धर्म न्याय धारी बड़भाग। ११।
ताही पुर में सेठ बसन्त। नाम कुबेर दत्त धुधवन्त ॥
श्री जिन चरन कमलको दास। धन मित्रा तिय तिस आवास १२
पूरब किया हत पुन्य प्रभाय। ज्ञान नेत्र धरी मुनि राय।
आये सागरसेन उदार। तिनको दीनो शुद्ध अहार ॥ १३ ॥
फिरकर जोर पूछियो येम। हे स्वामी भाखूं धर प्रेम।
कोई पुत्र हमारे धाम। होवेगा अक नाहीं स्वाम ॥ १४ ॥
जो सुत नाहिं उपजे हम घरें। तो अब नाशक दीक्षा धरें ॥
इह विधि ते करके अरदास। नमस्कार कर तिष्ठा पास ॥ १५ ॥
तब श्री मुनिवर भाखे बैन। महाभाग तुम सुन सुख दैन।
धीर वीर वर चर्म शरीर। वंश शिरोमणि गुण गम्भीर ॥ १६ ॥
उपजेगो तुमरे सुत आन। इम सुन दम्पति चित हरषान।
साँचे सुखाकर श्री गुरु बैन। सुनके कौन लहे नहिं चैन ॥ १७ ॥

निज ग्रह में सुखसो रहत, बीते कित एक मास ॥
फिर अनंद दायक तनुज, उपजो बहु गुन रास ॥ १९ ॥

पद्धड़ी

कैसा है बालक चंदसार । परयन मन अम्बुध वृन्दकार ।
और सब जनको उपजे अनन्द । मुलके यहसेशुजब मंद मंद २०
तातें सब जन गह हर्ष चित्त । पीतंकर नाम धरो पवित्र ।
निज गुणकर वृद्धभयो सुबाल । दोयजशशिसम जिमगतिमराल २
निज रूपथकी जीतो अनंग । सो भाग थकी भूतल अभंग ॥
वर चर्म अङ्ग धारे कुमार । तातें इस बलको कौन पार ॥ २२ ॥
जब पंच वर्ष के भये एह । तब मात तात धरके सनेह ।
गुरु निकट सौंप यों कर उछाह । पढ़नेके हेतसुचित उमाह ॥२३॥
कर वर्ष विषै यह बाल चंद । विद्या रूपी सागर अमंद ॥
गुरुभक्तिरूप नवका मझार । तामें चढ़ पारभयो कुमार ॥ २४ ॥

दोहा

सब विद्या पढ़के निपुन, धर्म वृद्धि के हेत ।
नित प्रति श्रावक जननको, यह उपदेश सुदेत ॥ २५ ॥

सोरठा

इम सुनके भूपाल, लखके आनंदित भयो ॥
सुवरण आदि रसाल, दीने याको प्रीति कर ॥ २६ ॥

चौपाई

इस अन्तर प्रीतङ्कर येह । जोवनवंत भयो गुण गेह ।
तब चित में इमकियोबिचार । सत्य रूप सम्पति अधिकार ॥२७॥
जबलों निज पौरुष परभाय । लाऊं बेग न लक्ष कमाय ।
तौलों पानपात्र आहार । हम करिहैं इम निश्चय धार ॥ २८ ॥
ऐसे चितवन कर बुधिवान । महा मानधर करो पयान ॥

दीपान्तर के नृप कर नेह । पुर में जिन घर आये गेह ॥ २९ ॥
और जु पुण्यनते परसाद । सबही सुख करना साद ॥
रत्न श्री कुण्डल तिनकूं नहि । ऐसे भांति जानो तिनमांहि ३० ॥
या अन्तर जयसेन नरिंद । प्रीतंकर को लख गुण वृंद ॥
दई विवाह तनुज गुण भरी । नाम तासु पृथ्वी सुन्दरी ॥ ३१ ॥
अर्ध राज दैके वन थान । ताको दीनो शर्मनिधान ॥
और दीप दीपान्तर तनी । उपजी तिय इन परनी घनी ॥ ३२ ॥
केर वासन नृप की सुता । तिय विवाह परनी गुण जुता ॥
ताको वल्लभ पद विशेष । महा पुराण में लीनो देख ॥ ३३ ॥

दोहा

अब प्रीतंकर भूपिवर, राजादिक समाज ।
पुन्य उदय भोगत भयो, इह गुनिगन शिरताज ॥ ३४ ॥
धीन सहित गुण नम शुभ, नवधा भक्ति धरन्त ।
सुर चारन मुनि चन्द को, नित प्रति दान करन्त ॥ ३५ ॥

सोरठा ।

श्री जिन पूजा महान, स्तोन पूर्व करतो भयो ।
जो सुर शिव सुखदान, दुर्गतिया की नाशनी ॥ ३६ ॥

कर सन्यास विध तज के प्रान । लोकोत्तर पहुंचे गुणस्थान ॥४०॥
अब नगरी बाहर उद्यान । तिष्ठे जुग चारण मुनी आन ।
रजू मती अरु विपुल मतीय । धरें ध्यान निरमल जगपीय ॥४१॥
तब प्रीतंकर सुन तत्काल । बहु विभूति लेके निजनाल ।
और भव्य जन के समुदाय । तिन जुत तहँ पहुंचो हरषाय ।४२

दोहा ॥

अष्ट द्रव्य लेकर विषे, तिन के चर्न उदार ।
पूजे याने भक्ति युत, फिर भू मस्तक धार ॥४३॥
तप रूपी वारिध अगस, वे दोनों मुनिचंद ।
तिनते धरम स्वरूप वर, पूछो धर आनंद ॥४४॥

सोरठा ।

प्रीतंकर बड़भाग, विनय सहित तिष्ठत भयो ।
गुरुपद में चित पाग, नीचो मस्तक तिन कियो ॥४५॥

काव्य ॥

तबै बड़े मुनिराज शब्द गम्भीर मिष्ठतर ।
कहत भये सुन भव्य धर्म युग विधतू उरधर ॥
मुनि श्रावक को भेद श्री जिनचंद बतायो ।
तीन जगत हितकार सरब भव्यन मन भायो ॥४६॥
तिन दोनों में जती धरम निश्चय भवितारी ।
क्षमा आदिक दश भेद भावना तप अघहारी ॥
अब श्रावक को धर्म सुनो कुछ कर्म निवारन ।
जाते सुरपद लहे बहुरि शिव पदको कारन ॥४७॥

पद्धडी ।

पहिले ही सम्यक श्रद्धन जोग । वसु अंग सहित निरमल मनोग ।
शिव बीज श्रेष्ठ सुख देनहार । पच्चीस दोष बरजित उदार ॥४८॥

चैत्य चिता ले अधिक मनोग । सुख निधि बनवावो अति जोग ।६०।

दोहा ।

फिर परतिष्ठा कीजिये, बहु बिधि जुत उत्साह ।
तामें द्रव्य लगाईये, जो दुरगति नस जाय ॥ ६१ ॥
इत्यादिक भवि कीजिये, वृष में चित्त लगाय ।
अन्तस लेखन मरन कर, प्रभु पद पंकज ध्याय ॥ ६२ ॥

पद्धडी ।

भो भव्य धर्म इह जुग प्रकार । ताको चित धरिये बार बार ।
इम सुन प्रीतंकर हरषपाय । करजोड़ सु नुत बिनती कराय ॥६३॥
हो स्वामी जग रच्छक दयाल । मम पूरब भव कहो सु गुणमाल ।
ऐसे सुन ज्ञान सु चखु धरन्त । तब कहत भये सुनतू बृतन्त ।६४।
इस सुप्रतिष्ठ पुर के उद्यान । श्री सागर सेन मुनीस आन ।
तिन बंदन को नृप आदिजाय । भेरी मृदंग बाजे बजाय ॥ ६५ ॥
तिन चरन कमल की पूजठान । नमिथुत कर सब आये सु थान ।
ताही छिन पुर में मृतक एक । तिस थानक लाये जन अनेक ।६६।
सो गेर गये वन के मझार । तहं इक जम्बुक इस बिध निहार ।
तिस खाने में आशक्त सोय । इस को खाऊं इम चित्त जोय ॥ ६७ ॥

सोरठा ।

इम बिचार वहस्याल, जहँ बाजे बहु बजत हैं ।
तहँ आयो तत्काल, इसको लख गुरु चिन्तवै ॥६८॥
निकट भव्य इह जीव, ब्रत को ग्रहन करे सही ।
हैगी शिव तिय पीव, करुणा कर बच इम कहे । ६९ ।

काव्य

रे गीदड़ तें पूर्व जन्म में पाप कमायो ।
श्री जिन बृष को तजो तास कर इह भव पायो ॥

[illegible] सुनक खाने की इच्छा ।
[illegible] दीनी [illegible] ॥ ७० ॥
[illegible] पन करी ।
[illegible] पवेगी ॥
[illegible] शुभ [illegible] ।
[illegible] नवरी ॥ ७१ ॥
[illegible] सुनि [illegible] जानी ।
[illegible] जानी ॥
[illegible] कराही ।
[illegible] नाही ॥ ७२ ॥
[illegible] योनि ते [illegible] पाई ।
[illegible] यह सुखदाई ॥
[illegible] जग के हितकारी ।
[illegible] तबै मन इच्छा धारी ॥ ७३ ॥

दोहा

गुरु की तीन प्रदच्छिणा, दीनी भक्ति सु ठान ।
गाढ़ि सुक त्यागत भयो, धर के बहु सरधान ॥ ७४ ॥

सोरठा

पीछे यह गुनवान, मद्य मांस तज तो भयो ।
फिर इस क्षुधा लगान, तब सन्तोष जुत होय के ॥ ७५ ॥
[illegible] सु [illegible] पद ध्यान, सुखे फल भक्षण करे ।
तप ते तन कृश ठान, तृषावन्त गयो वापिका ॥ ७६ ॥

चौपाई

[illegible] मांहि । अंधकार तहँ [illegible]
[illegible] जान । फिर बाहर आवे [illegible]

मारतंड लख के तिह घरी । उतरो पयकी इच्छा धरी ॥
तहँ तम लख कर ऊपर आय। बहुरि सूर्य देखो सुखदाय ।७८।

दोहा

ऐसे आवत जात ते, अस्त भयो सो भान ।
व्रत रक्षा के कारने, दृढ़ चित करो सुजान ॥ ७९ ॥

सवैया तेईसा

रैन विषै सु भयो तृषातुर अग्नि समान जरे तन सारो ।
तो पण शुद्ध रहो व्रत में गुरु नाम जजो परिणाम सु धारो ॥
वह तज काय सु पुन्य बसाय भये तुम आय लहो सुख भारो॥
नाम कुवेर जु दत्त महा बड़ भाग हुवो यह तात तुम्हारो ।८०।

दोहा

अहो कुंवर सम्पति सहित, गुणियन को सिरताज ।
धीर बीर लावन्य जुत, चर्म शरीरी राज ॥ ८१ ॥
पुन्य उदै ऐसे भये, तुम प्रीतंकर आय ।
एक बरत पालन थकी, यह सब सौजु लहाय ॥ ८२ ॥

सोरठा

तातें भव्य उदार, कष्ट विषै रक्षा करो ।
निज व्रत की सुख कार, यही जोग है जग विषै । ८३।

चौपाई

सुखदाता श्री मुने के बैन । सुनके भविजन पायो चैन ॥
श्री जिन भाषित धरम महान। तामें रक्त भये अधिकान । ८४ ।
[illegible] ही प्रीतंकर येह । निज भव सुन नासो सन्देह ॥
फिर चितमें वैराग उपाय । युग मुनिवरको बहु सिरनाय । ८५।
बरत महातम मन में धार । फिर कर आये निज आगार॥
यह संसार अथिर सब जोय। भोग भुयंगम सम अवलोय ।८६।

अडिल्ल

ऐसे प्रीतंकर स्वामीको चरित्रजी, तीन जगत हितकार महा जो पवित्रजी। यह हम तुमको दाता ज्ञानतनो सही ॥
दीजो नितप्रति सार सरब सुखकी मही ॥ ९७ ॥

देखो इह गोमाय बिरष किंचित गहो, तजके दुठ परजाय आन मानुष भयो। फिर तप तप बड़भाग मोक्ष पदवी लही ॥
ताते भविजन जैन धरम धारो सही ॥ ९८ ॥

दोहा

जम्बुककी परजाय तज, भये प्रीतंकर आय।
रात्रि भुक्त त्यागन थकी, पायो सुःख अथाय ॥९९॥

सोरठा

तातें भव्य सुजान, भोजन त्यागो रैन को।
जो चाहो कल्यान, नित चित धारो यह कथा १००

इति श्रीआराधनासार कथाकोषविषै रात्रिभोजनत्याग में श्रीप्रसप्रीतंकर स्वामी की कथा समाप्तम् नं० ११७

जैसे सुरतरु एकही, मन बंछित दातार।
और हजारों बृच्छते, कारज कौन निहार ॥ ६ ॥

चौपाई

सोइ पात्र हैं तीन प्रकार। उत्कृष्ट श्रीमुनिवर सार।
मध्यम श्रावक सम्यकवन्त। अव्रत सम्यक दृष्टी अन्त ॥७॥
येही जोग जान बड़ भाग। औरन को तजिये अनुराग।
इनके विषै दियो जो दान। निश्चयकर सुखदेय महान ॥८॥
अहो तासकी महिमा सोय। हमसेती किम बरनन होय।
पात्रदान फलते यह जीव। निरमल सुखसो लहे सदीव ॥९॥
शर्म नाम किसको है मीत्त। कीर्त कान्त अरु रूप पुनीत।
निरमल तन अद्भुत सौभाग। पुन्यवान जिन मतमें राग १०
सुखतरुवरको बीज निहार। उच्च कुलमें लेवे अवतार।
सुबरन औ धनधान्य उपान। पुत्र पौत्र तिय भोग महान ११

दोहा

इन्द्र चन्द्र नागेन्द्र पद, देवे येही दान।
तातें नितही सुमनजन, दीजे वित्त समान ॥ १२ ॥

पद्धड़ी

जे भक्ति सहित देवे सुदान। ते सज्जन जन संगत लहान।
दिनदिन कल्याण नवीन देत। क्रमकर वह शिवपुर राजलेत१३॥
श्री आदनाथ वत भव्य जान। दियो वज्रजंघके भवसुदान।
तातें नितप्रति चव विध अनूप। धरो त्यागविषै बुधहर्षरूप१४
जिन भव्यन देकर दान सार। फलपायो इस अवनी मझार।
तिननाम कहनकोकोमहान। श्रीजिनवरचन्द्रबिना न जान१५
अरु पूरब आचारज सुरीत। तिन नाम कथित आये पुनीत।
अब अवसर पाय कहूं सुनाय। निज बुद्धि युक्तसुन चित्तलाय१६

दीरघ दर्शी किरिया वन्त। धर्म विषै चित धरे अत्यंत।
पुन्य उदय ते भोगत भोग। निज ग्रह में पचेन्द्री जोग॥ २६॥

दोहा॥

ता नृप के होती भई, जुग तिय रूप निधान।
सिंघ नंदिता नाम यक, आनन्दता सुजान॥ २७॥
तिन दोनों के सुत भये, शशि रवि की उनहार।
इन्द्र उपेन्द्र सु नाम है, सूरवीर अधिकार॥ २८॥
इत्यादिक परिवार जुत, श्रीय षेण महाराज।
पुन्य उदै निजधाम में, तिष्ठत सब सुख साज॥ २९॥

काव्य।

तिसही नगरी विषै सात्य की विप्र बुद्धधर।
जंघा नामा नार सत्य भामा पत्रीवर॥
तैसे ही इक अचल ग्राम में विप्र रहत है।
धरनी जट तिस नाम वेद वेदाङ्ग सहित है॥३०॥
ताके अग्निला नार पुत्रजुग सुन्दर प्यारे।
इन्द्र भूत और अगन भूत ये नाम सुधारे॥
क्रपल नाम इक दासी सुत तिसके घर माही।
पूरब उदै पसाय बुद्ध तीक्षण अधिकाही॥ ३१॥

दोहा

नित प्रति दुज निज सुतन को, जबै भनावे बेद।
सुन कर दासी तनुज यह, उरधारे विन खेद॥ ३२॥
निज धीके परसादतें, पढ़ो बेद बेदांत।
पंडित ह्वै तिष्ठत भयो, धारे रूप अनांत॥ ३३॥

सोरठा

करो जतन जनकोय, बुद्ध कर्म अनुसारणी।
ताते पण्डित होय, बिना सिखाये जग विषै॥ ३४॥

चौपाई ।

[illegible] । [illegible] ।
[illegible] । [illegible] ॥३५॥
[illegible] । बनमांहीं मैं [illegible] ।
[illegible] दीनो निकास । [illegible] ॥३६॥
[illegible] । [illegible] आदि [illegible] ।
[illegible] । [illegible] मनुजा दई निकार ॥३७॥
[illegible] । [illegible] पाय ।
[illegible] । [illegible] में [illegible] आनंद [illegible] ॥ ३८ ॥

दोहा ।

इह [illegible], [illegible] ।
[illegible] ॥ ३९ ॥
इहविधि मनआशा कही, मन में कियो विचार ।
[illegible], [illegible] ॥ ४० ॥

सोरठा ।

[illegible], निर्धन अपने धाम में ।
[illegible] ॥ ४१ ॥

दीरघ दर्शी किरिया वन्त। धर्म विषै चित धरे अत्यंत।
पुन्य उदय ते भोगत भोग। निज ग्रह में पचेन्द्री जोग॥ २६॥

दोहा॥

ता नृप के होती भई, जुग तिय रूप निधान।
सिंघ नंदिता नाम यक, आनन्दता सुजान॥ २७॥
तिन दोनों के सुत भये, शशि रवि की उनहार।
इन्द्र उपेन्द्र सु नाम है, सूरवीर अधिकार॥ २८॥
इत्यादिक परिवार जुत, श्रीय षेण महाराज।
पुन्य उदै निजधाम में, तिष्ठत सब सुख साज॥ २९॥

काव्य।

तिसही नगरी विषै सात्य की विप्र बुद्धधर।
जंघा नामा नार सत्य भामा पत्रीवर॥
तैसे ही इक अचल ग्राम में विप्र रहत है।
धरनी जट तिस नाम वेद वेदाङ्ग सहित है॥३०॥
ताके अग्निला नार पुत्रजुग सुन्दर प्यारे।
इन्द्र भूत और अगन भूत ये नाम सुधारे॥
कपल नाम इक दासी सुत तिसके घर माही।
पूरब उदै पसाय बुद्धतीच्चण अधिकाही॥ ३१॥

दोहा

नित प्रति दुज निज सुतन को, जबै भनावे बेद।
सुन कर दासी तनुज यह, उरधारे विन खेद॥ ३२॥
निज धीके परसादतें, पढ़ो बेद बेदांत।
पंडित है तिष्ठत भयो, धारे रूप अनांत॥ ३३॥

सोरठा

करो जतन जनकोय, बुद्ध कर्म अनुसारणी।
ताते पण्डित होय, बिना सिखाये जग विषै॥ ३४॥

चौपाई ।

तब सर्मा द्विज मन कोप ठान । धर्मी जनको इम वच बखान ।
दासी सुतको विद्या सबोत । दीनी अद्भुत नहिं जोग तोर ॥३५॥
ऐसे तिनके वच सुन तुरंत । मनमांहीं में धरके अत्यंत ।
ताको घरते दीनो निकार । तब कपल चलो है कर उदास ॥३६॥
पढ़ि विद्या रतन पुर द्विज सुवेष । तब सात्यक ब्राह्मन गादि पेस ।
बहु परिगह ल्याय निजधामलाय । सतभामा तनुजा दई विचार ॥३७॥
अब कपल सत्यभामा लहाय । राजादिकतें बहु मान पाय ।
बहु वेदनको करतो बखान । सुख से तिष्ठत आनंद ठान ॥ ३८ ॥

दोहा ।

इह विधतें बहु दिनगये, नार भई रतुवंत ।
ए चरित्र करते थकी, बांछा करी अत्यंत ॥ ३९ ॥
इहविधि सतभामा लख्यो, मन में कियो विचार ।
यहपापी किसको तनुज, शंसय इम चितधार ॥ ४० ॥

सोरठा ॥

ग्रंथ रहित यह होय, तिष्ठी अपने धाम में ।
होनहार सो होय, यह विचार करती थकी ॥ ४१ ॥

चौपाई ।

अब धरनी जट आसन जोय । पाप उदय दारिद्र जुत होय ।
[illegible] विभव सुनके अधिकार । आवत भयो तासके द्वार ॥ ४२ ॥
ताको लखकर कपल तुरंत । चितमांहीं बहु रोष गहंत ।
बाहर सेती धर अनुराग । खड़ो होय ताके पगलाग ॥ ४३ ॥
[illegible] सिंहासन पे बैठाय । सुश्रुषा कीनी बहुभाय ।
फिर पूछी सब ज्ञान [illegible] मान । सतभामे है तुम भायो तात ॥४४॥
[illegible] सार । ताको [illegible] बसायो सार ।
[illegible] सो तिन [illegible] । ऐसो सुनके दियो सांगद ॥४५॥

बहुत दिये वस्त्रादि मनोग । कहत भयो सुनि ये सबलोग ।
यह दुज पण्डित मेरो तात । ऐसी कुश्चित भाषी बात ॥ ४६ ॥
तबवो दुज दारिद्रपसाय । याको सुत कहके बतलाय ।
तातें दारिद को धिक्कार । काज अकाज गिने न लगार ॥४७॥
इह विधिबीतें कइ एक मास । तब यह सतभामा गुणरास ।
धरनो जटको बहु धन दीन । बुलवाके एकान्त प्रवीन ॥ ४८ ॥
भक्ति सहित इम पूछीबात । सत्य कहो तुम याको तात ।
याकी चेष्टा मलिन अपार । नहिंप्रतीत मम चित्त मझार ॥४९॥
ऐसे सुनकर दुज तिहघरी । घर जानेकी इच्छा धरी ।
कपल प्रती धरके बहुरोष । और द्रव्य को पायो कोष ॥ ५० ॥
तासें सब बिरतांत बखान । झट निज ग्रह को कियो पयान ।
इम सुन सतभामा दुखलई । पृथ्वी पति के सरने गई ॥ ५१ ॥

दोहा ।

राजाने पुत्री करी, राखी अपने धाम ।
कपल कुबुद्धी दुष्ट मति, कपट मूल लख ताम ॥५२॥
नर नायक चितरोष धर, स्याम करो तिस भाल ।
खर चढ़ाय निज देशतें, काढ़ दियो तत्काल ॥ ५३ ॥
राजन को यह धर्म है, करे सृष्ट प्रतिपाल ।
दुष्टन को निग्रह करे, नातरु होय कुचाल ॥ ५४ ॥

कवित्त

एक दिना नृप पुन्य जोगतें तप रूपी रतनन की खान ।
जुग चारन मुनि आये नभते मानों दुज शशि और भान ॥
बर आदित्य गतहैं ऋषि नायक दूजे नाम अरिंजय जान ।
तिन को देख उठो नर नायक पड़गाहे मन भक्ति सुठान ॥५५॥
सप्त गुणन जुतहर्ष सहित दियो स्वच्छ दान तिनको जिहबार ।
पंचाचर्य भये अम्बर ते देवन कीनी जैजै कार ॥

[illegible] यह सब जगत में दानन की महिमा अधिकार ।
तातें करो सदा शुभ मन तें सर्वही सुख आनन्द आगार ॥५७॥

दोहा ।

अब जिनने इक दिनन तक श्रीन पैन नगराय ।
पुन्य उदै सुख भोगतौ, फिर त्यागौ निजकाय ॥

अडिल्ल ।

तहँ आयु की पूरी सेर महान है । उत्तर कुरु जहँ भोग भूम सुखखान है । तहँ उपजो बड़ भाग भोग भोगत घने । तीन पल्य की आयु कौन महिमा भने ॥ ५८ ॥

यही जान यह अचरज कारी बात है । साधों की संगति तें शिवपुर जात है । तातें संगत करो भले जन की सदा । दुष्टन को पर संग तजीजे सब कदा ॥ ५९ ॥

[illegible] ।

अब नृपन की दोनों नारी । जो प्राणों ते अति प्यारी ।
[illegible] सत्यभामा जो थाई । तीनों ने सीच लहाई ॥ ६० ॥
[illegible] भोग भूम सुखकारी ।
[illegible] सुखदाई । ताको भोगे अधिकाई ॥ ६१ ॥

[illegible] ।

[illegible] ज्योति दीप प्रभांगकाः ।
[illegible] कल्पपादपाः ॥ ६२ ॥

नहिं सेवक स्वामी कोई। सबही आरज तहँ लोई।
जनमादि मरन परयंते। नाना विधि सुख भोगन्ते ॥ ६५ ॥

दोहा ॥

दान तनें परभाव तें, उपजत हैं नर भाम।
सरल चित्त को मल अधिक, हैं तिन के परनाम ॥
तहँ ते चय कर देव गत, पावत हैं बड़ भाग।
यातें उत्तम पात्र को, दान करो युत राग ॥ ६७ ॥

चौपाई

सो अब श्रीयषेण चरयेह। पांचो अत्तन के सुख श्रेह।
भोग सहित त्यागि निज काय। फिर ऊंचे ऊंचे पद पाय ६८॥
इसही भरत क्षेत्रके बीच। हस्तनागपुर सहित मरीच।
तामें विश्वसेन भूपार। ऐरा देवी सुन्दर नार ॥ ६९ ॥
तिनके पुत्र गये जगतेश। सोलम तीर्थंकर परमेश।
चक्रवर्त पद पाय अनंग। बहुरि मोक्ष सुख लहो अभंग ॥७०॥

काव्य

देखो भव्य जो भुक्त देत हैं शुध मन करके।
ते दोउ लोक मझार सर्म पावत अघ हरके ॥
याते भविजन दान देहु पात्रनके ताईं।
अपनी शक्ति समान, जास फल सुर शिवदाई ॥७१॥

गीता छन्द

श्रीकुंद सुवंशमें बर मूल संघ विषै जये।
निरमल रतन त्रियकर विभूषित मल्लभूषण गुरु भये।
तिन शिष्य जानों ब्रह्म नेमीदत्त ने भाषी कथा ॥
अब तिनोंके अनुसार लेकर कथनकीनों सर्वथा ॥७२॥

नहिं सेवक स्वामी कोई । सबही आरज तहँ लोई ।
जनमादि मरन परयंते । नाना विधि सुख भोगन्ते ॥ ६५ ॥

दोहा ॥

दान तनें परभाव तें, उपजत हैं नर भाम ।
सरल चित्त को मल अधिक, हैं तिन के परनाम ॥
तहँ ते चय कर देव गत, पावत हैं बड़ भाग ।
यातें उत्तम पात्र को, दान करो युत राग ॥ ६७ ॥

चौपाई

सो अब श्रीषेण चरयेह । पांचो अक्षन के सुख श्रेह ।
भोग सहित त्यागी निज काय । फिर ऊंचे ऊंचे पद पाय ६८॥
इसही भरत क्षेत्रके बीच । हस्तनागपुर सहित मरीच ।
तामें बिश्वसेन भूपार । ऐरा देवी सुन्दर नार ॥ ६९ ॥
तिनके पुत्र भये जगतेश । सोलम तीर्थंकर परमेश ।
चक्रवर्त पद पाय अनंग । बहुरि मोक्ष सुख लहो अभंग ॥७०॥

काव्य

देखो भव्य जो भुक्त देत हैं शुध मन करके ।
ते दोउ लोक मझार सर्म पावत अघ हरके ॥
याते भविजन दान देहु पात्रनके ताईं ।
अपनी शक्ति समान, जास फल सुर शिवदाई ॥७१॥

गीता छन्द

श्रीकुंद सुवंशमें बर मूल संघ विषै जये ।
निरमल रतन त्रियकर विभूषित मल्लभूषण गुरु भये।
तिन शिष्य जानों ब्रह्म नेमीदत्त ने भाषी कथा ॥
अब तिनोंके अनुसार लेकर कथनकीनों सर्वथा ॥७२॥

दोहा

दान सुपात्रनको दियो, श्रीषेण नर राय ।
ताकर तीर्थंकर भये, षोड्स में सुखदाय ॥ ७३ ॥
सो स्वामी सन्ताप मम, दूर करो तत्काल ।
शान्ति अर्थ हूजे प्रभू, यातैं नाऊं भाल ॥ ७४ ॥

इति श्रीआराधनासारकथाकोष विषय सुपात्राहार दानफल विषय श्रीषेण महाराजकी कथा समाप्तम्

औषधदानमें वृषभसेनकी कथा प्रा०

मंगलाचरण। काव्य ॥

वरनूं श्रीजिनचंद और सवता जग माता ।
गुरु निग्रन्थ दयाल नमूं जेहैं जग त्राता ॥
वरनूं औषधि दान तनी, शुभ कथा अवारी ।
तिस दीरघ फल आय लहे जन जगत मझारी ॥१॥
बहुरि लहे चित स्वस्थ कुष्ट आदिक सब नासे ।
होय निरोग शरीर सदा आनन्द परकाशे ॥
पावें धन अरु धान्य सम्पदा वपु निरमल अति ।
बहुरि लहे शिव थान देय जो भेषज नितप्रति ॥२॥

दोहा

सो यह औषध दान शुच, दीजे पात्रन हेत ।
दया सहित श्रमटार के जो पावो सुख खेत ॥ ३ ॥
जिन जिन जीवन फल लहो, भेषज दान सुदेय ।
तिनकी महिमा प्रभु विना, जगमें को वरनेय ॥४॥

पद्धडी

अब इसही सम्बँधके मझार । श्रीवृषसेनाको चरितसार ।
पूरव अनुसार कहूं बनाय । कल्याण हेत सुनो चित्त लाय ॥५॥

इस अन्तर येही भरत क्षेत्र। श्रीजिनके जन्म थकी पवित्र।
तहँ कमल जुक्त सुन्दर विशेष। जनपद नामा है एक देश ६॥
कावेरी पत्तन तास मद्ध। नृप उग्रसेन नामा प्रसिद्ध।
सब विद्या मंडित अवनिपाल। परजा हितकारी सुगुणभाल ७॥
ताही नगरी में सेठ एक। तिस नाम धर्मपति जुत विवेक।
जिनचंद चरन राजीव जेह। षट पद सम नितप्रै रमै एह ८॥
तिनके बड़ भागन शीलवान। धनश्री सेठानी श्रीसमान।
गुणरूप रतनकी धरनहार। पतिको प्यारी आनन्द कार ॥९॥

दोहा

तिनके पूरब पुन्यते, सुता भई गुनवान।
मानो उज्वल गेहमें कीरतही उपजान॥

सोरठा

लावन रूप अपार, नाम वृषभसेना धरो।
रत रम्भादिक नार, तिस लखकें लज्जा धरें॥११॥
रूपवती तिस नाम, पाले धात्री प्रीत ते।
नित मंजन अभिराम, याहि करावे जतन ते॥१२॥

गीता छन्द

इस वृषभसेनाके न्हवन पैते भरो एके गर्तही।
ता मध्य कूकर रोग पीडित आन नितप्रति परतही।
तातें विमलतन भयो जाको सर्व पीड़ा नसगई॥
इम देखके तब धाय विस्मयवन्त चितमाही भई ॥१३॥
मनमें विचारो इह कुमारी पुन्यवन्त महान है।
इस न्हौनको जल रोग नाशक सुधाकी उनमान है।
तिसही सलिल की बूंद ले निज मातको याने दई।
द्वादश बरसतें अंधथी तिस आंजते चखु खुलगई॥१४॥

चौपाई

तवही रूपवती यह धाय जननीके चक्षु लख हरषाय।
तिस स्थान तनों शुभ तोय। मेघजसम ताको अविलोय १५॥
अवनी में कीनों विख्यात। या प्रसादते सव दुख जात॥
नेत्र कुक्ष सिर रोग नसन्त। कुष्ठ जहर बृण सर्व हरन्त ॥१६॥
या अंतर इक दिन नर ईश। रण पिंगल नामा मंत्रीश॥
ताको घन पिंगल नृप देश। भेजो जंगू जु देय विशेष ।१७।
जव यह पहुंचो जाय तुरंत। वाने जतन कियो इह अंत॥
हालाहल सव कूप मझार। डरवायो ताने रिस धार। १८।
तव याके सव जन समुदाय। पीवत पै ज्वर अधिक लहाय।
दुखित मन ह्वै कर परधान। फिर कर आये निज स्थान॥१९॥
रूपी वती धातृ जल जोग। लावतही सव भये निरोग॥
जैसे श्री गुरु वचन प्रसाद। तत्क्षण नासे मिथ्यावाद॥ २०॥
अव यह उग्रसेन नर पाल। क्रोध अनिल कर तन पर जाल।
घन पिंगल राजाकी ओर। चढ़ चालो वहु सेना जोर।२१।
तिस कूपनको पीवत वार। सव के जुर उपजो अधिकार।
तव नरपति ह्वै चित्त उदास। फिर कर आयो निज आवास।२२।

दोहा

रण पिंगल मंत्री कहो, सेठ सुता विरतन्त।
सुन कर चित हर्षित भयो, उग्रसेन वहु मन्त॥ २३॥
निज पीड़ा के नाशको, जल मांगो ता पास।
मेटानी भै करतेव. सेठ भने इम भास॥ २४॥

काव्य

हे स्वामिन इम सुता तनो मंजन को पानी।
रग नृप शीश नभार अँव डारन बुध ठानी॥

कहे सेठ सुन नार नृपति पूछे जो अबही।
सांच सांच कह देउं झूठ बोलूं नहिं कबही ॥ २५ ॥
अहो सन्त जन सत्य रूप जे बोलें नायक।
तिनके कबहू दोष नाह उपजे दुखदायक ॥
इम दम्पति कर मंत्र सुता के न्हौन तनो पे।
भेजो धातृी हात गई सो नृपति पास ले ॥ २६ ॥
तिसी सलिल को लेय नृपति निज शीष लगाया।
परसत ही तत्काल भई तिस निरमल काया ॥
रूपवती ते सब वृतान्त पूछो नर नायक।
इस ने कन्या चरित कहो सब ही सुखदायक ॥ २७ ॥
ताही छिन नर रच्छ सेठ को तुरत बुलायो।
धनपत सुनत प्रमान तबे राजा ढिग आयो ॥
कीनों बहु सन्मान कहो पुत्री निज दीजे।
कहो सेठ में देहुं काम जो इतने कीजे ॥ २८ ॥

सोरठा

स्वर्ग मोक्ष सुखदाय, अष्टानक पूजा भली।
पंचामृत भरवाय, जिन मंजन नित प्रति करो ॥ २९ ॥

दोहा

जे जन कारागार में, पक्षी पींजर मांहि।
इनको बेग छुडाइये, हे पृथ्वी पति नाह ॥ ३० ॥
तो अपनी तनुजा बिमल, रूप भाग दुत बान।
तुम को देहूं बेग ही, कुल दीपका महान ॥ ३१ ॥

चौपाई

नृप तब इस बच किये प्रमान। फिर बिवाह को उत्सव ठान।
परनी सेठ सुता अभिराम। नाम वृषभ सेना गुण धाम ॥ ३२ ॥

दीनो पट रानी पद सार। सुख से तिष्टे निज आगार।
नृप ने सब कारज दिये त्याग। याही ते क्रीड़ा अनुराग।३३।
अब यह वृष सेना धर्मज्ञ। करे सदा जिन न्हौन सुयज्ञ।
अरु निर्ग्रन्थ गुरुनको देत। दान बहू बिध भक्ति समेत। ३४।
सदा शील पाले बड़भाग। धरमी जनतें धारत राग॥
अहो धर्म रतन की सेव। बहु फलदायक है स्वयमेव॥३५॥
जैसे जगत पूज्य जिन धर्म। पालत तिष्ठे जुत शुभ कर्म॥
इस अंतर काशी को राय। पृथ्वी चंद महा दुठ भाय। ३६॥
थो इनके बंदी ग्रह बीच। ताको नहिं छोड़े लख नीच।
अहो दुष्ट जे जीव अयान। कभी बंध ते नहीं छुटान।३७।
नारायन दत्ता तिस नार। ताने मंत्र सुयेम विचार॥
छुड़वावन को अपने कन्त। करत भई सार इह मन्त।३८।

दोहा

वृष सेना का नाम तें, बांटे बहु विधि दान।
विप्र आदि बहु जनन को, कर के बहु सन्मान।३६।
दान लेयकर बहुत जन, इस पत्तन में आत।
निज मुखते धातृी सुनी, दान तनी सब बात॥४०॥

चौपाई।

रूपवती सुनने बहु मन्त। चित में कर के रोप अत्यन्त॥
कन्या से इम भाषी जाय। तैं मम पूछे बिन केह भाय।४१।
दान तनी शाला अधिकाय। कीनी बानारस के मांह।
कहे वृषभ सेना सुन मात। मैं नाहीं कीनी यह बात॥४२॥
मेरो नाव लेय जन कोय। बांटत हैं चित हर्षित होय।
ताकी खबर मंगावो वेग। जूं नाशे मन को उद्वेग।४३।
रूपवती धात्री ने तबै। हलकारन प्रति पूछी सबै।

उन भाषो सब दान वृतन्त । इन कन्या प्रति चयो तुरंत ॥४४॥
तबै वृषभसेना सुन येह । पहुंची नृप पै हर्षित देह ।
शीघ्र छुड़ायो पृथ्वी चंद । जब तिन पायो बहु आनंद ॥४५॥

दोहा ।

अब इस पृथ्वी चंद ने, याको पट लिखवाय ।
तिस चरनन में सिर धरत, अपनो भाव दिखाय ॥४६॥

पद्धड़ी ।

पीछे वो पट लेकर रिसाल । इनको दिखलायो न्याय साल ।
वृषभ सेना ते इम वच उचार । हे देवी तुम मम मात सार ॥४७॥
तुमरे परसाद मम जन्म येह । अब सुफल भयो है बिन संदेह ।
इम सुज नृप तिय संतोषपाय । राजाते बहु सनमान थाय ॥४८॥
याको आज्ञा दिलवाय दीन । घन पिंगल पै जावो प्रवीन ।
यह सुन के पृथ्वीचंद राय । पहुंचो निज नगरी मांहि जाय ॥ ४९॥
अब सुनी मेघ पिङ्गल नरेश । आवे काशीपति मम सुदेश ॥
वह जानत है मम सर्व भेद । ऐसे निश्चय कर धार खेद ॥ ५० ॥
नृप उग्रसेन के पास आय । हूवो चाकर निज शीष न्याय ।
जे हैं जन जग में पुन्यवान । तिन अरीहोत मित्रन समान ॥५१॥

दोहा ।

इस अन्तर एक दिन विषै, उग्रसेन नरराय ।
यह विध परतिज्ञा करी, बहुविध मन हरखाय ॥ ५२ ॥

अडिल्ल ।

जो आवे मम भेट तास मध ते कही । आधी घनपिंगल को देऊं गो सही ॥ अर्ध भेट पटरानी यामें ते लहे । इह विध तें नृप बचन आप मुख ते कहे ॥ ५३ ॥

एक दिना मणिकम्बल युग आवत भये । एक एक तब

दोनों को नृप ने दिये। अहो बचनजे जगमें पंडित करत हैं।
ते धन मणि कंचन में चित नहिं धरत हैं ॥ ५४ ॥

जोगी रासा

एक दिना धन पिंगल कीतिय रूपवती पै आई।
मणि कंचन ओढ़े सिर ऊपर तहां प्रमाद बसाई ॥
पटरानी को वो मणि कम्बल बदल गयो तिह बारी।
देखो कर्म तनी गत अद्भुत टरत नहीं है टारी ॥ ५५ ॥
अब यह धन पिंगल ऐके दिन नृपकी सभा मझारी।
आयो वो मणि कम्बल वोढ़ें राय लखो तत्कारी ॥
क्रोध अनिल कर तप्त भयो तन पट घृत जोग लहाई।
ऐसे लख कर यह धन पिंगल भाग गयो भै खाई ॥ ५६ ॥

चौपाई

अब यह उग्रसेन नरपाल। क्रोध युक्त कीने चखु लाल ॥
सब सुध बुध तिस गई पलाय। सती वृषभ सेना बुलवाय ॥ ५७ ॥
तबहि डारी वारध बीच। हेया हेय न जानी नीच ॥
अहो मूढ़ जनको धिक्कार। क्रोध प्रभाव तजे सुविचार ॥ ५८ ॥
जब यह सती उदधि में परी। ऐसो विध परतिज्ञा करी ॥
इस उपसर्ग थकी मैं बचूं। तौ व्रत का पद निश्चय रचूं ॥ ५९ ॥
ताही छिन इस शील प्रभाय। जल देवी तहँ पहुंची आय ॥
भक्ति सहित विष्टर पै थाप। चंवर टार जै जै आलाप ॥ ६० ॥
अहो भव्य अचरज क्या एह। शील महा सुर शिव पद देह ॥
अगन होत है सलिल सरूप। उदधि महा थल होय अनूप ॥ ६१ ॥
शत्रु होय निज मित्र महान। हालाहल है सुधा समान ॥
सुयश सदा फैले चहुं ओर। पुन्य सम्पदा व्यापे जोर ॥ ६२ ॥

तातें पाप हतन यह शील । पालो बुध जन करो न ढील॥
श्री जिनेन्द्र ने इम उचरो । मन रूपी मरकट वस करो ।६३।

दोहा

नार वृषभ सेना तनो, ऐसे सुन विरतन्त ।
ताके ढिग जातो भयो, पश्चाताप करन्त ॥ ६४ ॥

सवैया इकतीसा

तबही वो सती सार मन में वैराग धार, गई ततकार वन मांहि मुनि पास जी । गुण धरनाम तास अवधि धरे प्रकाश, तिन पद नम इम करी अरिदास जी ॥ सहो जग वंद दयाबारिध सुगुण वृन्द, किये कौन काज मैं ने सुख दुख रास जी । पूरव वृतन्त सब कहो कृपा धार अब, मूरतीक गेयं जे ते रहे तुमे भाश जी ॥ ६५ ॥

दोहा

तब मुनि नायक इम कही, सुन पुत्री चित लाय ।
पहले भव इम देश में, तू दुज कन्या थाय ॥ ६६ ॥

चालमेघकुमार की देशी

नागश्री तुझ नाम थोरी, नृपके देवहुवार। देत सोहनी तू सदारी, येहीथा अधिकार, री पुत्री मिथ्या तू मतिलीन ॥६७॥

एक दिना मंदिर विषै जी, आये श्रीऋषिचन्द । सुनिदत नामा जगपती जी, तपमंडित गुणवृन्द ॥ सयानी सुनिये चित्त लगाय ॥ ६८ ॥

मंदिर के पड़कोटमें जी, वाय रहित लख गर्त । तामें संध्या के समयजी, आतम ध्यान सुकर्त । सयाने तिष्ठ मौन सुधार ६६॥

हे पुत्री तैं रोस तेरी घर अज्ञान कुभाय ।कहत भई यहांते नगन, तू अबही बेग पलाय । ॥ रेजोगी आवेगो नरनाथ ७०

मैं पृथ्वी निरमल करूं रे, इहविधि वचन कठोर । तैं भाषे तोभी तजीना, श्रीगुरुने वह ठौर ॥ सर्यानी तिष्ठमेरु समान ७१
फिरतैं चित न विवेक तेरी, क्रोधकरो अधिकार । सवही रेत बुहारकेरी, मुनिके सिरपै डार ॥ दियोतैं तव तिन समता कीन

दोहा

अहो जगत कर पूजजे, श्रीमुनि दीनदयाल ।
तिनपै कूड़ो डारनो, जोग नहीं थो बाल ॥ ७३ ॥

सोरठा

जगमें दुख दातार, मूढ़नकी कुश्चित क्रिया ।
ताको है धिकार, आचारज ऐसे कहैं ॥ ७४ ॥

चौपाई

इस अन्तर नृपहोत प्रभात । देव थान आयो हरषात ।
गर्त माह मुनि स्वास प्रभाय । तृणको पुंज हलत लखगाय ७५
तहां आय देखे ऋषिचन्द । शीघ्र निकासे जुत आनंद ।
तव मुनिवर समताके गेह । तैं लखके मन धरो सनेह ॥७६॥
निन्दा अपनी तैं तत्कार । कीनी तीतही वारम्वार ।
धर्म विषै वहुविधि सुचि धरी । मुनिकी निरमल काया करी ७७
पीड़ा शान्त अर्थ वड़भाग । औषध दान दियोजुत राग ।
फिर कीनों वैयावृत सार । सव कलेशको मेटनहार ॥ ७८ ॥
हे पुत्री तहँते तज प्रान । तू उपजी तिस पुन्य प्रमान ।
धनपत सेठ धनश्री गेह । नाम वृषभसेना वृष नेह ॥ ७९ ॥
हे वाले ते औषध दान । दियो विशेष चित्त हरषान ।
ताकर सर्व औषधी ऋद्ध । तैं पाई यह जग परसिद्ध ॥ ८० ॥
हे मुग्धे मुनि सिर कनचार । तैं डारेयो वहु रिस धार ।
तिस अवतै नृपकर चित वंक । अम्बुध डारी देह कलंक ॥८१॥

दोहा

तातें नित प्रति कीजिये, साधु सेव मनलाय।
पीड़ा कबहि न दीजिये, जो सुख चाह अथाय ॥८२॥

पद्धड़ी

यह जग आताप हरन सुबैन। सुनके इन पायो परम चैन।
बैरागमाहिं चितधार स्वच्छ। धर ममतात्याग नृप आदिपुच्छ ८३
गणधर मुनिके चरणन मँझार बहु विधितें करके नमस्कार।
संसार दुष्ट नाशक प्रचंड। जिन दीक्षा तब लीनी अखंड ८४।
हो भव्य महा औषध सुदान। याने दीनों बहु भक्ति ठान।
तैसे तुमभी पात्रन महान। भेषजदीजे नित ब्रत समान ॥८५॥
यह गणधर मुनि भाषो चरित्र। सो जगप्रसिद्ध अतिहीपवित्र।
ताको सुनिकर भव्य जीव जेह। जिन भाषित तपतें करो नेह ८६॥

दोहा

सती वृषभसेना महा, भई जगत परसिद्ध।
सो हमको मंगलकरो, दीजे बहु सुख ऋद्ध ॥ ८७ ॥
औषध दान तनी कथा, पूरन कीनी येह।
भव्य जीव वाचो सुनो, धरके बहु विधि नेह ॥८८॥

इति श्रीआराधनासारकथाकोष विषै औषधदानमें वृषभसेनाकी कथा समाप्तः

सुपात्रदानमें ज्ञानदानकी कथा प्रा०

मंगलाचरण ॥ गीता छन्द ॥

इस वारिधतें उधारनहार श्रीजिनदेवजी।
तिनके चरन अम्बुज नमतहूं ठानके बहु सेवजी।
और मात सब ताको जजूं जिनवदन तें उत्पन भई।
अज्ञान पटल विनाशनी अंजन शिलाका सम कही १

है मोह वीन ईजे नगन गुरु रतन त्रिय भूषित सदा।
तिन चरन श्रीके गेह सम तिनको नमतहूं है मुदा।
अब कथा शास्त्र सुदानकेरी सुनो भवि चितलायकें।
सब जगतको आनन्द दायक देत बोध बढ़ायके॥ २॥

दोहा

सब जीवन के नेत्र सम, ज्ञान दान सुखकार।
पात्रनको नित दीजिये, या सम और न सार॥३॥

चौपाई

इसही ज्ञाननतें परभाव। प्रानी निर्मल कीर्ति लहाव।
भुक्त मुक्त पावे जो जीव। नाना विध सुखलहे अतीव॥४॥
सोई सम्यक ज्ञान महान। श्री जिनेन्द्र करभाषत जान॥
रहित विरोध धरे जे चित्त। ते पावे कल्याण सु नित्त॥ ५॥
ताको आराधों इह भन्त। दान मानकर पूज अत्यन्त॥
कर प्रभावना बहु विध सार। पाठन पठन थकी अधिकार॥ ६॥
ज्ञान प्रभावन हैं स्वाध्याय। पंच प्रकार जान चित लाय॥
बांचन पूछन अरु अनुप्रेश। आम नाय धर्मो उपदेश। ७।
बहुत कहनते कारज कौन। ज्ञान दान है सुख त्रय भौन॥
ताते भवि जन कैवल हेत। शास्त्र दान दो हिये सुचेत। ८।
इम ही दान तने परसाद। भये बहुत जन अव्या बाध।
तिनके नाम कथित को जोय। इस जग में समरथ नहिं कोय। ९।
अब इसही प्रस्ताव मझार। कहुं कथा जिन श्रुत अनुसार।
नृप कौंडेश दयो यह दान। ताकर भये प्रसिद्ध महान। १०।

अडिल्ल

अब इम अंतर भरत क्षेत्र सुखदायजी। जैन धर्म कर अति पवित्रता पाय जी। तामें कुरमरि ग्राम अधिक सुन्दर लसे। गोविन्द नामा ग्वाल तास के मध बसे॥ ११॥

एक दिना यह ग्वाल गयो वन में सही। तरु के कोटर मांह थकी पुस्तक लही। भक्ति सहित श्री पद्मनन्द मुनि को दई। कैसे हैं मुनि चंद सार सुख की मही। १२।

दोहा

पहिले इस ही ग्रंथ को, बड़े बड़े ऋषिराय।
बहु पद परभावन विविध, करवाई अधिकाय॥ १३॥
फिर पूजा करवाय के, तिसही थान मझार।
थापन कर के जगत गुरु, करत भये सुविहार॥ १४॥

काव्य

तैसे ही श्री पद्मनंद मुनिवर विध ठानी।
पुस्तक कोटर मद्ध थाप कियो गमन सु ज्ञानी॥
कैसे हैं मुनिराय पाप मह पंक पखालन।
ज्ञान ध्यान कर युक्ति सकल अज्ञान मद गालन।१५।
अब येह गोविन्द गोप वालपन तें चित देकर।
तिसी ग्रंथ की कराकरे पूजन बहु नुत कर॥
कितने दिनमें काल व्यालने गरसो याको।
प्रान हरन यमराज कहो भज्यो नहिं काको॥ १६॥
करके मरो निदान पुन्यते उपजो जाई।
ग्रामकूटके पुत्र महा सुन्दर सुखदाई॥ १७॥
एक दिना फिर पद्मनंद मुनिके पद भेटे।
जाती सुमरन ज्ञान पाय अघ संचित मेटे॥
मुनिके चरन सरोज नमूं यह धर्म राग पद।
कीने निरमल भाव लई दीक्षा तिनके ढिग॥ १८॥

दोहा

अब यह मुनि तन त्यागके, भयो राय कौंडेश।
अपने बलतें अरजिये, रवितें तेज विशेष॥ १९॥

चौपाई

दुन करके वो दर्प समान । कान्त लई शशिकी उनमान ।
त्रिलोक्क सुखननो निवास । कीरति वहु दिखरही प्रकाश ।२०।
नाना विधिके भोग करन्त । परजा सुतवत पाले सन्त ।
जिन भाषित वृष चार प्रकार । करतो तिष्ठे निज आगार २१ ॥
ऐसे सुखसें काल वितीत । होत भयो इनको यह रीत।
फिर कोई कारन नृप देख । भवते विरकत होय विशेष ॥२२॥
मनमें इह विधि किये विचार । परतिक्ष यह संसार असार।
भोग रोग सादृश दुखदाय । सम्पत चपलावत नसजाय ।२३॥
तनमलीन मलमूत्र जुगेह । अध्रुव अपावन नाशे येह ।
इह विधि वह वुधवन्त नरेश । मनमें किये विचार विशेष २४
मन वच काय राजको त्याग । फिर निज अर्चाकर वड़भाग।
गुरुके पदपंकज सिरनाय । दोष रहित तप ग्रहन कराय २५॥

दोहा

पूरव पुन्य प्रभावतें, श्रुत के बल पद पाय।
यामें अचरज कौन है, ज्ञान दान शिवदाय ॥ २६ ॥
जैसे यह ऋष ज्ञाननिधि, भये दान परभाय।
तैसे तुमभी हितकरो दान देहु अधिकाय ॥ २७ ॥

छप्पय

जे भविजन प्रभु ज्ञानतनी सेवा मन आनें ।
कर कल्पा अविशोक वहुरि पूजा विध ठाने ॥
स्तवन जपन विधि करे पठन पाठन अधिकाई ।
लिखन लिखावन पात्र दान सनमान कराई ॥
और करे प्रभावन अङ्ग जे भक्ति सहित भव हैं मुदा ।
हैं येही अङ्ग सम्यक्त के, कोड़ो सुखदाता सदा ॥ २८ ॥

सवैया तेईसा

ज्ञान पशाय लहें धन धान्य सुसुन्दर मंगल अन्तिम पावे।
ऊंच कुलीवर गोत्र पवित्र जु निर्मल ज्ञान रमा घर आवे॥
दीरघ आयु लहें सुखदायक सर्व मनोरथ सिद्ध लहावे।
और कहे अब कौन भया इस दान तें मोक्ष अंकूर उगावे॥२६॥

दोहा

तातैं दोष रहित प्रभू, तिन जो कियो बखान।
तिसको सम्भावन करो, जो पावे कल्यान ॥ ३० ॥
ज्ञान दान की कथा शुभ, मैंने भाषी एह।
सो मुझको अरु भविनको, केवल लक्ष्मी देह॥

कवित्त।

शोभित श्री वर मूल संघ जो तामें गच्छ भारती जान।
श्रीभट्टारक है मल भूषण रतन त्रियंकर दियत महान॥
तिनके शिष्य ब्रह्म नेमीदत श्री जिनके अनुसार बखान।
दान कथा यह भव्य जननको शान्तअर्थ हूजो अधिकान॥३२॥

इतिश्री आराधनासार कथा कोष विषै सुपात्रदान में ज्ञान दान कर कोंडेश श्रुत केवली भये तिनकी कथा समाप्तम्॥

सुपात्रदान में अभयदान कथा प्रारम्भः

मंगलाचरण। दोहा।

शोभा मण्डित जिन विमल, तिन पद नम सुखकार।
अभय दान की कहत हूं, कथा सूत्र अनुसार ॥ १ ॥

कड़खा छन्द।

वहुरि श्री शारदामाय को ध्याय के कहूं जासको भव्यजन जजत सारे
होउ कल्याण के अर्थ मोको अभैजासपरसाद ते सबै निहारे।
शास्त्रवारिधि महातासके पारको करन नवका भली तू उदारे॥

जिन मुखोत्पन्न ते भई परगट सही अबै आकंठ तिष्ठो हमारे ॥ २ ॥

गीता छन्द

जे ब्रह्म कर शोभित श्रीगुरु मूल उत्तरगुण धरे।
तिन को जजूंहित धार के जे शान्ति बहु बिधि की करें॥
तिनकी भगति निश्चयथकी सुखश्रेष्ठ मारग देत हैं।
हुवदधि विषमतेंपार करनें को यही बरसेतु हैं ॥ ३ ॥

दोहा।

ऐसे में गुण आसके, सुमरन कर अधिकाय।
अभै दान दृष्टान्त की, कथा कहूंहित दाय ॥ ४ ॥

चौपाई।

येही भरत चेत्र दुतिवन्त। धर्म कर्म कर परम दिपन्त।
तामधि सोहत मालव देश। बहु शोभा कर लसत विशेष ।५।
धन कन करि मंडित है जेह। सम्पाति को जानो शुभ गेह॥
जग जनको लक्ष्मी दातार। वन उपबनकर शोभित सार॥ ६॥
सरिता वहे महारस भरी। भूभृत सो है मानो करी॥
कमलन कर शुभ भरे तड़ाग। तिनकी पट पद लहत पराग। ७।
देवनको प्यारो अधिकाय। तहां रमत है नित प्रति आय॥
नर नारी तहँ अति दुतिवंत। पुन्य उदयते सुख विलसन्त। ८।
तिसही देश विषै अभिराम। ठांव ठांव शोभे जिन धाम॥
ग्राम ग्राम परवतके भाल। ऊंचे शिखर जु दिपैं विशाल ॥ ९ ॥
तिनपै कलश महा दुतिवान। चामी के चमके अधिकान॥
तापर धुजा महालहकंत। मनों बुलावत हैं विहसंत ॥ १० ॥
भव्य जननको दर्शन हेत। शुभ पथ दिखलावें बे केत॥
जिन आगार लखत तत्कार। प्रानी पाप करें परिहार ॥ ११॥
अहो कौन वरने अधिकार। जामें मुनि नित करें विहार॥

रतन त्रिये भूषित तप गेह। शिवपुरमें धारत हैं नेह ॥ १२ ॥
तिसही देश विषै जिन धर्म। सुख दाता बरतत हैं पर्म ॥
कैसो वृष सम्यक नग युक्ति। पूजा दान बरत संयुक्त । १३ ।
तिसही देश विषै जिन चंद। तिष्ठत हैं आनन्दके कंद ॥
दोष अष्टदस रहित दयाल। गणधर नायक जग रिछपाल ।१४।
अरु तहँ के जन सम्यकवंत। सो दरशन जानों इह भंत।
देवधर्म गुरुकी परतीत। सब तत्वन की जानत रीत ॥ १५ ॥
जिनवर जज्ञ करे चितलाय। स्वर्ग मोक्ष सुखको जो दाय।
भक्ति सहित पात्रनको दान। देवे नित प्रति वित्त समान।१६।
शील बरत धारे उपवास। इत्यादिक वृष जो गुण रास।
ताको पाले पंडित संत। सोई सम्यक वन्त महन्त ॥ १७ ॥
ऐसी शोभा जुत वो देश। ता महिमा कह सके न शेष।
तामधि सोहै सम्पति धाम। सुंदर भट नामा एक ग्राम। १८।

दोहा

कुम्भ कार देवल रहे, तामधि बहु धनवान।
अरु धर्मिल नायक महा, कुश्चित तिसही ठान। १९।
इन दोनों ने सीर में, बनवायो इक गेह।
पथिक जनन को तास में, उतरावे कछु लेह ॥ २० ॥

पद्धड़ी।

इकदिन यह देवल जुतकुलाल। उस थानक में श्रीमुनि दयाल ॥
वृष हेत उतारो हरषवन्त। फिर चलो गयो कितही तुरन्त॥२१॥
तब धर्मिल चित में धर कुभाय। इक परिब्राजक को बेगलाय।
श्री मुनिको तो दीनो निकार। ताको उतरायो तिस मझार ॥२२॥
है सत्य बात यह जगत बीच। जे पापी दुष्ट अयान नीच।
तिनको प्यारे लागे न सन्त। जिम रविलख घूंघे रोषवन्त॥२३॥

अब इस थानकको तज मुनीश । इक तरु लख तिष्ठे जगतईश ।
तनते निस्नेही सुगुणमाल । रवि शशि खग इन्द्र नमन्त भाल ॥२४
बहु शीत ऊष्ण आदिक प्रचण्ड । सब सहे परीषह ध्यान मंड ॥
अब देवल तरुतल मुनि निहार । अरु रन तनों कारन विचार ।२५।
तिस नायक पै है क्रोधवन्त । तासेती युद्ध कियो अत्यन्त ।
इन रुद्र भावते मीच लीन । विंध्याचल पै उपजे मलीन । २६ ।
दोहा—कुम्भकार सूकर भयो काया पाई पुष्ट ।
नायक व्याघ्र तहां हुवो जन्तु हने यह दुष्ट ॥ २७ ॥

चौपाई

तिस पर्वतकी गुफा मझार । जुग चारन मुनि करत विहार ॥
नाम समाध गुप्त त्रिय गुप्त । तिष्ठे ध्यान धार जिन उक्त ।२८।
कैसे हैं ऋषि चंद दयाल । धीर वीर तब जग रिछपाल ॥
पृथ्वीतलको करत पवित्त । क्षमावन्त अति ही शुभ चित्त ।२९ ।
अब वो सूकर तित्तही आय । देखत जाती सुमरन पाय ॥
श्री जिनवरको वृत सुन सार । किंचित व्रत किये अङ्गीकार ।३०।
अरु वो व्याघ्र दुष्ट विकराल । मानुष गंध सूंघ तिस काल ॥
मुनि सन्मुख निज आनन फाड़ । आयो ततक्षण दुष्ट दहाड़ ।३१।
जब वो सूकर होय सचेत । मुनि रक्षा करने के हेत ॥
गुफा तनों गोपुरके द्वार । तासों युद्ध किया विकरार ॥३२॥
रदन दशन अरु खगते सही । भया युद्ध जो जाय न कही ।
फिर दोनों तजके निज प्रान । गति पाई निज भाव समान ३३
सूकरतो निज पुन्य कमाय । प्रथम स्वर्ग में सुरपद पाय ।
अणिमादि ऋद्धि लही अत्यन्त । तमनाशक तन अतिदुतिवन्त ३४
भागवन्त आवन सुन देव । लखके जन हरषे स्वयमेव ।
सुन्दर पट भूषण धारन्त । कंठ विषे वरदाम दिपन्त ॥ ३५ ॥
कल्पवृक्षकी दुति परिहरे । अवध ज्ञान स्वतु निरमल धरे ।

दिव्य सौख्य देवांगन संग । नितप्रति भोग भोग अभंग ॥३६॥
बहुत अमर आज्ञा सिर धरे । तिस महिमा किम वरनन करे ।
जिनवर चरन कमलको दास । पूजनको धार हुलास ॥३७॥
कृत्तम आकृत्तम जिन धाम । अरु श्रीजिन प्रतिमा अभिराम ।
अथवा तीर्थंकर साक्षात । तिनको बन्दे पुलकित गात ॥ ३८ ॥
दुर्गति नाशक सिद्ध सुखेत । यात्रा ठाने हर्ष समेत ।
महामुनीकी भक्ति करन्त । सन्तन तें वातसल्ल धारन्त ॥३९॥

दोहा—ऐसे सुख भोगत सदा, अभैदान परसाद ।
तिस महिमा जगके विषै को कवि कहै बनाय ॥४०॥

काव्य—ऐसे श्रीजिनकथित धर्म ताके प्रसाद कर ।
भव्य जीव सब थान विषै सुख लहे अतुलवर ॥४१॥
सो केहिविधि है धर्म जिनेश्वर अरचा करनी ।
पात्रनको अब दान ब्रत किरिया अघहरनी ॥
तिथ औषध उपवास येही वृष हिरदे धारो ।
सो कल्याण निमित्त श्रीजिनने उच्चारो ॥ ४२ ॥

दोहा—अब वो पापी व्याघ्रजो, कुश्चित दुष्ट अज्ञान ।
मुनि भक्षण में भावकर, छोड़दिये निज ज्ञान ॥४३॥
तिसी पाप परभावतें, गयो नर्कके बीच ।
ताड़न मारन आदि बहु, सहित भयो वह नीच ॥४४॥

सोरठा—तातें भविजन जान पुन्य पाप को फल अफल ।
श्रीजिन बृष उर आन, सदा काल ताको भजो ४५॥

काव्य—श्रीसम यह शुभ कथा, जगत में हो प्रसिद्ध अति ।
श्रीजिनसूत्र मझार कही गणनायकजी सत ॥
अभयदान संयुक्त, पात्रभेदनकर जानो ।
परम सुख स्थान पापनाशक पहिचानो ॥ ४६ ॥

इति श्रीआराधनासार कथाकोष विषयसुपात्रअभैदानफल वर्णनायांदेवलिचरसूकर कथा समाप्तम्

इति चारदानकथा समाप्तम्

श्रीवीतरागायनमः

अथ श्रीकरकुंडस्वामीकी कथा प्रा०

मंगलाचरण ॥ सोरठा ॥

जगतपूज परमेश, ताही नमकरके अबै ।
सुखदाता अतिवेश, कहूं कथा करकुंडकी ॥ १ ॥
पहिले भव इह राय, हुवो गोप आरज महा ।
अम्बुज एक चढाय, श्रीजिन की पूजनकरी ॥ २ ॥
ताको चरित महान, पूर्वाचारज जिम कहो ।
तिम संक्षेप बखान, गुरु पदाब्ज नमके कहूं ।

चौपाई

भरतक्षेत्र में कुन्तल देश । तिनमें नगर तेरपुर वेश ।
तामें नील और महानील । जुगराजा भये परम सुशील ॥४॥
तहां सेठ वसुमित्र उदार । जिनपद सेवन अलि उनहार ।
ताके वसुमती वर तिया । धर्म विषै जाने चित दिया ॥ ५ ॥
तिनके गेह ग्वाल धन दत्त । गोधन पाले हर्षित चित्त ॥
एक दिना वन में वड़ भाग । देखो अंबुज सहित तड़ाग ॥६॥
तिनमें इक राजीव अनूप । सहित पत्रकर शोभा रूप ॥
ग्रहन कियो ताने तिह घरी । अहि कन्या इक इम उच्चरी ॥७॥
रे रे ग्वाल मन कंज मनोग । तैं लीनी निज पुन्य संयोग ॥
तो सर्वोत्त कृष्ट परसिद्ध । तिनको दीजे नारे सु रिद्ध ॥ ८ ॥
ऐसे नाग सुता के वैन । सुनके गोप लहो अति चैन ।
वारज ले पहुंचो हरषाय । जहां सेठ तिष्ठे सुखदाय ॥ ९ ॥

तिनते सब बिरतांत प्रकाश । सुनके सेठ गयो नृप पास ।
नमस्कार कमल तनों सब भेद । बनकपती ने कियो निवेद ।१०।

दोहा

तब नरनायक बनक पति, संग लियो निज ग्वाल ।
सहत कूट मंदिर विषै, पहुंचे यह तत्काल ॥ ११ ॥
तहँ जगपति को नमन कर, फिर सुगुप्त मुनिचंद ।
तिनको नम पूछत भये, हो स्वामी गुण वृन्द ॥ १२ ॥
दया उदधि धर्मज्ञ प्रभु, भाषो बच सुखदाय ।
को सबो उत्कृष्ट है, इस जगमें मुनिराय ॥ १३ ॥

चौपाई

तब ऋषि बच भाषे सुन नरिंद्र । जगपति हैं श्री अरिहंत चंद्र ।
रागादि दोष बर्जित महान । त्रियलोक नमत तिन पद सुआन १४
ते हैं सर्वो उत्कृष्ट राय । तिन सम दूजो कोइ ना लखाय ।
ऐसे श्री ऋषि के बच सुनंत । राजादिक तीनों हर्ष वन्त । १५ ।
श्री जिनवरके आगे सुजाय । इम कहत भये भू सीस नाय ॥
हे स्वामिनते आनंद कंद । तुम जै वन्ते बरतो जिनिंद । १६ ।
फिर ग्वाल कहे कर नमस्कार । हे जगपति लीजे कंज सार ।
इम कह जिन पद आगे बढ़ाय । जब गमन कियो आनंद पाय १७

दोहा

जे आरज परवीन हैं, धारत सरल स्वभाय ।
तिन के भोले कर्म हैं, पुन्य बन्ध अधिकाय ॥ १८ ॥

चौपाई ।

इस अंतर अब कथा महान । और सुनों तुम आदर ठान ॥
श्रावस्ती नगरी में सन्त । सागरदत्त सेठ बुधवन्त ॥ १९ ॥
नाम नागदत्ता तिस भाम । सो पापन अति अघकी धाम ।

सोमशर्म द्विजते आशक्त । दुराचार सेवे है रक्त ॥ २० ॥
अहो पापनी कुत्सित नार । कुल रूपी जो है आगार ।
ताको दीप सिखावत स्याम । मलिन करत हैं अघकी धाम ।२१।
तब वड़ भागी सेठ महान । निज नारी को चरित सुजान ॥
चित मांही धारो वैराग । सब गृह सम्पत दीनी त्याग ॥
भगवत भाषित दीक्षा धार । तपकर पहुंचो स्वर्ग मझार ॥
तहँ ते चयकर महित मरीच । अंग देश चंपापुर बीच ॥ २२ ॥
वसूपाल नरपति बुधिवंत । भाम वसु मति रूप धरन्त ॥
तितके सुत उपजो यह आय । नाम दन्त वाहन सुखदाय ।२४।
अब वसुपाल करत निज राज । सुखसे तिष्ठत है महाराज ।
तितने सोमशर्म द्विज जीव । भव वारिधमें रुलो अतीव ॥ २५ ॥
फेर कलिंग देशमें आय । पाई वसू तनी परजाय ॥
नाम नरमदा तिलक गयंद । होत भयो दीरघ जुत गंध ॥२६॥
ताकी वसू पाल नृप हेट । भेजो किसी रायने भेंट ॥
सो करिंद्र नरपति के गेह । तिष्ठ अंजन गिर सम एह ॥२७।
अबै नागदत्ता वह नार । भ्रमत भई दीरघ संसार ।
क्रमतें ताम्र लिप्तपुर मांह । वसूदत्त इक वनक रहाह । २८ ।
ताकी तिया भई यह आय । नाम नागदत्ता जिस थाय ।
ताके तनुजा उपजी दोय । धनवति धनश्री संज्ञा जोय ।२९॥
नागानंद नगरी विख्यात । वनक पुत्र धनपाल रहात ।
याने विधि विवाह की ठान । धनवत परनी रूपनिधान ॥३०॥
और वसत इक देश अनूप । कोशांवी नगरी शुभ रूप ।
वानक वसु मित्र तहँ कोय । ताने धनश्री परनी सोय ॥३१॥
धनश्री ताके संग पसाय । पुन्य भोग जिन धर्म लहाय ।
भई श्रावका यह वड़भाग । मिथ्या जहर दियो निज त्याग ३२॥

एकदिना इसकी जो मात। या घर आई हर्षित गात।
धनश्री पाहुनगत बहु करी। जननी लखके आनंद भरी ॥३३॥

दोहा

फिर मुनिवर ढिग लेगई, अम्बाको तत्कार।
अणुव्रत याको तबै, दिलवाये सुखकार ॥ ३४ ॥
फेर नागदत्ता गई, बड़ी सुताके पास।
ताने व्रत छुड़वाइयो, वंधक मत्त परकाश ॥ ३५ ॥

सोरठा

इह प्रकार त्रियकार, लघु पुत्रीने व्रत दियो।
बड़ी सुता दुखकार, छुड़वावत तैसे भई ॥ ३६ ॥

चाल छन्द

फिरके इन चौथी बारी। जिन वृष धारो सुखकारी।
तामें दृढ़मीच सुधारी। लिये लार पुन्य वट सारी॥३७॥
कोशांवी नगरी मांही। बसुपाल नृपति सुखदाही।
ताके तिय बसुमति नामा। तिनके तनुजा अव धामा ३८॥
उपजी यह कुश्चित दिनमें। नृप शौच दियो जब मनमें।
रखके मंजूषके माहीं। निज मुद्राधर तिस ठाहो ॥३९॥

दोहा

सरिताके परवाहमें, दीनी ताह बहाय।
जमना गंगा जहँ मिली, तहं पहुँची यह जाय ॥४०॥
नगर कुसुमपुरके तले, पदमद्रहके माह।
कुसुम दत्त मालक लखी, लई मंजूष उठाह ॥ ४१ ॥

चौपाई

निज ग्रह लायो हर्षित गात। दई कुसुम्न माला तिस हात।
तानें करके जतन अपार। याको पाली बहु हित धार ॥४२॥

पद्मावती धरो इम नाम । जोवनवन्त भई अभिराम ।
एक दिनको जन इसको देख । चितमें हर्षित होय विशेष२३॥
कही दन्तवाहन से जाय । यह सुन के मनमें हरपाय ।
याको जोवनवन्त विहार । मालीप्रति इम वचन उचार २४॥
कहो सांच यह काकी सुता । बहु गुणमंडित शोभा युता ।
तब वो कहतभयो नम माथ । है मंजूष पुत्री यह नाथ ॥२५॥
इम कह वो मंजूष मंगाय । दीनी नृपसुतको दिखलाय ।
किसी नृपतिकी तनुजा जान । व्याह करलायो निजस्थान २६॥
ताको भोगतजुत अहलाद । पूरव पुन्य उदय परसाद ।
इस अन्तर जो नृप वसुपाल । निज मस्तकपै लख सितबाल २७॥
जमकी फांसीवत तिस जान । चित वैराग विषै तिसठान ।
अपनो राज देय निज पुत्र । फिर जिन मंजन करो पवित्र २८
बहुरि करी पूजा अधिकाय । फिर दीक्षा लीनी शुभ भाय ।
सहा विचक्षण कर तप घोर । स्वर्ग गये पायो सुखजोर॥२९॥
अवै दन्त वाहन बड़ भाग । राजकरै सुखमें चित लाग ।
एकदिना पद्मावत बाम । नयन कोर्या अपने धाम ॥३०॥
स्वपनेमें गज आदि निहार । हर्षवन्त भई अधिकार ।
तिनको फल पूछो पति पास । तब याने ऐसे वच भाष ॥३१॥
हस्ती देखो सुपने जोय । पुत्र मनोज्ञ तुमरे होय ॥
केहरि ते हं गज गामिनी । सुन उपजै बालक प्रति धनी ॥३२॥
हे साधक नैनी सुन नार । मारतण्ड जो तेज प्रकार ॥
ताकर परजा जन गर्जाव । तिन प्रफुल्लित करे अनीव ॥३३॥
ऐसे सुन पति के वच गूढ़ । विकसन आनन त्रिया गेह ॥
अवै तेरपुर में वो ग्वाल । धनदत्त नामा बुद्धि विशाल ॥३४॥
इक दिन कोई माहिन नहान । तामें देखे जुन अनु...
तब नियाल में उभय तुरन्त । ... ...

दोहा

तिय पद्मावती कूख में, तिष्ठत भयो सो आय ।
अहो पुण्यते जगत में, कछु नहिं दुर्लभ थाय ॥ ५६ ॥

काव्य

ऐसे सेठ वसुमित्र ग्वाल को मृतक निहारो ।
ताको कर संस्कार फेर इम चित्त विचारो ॥
यह संसार असार कछू थिर नाहि रहाई ।
इत्यादिक मन सोच करे वरभावन भाई ॥ ५७ ॥
सुब्रत मुनि पै जाय नयो तिन चर्न मंझारी ॥
बहुविधि भक्ति सुठान लही दीक्षा हितकारी ।
नाना विधि तप उग्र उग्र कीने अधिकाई ।
पहुंचे नाक सुथान तहां वसु सिद्ध लहाई ॥ ५८ ॥
अब चम्पापुर बीच नार पद्मावति जो है ॥
ताके चित्त मझार दोहलो इम उपजो है ॥ ५९ ॥
धरूं पुरुष को रूप नृपति पीछे बैठाऊं ।
इच्छा पूर्वक अबै नगर के बाहर जाऊं ॥
इह विधि मनकी बात नारकी नृपति जान सब ।
वाय वेग खग मित्र प्रते भाषी याने तब ॥ ६० ॥
ताने विद्युत सहित करो सब अघ आडम्बर ।
तबै नर्मदा तिलक तरी पै चढ़ी हर्ष धर ॥
निज डोहल अनुसार सबै किरिया बिस्तारी ।
अहो मनोरथ नारन को है अचरज कारी ॥ ६१ ॥

दोहा ।

कर्म उदै ते दुष्ट गज, अंकुश बश नहि होय ।
ले भागो अटवी विषै, जहां दीखे नहिं कोय ॥ ६२ ॥

सोरठा ।

तबै नृपति धी धार । तरु शाखा गुरु वचन वत ।
गहलूवौं तत्काल, करी लेय निय को भगो ॥ ६३ ॥

दोहा ।

फेर वृक्ष तें उतर के, निज नगरी गयो राय ।
अहो पुन्यते होत है, संकट महा सहाय ॥ ६४ ॥

छन्द चाल ।

तब राजा के घर मांहीं । जन हाहा कार कराहीं ।
हाहा पद्मावति रानी । किम कष्ट सहे दुख दानी ॥६५॥
अरु नृप बहु सोच करन्तो । तिष्ठेगृह में दुखवन्तो ।
तब जैन तत्व के ज्ञाता । जे पंडित थे विख्याता ॥६६॥
तिनने बहु विधि समझायो । तब नृप कछु सोच घटायो ।
है सत्पुरुषन की वानी । मलियागिरते अधिकानी ॥ ६७॥
क्षण में आताप मिटावे । बहु विध साता उपजावे ।
इस अन्तर गज मय मन्तो । बहु देशन भ्रमन करन्तो ॥६८॥
पहुंचो दक्षिण दिशि जाई । सर मधि पैठो दुखदाई ।
तबही जल देव्या माना । पद्मावति को दे साता ॥ ६९॥
गज से तत्काल उतारी । तट बैठाई हितकारी ।
तब इक माली तहं आयो । ताने इम वचन सुनायो ॥ ७० ॥

दोहा ।

हे भगनी मम गृह चलो , कुछ विलम्ब मत ठान ।
धर्म तनों में भ्रात तुझ, इम निश्चय उर आन ॥ ७१ ॥
मालकार के वचन सुन, बोली यह दुख वन्त ।
हे भ्रात तू कोन है, कह अपनो विरतन्त ॥ ७२ ॥

सोरठा।

तब भट नामा सोय, ऐसे वच कहतो भयो।
मालकार मुझ जोय, इम कह गजपुर लाइयो ॥ ७३ ॥
भगनी कर घर राख, आप गयो कहिं काजको।
तिस तिय कटु वच भाख, काढ़ दई निज धाम ते ॥७४॥

चौपाई

तब पद्मावति चित दुखवन्त। गर्भ भार कर पीड़ावन्त ॥
गई मसाण भूमि में जबै। पुण्यवान सुत जायो तबै ॥ ७५ ॥
शुभ लक्षण धारी वो बाल। अहो कर्म की गति विकराल।
ताही छिन इक आय किरात। कहत भयो नमके सुन मात ॥७६ ॥
तू मेरी स्वामनि सुखदाय। तब पद्मावति एम कहाय ॥
अहो कौन तू है इह ठाम। तब तिन वच भाषे अभिराम॥७७॥
रूपाचल परबत के भाल। दक्षण श्रेणिक अधिक रिसाल।
तामें विद्युत प्रभु पुर जान। विद्युत प्रभु खगपति नृप मान॥७८॥
ताके विद्युत लेखा नार। बाल देव सुत मोह निहार।
इक दिन कंचन माला जेह। मेरी नारी सुन्दर देह ॥ ७९ ॥
ताके संग मैं गगन मझार। दक्षण दिशि में करत बिहार।
रामगिरी पर्बत पै आन। मम विमान अटको दुखदान ॥ ८० ॥
तबै बीर भट्टारक देख। मैं उपसर्ग सुकरो विशेष ॥
तब देवी पदमावति तनो। आसन कंपित हूवो घनो ॥ ८१ ॥
कैसी है वो फणपति नार। जिन पदाब्ज की भ्रमरी सार।
आकर सब उपसर्ग निवार। मम विद्या छेदी तत्कार ॥ ८२ ॥
अहो जीव जे सम्यकवंत। साधुजनन को लख हर्षत ॥
तिनकी पीड़ा देत पलाय। मन बच तन धन सर्व लगाय॥८३॥
हे जननी जब मम मद गयो। रदन रहित हस्तीवत भयो।

पीछे मैं देवी के पास । हाथ जोड़ कीनी अरदास ॥ ८४ ॥
हे माता अज्ञान पसाय । साधू को उपसर्ग कराय ।
हे अम्बे अब हूं संपुष्ट । मम विद्या दीजे तज रुष्ट ॥ ८५ ॥

दोहा ।

तब माता पद्मावती, शान्त चित्त हर्षात ।
कहत भई गजपुर निकट, हे मसाण में दात ॥ ८६ ॥
तिस थानक बालक विमल, उपजेगो गुण वन्त ।
तिस की सेवा जतन ते, तू कीजो बहु भन्त ॥ ८७ ॥
तिस ही के वर राज में, तुझ विद्या है सिद्ध ।
ऐसे कह निज थल गई, देवी जग पर सिद्ध ॥ ८८ ॥
जब ते सब रजु भेषधर, तिष्ठत हूं इह थान ।
इम सुन पद्मावति तिया, चित में अति हरषान ॥ ८९ ॥

पद्धडी

तब कहन भई सुन ए खगेश । इस शशिकी रत्नाकर विशेष ।
इम कह कर ताके कर मझार । निज बालक सौंपो हर्ष धार ॥ ९० ॥
तब निध वत बालक ले तुरन्त । निज तिय को सौंपो हर्ष वन्त ।
सो कैसो है वह बाल चंद । शुभ लक्षण मण्डित जोत वृन्द ॥ ९१ ॥
इस कर में कण्डू चिन्ह जान । करकंडु नाम राखो महान ।
पै प्यारकृत किया सुबाल । यह गमन करे जिम शिशु मराल ॥ ९२ ॥
अब देखो भविजन निरताय । नृप ने दुख में सम्पत लहाय ।
तातें जिन भाषित पुन्य सार । मन वच तन कीजे हर्ष धार ॥ ९३ ॥
सो पुन्य नाम कारज प्रधान । जिन पूजन पात्रन करन दान ।
व्रत मण्डित बहु उपवास युक्त । सुख दायक इह नृपजन उक्त ॥ ९४ ॥

दोहा ।

तापीछे पद्मावती, पुन्य उदै अधि सार ।
संसारी शुभ चाहता, देवी निज ही सार । ९५ ॥

भक्ति सहित तिसको नई, कह अपनो विरतन्त ।
ताके संगजाती भई, जहँ मुनिवर तिष्ठन्त ॥ ९६ ॥

चौपाई

नाम समाध गुप्त हितकार । तिनपद नई सो बारम्बार ।
फिरयाने कीनी अरदास । हे स्वामिन हे बुद्धि निवास ॥९७॥
मो ऊपर प्रभु किरपाधार । जिनदीक्षा दीजे तत्कार ।
जब श्रीमुनिवर दयानिधान । पद्मावती प्रति बचनवखान ९८॥
हे पुत्री दीक्षा इस काल । तेरे उदै नहीं गुणमाल ।
पहिले तीनबार वृत सार । त्याग दिये कर अंगीकार ॥९९॥
बहुरि वृत्तधारे गुणजुता । ता फल भई नृपतिकी सुता ।
यह जो तैं दुखलहो विशेष । सो सब व्रतत्यागन फलदेख १००
अब वो कर्म शान्त तुझभयो । पुन्यवान सुत तेरे जयो ।
ताको राज बहुत विधि जोय । फिर वाके संग दीक्षा होय ॥१॥
ऐसे सुन वो नृपकी तिया । कीनो अपनो हर्षित हिया ।
मुनिको नमकरके गुणरास । तिष्ठत भई क्षुल्लका पास ॥ २ ॥

दोहा

इस अन्तर उस बालको, बालदेव खगराय ।
सब विद्यामें अति निपुण, करतभयो हरषाय ॥ ३ ॥
एक दिना करकुंडजुत, खग खत गजपुर आय ।
भूम मसाण विषै तहां, लीलाजुत विचराय ॥ ४ ॥

अडिल्ल

जहां ज्ञानधारी ए भद्रमुनीशजी, तहँ तिष्ठे मुनिगण जुत जगदीश जी । जब किसही ऋषिने कारन इह विधि लखे काहू मृतक कपाल मुःख नेत्रन विषै ॥ ५ ॥
उपजे थे त्रियबाश देश गुरुते कही । हे स्वामिन यह कौतुक

है कसो मही। तब श्री जैभद्राचारज तपनिध महा। सुनके तिसके वैन सुप्रति उत्तर कहा ॥ ६ ॥

दोहा

जो इस जगपुर नगरमें, होवे नृप गुणमंड।
यह तीनो हे तासके अंकुश छत्र औ दंड ॥७॥

पद्धड़ी

ऐसे श्री मुनिके सुन सुवैन। इक दुजने पायो परम चैन।
त्रियवांस लिये जड़ते उखाड़। धन लोभ धरो हिरदे मंझार ॥८॥
तिस ब्राह्मण ते त्रिय वांस येह। कर कुंडलिये कलुद्रव्यदेह।
तब बलवाहन नामा नरेश। गजपुरको राजकरे विशेष।
सो कर्म जोगते पुत्रहीन। कितने इकदिनमें मीचलीन ॥१०॥
तब जे मंत्रीहैं बुद्धिवन्त। पट बंधकरी छोड़ो तुरन्त।
जब वो गजपति करतो विहार। करकुंड बाल लख हर्षधार।
कलसाभिषेक कर सिर चढ़ाय। ला नृपमंदिर विष्टर बिठाय ११

दोहा

तब सारे जन हर्षजुत, जै जै कर नम माथ।
गुण उज्जलकर कुंडको, जानो अपनो नाथ ॥ १२ ॥

सोरठा

देखो भवि चितलाय, पुन्य तरोवर यह फलो।
जिनवर यज्ञ पसाय, ग्वालतनो चर नृप भयो ॥१३॥
ताही छिन सुखदाय, बालदेव खगको भई।
विद्या सिद्ध अधिकाय, पुन्य उदै आयो जबै ॥१४॥

दोहा

तब पद्मावति मायको, हर्षित होय खगेश।
नमकर पुत्र मिलायके, गयो सो अपने देश ॥ ५ ॥

तहँ करकुंड नरेश तब, अपनी भुजा पसाय।
सुखसे राज करत भयो, बैरिन मूल नसाय ॥ १६ ॥

चोपाई

अबै दन्तवाहन इस तात। इन प्रताप की सुनकर बात।
भेजो दूत तासके पास। सो नमकर इम बचन प्रकाश ॥१७॥
भो स्वामिन हमरो जो नाथ। नाम दन्त वाहन विख्यात।
तुमरे प्रति भाषे महाराज। मम सेवक ह्वै कीजे राज ॥१८॥
जो इहविधि करहो नहिं राय। सब प्रभुत्व तुमरो नशजाय।
इम सुन दूत बचन करकुंड। उपजो क्रोध अनिल परचंड ॥१६॥
कहत भये रे रे चर दुष्ट। तो हनमारूं ह्वै कर रुष्ट।
जाहु जाहु इहँते तत्कार। निज स्वामी ते एम उचार ॥२०॥
रण आंगल ते बाकी सेव। बाननते करहूं बहु भेव।
होनहार होवे इस थान। सोई हम तुमको परमान ॥ २१ ॥
ऐसे कहकर बचनालाप। दूत विदा कीनों तब आप।
अपनी सेना सज चतुरंग। जबही कियो पयान अभंग ॥२२॥
चम्पापुर नगरी के वार। पहुंचो तहँ चम्पू सब डार।
काज प्राप्त होनेके हेत। भटजन निस दिन रहे सचेत ॥२३॥
ऐसे सुन चम्पापुर राय। अपनी सेना सर्व सजाय।
लड़नेहेत निकसो तत्कार। आये योधा सज हथियार ॥२४॥

दोहा—अब दोनो सेना बिषै, ब्यूह रचे बहु भंत।
तब नारी पदमावती, आवत भई तुरंत ॥ २५ ॥
मिलकर निज भरतार सों, सब भाषो बिरतंत।
नृप सुन उतरो गजथकी, चित में अति हर्षंत ॥ २६ ॥
अपने सुत ते झटमिलो, उरतें लियो लगाय।
सुत ने भी निज तात लख, नमन कियो सिरनाय ॥ २७ ॥

काव्य— तब नरनायक चित्त विषें हरषो अधिकारी।
बजवाये चवमेद सुवाजे आनन्द कारी।
करके बहुउत्साह पुत्र को निजग्रह लायो।
सुनके परिजन लोग चित्त में आनंद छायो॥ २८॥
अब यह अति पुनवान प्रथम श्रीजिनको मज्जन।
फेर करी शुभ यज्ञ क्रिया दो दुरत निकंदन।
पात्र दान नित करत सदा इह भक्ति धारकर।
तिष्टे आनँद सहित सुःखसों पिता तने घर॥ २९॥

चौपाई।

इस अन्तर राजन की सुता। आठ सहस्र बहु गुणकर युता॥
याको तात हर्ष चित धार। परनाई कर कुण्ड कुमार॥ ३०॥
फिर निज राजतनों सब भार। याको सौंप दियो तत्कार।
आप नार पदमावति संग। तिष्ठे भोगत भोग अभंग॥ ३१॥
अब यह श्री करकुण्ड नरिंद। जैनधर्म पाले गुणवृंद॥
सुत समान परजा की रक्ष। करे सदा जिस पुण्य प्रतक्ष॥ ३२॥
चिरलों राज कियो सुखरास। फिर मन्त्रिन कीनी अरदास।
अहो देव हम तुमरे पास। हमरे वचन सुनो सुखरास॥ ३३॥
चेरम पाण्डु चेर त्रिय राय। गर्ववत तिष्ठे अधिकाय॥
तिनको वश कीजे बुधिवंत। ऐसे सुनकर राय तुरंत॥ ३४॥
उनको निकट बुलावन काज। भेजे दूत आप महाराज।
दूत तने तिन बचनहि मान। गर्व धार नहिं कियो पयान॥ ३५॥
ऐसे सुन नरपति रिस भरो। तिनपे आप पयानो करो।
सो भी सन्मुख आये धाय। युद्ध भयो सो कह्यो न जाय॥ ३६॥
अपनो कटक भंग नृप देख। मन में क्रोधित भयो विशेष।
तीनों नृपको गह तत्कार। फिर विचार कीनों रिसधार

दोहा—तिनके मुकटन के विषै, अपने पदकी घात।
करनेको करकुण्ड नृप, बेग उठाई लात ॥ ३८ ॥
तब तिनके मोलन विषै, देखे श्री जिनदेव।
जब मुखतें निंदा करी, पछतायो बह भेव ॥ ३९ ॥
काव्य—तव करकुण्ड नरिंद्र तिनों ने भाषे बायक।
क्या तुम जैनी भूप बैन कहिये सुखदायक ॥
तब वो तीनों रांय कहें सुनिये जग नामी।
निश्चय हमको जैनमति जानो हो स्वामी ॥ ४० ॥
यूं सुनके करकुंडराय मन में दख लीनो।
हायहाय मैं क्रोध अंध क्या कारज कीनो।
उनकी स्तुति ठान बहर बहु क्षमा कराई।
तिन जुत अपने देश बिषै चालो हरषाई ॥ ४१ ॥
पथ में करत पयान तरेपुर के ढिग आये।
सब सेना के तहां भूप डेरे करवाये।
तबै आय जुग भील नमन कर गिरा उचारी।
इस पुरतें जुग कोष जु दक्षिण दिशा मझारी ॥ ४२ ॥
भू भृत एक महान तासपैं सहस थम्भ जुत।
श्री जिनेन्द्र को लैन एक है गो सुन्दर अत ॥
तिस पर्वत के भाल एक बम्बी जु सुहावे।
तहां स्वेत गजराज सूंड में नित जल लावे ॥ ४३ ॥
ोहा—कंज सहित तिस थान की, देपरदक्षिण तीन
पूजा नित प्रति करत है, इस विध जान प्रवीन ॥ ४४ ॥

चौपाई।

इम सुनके कर कुंड नरेश। तिन को दीनो दान विशेष।
जैन भक्ति धरके अधिकाय। पहुंचो उस पर्वतपै जाय ॥ ४५ ॥

श्री जिनेन्द्रको देखो नैन । पूजन कीनी सुर शिव देन ।
फिर स्तुति सारी अधिकार । छोड़ो दुख को जो दातार ।४६।
ते सम्यक दृष्टी जन साथ । नृप कारज में तने प्रमाद ।
तबही आयो खेचर फणिन्द । बन्दी पूजा जन आनन्द ।।४७।।
देख नृपति मन कियो विचार । यां कछु कारन है अधिकार ।
ऐसे निश्चय करके एवे । मालयक खुदवाई नृप तबै ।। ४८ ।।
तामें लखी मंजूष अनूप । जतन धरी खुलवाई भूप ।
ता माहीं श्रीजिनवरचंद । पार्श्वनाथ दुत धरे अमन्द ।।४९।।
तिनकी प्रतिमा मणिमइ सार । सर्वपाप की नाशन हार ।
देखतही करकुंड नरिन्द । चितमें अति धारो आनन्द ।। ५० ।।
धर्मतनो चिंतवन नृप करो । अगगलदेव नाम तिस धरो ।
फिर तिस प्रतिमाके इक अंग । गांठ एक देखो निरभंग ५१।।
तबै सिलावट लियो बुलाय । तिनसों भेद कह्यो समझाय ।
अहो गांठ इह लागत बुरी । याको दूर करो इह घरी ।।५२।।
जबै सिलावट बरनन लाग । कहतभये सुनिये बड़भाग ।
गांठ विषै जलको समुदाय । दूर करावो मत तुम राय ।।५३।।
अरु जो करवावोगे दूर । जल प्रवाह निकसै भरपूर ।
ऐसी सुन हठजुत नरपाल । सैन कुदाई तिसही काल ।। ५४।।
दोहा—तामें सलिल प्रवाह बहु, निकसो अति उमगाय ।
राजादिक विह्वल भये, चितमें अति दुख पाय ।।५५।।
निकसनको तिस थानते, समरथ भयो न कोय ।
जीवनको संशय पड़ो, दुखीभये सब लोय ।। ५६ ।।

कवित्त

तब नृप करकुंड हरषजुत जिनवर भक्ति हियेपरकास ।
धर्म रागतें डाभ सेजपै सो प्रकारको धर सन्यास ।।

तबही पुन्य उदैते तिसके नागदेवता युत हुल्लास ।
है प्रतच्छ बहु विनय युक्त नमि इहप्रकारके वच शुभमास ५७
अहो देव इस कालजोगते रतन मई प्रतिमा की कोय ।
रच्छा करनहार नहिं दीखे तातें मैं कीनों यह जोय ॥
यातें हठ नहिं कीजे नरपाते जलके दूरकरन को सोय ।
इम सुनके तज दाम सेजको उठत भयो यह हर्षितहोय ५८

दोहा—फिर नरपति कहतो भयो, लैंन कराई कौन ।
बम्बी में जिन बिम्बकिन, पधरायो सुख भौन ॥५९॥

पद्धड़ी

ऐसी सुनकर तब यह कुमार । नृप प्रति बोलो यह हर्षधार ।
रूपाचलके उत्तर मझार । नभ तिलक नगर गुरुको भंडार ६०।
तहँ अमित बैग सुबेगनाम । खगके जिनभक्ति सुपुन्य धाम ।
सो यह दोनों आरज महान । जिन यात्राको कीनों पयान ६१॥
आये इस आरज खंड मांह । एक मलय नामपरवत लखाय ।
तहँ श्रीजिनवर को यज्ञकीन । तिस थाल विषै भिरसें प्रवीन ६२
तहँ श्रीपारशको बिम्बसार । मणिमई लख कीनों नमस्कार ।
पधराये मंजूषा मझार । फिर उसही गिरपै खग विचार ॥६३॥
बहु जतन थकी रच्छा कराय । फिर चलेगये निजधाम राय ।
वे फिर आये इस थान बीच । मंजूष उखाड़ी जुत मरीच ।६४॥

दोहा—जलमें स्थापनकरी, सो नाहीं ठैरन्त ।
तब खग तेरसपुर गये, पूछे गुरु निज ग्रन्थ ॥ ६५ ॥
हे स्वामिन मंजूषिका, जलमें नहिं ठैराय ।
सो कारन प्रभु भाषिये, तब ऋपि एम कहाय ॥ ६६ ॥

सोरठा—भो खगेश सुनलोय, मंजूषा सुखकारनी ।
प्रकट लैन जो होय, तब तिष्ठैगी पै विषै ॥ ६७ ॥

[illegible] की करकुंड [illegible] मुनिगे संघ ।
होनहार इम जान, आदरतें मुनिगे [illegible] ॥ ६८ ॥
यह सुनिग खगनाथ, मनमें आनंद [illegible] ।
होय करी यह स्थित, इनही पर्वत के विषै ।
इम मनमें चेत, नित पूजन करें सदा ॥ ६९ ॥
नृप करकुंड उदार, आकरके इस लेनको ।
तोडैंगे तत्कार, तब हस्ती सन्यास जुत ॥ ७० ॥
उपजेगो सुरथान, देव महा बड़ भाग यह ।
[illegible] वचन महान, मुनिवर के सुन खगपती ॥ ७१ ॥

चौपाई

फिर दोनों खगपति सिर नाय । श्रीमुनितें इम प्रश्नकराय ।
भो स्वामिन को भव्य महान । लेनकरावेगो यह थान ॥ ७२ ॥
तब ज्ञानके अद्यपि भंडार । कहनभये विजियारध मार ।
ताकी दक्षिणश्रेणी जान । रथनोपुर इक नगर प्रधान ॥ ७३ ॥
तहां नील महानील सुराय । चरिन ते लड़िया अधिकाय ।
तहां नील महानील [illegible] । यहँ आवेंगे लह बहु खेद ॥ ७४ ॥
अरि छीनी तिन विद्या छेद । यहँ आवेंगे लह बहु खेद ॥ ७४ ॥
इस गिरवरके निष्ठ भाल । लेन करावेंगे गुण माल ।
फिर जिन पुन्यतने परभाव । विद्या सिद्ध होय अधिकाव ॥ ७५ ॥
जावेंगे अपनो राज । बहुरि करेंगे आतम काज ।
तप कर पहुंचो नाक मझार । तहां भोग भोग [illegible] ॥ ७६ ॥
यह सम्बन्ध कहा मुनिचंद । असिन खग पायो आनन्द ।
[illegible] तपकर होन समाधि [illegible] ॥ ७७ ॥
दीक्षा ग्रहन करी तिह काल । तपकर होन समाधि [illegible] ॥ ७७ ॥
दीक्षा ग्रहन करी तिह काल । भोगे सुख जिनमत [illegible] ।
सातेंपर पहुंचे बड़भाग । [illegible] ॥ ७८ ॥
तब तुमने जो होतो ज्ञान । आरतें [illegible] ।
तब सुर आयो [illegible] । तब सुर आगे [illegible] ।
हस्ती उपजो [illegible] शरीर । तातें सुमरन [illegible] ।
तातें यह [illegible] ।

पुन्य उदै अणुव्रत महान । ग्रहन करिन्द करे हरषान ।
नितबम्बीकी पूजन करे । निष्ठ पुन्य चित्त अघहरे ॥ ८० ॥

दोहा—सब वृत्तान्त करकुंड ते, नागदेव इम भाष ।
खुदवाई बम्बी तुमें, तब गज गहो सन्यास ॥८१॥
अरु तुम इसही पुर विषै, ग्वालहुते महाराज ।
कंजथकी जिन्न पूजियो, ताफल पायो राज ॥ ८२ ॥

सोरठा—तातें जगमें सार, अहो सुबुद्धी कीजिये ।
जिन पूजन सुखकार, जातें सब संकट नसें ॥ ८३ ॥
इहविध वच्न हितकार, कहे नृपति करकुंडते ।
फिरवो नागकुमार, नमकर निज थानक गयो ॥८४॥

दोहा—अहो पुन्यते होत है, मित्र महा सुखदाय ।
तातें निज वृष कीजिये, जो छिनमें श्रम जाह ॥८५॥

काव्य

पीछे नृप करकुंड तीसरे दिनके माही ।
उस गजको निज धर्म सुनायो बहु हितदाही ।
तब निरमलकर भाव प्राण छोड़े गजराई
सुरग बारमें देव भयो बसु ऋद्ध लहाई ॥ ८६ ॥
देखो पशुपरजाय देव पद छिनमें पावै ।
श्रीजिनधर्म पसाय सर्म क्या क्या न लहावै ।
तातें भवि जन जैनधर्म चित मे नित धारो ॥
येही सुर शिव देत करे अघको निरवारो ॥ ८७ ॥

चौपाई

पीछे नरपति करकुड । जैनधर्म में निजचित मंड ।
अपनो अरु जननीको नाम । बालदेव जो खग अभिराम ८८॥
तीनों के नामनते सार । लैन करायो जुतही बार ।

मत्री मिसुन सहित तत्काल । पातिष्ठा कीनी गुणमाल ॥८९॥
फिर कितनेइक दिन में राय । मनमाहीं बैराग उपाय ॥
यह संसार देह अरु भोग । विनाशीक है इनकों जोग ॥ ९० ॥
इम विचार कर अवनीकंत । सुत वसुपाल बुलाय तुरंत ॥
ताको राज देय वड़भाग । धर जिन दीक्षा में अनुराग ॥९१॥
पिता आदि चेरम नर नाथ । अरु पदमावति माता साथ ।
दीक्षा लीनी चित हरषाय । जोगधरो सब मोह नसाय ॥ ९२ ॥
भव अम्बुध को तारन हार । तप कीनो नाना परकार ।
फिर सन्यासधरो बुधवन्त । जिन चरनाम्बुज ध्यावत सन्त ॥ ९३ ॥
तज के तन लीनो अवतार । बारम स्वर्ग नाम सहश्रार ।
नाम दन्त वाहन को आद । तन तजके वे सबही साद ॥ ९४ ॥
यथा योग गये स्वर्ग मझार । निजनिज पुण्य तने अनुसार ।
देखो जिनवर यज्ञ प्रभाव । पुन्डरीक इक ग्वाल चढ़ाव ॥ ९५ ॥
ताफल ते उपजो कर कुंड । शिर सुरपद पायो गुण मंड ।
अरु जे भवि जन चित हरषाय । अष्ट द्रव्य अति उत्तम लाय॥ ९६॥
पूज श्रीजिन चंद महान । तिस फल को को करे बखान ।
सुरशिव लक्ष्मी तत्क्षण वरे । ज्ञाना वर्ण आदि सब हरे ॥९७॥

दोहा

तातें श्री जिनवर तनी, पूजा करो मनोग ।
यह सुख दाता जग विषै, नासे तीनों रोग ॥ ९८ ॥

इति श्री आराधनासार कथा कोष विषै श्री करकुंड महाराज की कथा समाप्तम् ।

———o———

श्रीजिनपाद पूजाफल कथा नं० १२३

मङ्गलाचरण । दोहा

शोभा मगडित जिन सुरबि, जन पूजत श्रुत माय ।
गुरु निग्रन्थन के चरन, पूजूं मन बच काय ॥ १ ॥
जिन पूजा फल जिन लहो, ताको करूं बखान ।
सुनके नित भवि कीजिये, तज के मिथ्या वान ॥ २ ॥

पद्धडी ।

श्री जुतवर श्री जिन चंद सार । तिनको पूजनसब पाप हार ।
सुर शिब दाता एही महंत । श्रुतमें बरनो इम जगत कंत ॥ ३ ॥
जे भव्य सुबुद्धी हैं पवित्त । बृषहेत जिनेश्वर जजत नित्त ।
तिन ही के निर्मल दर्श होत । वोही पावें जगमें उद्योत ॥ ४ ॥
अरु जे पापी निन्दा करंत । ते निंदनीक पद को लहंत ।
बहु दुख दरिद्र तन रोगलीन । कुश्चित गति पावें ते मलीन ॥५॥
जे भव्य जीव कलशाभिशेष । श्रीजिनवर को ठाने बिशेष ।
स्तुति अरु जपन करे उदार । जिनयात्रा परतिष्ठा अपार ॥ ६ ॥
करवावे श्री जिनके अगार । प्रतिमा बनवावें हर्ष धार ।
इत्यादि प्रभावन करत जेह । जगमांहि सराहन जोग तेह ॥७॥

दोहा

इत्यादिक किरिया करत, भव्य हर्ष चित धार ।
शिब दायक सम्यक दरश, ते पावें अधिकार ॥ ८ ॥

सवैया इकतीसा ।

तातें इंद्र चंद्र रवि खग पति आदि सर्व, पूजें चरनारबिंद जाके हरषायके । तेई भगवान देव पूजो भव्य वसु भेव, लहो सुख सम्पत जु पातक नसायके ॥ श्री जिन जज्ञ शुद्ध येही बच सों प्रतच्छ, बृषही को मूल कहो वेदन में गायके । तातें अरचा

रसान पुत्र और नाहि जान. दूजो और होय नाहि जानो मन लायके ॥ ९ ॥

दोहा

भरतराय को आदि दे, और भव्य समुदाय ।
जिन पूजन फल पाइयो, सो को वरने गाय ॥१०॥

चौपाई ।

देखो लाय कंज की कली । भेष जु जिन पूजन कर भली ।
ता फलते उपजो सुरथान । ऋद्धि लही को करे वखान ॥ ११ ॥
जे जल आदिक द्रव्य अनूप । ताको पूजत तिहुं जगभूप ॥
तिनकी महिमा वरनन करे । ऐसी को बुध बुध जन धरे ॥ १२ ॥
तासु कथा सम्बन्ध मझार । स्वामी समुत भद्र उच्चार ।
जिनवर पूजनको फल येह । तिन अनुसार कहूं मैं तेह १३॥

[illegible]

जम्बूद्वीप अनूपम बसे । मेरु सुदर्शन ता मधि लसे ।
ताकी दक्षिण दिशिमें जान । भरतक्षेत्र क्षेत्रन परधान ॥१४॥
श्रीजिन तीर्थंकर जगचंद । तामध उपजत है गुण वृन्द ।
ताकरके पवित्र अधिकार । तामें मागधदेश निहार ॥ १५ ॥
कैसो है वह देश मनोग । सार सम्पदा को वर जोग ।
तहां के जन धन धान सुयुक्त । धर्मकर्म करके संयुक्त ॥१६॥
राजग्रही पुर तामें बसे । गुणी जननकर अद्भुत लसे ।
भोग और उपभोग मनोग । तहां जन भोगत पुन्य संयोग १७॥
फिरकर सोहे नगर विशाल । तहां निरशोभे अधिक विसाल ।
देवांगन [illegible] [illegible] । सम्यक दरशन व्रत धारन्न ॥१८
[illegible] भाल है [illegible] शील । या पुरमें वृनवन्त [illegible]
तामें [illegible] इक जान । ना [illegible] लख [illegible]

तहँ सुखकारन श्रीजिन धर्म वरततहै चमु जाम सुपर्म ।
जाको लख जग जन हर्षात । तिस शोभा किम वरणीजात ।२०॥

दोहा

तिस पुरमें श्रेणिक नृपति, अति पवित्र बुधिवन्त ।
चंचरीक जिनपर तनो, सम्यक दर्श धरन्त ॥ २१ ॥
जिन प्रताप शीतल अधिक, फैलो इन्दु समान ।
सुनकर अरिगण चित्तमें, शान्तभगे अधिकान ॥२२॥

गीता छन्द

सत्पुरुष अरु परजाजनन की करे नितप्रति पालना ।
तिस गेह में वर रूप मंडित सोहती तिया चेलना ।
सो महामंडित भाग मंडित चतुर अति शोभा धरे ।
जिन भक्ति सम्यकव्रत भूषण सोई निज तनमें धरे॥२३॥
सब कला में परवीन सुंदर जैन बानी सम लसे ।
चव संग की छाछल धरे हिये सर्व अत्तन को कसे ।
ता नगर में मिथ्या मती एक नागदत्त वानक पती ।
तागेह भव दत्ता तिया है प्राण से प्यारी अती ॥ २४ ॥

दोहा ।

माया मण्डित सेठ यह, मरो महा दुख पाय ।
निज ग्रह आंगन वापिका, तहां भेष उपजाय ॥ २५ ॥
देखो उत्तम सेठ यह, मांया पाष पसाय ।
मरके दादुर ऊपजो, पाई जलचर काय ॥ २६ ॥

कवित्त ।

एक दिना याकी जो नारी पय लेने आई तेह थान ।
ताको देखतही यह मेंडक जाती सुमरन पायो ज्ञान ॥
ताके तनके ऊपर तबही चढ़न लगो चितमें हरषाय ।
तब ताने हटाय तिस दीनो बपु रोमांच भयो अधिकाय ॥२७॥

फिर भी तांहीं के तन ऊपर चढ़न भयो सो बारम्बार ।
पूरब भव सनेह के कारन मन माहीं निज नार निहार ॥
तब भवदत्ता एम विचारी यह कोई प्यारो अधिकार ।
खोटी गत माहीं उपजो है पहिले भव कर पाप अपार ॥ २८ ॥

दोहा ।

इम विचार करके गई, सुवृत ऋषि के पास ।
कारन पूछो नमन कर, तब गुरु ज्ञान-निवास ॥ १० ॥
कहत भये पुत्री सुनो, नागदत्त जो थाय ।
तेरो पति मेंढक भयो, माया पाप कसाय ॥ १० ॥

चाल मेघकुमार की देशी ॥

ऐसे गुरुके बच सुने जी भवदधि तारनहार । सेठानी नम-कर गई जी चित में हर्ष सुधार ॥ मयानी. मेंढक लियो है उठाय ॥ ३१ ॥

अपने ग्रह में लाय के जी करत भई प्रतिपाल । दादुर भी हर्षित भयो जी तिष्ठे इसके नाल ॥ रे भाई मोह महा दुखदाय ३२

इस अन्तर कोरेदिना जी. बन पालक तहँ आय । श्रेणिक ते विनती करी जी सुनलीजे नर राय ॥ सयाने मम विनती दे कान ॥ ३३ ॥

गिरि विभारके भालपे जी, आये श्रीभगवान । इन्द्र चंद्र आदिक सबै जी, तिन पद नमैं सुजान ॥ भावज्ञुत जग प्यारे महावीर ॥ ३४ ॥

इम सुनके नरपति तबैजी, भूषण बसन उदार । बन पालक को सब दियेजी, हरषो चित्त अपार ॥ सयानो. मानो हुवो तस्कार ॥ ३५ ॥

जिनजी दिशिको जायके जी. सात पैंर नरनाथ नमस्कार

करतो भयो जी है कर पुलकित गात ॥ सयाने धर्म तनी रुचि धार ॥ ३६ ॥

आनन्द मैरी पुरविषै जी दिलवाई वड़भाग । निश्चलमन वंदन चलोजी चित मे धर अनुरागं ॥ सयाने चमर दुरत अधिकार ॥ ३७ ॥

समोशर्ने जिनराजको जी, देखतही हरषाय । ऐसे केकी धनै लखै जी दारिद्री निधि पाय ॥ रेभाई त्यों हरषो नरनाथ

सवैया इकतीसा ॥

जब नरनाथ जिननाथकी निहार छवि; आनंद अपार भया कह्यो नहिं जात है । अष्ट द्रव्य सार लाय पूजे चरनारविन्द, फिर तिन थुत करी पुलकित गात है ॥ अहो भगवान सब जगमें तुम्हीं प्रधान, सदा जयवन्त और तुम्हीं जगतात है । कर्म दारु नाशनको अनिल स्वरूप आप दुष्ट अग्नि टारिवे को मेघ विख्यात है ॥ ३८ ॥

सवैया तेईसा ॥

लोक अलोक प्रकाशनको प्रभु भान समान महा सुखदाई ।
बैन मरीचनते भविकंज दिये विकसाय तुमी जिनराई ॥
हे भगवान सदा जैवन्त तुम्हीं शिव कन्त सुशर्म लहाई ।
जन्म जरा अरि मर्न महा ज़ुर नाशनको तुम वैद सहाई ॥ ४० ॥

दोहा

गुणरूपी रतनन तनी, आकर हो तुम देव ।
जग रक्षक जग तात तुम, जन पीहर जगवेव ॥ ४१ ॥

चौपाई

तीनलोक के भूषण सार । तुम बिन कारन बंधु उदार ।
हे प्रभु आपद बेल समान । तिस नाशनको अद्भुत भान ४२॥

हे जिन तुम पदपंकज पेख । जो सुख उपजे हिये विशेष ।
सो सुख छोड़ो करत कलेश । सुरनेमी लावे नहिं लेश ॥४३॥
ताते जिनाधीश जगचंद । तुमरी भक्ति सदा सुखकंद ।
जबलग जगको लहूं न छेव । तबतक ममहिय तिष्ठो देव ४४
इहविध स्तुत वारम्वार । श्रीजिनवरकी करके सार ।
फिर गौतम आदिक ऋषिराज । तिन पद परसे धर्म जहाज ४५
फिर निज कोठे बैठो राय । वानी सुनी स्वर्ग शिवदाय ।
अब भवदत्ता हर्ष समेत । गई सु जिन वन्दनके हेत ॥ ४६ ॥
अब नभमें सुन जै जै कार । अरु बाजनको शोर अपार ।
जाती सुमरन पायो भेष । चितमें हर्षित होय विशेष ॥ ४७॥
मुख मेले इक पदम अनूप । पूजन चलो तिहूंजग भूप ।
मनमाहीं धर मोद अतीव । पथमें जावेयो जलजीव ॥ ४८ ॥

दोहा

एक करीके पग तले, दबकर पाई मीच ।
प्रभु पूजा अनुरागतें, उपजो सुरगण बीच ॥ ४९ ॥
प्रथम स्वर्ग सो धर्म में, ऋद्ध लही अधिकाय ।
देखो सुर पदवी कहां, कहँ मेडक परयाय ॥ ५० ॥

सोरठा

जिन पूजन परसाद, कौन कौन सुख ना लहे ।
सब प्रकार अहलाद, पावें जन या जगत में ॥ ५१ ॥

चौपाई छन्द

अन्तर मुहूर्त मांहि जो नवजुन भयो ज्ञाननैं ।
[illegible] रूप लावन धरे अद्भुत पूर्व पुन्य प्रसाद तें ।
बहु भांति रत्ननकी चमत्कार अतिन ननतुंग बने ।
[illegible] दिव्य [illegible] भूषन भासन नासु[illegible] नम नवे ।

है सुमनकी वर दाम उरमें जुत पराग सुहावनी ।
इसे बहु सीस नचावत नृत्यगान करें घनी ॥
ताही समय सुर अवधितें सब जानियो पूरब कथा ।
मैं भेष पूजन भाव सेती, लहो पद यह सुख अथा ५३

दोहा

तातें श्रीजिनवर तनी, पूजन करनी सार ।
इम विचारके मुकुट में, करो भेप आकार ॥ ५४ ॥
बहु विभूति अमरन सहित, चलो चित्त हरषाय ।
समोशर्न श्रीबीरकी, ता माहीं सुर आय ॥ ५५ ॥

काव्य

श्रीजिनेन्द्र जगचन्द्र तने पद जो, सुखदाई ।
तिने देख सुर है प्रसन्न पूजे अधिकाई ॥
इह विधि भक्ति अपार देखकर श्रेणिक नरपति ।
प्रश्नकरो गणदेव प्रते चितमें है हरषत ॥ ५६ ॥
हे स्वामिन इस अमर मौल में दादुर लच्छन ।
किह कारन ते भयो कहो अब आप प्रतच्छन ॥
तुम संशय तम नाश करनको भानु समाने ।
ऐसे सुन इस वचन ऋषी तब येम बखाने ॥ ५७ ॥

दोहा

नागदत्त सेठ थो, माया ते तज प्रान ।
भयो भेष बापी विषै, फिर पायो इन ज्ञान ॥ ५८ ॥
श्रीजिनेन्द्र जगचंद की, पूजन करने काज ।
पंकज ले निज मुख विषै, आयोथो यह आज ५६॥
गैद चर्न तल दबमरो, भयो स्वर्ग में देव ।
भेष चिन्ह जुत जिन तनी, करने आयो सेव ॥ ६० ॥

चौपाई ।

ऐसे वच श्रेणिक नृप आद । गुरु मुख ते सुन लह अहलाद ।
श्री जिन जज्ञ विषै चित पाग । तिस फलमें धारो अनुराग ॥६१॥
भो भविजन याते प्रभु सेव । कीजे सुच ह्वै कर वसु भेव ।
जिस प्रभाव तें धन अरु ध्यान । महा भाग सो भोग लहान ॥६२॥
राज सम्पदा सुत अरु मित्र । तियवर पावो गोतपवित्र ।
दीरघ आयु लह्यो अधिकाय । सब अघ नाशे नृप उपजाय॥६३॥
मन वंछित फल की दातार । मणिमाणक मुक्ता भंडार ।
मुक्ति बीज सम्यक सुखदाय । पावे जन जिन जज्ञ पसाय ॥६४॥
वरविद्या अरु शुभ चारित्र । स्वर्ग मोक्ष यह देय पवित्र ।
तातें नित तज के परमाद । सुख दाता पूजन कर आद ॥६५॥

पद्धरी ।

फिरकर सोहे जिन यज्ञसार । सम्यक्त जु तरु सींचन सुवार ।
भव बोध देन को मेघरूप । सब तामा तासम है अनूप ॥६६॥
श्री लावन को दूती समान । शिव मंदिर चढ़ने को शिवान ।
सबसुखकोआकर जानयेह । अरुअशुभ बृन्द नाशन करेय ॥६७॥
सो ऐसे प्रभु पूजो प्रवीन । जिन उत्सव में जो हर्ष लीन ।
मघवा तजके निज स्वर्गयान । आवे करने जन्मा कल्यान ॥६८॥
जिन ले सुर गिरके भाल जाय । हाटक सिंहासन पै बैठाय ।
क्षीरोदधि कुण्डसमान कीन । घट लावें भरसुर हर्ष लीन॥६९॥
स्नान करावन हार इन्द्र । निरतन्त बहुत अपसरन बृन्द ॥
जिनकी कीरति गंधर्वगात । सो प्रभु पूजन लायक विख्यात ७०
सोई भगवान जिनिंदचंद । सब भविजनको दो सुख अमंद ॥
पर जिनकी वानी जग विख्यात । नवजनकी न्हा करामात ७१

दोहा

कैसी सवना मात है, केकी वाहन युक्त ।
पदमासन धारो विमल, दिव्यरूप संयुक्त ॥ ७२ ॥
मिथ्या तिमिर विनाशिनी, रविकी रश्म समान ।
भव्य कमल विकसावनी शुभ गतिदेत महान ॥७३॥

सोरठा

देवादिक सेवन्त, जिस माताके चरन जुग ।
ताको नम बहु भन्त, करूं ग्रन्थ पूरन अबै ॥७४॥

काव्य

शोभामंडित अवनि विषै श्रीमूल संघवर ।
तामें तिलक समान भारती गच्छ सुसुन्दर ॥
श्रीयुत ज्ञाननिधान कुंद कुंदा आचारज ।
तिनके वंश विख्यात विषै प्रकटे मुनि आरज ॥७५॥
श्रीजिन आगम उदधि वृद्धको चन्द्र अखंडित ।
गुणगाधि महिमा जोग चरन सेवें बहु पंडित ।
ऐसे श्री मुनि प्रभा चन्द्र प्रगटे बड़ भागी ।
सो जग में जयवन्त होंय निज आतम रागी ॥ ७६ ॥
श्री भट्टारक गुरू मल्ल भूषण सुखदाई ।
सदा काल मम सुःख अर्थ बरतो अधिकाई ॥
शोभा जुत जिनचन्द चरन वारिज के षट पद ।
मल संघ के नाथ ज्ञान चारित दरसन हद ॥ ७७ ॥
विद्यानंद महान गुरु तिन पद सुन्दर अत ।
सोई कंज समान तास विकसावन रविवत ॥
सिंघनंद गुरु देहु सदा सब जनको मङ्गल ।
श्री जिन पद ए जीव विषै रागी हैं जिम अल ॥

चौपाई ।

भव बोधन त्रप रतन निधान । कामकरी को सिंघ समान ।
सब पदार्थ के जानन हार । ध्यान लीन महिमा अधिकार ॥७९॥
अरु सबही जे सूर महन्त । पुन्य रूप पूंजी धारन्त ।
शास्त्र उदधि के पहुंचे पार । सो मुझको दो मङ्गल सार ॥८०॥
कैसे हैं गुरु उदधि गंभीर । सम्यक रतन धरे उरधीर ।
संतरंग मइ धरत तुरंत । ताकर मिथ्या मत पक अंग ॥८१॥
जड़ सेती तिन दियो वहाय । क्रोध जंतु कर रहित सुभाय ।
जिनवर वच हैं वर समान । ताकर पूरत हैं अधिकान ॥८२॥
भगवत रूप मयंक उद्योत । ताकरके नित वृद्ध सुहोत ।
याते अद्भुत सिंध महान । मेरे गुरु हैं दयानिधान ॥ ८३ ॥

दोहा ।

ब्रह्मनेमी दत इम कहे, सम्यक दरशन ज्ञान ।
चारित तप आराधना, तिनको कियो बखान ॥ ८४ ॥
निरमल शुभदाता अतुल, पूरन कियो पुरान ।
सो भविजन को हजियो, शांति अर्थ अधिकान ॥८५॥

सोरठा ।

श्रीजिन कीरत क्रान्त, पुत्र पोत्र परिवार अति ।
बढ़ो हर्ष को पांत, सम्यक तिन उर विस्तरो ॥८६॥

मङ्गल कारन छप्पय ।

मङ्गल श्री अरिहंत बहुर मङ्गल जिनबानी ।
मङ्गल गुरु निरग्रंथ सकल जगको सुखदानी ॥
मङ्गल वृत का शुद्ध और मङ्गल श्रावक गण ।
मङ्गल सिद्ध सु क्षेत्र धर्म मङ्गल दश लक्षण ॥
अरु सोलह कारन भावना, यह जग मङ्गल [illegible]
इन ग्रंथ मन्त्र कवि इम कहे, मङ्गल करो [illegible] ॥८७॥

इति श्री आराधनासार कथा कोष [illegible] जिनपाद [illegible]

⊛ अथ ग्रन्थ बांचन वा सुनने वालों को आशीरवाद ⊛

काव्य।

जे भविजन नित पढ़ें प्रीतते मिष्ठ सुरन कर।
सबै अमंगल होत नाश व्यापे श्रीतिसघर।
सुने जीव देकान करें श्रद्धा इस केरी॥
ते बहु सम्पति लहें बहुरि नाशें बहु फेरी॥ ८६॥

अथ ग्रन्थ भाषा जहां हुवा ताको वर्णन

दोहा।

कारन भाषा ग्रन्थको, करनेको सुन मित्त।
जेह थानक पूरन भयो, सुनलीजे दे चित्त॥ १॥

चौपाई

असंख्यात दीयो दधि जान। तामध जम्बूदीप महान।
जोजन लक्षतनो विस्तार। परध लक्ष त्रय अधिक निहार।२।
तामें सप्तक्षेत्र दुतिवन्त। षष्ठ कुलाचल अति शोभन्त।
जम्बू शालमली तरु दोय। जिन चेत्याले मंडित सोय॥३॥
मध्य सुदर्शन मेरु दिपन्त। जैसे तनमें भाल लसंत।
पूरब पश्चिम लसे बिदेह। सदा शिलाके जन उपजेह॥ ४॥
चौथो काल रहे नित तहां। ईत भीत व्यापे नहिं जहां।
कुलंगीको परवेश। जिनमंदिर मंडत सब देश॥ ५॥
जगतपति करत बिहार। मुनगण श्रावक ब्रतका सार।
भव्यनको उपदेशत तेह। इम शोभाजुत क्षेत्र बिदेह॥ ६॥

दोहा

मेरुतनी दक्षिण दिशा, और उतरमें जान।
तीम तीन शुभ क्षेत्र हैं, तिन बरनन अधिकान॥ ७॥

पद्धरी

वरभोग भूप चव क्षेत्र बीच । मध्यम जघन्य हैं कुन मभीच ।
हैं कर्म भूमि शुभ पंचथान । जहँ काल प्रवर्त्ते षट् प्रमान ॥८॥
ऐरावत उत्तर दिश मझार । शुभ भरत क्षेत्र दक्षिण निहार ।
ता मध्य खंड हैं षट् प्रसिद्ध । रूपाचल सोहत श्वेत मद्ध ॥ ९ ॥
तहँ पांच म्लेच्छ जु खंड जोय । जहँ धर्म कर्म जाने न कोय ।
एक आरज खंड दिपै अनूप । सब जनमें जिम सोहै सुभूप ॥१०॥
है धरम तनो अनिही प्रचार । चव संग करत हैं नित विहार ।
जहँ चेद काल में धरम ध्यान । उपजे थे त्रेसठ जन महान ॥११॥
तावर पवित्र यह देश सार । तिनकी महिमा को कहन हार ।
अब भी जहँ जिनवर धम्म पर्म । पालत हैं श्रावक षट् सुकर्म ॥१२॥

दोहा ।

तहां देश बहुतक हैं, कहत न पावै पार ।
सब के मध्य सुहावनो, मध्य देश सुखकार ॥१३॥

चौपाई ॥

कैसो सुन्दर देश दिपन्त । वन उपवन कर शोभावन्त ।
ग्राम ग्राममें श्री जिनधाम । कूप तड़ाग लसैं सरधाम ॥ १४ ॥
जहँ जन उपजे रूप अनुसार । भोगत भोग विविधि परकार ।
तीन वर्ण सारत निज सोय । दान देत हैं हर्षित होय ॥ १५ ॥
सरिता बहैं जहां जलभरी । भूषन सोहै मानों करी ।
इत्यादिक शोभा संयुक्त । पर्ने कौन सकै कवि निज उक्त ॥१६॥

दोहा

तिनमें देशन मध्य में, [illegible] निरधार ।
सोहै नगर सुहावनों, [illegible] सुन्दर धाम ॥१७॥

चौपाई ।

तिसही पुर के चारों ओर । सोहें उपवन चितके चोर ।
नाना विधिके पाद पसार । तिन पै अलि ठानत पुंजार ॥१८॥
पिक सारस सुक केकी आद । बोलत हैं वच जुत अहलाद ।
ठाम ठाम जीरन के खेत । मालकार सींचत निज हेत ॥१९॥
खेतन में साठन की बार । ताकर वन रहि शोभ उदार ।
कमलन जुत बहुलसत तड़ाग । ढिग विहंग बोलत जुतराग ।२०।
पुर ते पश्चिम दिशा मझार । विंध्याचल शुभ लसे पहार ।
पूरब में सरिता रसभरी । जमना नाम बहत है खरी ॥ २१ ॥
ताके तट पै सुन्दर घाट । दुज गण भनत बेद को पाट ।
पड़े नवाड़े ताके बीच । प्रेरे मांजी बहु विध खींच ॥ २२ ॥
नवका तने सेत जहँ घने । मानो थल सम मारग बने ।
तातें खेट कहावत येह । याकी शोभा किम बरनेह ॥ २३ ॥
तिसी शहर के गोलाकार । लशे खातका जुत तुच्छबार ।
कोट कंगूरन सहित उतंग । द्वादश गोपुर नाना रंग ॥ २४ ॥
इत्यादिक रचना को धरे । तिस शोभा को कवि उच्चरे ।
तिसी शहर के भीतर जान । लाल किला इक शोभावान ॥२५॥
तामध तख्त विषै सुलतान । शाह बहादुर कला निधान ।
राजकरे अतिही बड़ भाग । नव नरिन्द्र सेवे पदलाग ॥ २६ ॥
ताके आगे लसत वजीर । श्री अंगरेज बहादुर धीर ।
न्यायवान परधन नहिं हरें । इक छत राज अवनि पर करें ॥२७॥
बहु देशन तें सारथ बाह । इस पुर में आवें उमगाय ।
क्रय विक्री कर धन समुदाय । बहुत द्रब्य ले जांय कमाय॥२८॥

दोहा ।

तामांही बहु बसत हैं, चार वरन के लोग ॥
अपने अपने पुन्य तें, भोगत नाना भोग ॥२९॥

चौपाई।

तहँ नारी गज गामनि सार। मंगल गावें विविध प्रकार।
बाजे बाजत हैं वसुजाम। चित्र विचित्र लशत जहँ धाम ॥३ ॥
तिसी शहर के मध्य महान। श्री जिन मंदिर शोभावान।
तिन के शिखर लसत हैं श्वेत। तिन पै सुंदर लहकत केत ॥३१॥
मानो करपत झालो देह। भव्यन को बुलवावत तेह।
हाटक कलश लसत हैं येम। मानों मेरे चूलका जेम ॥ ३२ ॥
नाना वर्न तने चित्राम। तिन में बने महा अभिराम।
कहुं जन्म कल्याणक तने। कहूं अमर गण निरतत घने ॥३३॥
श्री जिनचैत विराजत जोग। तिनकी अतिशयदिपतमनोग।
तहां भव्यजन पुलकित गात। जिन मज्जन ठाने परभात ॥३४॥
बहुरि करे पूजन बड़ भाग। फेर पुरान सुनें जुत राग।
सामायक अन सन व्रत धरें। वित अनुसार दान वह करें ॥३५॥

दोहा।

सैली में सज्जन लसें, नाना गुण धारन्त।
सप्त क्षेत्र में द्रव्य ते, खरचत हैं बहु भंत ॥ ३६ ॥

पद्धड़ी

तिस सैली मांही सुगन चंद। दाता आदिक बहु सुगुन वृंद।
सुत गंगलाल के बुद्धि वंत। श्रीजिनवर भक्ति हिये धरंत ॥३७॥
अरु मथुरादास जू नाममान। तिन भ्राता सालिगराम जान।
जैनमल पाले ब्रह्मचार। व्रत औषध आदि करें अपार ॥३८॥
बहु क्षमावान स्नेहीसुलाल। क्रोड़ीमल बुद्धि धरें विशाल।
गोपालराय अति ही प्रवीन। नित शास्त्र पढें हैं हर्ष लीन ॥३९॥
जिन मत विषै जिम चित अत्यंत। तिननाम कानजीमल लसंत।
... नानचंद अरु दीनदयाल। नेमीमल अरु चुन्नीलाल ॥४०॥

हैं नानकचंद खंडेलवाल। श्रीजिन गुण गावे अति रिसाल।
पद गावत हैं आनंदराम। गुलाबसिंह आदिक सुनाम ॥ ४१ ॥

दोहा

इत्यादिक सबही तहां; सज्जन हैं अभिराम।
अर्चा चर्चा करत हैं, कहँलों वरनूं नाम ॥ ४२ ॥

काव्य

तामाहीं बुधवन्त महा पंडित वर जोहैं।
नाम गिरधारीलाल बचनतें जनको मोहैं ॥
देव बचनमैं ग्रन्थ सदा बांचे अधिकारी।
भव्यनको उपदेश देत जिन बच अनुसारी ॥ ४३ ॥
तिनते ग्रन्थ लगाय लियो नेमीचंद जोहै।
न्यात खँडेल सुवाल पाटनी गोत सुसोहै ॥
पंडितवर इँदराजतने सुत हैं हितकारी।
तिनसेती यह अर्थ लियो हम आनंद धारी ॥४४॥

दोहा।

तब हमेरी इच्छा भई, कीजे चौपई बन्ध।
मन बच काया लगत है, होत पुन्यको बन्ध ॥ ४५ ॥

॥ अथ कविनाम वंश वर्णन ॥

दोहा

अग्रवाल वर बंश हैं काष्टा संधी जान।
श्री लोहाचारज तनी, आमनाय परमान ॥ ४६ ॥
पुष्कर गण गछमापुरी, मित्तलसिंहल गोत।
मित्र जुगल मिलके कियो, ग्रन्थ यही जग पोत ४७॥

अडिल्ल

प्रथम नाम बखतावरमल सो जानिये। रतनलाल दूजेको नाम प्रमानिये ॥ भ्राता रामप्रसाद तनो लघुहै सही। तुच्छ बुद्धितैं करी ग्रन्थ रचना यही ॥ ४८ ॥

गीता छंद

नहीं पढ़ो कछु व्याकरन और कछु छन्दभेद न मैं लहो ।
कोई तर्क ग्रन्थ नहीं लख्यो इक भक्ति वश वरनन कहो ॥
यह काल पंचम भरत क्षेत्रमें बुद्धि थोड़ीनी रही ।
याते सुभाषा ग्रन्थ कीनों समझ है सब जन सही ॥ ४९ ॥
अरु यान में यह ग्रन्थ पूरन करो मन हरषायतें ।
थिरता अलप अरु चित्त चंचल तासके परभावतें ॥
जो भूल अक्षर ह्रस्व दीरघ होय व्यंजन हीनजी ।
ताको सुधीजन शोध लीजो तुच्छ बुध मम चीन्हजी ॥ ५० ॥
जे हंससम सज्जन सुधीव सदा गुण गहलेत हैं ।
दुर्जन सरवमें दोष काढ़त सो भी गुणके हेत हैं ।
तातें न स्तुत उच्चरूं निंदा करूं नाहीं कदा ।
ज्यों साबु उज्ज्वल करत निसदिन मलिन घटाने सदा ॥ ५१ ॥

दोहा

सम्वत विक्रम नृपति को रूप और ज्ञान मिलाय ।
तापर तदपानवें, संख्या सर्व गिनाय ॥ ५२ ॥
श्रीपलसातु वैशाख वद, पख ज्ञान अधिकाय ।
तिथि जोग शुभ पंचमी, [illegible] गुनधार ॥ ५३ ॥
ता दिन पूरन ग्रन्थ यह कीनों बुद्धि समान ।
वक्ता श्रोता सबनके कीजो बहु कल्यान ॥ ५४ ॥
जयवन्तो निसदिन रहो, जिनधर्म सुखकंद ।
तासुप्रसाद राजा प्रजा, पावो बहु आनंद ॥ ५५ ॥

इति श्री [illegible] समाप्तम्

ॐ जैनग्रन्थ जो हमारेपास मिलते हैं ॐ

हिन्दी भाषा के ग्रन्थ।

प्रद्युम्न चरित्र २॥।)
पुन्याश्रव कथाकोष २)
धर्म परीक्षा १)
छैढाला अर्थ सहित ।)
श्रीपाल चरित्र १॥)
पार्श्वपुराण १।)
बनारसी विलास १॥)
वृन्दावन विलास ॥।)
प्रवचनसार (अध्यात्मग्रंथ) १।)
भूधरजैनशतक (उपदेशी =)॥
सेठ सुदर्शन की कथा)॥।
पाण्डवपुराणबड़ा २॥।)
शीलकथा इटावेकी छपी ।)
शीलकथा ज्योतीप्रसाद कृत ≡)
दर्शनकथाबम्बईकीछपी -)
इटावेकी छपी ।)
दान कथा ≡)
निशभोजनत्याग कथा =)
निशभोजन कथा छोटी)।
चारदान कथा ।)
विदेशों में जैनधर्म)॥
सुशीला उपन्यास (पं० गोपालदास बरैयाकृत १।)
चारदानकथा बड़ी ≡)

सुखानन्दमनोरमानाटक ॥।)
दियातले अंधेरा =)
सदाचारी बालक =)
अंजनासुन्दरी नाटक ॥)
सुकुमाल उपन्यास (जैनेन्द्र किशोर कृत) ।=)
सोमासती नाटक बाबू जैनेंद्रकिशोर कृत =)
पुरुषार्थ निबन्ध)॥।
व्याख्यानमाला चारभाग प्रतिभाग)॥
मांसभक्षण निषेध -॥)
जैन शाखोच्चार)॥
निशिभोजनभुंजनकथा)॥।
रक्षाबन्धन कथा =)
इतवार कथा बड़ी -)
जैन व्रत कथा ≡)
होलीकी कथा -)
जैन कथा संग्रह स्त्री रक्षा तथा इनाज सहित १)
जैन तीर्थयात्रा १)
मिथ्या प्रचार =)
प्रतिमाचालीसी)॥
सुआ बतीसी)।
हुक्का निषेध)।
कारकुण्डस्वामीकीकथा =)

ज्ञान सूर्योदय नाटक खेलने योग्य नई तर्ज का ॥)
विचित्र उपन्यास (बुढापे का विवाह -)
जैन सुधा बिन्दु =)
मनोरमा उपन्यास जैनेंद्र किशोर कृत ॥)
मनमोहनीनाटक बचनका बाबू सूरजभानु कृत ।)
तत्वार्थ सूत्र बचनिका ।)
जैन सिद्धान्त दर्पण पं० गोपालदास कृत १)
शिखरमहात्म्य बचनिका -)
संशय तिमिर प्रदीप ॥।)
चौबीस ठाणाचार्चा (गुटका) ।-)
तत्वमाला (जैनतत्वों का स्वरूप ≡)
आराधनासारकथाकोष २॥)
जम्बूस्वामी चरित्र ।=)
कर्म चरित्रसार =)
समाधिशतक =)
स्वानुभव दर्पनसार्थ ।)
शील कथा भारामल्ल कृत बम्बई की छपी ।-)
न्यायपरिभाषा -)॥
प्रातस्मरण मंगल)॥

पूजनकी पुस्तकें।

भाषापूजा संग्रह बम्बईका छपा ॥।)
,, इटावे का ।=)
,, जैनीलाल का बड़ा ॥=)
चौबीसी पाठ वृन्दावन जी कृत १)

नित्यनियम पूजा संस्कृत और भाषा ।)
भाषा मुन्शी नाथूराम की छपाई =)॥
तेरहद्वीपकापूजनपाठ २॥)

शत्रुंजयगिरिपूजा तथा दर्शनादि सजिल्द =)
दशलक्षण पूजा और अर्थ सहितप्राकृत जयमालायें ।)
सप्तर्षि पूजा)।
सम्मेदशिखर पूजाविधान महात्म्य सहित ।)

॥ जरूरी सूचना ॥

जिस ग्रन्थपर हमारे हस्ताक्षर अथवा मोहर न होगी वह चोरी का समझा जावेगा।

प्रकाशक